Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोक परलोक

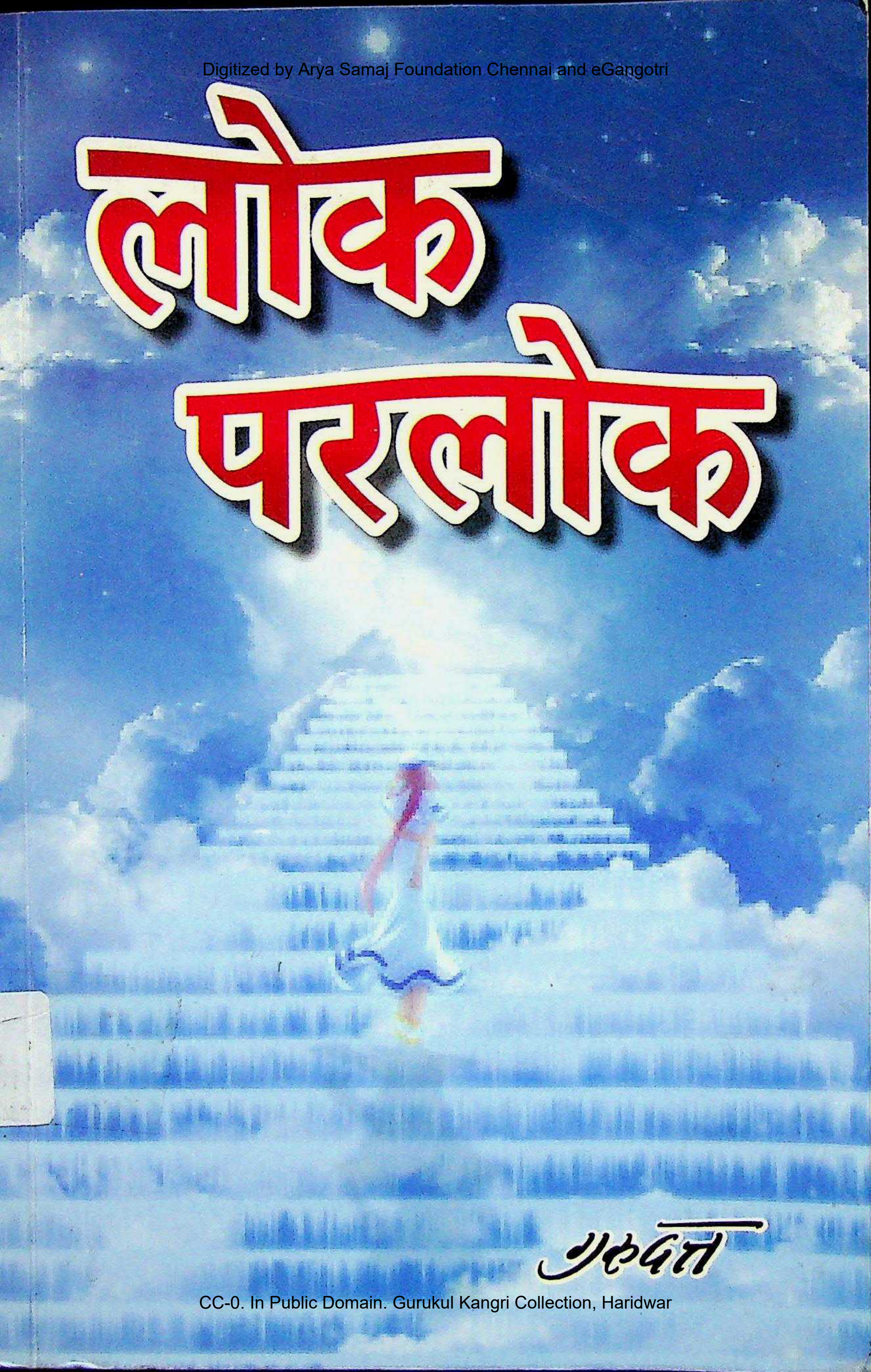

गुरुदत्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

167975

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोक–परलोक

हम सभी के कई जन्म हो चुके हैं,
कोई जानता है, कोई नहीं जानता।

इस विषय पर एक रोचक कथानक

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त की कुछ अन्य सामाजिक रचनाएं

अमानत
अनदेखे बन्धंन
आवरण
अन्तरिक्ष में
आकाश पाताल
इबलीस
कला
घर की बात
आशा निराशा
अपने पराए
एक मुँह दो हाथ
कामना
गुंठन
चंचरीक
ज़िन्दगी
जीवन ज्वार
धरती और धन
न्यायाधिकरण
नए विचार नई बातें
नगर परिमोहन
नास्तिक
पंकज
परिमल
परिवर्तन
पड़ोसी
प्रवंचना
प्रतिशोध
प्रारब्ध और पुरुषार्थ
प्रेयसी
बन्धन शादी का
भगवान भरोसे
भाग्य का सम्बल
भग्नाश
भूल
भूत और भविष्य
ममता
मायाजाल
मै न मानूँ
मृग तृष्णा
यह संसार
यात्रा का अंत
लालसा
लोक परलोक
विकार
विलोम गति
विकृत छाया
स्वार्थ
सब एक रंग
सभ्यता की ओर
स्नेह का मूल्य
संस्कार
सफलता के चरण
सर्वमंगला
साहित्यकार
सुमति

श्री गुरुदत्त की सर्वाधिक चर्चित रचनाएं

स्वाधीनता के पथ पर	स्वाधीनता आन्दोलन 1930 से 35 का काल
पथिक	स्वाधीनता आन्दोलन 1935 से 40 का काल
स्वराज्यदान	स्वाधीनता आन्दोलन 1940 से 46 का काल
विश्वासघात	स्वाधीनता आन्दोलन 1946 से 47 का काल
देश की हत्या	स्वाधीनता आन्दोलन 1947 से 48 का काल
दासता के नए रुप	1948 से 49 का काल
सदावत्सले मातृभूमे	1949-.... का काल

www.hindisahityasadan.com
E-mail: indianbooks@rediffmail.com Tel.: 23553624, 23551344, 09213527666

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोक—परलोक

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

गुरुदत्त

Central Library
167975
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar
081
167975

हिन्दी साहित्य सदन
www.hindisahityasadan.com

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R
089.9143
GUR-L

© ईशान दत्त

लोक–परलोक

लेखक गुरुदत्त
संस्करण 2016
मूल्यः 250-
प्रकाशक हिन्दी साहित्य सदन
2 बी.डी. चैम्बर्स, 10/54 देशबंधु गुप्ता रोड,
करोल बाग (पुलिस स्टेशन के समीप)
नई दिल्ली–110005
वैबसाईट www.hindisahityasadan.com
ई–मेल hindisahityasadan@gmail.com
indiabooks@rediffmail.com
दूरभाष 23553624, 23551344, 09213527666
मुद्रक

LOK PARLOK

By Gurudutt

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमिका

इस संसार में सबसे अधिक रहस्यमयी, विस्मयजनक और चमत्कारपूर्ण घटना प्राणी की उत्पत्ति है। लोक में सब पदार्थों को दो श्रेणियों में बाँटा जा सकता है। एक तो वे, जिनको हम प्राणी का नाम देते हैं। दूसरे वे जिनको हम जड़ पदार्थ कहते हैं। जड़ पदार्थों के विषय में भी विवेचनाएँ उपस्थित की गई हैं। कैसे यह पृथ्वी, सूर्य–जगत् और ब्रह्माड में नक्षत्र–तारागण इत्यादि बन गये? इनके बनने के विषय में मुख्य रूप में दो प्रकार के विचार हैं। एक विचार है जड़वादियों का और दूसरा विचार है आस्तिकों का। जड़वादी यह समझते हैं कि प्रकृति में परिवर्तन स्वभाववश होते रहते हैं और उन्हीं परिवर्तनों में नक्षत्र इत्यादि तारागणों की सृष्टि हुई है। पृथ्वी, जिस पर हम सब बसे हुए हैं, प्रकृति के स्वाभाविक परिवर्तनों में एक पग ही है।

दूसरा विचार है आस्तिकवादियों का। ये कहते हैं कि इस पूर्ण जगत की उत्पत्ति में एक अभौतिक शक्ति कारण है और वह है परमात्मा।

इसी प्रकार इस पृथ्वी पर प्राणी जगत की और जड़ जगत् की उत्पत्ति में भी दो प्रकार के विचार उपस्थित किये गये हैं। जड़वादियों का विचार है कि प्रकृति एक अनादि पदार्थ है और वह अपने स्वभाववश परिवर्तित होती रहती है तथा उन परिवर्तनों की शृंखला में यह प्राणी–सृष्टि भी एक कड़ी है। इसके विपरीत आस्तिक विचार के लोग मानते हैं कि प्राणी–जगत में प्रकृति के अतिरिक्त एक अन्य पदार्थ है। उसका नाम वे आत्मा रखते हैं। यह अति सूक्ष्म, आकार–रहित, विकार रहित, मृत्यु से रहित और जन्म से रहित पदार्थ है। जब आत्मा प्रकृति में लिप्त हो जाता है, तब प्राणी का रूप ग्रहण कर लेता है।

प्राणी दो प्रकार के माने गये हैं। एक स्थावर और दूसरे जंगम। स्थावर प्राणी बनस्पति इत्यादि हैं। पेड़, पौधे, झाड़ियाँ, ये सब एक स्थान पर स्थित रहने के कारण स्थावर कहाते हैं। जंगम प्राणी वे हैं, जो चलते–फिरते हैं।

जंगम प्राणियों के पुनः दो भाग किये जाते हैं। एक मानव और दूसरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पशु–पक्षी इत्यादि। मानव और पशु–पक्षियों में अन्तर बुद्धि का है। मानवों में बुद्धि पशुओं से अधिक विकसित और अधिक परिष्कृत होती है।

विश्लेषण करने पर यह पता चला है कि ये तीनों प्रकार के प्राणी अपने में कुछ समान गुण रखते हैं और ये समान गुण जड़ पदार्थों में उपस्थित नहीं है। इस कारण जड़–पदार्थों से प्राणी–पदार्थ भिन्न माने गये हैं और इस भिन्नता में कारण है आत्मा की उपस्थिति।

भारतीय परम्परा में दूसरी विवेचना को ही मान्यता दी गई है।

भारतवर्ष के लोग आत्मवादी हैं अर्थात् वे मानते हैं कि प्राणियों में आत्मा विद्यमान है और उस आत्मा की विद्यमानता के कारण ही प्राणी जड़–पदार्थ से भिन्नता रखता है।

इस पुस्तक में भारतीय परम्परा को मान्यता दी गई है। आत्मा कैसे इस संसार में आता है, रहता है, जन्म लेता है, जीवन चलाता है और जीवन चलाकर मृत्यु को प्राप्त हो जाता है, मृत्यु को प्राप्त होने के उपरान्त उसका क्या होता है? इस सब की विवेचना भारतीय परम्परा में है। इस विवेचना को आधार बनाकर ही इस उपन्यास की रचना की गई है।

रहस्यमयी आत्मा की विवेचना अनादिकाल से विद्वान् लोग करते आये हैं। परन्तु वे अपने वर्णन में कुछ अधिक स्पष्ट तथा निश्चित शब्दों में नहीं कह सके।

प्राणी में आत्मा है, ऐसा जानकर भी वह आत्मा किस रूप में है, कैसा आकार है उसका, कितना विस्तार है उसका, किस स्थान पर रहता है; जब प्राणी की मृत्यु हो जाती है तो यह कहाँ जाता है और वहाँ जाकर फिर क्या करता है; तत्पश्चात् इस संसार में अथवा किसी अन्य संसार में जाता है अथवा नहीं जाता? अनेक प्रकार के प्रश्न हैं जिनके विषय में कहना अति कठिन है।

इन सब बातों के विवाद में न पड़कर हम भारतीय विचारधारा को स्वीकार करके अपनी कहानी लिखने बैठे हैं। हमने इसमें यह माना है कि–

1. प्राणी में शरीर के अतिरिक्त एक पदार्थ आत्मा है।
2. वह आत्मा अमर है। अनादिकाल से उपस्थित है और अनन्तकाल तक रहेगा।
3. आत्मा एक नहीं, अनेक हैं। कई कारणों से वे प्रकृति में लिप्त होकर शरीर धारण करते हैं।
4. जैसे प्राणी इस पृथ्वी पर विचरते हैं, वैसे ही प्राणी के विचरने के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्य स्थान भी हैं। वे अन्तरिक्ष के अतिरिक्त तारागणों पर भी रहते हैं।

5. शरीर जो इस पृथ्वी पर प्राणी को मिला है, वह एक प्रकार का बन्धन है, जिसमें बँधा हुआ वह इस पृथ्वी को छोड़ नहीं सकता व छोड़ने से पहले उसको शरीर छोड़ना पड़ता है। शरीर जो प्राणी को इस पृथ्वी पर मिला है, वह इस पृथ्वी के वायु–मंडल से बाहर नहीं रह सकता। उसकी आवश्यकताएं इससे बाहर पूर्ण नहीं हो सकतीं।

6. प्राणी की आत्मा जब इस शरीर में नहीं होती, तब भी वह सर्वथा प्रकृति से मुक्त नहीं रहता। वह कई कारणों से बंधा हुआ इस पृथ्वी पर जन्म लेता है अथवा किसी अन्य स्थान पर, किसी अन्य रूप में जन्म लेता रहता है।

ये कुछ भाव हैं, जिन भावों को आधार बनाकर इस पुस्तक की रचना की गई है। भारतीय परम्परा में कुछ लोग मानते हैं कि आत्मा परमात्मा का ही एक अंश है। जब वह यहाँ प्रकृति के रूप 'महत्' में लिप्त हो जाता है तो वह पृथक् होकर जन्म–मरण के बन्धन में फँस जाता है।

शास्त्र में 'महत्' को ही बुद्धि अथवा मन माना है। अतएव आत्मा को चाहे तो परमात्मा का अंश मानें और चाहे स्वतन्त्र अस्तित्व वाला मानें, एक बात स्पष्ट है कि जब मन से संयुक्त होता है तो कामना करता है और फिर जन्म–मरण के बन्धन में फँस जाता है। मन से संयुक्त आत्मा कामना करने पर दो भागों में विभक्त हो जाता है। जब तक ये दो भाग पृथक्–पृथक् रहते हैं, तब तक जन्म–मरण का बंधन नहीं टूटता। जब ये दो भाग पुनः संयुक्त हो एक हो जाते हैं तब आत्मा निर्मल होकर मन से पृथक् हो, या तो परमात्मा में लीन हो जाता है, अथवा स्वयं ब्रह्मरूप होकर आनन्दमय हो जाता है।

यह पुस्तक एक उपन्यास ही है। स्थान, व्यक्ति और घटनाएँ काल्पनिक हैं। आत्मा की विवेचना शास्त्रोक्त है। इस पर भी यह काल्पनिक भी कही जा सकती है। कारण कि यह युक्ति का विषय नहीं है, अनुभव का विषय है।

–गुरुदत्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम परिच्छेद

"ओ जग्गू यहाँ खड़े क्या कर रहे हो?"

एक पाँच वर्ष का लड़का, गली में खड़ा एक सात–आठ वर्ष की लड़की को देख–देख हँस रहा था। लड़की भी हँस रही थी।

मास्टर शिवराम अपने कार्य से अवकाश पा, घर अल्पाहार लेने आया था। ग्रीष्म ऋतु थी। मास्टर जी को प्यास लग रही थी और अपने घर के सम्मुख पहुँच, यह विचार कर रहे थे कि बर्फ का ठंडा शर्बत पीने को मिल जाये तो जीवन का आनन्द आ जाये। इस समय उनकी दृष्टि जग्गू पर पड़ गई। जग्गू ने जाँघिया पहना था और ऊपर गले में कुर्त्ता था। कुर्ते के बटन टूटे हुए थे। इस कारण गला खुला था। उसमें से लड़के की चौड़ी, गोरी पुष्ट छाती दिखाई दे रही थी। सिर, पाँव और टाँगें नंगी थीं।

मास्टर जी ने लड़के को आवाज दे दी। जग्गू हँसता–हँसता चुप कर गया और मास्टर जी की ओर घूमकर कहने लगा, "जी, कुछ नहीं।"

"यह ले पैसा। जा, श्यामू की दुकान से बर्फ ले आ।"

जग्गू ने लड़की से कहा, "अच्छा, फिर बताऊँगा।" और मास्टर जी के हाथ से पैसा ले गली के बाहर को भाग गया। मास्टर ने लड़की से पूछ लिया, "लक्ष्मी? क्या कह रहा था यह?"

"चाचाजी। कुछ कहता था पर मुझे समझ ही नहीं आई। यह हमेशा कुछ ऐसी ही बात कहा करता है। मां इसको पागल कहती है। मैं इसकी बात पर हँसी तो यह भी हँसने लगा।"

मास्टर शिवराम अपने बचपन से इसी मुहल्ले में रहता था। उसका पिता तथा बाबा भी यहीं पैदा हुए थे, बड़े हुए थे, उनके विवाह यहीं हुए, यहीं बच्चे पैदा हुए और स्वयं यहीं मरे थे। शिवराम भी यहीं पैदा हुआ और पला था। मुहल्ले के सब लोग–बाल–युवा–वृद्ध उसको जानते थे और जहाँ बड़े उसको बेटा कहकर पुकारते थे, वहाँ सम–वयस्क भापा, दादा, भैया कहते थे। बच्चे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसको चाचा जी कहकर सम्बोधन किया करते थे। सब उससे आत्मीयता का व्यवहार रखते थे। मास्टर भी, चाचा, ताऊ, काका, बेटा इत्यादि शब्दों से सबसे सामीप्य स्थापित किये हुए था।

लक्ष्मी रामनाथ की लड़की थी। रामनाथ एक दुकानदार था और मास्टर जी के मकान के सामने के मकान में रहता था। लक्ष्मी स्कूल की तीसरी श्रेणी में पढ़ती थी। जग्गू अभी स्कूल में भरती नहीं हुआ था। उसकी माँ उसे स्कूल में भरती कराने का विचार रखती थी और इसके लिए साधन बटोर रही थी।

मास्टर ने लक्ष्मी की बात सुनी और मुस्कराते हुए कह दिया, ''वह पागल तो नहीं है। परन्तु...।'' लक्ष्मी अपने विचार में मग्न अपने मकान में चली गयी। मास्टर भी अपने मकान की सीढियाँ चढ गया। वहाँ उसकी पत्नी राधा उसके लिए अल्पाहार तैयार कर रही थी।

उसने पानी में ठंडे किये आम धो–पोंछकर एक थाली में रखे थे। मास्टर जी आये तो उसने उनके लिए आसन बिछा दिया और पूछ लिया, ''यह लक्ष्मी क्या कहती थी?''

''कहती थी कि उसकी मां जग्गू को पागल कहती है।''

''मैं खिड़की में बैठी दोनों की बातें सुन रही थी। जग्गू हमारे मकान के चौंतरे पर बैठा था। लक्ष्मी स्कूल से आई तो जग्गू कूदकर गली में खड़ा होकर बोला, ''लक्ष्मी। मैं तुम्हारी राह देख रहा हूँ।''

'क्यों?' लक्ष्मी ने खड़े हो पूछा। वह बोला, 'मुझे तुमसे बहुत कुछ कहना है।'

''लक्ष्मी ने मुस्काराते हुए कहा, 'कहो।' तो कहने लगा, 'अभी नहीं।' और हँसने लगा तो लक्ष्मी भी हँसने लगी।''

''तो फिर?.....'' मास्टर जी ने पूछ लिया।

''इस समय आप आ गये और वह अपने मन की बात कह नहीं सका।''

''यह लड़का सत्य ही विचित्र बातें किया करता है।''

''इसी कारण तो सब उसको पागल कहते हैं।''

पर मैं जानता हूँ वह पागल नहीं है। कल उसने एक विचित्र बात कही थी। कहने लगा, ''चने की दो दल की भाँति ही लड़के–लड़कियाँ होती हैं। मैंने पूछा, 'कौन कहता है?'' तो बोला, 'मैं जानता हूँ। आप नहीं जानते।'

''राधा, उपनिषद में यही बात लिखी है।''

''क्या लिखी है?''

''स इममेवात्मनं द्वेधापातयत्ततः पतिश्चय पत्नि, चाभवतां तस्माविदमर्घवृगलमिव स्व इति।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखो राधा, यह महर्षि याज्ञवल्क्य जी का मत है कि पुरुष में संगत की इच्छा उत्पन्न होने पर वह स्वयं ही दो भागों में ऐसे बँट गया, जैसे अन्न के दाने दो दलों में विभक्त हो जाते हैं। यह दूसरा भाग स्त्री हुई और फिर मनुष्य सृष्टि हुई।"

"तो यह ठीक है क्या?"

"मैं क्या जानूं? मेरी विद्या तो यह बताती नहीं। यह जग्गू कहता था और यही महर्षि याज्ञवल्क्य ने कहा है।"

इस समय जग्गू बर्फ लेकर आ गया। राधा ने उठकर बर्फ ली और धोने गुसलखाने में चली गईं। जग्गू अपने ठंडे हुए हाथों को अपने कुर्ते पर मलकर गर्म करता हुआ, जाने के लिए सीढ़ियों की ओर घूमा तो मास्टर ने उसे वापस बुला लिया, "जग्गू। आम खाओगे?" जग्गू घूमकर मास्टर जी के मुख पर देखने लगा। वह कुछ बोला नहीं। मास्टर जी ने उसे चुप देखकर कहा, "आ जाओ! देखो, चाची से जल लेकर हाथ धो लो और यहाँ बैठ जाओ।"

जग्गू सदा मास्टर से आदर पाता था। इससे वह उनके प्रति सदा कृतज्ञता अनुभव किया करता था। राधा गुसलखाने में पति को जग्गू को आम खाने का निमन्त्रण देते सुन रही थी। इससे उसने भी आवाज दे दी, "ओ जग्गू! हाथ धो ले।"

जग्गू राधा के समीप जाकर बैठ गया। उसने हाथ धोये और फिर पोंछे। तदोपरान्त वह मास्टर जी के समीप आकर बैठा तो मास्टर ने आम काटकर दो टुकड़े एक तश्तरी में रख उसे दे दिये और हँसते हुए कहा, "जग्गू! इस प्रकार एक के दो टुकड़े लड़का–लड़की होते हैं।"

जग्गू आम का एक टुकड़ा खाने ही लगा था कि रुक गया और गम्भीरभाव में मास्टर जी के मुख पर देखने लगा। राधा समीप बैठी शर्बत बना रही थी। वह एक बड़े से काँच के जग में जल और चीनी डाल चम्मच से हिलाने लगी थी। वह भी मुस्कराती हुई जग्गू के उत्तर की प्रतीक्षा करने लगी।

ऐसा प्रतीत होता था कि जग्गू कुछ विचार कर रहा है। एकाएक उसने सिर हिलाकर कह दिया, "नहीं! यह नहीं!" और वह आम खाने लगा।

मास्टर शिवराम इसी उत्तर की आशा करता था। वह तो जग्गू को भुलावा देने के लिए ही पूछ रहा था। जग्गू आम खाने लगा। राधा को इतने मात्र से सन्तोष नहीं हुआ। उसने पूछ लिया, "यह नहीं तो और कैसे?"

जग्गू ने उत्तर नहीं दिया। वह आम खाता रहा। राधा अब शर्बत में नींबू निचोड़ रही थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक फाँक खाकर जग्गू ने दूसरी फाँक उठा ली। मास्टर भी खा रहा था। एकाएक जग्गू ने मास्टर के मुख पर देखते हुए कहा, "चने के दो दल और आम की दो फाँक में फरक है।"

"क्या फरक है!" राधा ने विस्मय में पूछा।

जग्गू आम खाने लगा था। मास्टर ने एक और आम काट कर उसकी गुठली, जिसके साथ आम का पर्याप्त गूदा लगा था, जग्गू की प्लेट में रख दिया।

जग्गू ने दूसरी फाँक समाप्त कर मास्टर जी के मुख पर देख कह दिया, "तो यह फरक आप भी नहीं जानते। मैं जानता हूँ।"

"क्या जानते हो?"

"अभी नहीं। फिर बताऊँगा।"

जग्गू जब अपनी बात बता नहीं सकता था तो कह देता था कि फिर बताऊँगा। इस पर मास्टर ने पूछा, "लक्ष्मी से क्या कह रहे थे?"

"मैं उसकी एक बात जानता हूँ।" जग्गू आम की गुठली चूसने लगा। राधा ने पूछा, "क्या जानते हो?"

राधा अब शर्बत डाल उसे हिला–हिला कर ठण्डा कर रही थी। जग्गू ने फिर खाना बन्द कर राधा की ओर देख कहा, "चाची। तुम नहीं जान सकतीं। यह बताने की चीज नहीं है। यह जानने की है।"

"बताने से जान जाऊँगी?" राधा हँस पड़ी।

मास्टर की भी हँसी निकल गई। आम की फाँक जो मास्टर खा रहा था, उसने प्लेट में रख दी। जग्गू समझ नहीं सका कि वे क्यों हँसे हैं। कुछ देर तक उनको हँसते देखता रहा। तदनन्तर वह भी हँसने लगा। उसने राधा के प्रश्न का उत्तर नहीं दिया। राधा उठकर गई और अल्मारी में से काँच के तीन गिलास उठाकर ले आई और उनमें शर्बत डालने लमी। एकाएक जग्गू मास्टर जी की ओर देख गम्भीर हो कहने लगा, "मैं बता नहीं सकता, पर मैं जानता हूँ और चाची नहीं जानतीं।"

"और मैं भी नहीं जानता क्या?" मास्टर ने मुस्कराते हुए पूछ लिया।

"आप तो जानते हैं।"

कैसे कहते हो यह? राधा ने गम्भीर हो पूछा।

"मैं जो जानता हूँ, वह कहना नहीं जानता। चाचा जी बताएँगे।"

इस पर पति–पत्नी दोनों गम्भीर हो खाने और शर्बत पीने लगे। जग्गू ने शर्बत पीया और फिर बोला, "चाचा जी, जाऊँ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बहुत जल्दी है?"

"माँ बुला रही हैं।"

"अच्छा जाओ।"

जग्गू गया तो मास्टर ने अपनी पत्नी से कहा, "इसने आज एक अद्भुत बात बताई है। इसने कहा कि यह बताने की नहीं है, जानने की हे।"

"इसमें क्या विशेषता है?"

"यही कि सब ज्ञान की बातें शब्दों में व्यक्त नहीं की जा सकतीं।"

"क्यों?"

"इसलिए कि मानव भाषा अधूरी है। इसमें बहुत–सी बातों के लिए शब्द ही नहीं हैं। उन बातों को विद्वान् लोग अनुभव करते हैं और फिर उनको वर्णन करने के लिए भाषा में नये शब्दों का आविष्कार करते हैं। यही कारण है कि उन भाषाओं में जिनमें ज्ञान–विज्ञान लिखा जा रहा है, शब्द–भण्डार नित्य वृद्धि पा रहा है। लाखों नये शब्द बनाये जा रहे हैं। इस पर भी इस सृष्टि के ज्ञान को शब्दों में व्यक्ति करने में नित नई कठिनाई अनुभव हो रही है।"

"परन्तु एक बात यह सदा और सबको कहता रहता है– मैं जानता हूँ और तुम नहीं जानते। इसी कारण मुहल्ले के लोग इसको पागल कहते हैं।"

"परन्तु यह पागल है क्या?"

राधा अनिश्चित मन बैठी रही। इस समय वह भी शर्बत पीने लगी थी। मास्टर शिवराम गम्भीर विचार में लीन शर्बत का गिलास हाथ में पकड़े यह भूल गया कि वह क्या कर रहा है। उसका ध्यान भंग हुआ जब राधा ने पूछा, "पागल के क्या लक्षण होते हैं?"

"जब मनुष्य अपने कथन अथवा कार्य का पूर्वापर सम्बन्ध न रख सके तब उसे पागल कहते हैं। इसमें कारण उसके मस्तिष्क की खराबी होती है। मस्तिष्क कार्य नहीं कर रहा होता। परन्तु इसके कामों में कोई ऐसी बात दिखाई नहीं देती। इसके कथन भी पूर्व और पश्चात् से सम्बन्ध रखते हैं। इसको देर से देर की बात भी स्मरण रहती है। इस कारण मैं इसको पागल नहीं मानता।"

"इस पर भी विचित्रता तो है!"

"हाँ, कभी इसकी माँ से इसके पिता का नाम पूछा है?"

"जब वह मुहल्ले में आई ही थी तो पूछा था। वह मुस्करा कर चुप कर रहती थी। ब्राह्मण जाति की कुलीन स्त्री भला अपने पति का नाम कैसे ले सकती है! हमने पूछा ही नहीं। हाँ, उसने यह बताया था कि वह काँगड़ा की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहने वाली है। भूचाल में इसके सब सम्बन्धी मारे गए। यह भूचाल के समय लघुशंका के लिए घर से बाहर थी और बच गई। यह लड़का तब पेट में था। उसने इसको होशियारपुर में जन्म दिया और वहाँ से वह लाहौर चली आई। इसे हमारे मुहल्ले में रहते अब तीन वर्ष हो चुके हैं। जग्गू तब दो वर्ष से बड़ा लगता था।''

''मुझको इस कथा में सन्देह है।''

''क्या सन्देह है और क्यों है?''

''एक दिन जग्गू बता रहा था कि उसका पिता जीवित है।''

''तो?''

''तो मतलब यह है कि यह बात उसने अपनी मां से जानी होगी और या तो वह अपने पति से लड़कर घर से भागी हुई है अथवा उसको यह लड़का विधवा हो जाने के पीछे किसी से मिला है।''

''एक भली औरत के विषय में आप यह कैसे विचार कर सकते हैं? मैं तो यह कहूँगी कि आपको ऐसी बात मन में भी नहीं लानी चाहिए।''

''हाँ! जग्गू का कथन प्रमाण नहीं हो सकता।''

''कुछ दिन हुए जग्गू की माँ सरस्वती आई थी और कह रही थी कि लड़का पाँच वर्ष का हो चुका है। उसकी पढ़ाई के लिए उसके पास पैसे नहीं हैं। वह चाहती थी कि आप उसको अपने साथ काम पर ले जाया करें और उसको लिखना–पढ़ना सिखा दिया करें।''

''परन्तु जिस सूरत–शक्ल में वह रहता है, उसमें उसे दुकान पर कैसे ले जा सकता हूँ।''

''मैंने कहा था। वह कहने लगी, वह उसके कपड़े बनवाने का यत्न करेगी। इसके लिए वह पैसे जमा कर रही है।''

''उससे पूछना था कि कितना कमा लेती है दिन–भर में।''

''वह खरबूज–तरबूज आदि के बीज निकालती है। दिन–भर काम करने पर दो आना कठिनाई से मिलते होंगे।''

''इससे क्या होता होगा?''

''तो क्या करे?''

''मैं समझता हूँ कि उसे कुछ अन्य काम सीखना चाहिए।''

''तो बताइए, वह क्या काम करे?''

''बताऊँगा। और तब तक तुम जग्गू को दो जोड़े कपड़े बनवा दो। एक जूता भी ले दो। मैं उसको दुकान पर काम सिखाने का प्रबन्ध कर दूँगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और पढ़ना–लिखना भी?"

"हाँ–हाँ, उसके बिना तो कुछ भी काम सिखाया नहीं जा सकेगा।"

शास्त्री तथा बी.ए., बी.टी. करने के उपरान्त मास्टर शिवराम लाहौर मॉडल स्कूल का अध्यापक नियुक्त हुआ तो वेतन पचहत्तर रुपया मासिक मिलता था। निर्वाह तो हो जाता था, परन्तु मास्टर जी की उच्च अभिलाषाएँ पूर्ण नहीं हो सकती थीं। इस स्थिति में जीवन से असन्तोष का एक कारण घर पर सन्तान न होना भी था। पंडित जी के विवाह को हुए पाँच वर्ष हो चुके थे और सन्तान के लक्षण दिखाई नहीं देते थे।

एक दिन मास्टर शिवराम स्कूल के हेड–मास्टर मिस्टर जे.डब्ल्यू.थॉम्पसन से झगड़ा कर बैठा।

वह दसवीं श्रेणी के लड़कों को पढ़ा रहा था। पढ़ाई में उसने बताया कि संस्कृत देववाणी है। एक लड़के मुजफ्फर अहमद ने पूछ लिया, "देववाणी से क्या मतलब?"

शिवराम ने कहा, "ब्रह्माण्ड की कुछ शक्तियाँ हैं। उनको देवता कहते हैं और उन शक्तियों से निरन्तर शब्द निकलता रहता है। उस शब्द को देवभाषा कहते हैं। यह देव भाषा ही वेदों की भाषा है।" मुजफ्फर अहमद समझा कि पंडित शिवराम कुफ्र पढ़ा रहा है। उसने स्कूल के अरबी के एक अध्यापक द्वारा हेड–मास्टर से शिकायत करवा दी। परिणाम यह हुआ कि मिस्टर थॉम्पसन ने पंडित शिवराम को अपने कमरे में बुला लिया और वहाँ दोनों में गम्भीर वार्तालाप हुआ। हेड–मास्टर ने पूछा, "आप लड़कों को कुछ वह भी पढ़ा रहे हैं जो स्कूल के पाठ्यक्रम में नहीं है।"

"मैं ठीक वही और उतना ही पढ़ाता हूँ जो पाठ्यक्रम में है और जितना लड़के समझ सकने की क्षमता रखते हैं।" मास्टर शिवराम का कहना था।

"मेरे पास शिकायत आई है कि आप लड़कों को यह बताते हैं कि संस्कृत परमात्मा की वाणी है और वेद संस्कृत में हैं। यह बात तो स्कूल के पाठ्यक्रम में नहीं।"

"यह स्कूल की पढ़ाई के अतिरिक्त अवश्य है, परन्तु इसका सम्बन्ध स्कूल की पढ़ाई से भी है। संस्कृत भाषा के व्याकरण में इस भाषा को देववाणी लिखा है। देववाणी की व्याख्या ही मैंने की थी और वह भी एक लड़के के पूछने पर?"

"क्या व्याख्या की थी?"

"मैंने यह बताया था कि देवता उन प्राकृतिक शक्तियों को कहते हैं, जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिव्य अर्थात् अद्वितीय गुण रखती हैं। वे शक्तियाँ निरन्तर शब्द करती रहती हैं। जब पृथ्वी बनी और उस पर प्रथम मनुष्य बना तो वह उन शब्दों को सुन–सुनकर भाषा का निर्माण कर बैठा। अक्षर, शब्द, वाक्य और अंत में मंत्र बने जिनको श्रुति कहते हैं। ये वेद हैं। इन मंत्रों से ही पूर्ण संस्कृत भाषा का आविष्कार कहिये अथवा प्रादुर्भाव कहिये, हुआ था। इस कारण वेद–मन्त्र देववाणी में हैं। संस्कृत भाषा भी देववाणी कही जाती है।''

''परन्तु'' हेड–मास्टर महोदय ने कह दिया, ''यह सत्य नहीं है। यह सुनी–सुनाई बात है। लड़कों को यह बताने से तो उनको मिथ्या ज्ञान देना हो जाएगा।''

''हमारे पास इनका प्रमाण है। कई सहस्रों वर्ष पुराना एक ग्रन्थ है। नाम है यास्काचार्य का निरुक्त और उसमें यह बात स्पष्ट लिखी मिलती है।''

''वह पुस्तक हमको मान्य नहीं।''

''तो इस विषय में मान्य क्या है?''

''यह ऐवोल्यूशन थ्योरी (विकासवाद) का विषय है। इसके अनुसार यह माना जाता है कि प्रथम मनुष्य वन–मानुष था। उसको ठीक बोलना भी नहीं आता था। भाषा तो कई सहस्र वर्षो के अनुभवों का परिणाम है।''

''सर'' शिवराम ने कह दिया, ''ऐवोल्यूशन थ्योरी अभी एक अप्रमाणित सिद्धान्त है। कम–से–कम भाषा के विषय में इसका मिथ्यावाद स्वयं दिखाई देता है। भाषा उत्तरोत्तर ह्रास को प्राप्त हो रही है। प्राचीन भाषाएँ अर्वाचीन से अधिक श्रेष्ठ थीं। इस पर भी मैं समझता हूँ कि न तो ऐवोल्यूशन थ्योरी पढ़ाना पाठयक्रम में है, न ही भाषा–विज्ञान। परन्तु जब विद्यार्थियों से किसी विषय पर बात चल पड़े तो उसको ज्ञान कराना ही पड़ता है। अध्यापक तो वही ज्ञान करा सकता है, जिसको बह सत्य ज्ञान मानता है।''

''मुझको बहुत शोक से कहना पड़ता है कि हमारे संस्कृत अध्यापक का ज्ञान ऐसा नहीं कि बच्चों को उनके अधूरे ज्ञान पर छोड़ा जा सके। मिस्टर शिवराम। या तो आपको अपने ज्ञान को परिष्कृत करना होगा, अन्यथा मुझे आपके सम्बन्ध में डायरेक्टर आफ ऐजुकेशन को लिखना पड़ेगा।''

''अच्छी बात है। मैं यत्न करूँगा कि अपने ज्ञान को उन्नत करूँ।''

''हाँ, आप तो अंग्रेजी पढ़े हैं। मैं समझता हूँ कि आपको भाषा–विज्ञान पर निकल रहे साहित्य का अध्ययन करना चाहिए। मैं पुनः ऐसी शिकायत सुनना नहीं चाहता।''

शिवराम हेड–मास्टर को नमस्कार कर कमरे से निकल आया। बाहर आ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्कूल के लॉन में खड़ा हो वह विचार करने लगा कि उस को क्या करना चाहिए। उसको यही समझ आ रहा था कि दसवीं श्रेणी के मुजफ्फर अहमद ने ही शिकायत की है। परन्तु, वह सोचता था, कि क्या भविष्य में वह लड़कों के पूछने पर यह बताया करेगा कि वेद ज्ञान एक असभ्य मस्तिष्क की अनर्गल बातें हैं।

यह बात सन् 1902 की थी।

वह सिर हिलाता हुआ घर को चल पड़ा। उसका विवाह 1897 में हुआ था। और पाँच वर्ष में कोई सन्तान नहीं हुई थी। अब सन्तान होने की आशा भी नहीं थी। इस कारण वह विचार करता था कि वह नौकरी किस लिए करता है। उसका खर्च कुछ अधिक नहीं। मकान बाप–दादाओं का था। पति–पत्नी के भोजन का काम बीस–तीस मासिक में चल सकता है। इतने भर के लिए वह एक ऐसे स्थान पर काम करता है जहाँ विद्या के स्थान पर अविद्या दान करने के लिए विवश किया जा रहा है।

अब प्रश्न यह उपस्थित हुआ कि नौकरी छोड़कर करे क्या? उसके पिता कश्मीरी दरवाजे में एक छोटी–सी दुकान करते थे। वहाँ वे चिट्ठे और शायरी की किताबें बेचा करते थे। पिता ने उस छोटी–सी दुकान की आय से और आना दो–दो आना के चिट्ठे और किस्से बेचते हुए अपने पुत्र को संस्कृत में शास्त्री और बी.ए., बी.टी. पास कराया था। इस विचार के आते ही शिवराम के मन में विचार आया कि वह अपने पिता का काम क्यों नहीं करे?

यह विचार मन को स्थिर करने में सफल हो गया। जब तक वह घर पहुँचा, तब तक उसने अपने मन में एक योजना बना ली थी। और घर पहुँचते ही उसने राधा को आवाज दे दी। राधा आयी और मास्टर जी को समय से पहले ही घर आया देख, विस्मय में पूछने लगी, "क्या बात है? आज जल्दी चले आये हैं।"

"हाँ, मैंने नौकरी छोड़ने का विचार कर लिया है।"

"क्यों?"

"इसलिए कि मुझको वहाँ कुछ ऐसी बात पढ़ाने के लिए कहा जा रहा है जो मैं समझता हूँ कि मिथ्या है। आज हेड–मास्टर से इस विषय पर बात हुई है। मैंने इस समस्या का हल यह समझा है कि नौकरी छोड़ दूँ।"

"परन्तु इतना पढ़–लिख कर क्या काम करेंगे?"

"अपने बाप–दादाओं का काम करूँगा। किताबें बेचने की दुकान करूँगा।"

"तो फिर तोता–मैना के किस्से बेचा करेंगे?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''नहीं। मैं अनारकली बाजार में अन्य पुस्तकों की दुकान खोलूँगा और फिर पुस्तकें भी लिखा करूँगा।''

''निर्वाह हो सकेगा क्या?''

''बीस–पच्चीस रुपये से निर्वाह मज़े में होगा। इतना पैदा करने का मैं वायदा करता हूँ। इतना तो एक कुली भी पैदा कर सकता है।''

''राधा चुप रही। शिवराम ने अगले दिन स्कूल से दो मास का बिना वेतन के अवकाश ले लिया और अनारकली बाज़ार में दुकान लेने चल पड़ा। दुकान मिली तो पुस्तकों की सूचियाँ और स्टाक एकत्रित करने लगा। जब दुकान का प्रबन्ध हो गया तो उसने नौकरी से त्याग–पत्र दे दिया और दुकान का उद्घाटन कर दिया। इसके उद्घाटन के लिए शिवराम ने मिस्टर थॉम्पसन को ही बुलाने की सोची। वह उनसे मिलने जा पहुँचा।

उसने मिस्टर थॉम्पसन से मिलकर कहा–

सर ! मैं अपने ज्ञान के परिवर्धन के लिए अध्यापक के काम को बाधक मानता हूँ। इस कारण उस काम को छोड़ पुस्तकों का व्यवसाय आरम्भ कर रहा हूँ। वहाँ पढ़ने को भी पुस्तकें मिलेंगी। इस कारण मैं चाहता हूँ कि आप मेरी दुकान की 'ओपनिंग–सैरमनी' अपने कर कमलों से कर मुझको आशीर्वाद दें।''

थॉम्पसन को यह जानकर प्रसन्नता हुई कि शिवराम जैसा रूढ़िवादी अध्यापक स्कूल छोड़ रहा है। साथ ही वह प्रसन्न था कि इसको जब किताबों के व्यवसाय में हानि होगी तो यह पुनः नौकरी ढूंढ़ने लगेगा। तब उसको वह अच्छी शिक्षा दे सकेगा। यह विचार कर वह उसकी दुकान के उद्घाटन के लिए तैयार हो गया।

शिवराम ने इस अवसर पर लाहौर के सब कालेजों और स्कूल के अध्यापकों को आमन्त्रित किया और इस प्रकार सैकड़ों रुपये इस अवसर पर व्यय कर दिये।

लाहौर में अभी ऐसे उद्घाटन कम होते थे। पुराने ज़माने की दुकानों के खुलने पर पूजा–पाठ का विधि–विधान तो होता था, परन्तु पढ़े–लिखे लोगों में इस प्रकार के आयोजन का यह प्रथम उदाहरण ही था। अनारकली बाजार में बहुत बड़ा समारोह हुआ। शिवराम ने उस दिन प्रातःकाल तो दुकान में पूजा करवाई और सायंकाल मिस्टर थॉम्पसन के हाथों दुकान खुलवाई। उस दिन कुछ बिक्री भी हुई। शिवराम ने मिस्टर थॉम्पसन को इण्डोलोजी पर एक जर्मन लेखक की पुस्तक 'द होम ऑफ वेदाज़' नाम की भेंट में दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस आयोजन का परिणाम हुआ कि शिवराम को स्कूलों, कालेजों और अन्य संस्थाओं के अधिकारियों से सम्बन्ध बनाने में सुभीता हो गयी। धीरे–धीरे काम चलने लगा और सन् 1905 में जब जग्गू की माँ सरस्वती दो वर्ष के जग्गू को लिए हुए मुहल्ले में पहुँची तो मास्टर एक स्वतन्त्र एवं सुविधाजनक जीवन व्यतीत कर रहा था। राधा ने सरस्वती को पहले तो अपने घर में ही आश्रय दिया और पीछे बगल के एक मकान में एक कमरा लेकर उसके रहने का प्रबंध कर दिया। माँ का जगन्नाथ और मुहल्ले का जग्गू, माँ की देख–रेख में बढ़ने लगा। सरस्वती चार–पाँच रुपये महीने का काम करती थी और माँ–पुत्र दो समय भोजन पा जाते थे। कपड़े तो वे दूसरों के फटे–पुराने माँगकर, मरम्मत कर पहन लेते थे।

सरस्वती में एक गुण था। वह पड़ोसियों के घर–बाहर के काम कर देती थी और सब उसके मीठा बोलने तथा हँसते रहने से प्रसन्न थे। जग्गू जब तीन वर्ष का हुआ तो सबके घरों में जाने लगा और एक पितृ–विहीन बालक सबकी सहानुभूति का पात्र हो गया।

मास्टर शिवराम लड़के के मस्तक पर विशेष प्रतिभा के लक्षण देखता था। उसको लड़का अति प्रतिभावान समझ आया था। वह तीन वर्ष की आयु में भी बीच–बीच में ऐसी बातें कर दिया करता था, जिसको मास्टर अद्भुत मानता था, परन्तु मुहल्ले के अन्य रहने वाले उसको उसके दिमाग की खराबी मानते थे।

जग्गू चार वर्ष के लगभग आयु का था। एक दिन वह मास्टर साहब के सामने के मकान में, लक्ष्मी की माँ को अपनी टूटी–फूटी भाषा में बता रहा था, "लक्ष्मी की माँ! मैं जानता हूँ कि तुम गुजराँवाला मकान में रही थीं।"

लक्ष्मी की मां, भोली, मुहल्ले की ही लड़की थी। वह कभी गुजराँवाला गई ही नहीं थी। भोली का विवाह मुहल्ले में ही रामनाथ अनाज के दुकानदार से हो गया था और तब तक उसके घर में तीन बच्चे थे। लक्ष्मी का बड़ा भाई था संतराम। वह उस समय आठ वर्ष की आयु का था और पिता के साथ दुकान पर काम करने लगा था। लक्ष्मी की आयु छः वर्ष की थी और लक्ष्मी का एक छोटा भाई था। नाम था कृपाराम। वह इस समय तीन वर्ष का था।

सन्तराम पिता के साथ दुकान पर गया था। लक्ष्मी स्कूल गई थी और कृपा और जग्गू खेल के साथी थे। कृपाराम दोपहर का भोजन लेने माँ के पास आया तो जग्गू को भी साथ लेता आया। माँ ने बासी रोटी और आम का अचार दोनों को दिया। जग्गू रोटी चबाते–चबाते एकाएक उक्त बात कह बैठा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोली विस्मय में जग्गू का मुख देखने लगी। फिर पूछने लगी, "कैसे जानते हो जग्गू?"

"मैंने तुम्हें वहाँ देखा है।"

"कब?" विस्मय में भोली ने पूछ लिया।

"बहुत वर्षों की बात है।"

"बहुत वर्षों की? तुम कितने बड़े थे?"

इस पर जग्गू विचारमग्न हो गया। भोली ने कह दिया, "जग्गू ऐसी बातें मत किया करो। तभी तो सब तुमको पागल कहते हैं।"

"वह क्या होता है?"

अब पागल के लक्षण भोली नहीं कर सकी। इस पर भी जग्गू दिन-प्रतिदिन मुहल्ले में पागल विख्यात होने लगा। यह बात मास्टर शिवराम को भी पता चली थी। उसने एक दिन जग्गू को मुहल्ले में अपनी आयु के लड़के और लड़कियों से खेलते देखा तो बुलाकर अपने घर पर ले गया। उसकी पत्नी राधा मुहल्ले में किसी के घर विवाह पर गाने-बजाने पर गयी हुई थी। राधा की आवाज बहुत मीठी और ऊँची थी। इस कारण गाने-बजाने के अवसर पर उसकी माँग बहुत रहती थी।

मास्टर ने राधा को घर पर नहीं देखा तो अल्मारी में से मिठाई निकाली और जग्गू को एक टुकड़ा दे स्वयं भी खाने लगा। खाते-खाते उसने पूछ लिया, "तो लक्ष्मी की माँ गुजराँवाला की रहने वाली है?"

"चाचा जी! मैं जानता हूँ, परन्तु वह मानती ही नहीं।"

"मैं तो मानता हूँ।" शिवराम ने उसको और बातें कहने में प्रोत्साहन देने के लिए पूछ लिया।

"सच?"

"हाँ।"

"तो मैं पागल नहीं हूँ?"

"पागल? नहीं। तुम पागल नहीं हो।"

"पर चाचा जी! पागल क्या होता है?"

"छोड़ो इस बात को। यह बताओ गुजराँवाला कहाँ है?"

"मैं रास्ता जानता हूँ। आप मुझको रावी के पुल पर ले चलिए तो मैं आपको गुजराँवाला ले चलूँगा।"

"अच्छा। एक दिन चलेंगे।"

बात समाप्त हो गई। शिवराम को इस दिन कुछ यह समझ आया कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

R 089.9143
GUR-L
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जग्गू अपने पिछले जन्म की बात करता है। परन्तु दुकान के काम में व्यस्त होने के कारण वह यह बात भूल गया।

इस बात को भी एक वर्ष व्यतीत हो चुका था। अब शिवराम जग्गू को आदर तथा स्नेह की दृष्टि से देखा करता था और जग्गू भी मास्टर जी को अपना कोई स्नेही मान, उनसे अपने मन की बातें निःसंकोच किया करता था।

उस दिन जब जग्गू आम खाकर चला गया और राधा को शिवराम ने कहा कि वह जग्गू को दूकान पर ले जाया करेगा, तो राधा प्रसन्न वदन सरस्वती से मिलने चल पड़ी। मास्टर दुकान पर चला गया था। राधा उठी, घर से उतरी और पड़ोस के मकान में सरस्वती की कोठरी में जा पहुँची। जग्गू माँ के पास बैठा बता रहा था, "चाचा जी ने आम खाने को दिये हैं।" सरस्वती अपने पुत्र को मुहल्ले वालों के स्नेह का पात्र देख बहुत प्रसन्न हुआ करती थी। उसको कुछ ऐसा प्रतीत होता था कि मास्टर उसके लड़के से स्नेह रखता है।

सरस्वती जानती थी कि माहल्ले की स्त्रियाँ और अब तो बच्चे भी जग्गू को पागल के नाम से बुलाते हैं। इस पर भी वह जानती थी कि उसका पुत्र पागल नहीं है।

अभी वह जग्गू से आम खाने की बात सुन प्रसन्नता के आँसू ही बहा रही थी कि राधा वहाँ आ पहुँची। कोठरी के बाहर से ही उसने आवाज़ दी, "सरस्वती!"

Central Library
167575
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

"राधा? आओ बहिन! देखो, जग्गू बता रहा है कि तुमने उसको बहुत मीठे–मीठे आम दिये हैं और शर्बत पीने को दिया है।"

"तो बहिन! रो क्यों रही हो? यह कोई दुःख की बात तो है नहीं।"

"दुःख नहीं राधा बहिन! यह तो तुम्हारा इस पगले बेटे से स्नेह देख मैं गद्गद प्रसन्न हो जाया करती हूँ और इससे खुशी के आँसू बहने लगते हैं।"

"परन्तु बहिन! तुम इसको पागल क्यों कहती हो?"

"यह सबके यहाँ ऐसे खाने बैठ जाता है जैसे सब घर इसके अपने ही हैं।"

राधा हँस पड़ी। हँसकर कहने लगी, "इस पर भी जग्गू पागल नहीं है। कम–से–कम तुम तो अपने मुख से ऐसी बात मत कहा करो। देखो, पढ़ने और काम करने की बात मैंने मास्टर जी से कही है। वे कहते हैं कि इसको पहनने योग्य कपड़े मैं सिलवा दूँ तो वे इसे अपने साथ दुकान पर ले जाया करेंगे। वहाँ यह पढ़ेगा, और काम करेगा और फिर इसको कुछ वेतन भी मिला

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करेगा।''

''सच?'' सरस्वती ने जग्गू को गले लगा लिया और अपने आंसुओ से उसके सिर को भिगोने लगी।

जब वह अपने पुत्र से प्यार कर चुकी तो उसने कहा, ''देखो बहिन! मैंने पिछले एक महीने में, इसके कपड़ों के लिए एक रुपया इकट्ठा किया है। यह तुम ले जाओ। कपड़े सिलवा दो। जितना और होगा मैं सब दे– दूँगी। अब तो जग्गू भी कमाई करने लगेगा।

राधा हँस पड़ी। हँसते हुए बोली, ''यह रुपया लेने के लिये तो मास्टर जी ने कहा नहीं। न ही उन्होंने तुम्हारे नाम कोई उधार–खाता खोलने की बात कही है। तुम जग्गू को भेज दो तो मैं अभी गली के बाहर काहन दर्जी की दुकान पर इसके कपड़े सीने दे दूँ। अब गली में इसका लड़कियों के साथ खेलना ठीक नहीं।''

''जाओ जग्गू! चाची के साथ चले जाओ। देखो, इनका कहा मानना। आज तुम बहुत बड़े बाबू बनने जा रहे हो।''

जग्गू इन सब बातों को समझता नहीं था। इस पर भी वह उठा और राधा के साथ चल पड़ा।

: 3 :

जग्गू जब बर्फ लेने गया तो लक्ष्मी अपने घर के अन्दर चली गई। उसकी माँ भोली ने पूछ लिया, ''यह पागल क्या कहता था?''

''माँ, कहता था, 'मैं तुम्हारी राह देख रहा हूँ।' मैंने पूछा, किसलिए?' तो बोला, 'मैंने तुमसे बहुत–सी बातें कहनी हैं।'

''मैंने कहा, 'कहो क्या कहना चाहते हो?' इस पर वह मेरे मुख पर देखने लगा और फिर बोला, 'अच्छा, फिर कहूँगा। और हँसने लगा। मेरी भी हँसी निकल गई।'

''इसमें भला हँसने की क्या बात थी? तुमको गली में खड़ा होकर हँसना नहीं चाहिए। अब तुम तीसरी जमायत में जाने वाली हो। पढ़ने–लिखने वाली लड़कियाँ सड़कों पर खड़ी–खड़ी हँसा नहीं करतीं।''

''पर माँ! जब वहाँ हँसता है तो मेरी भी हँसी निकल जाती है।''

''यही तो कह रही हूँ कि इसमें कोई कारण नहीं।''

''पर हँसी निकल जाती है, क्या करूँ?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अपने को वश में रखना सीखो। एक–दो वर्ष में तुम्हारा विवाह होगा। भला कब तक पागलों की बातों पर हँसा करोगी।"

"पर माँ! क्या वह सचमुच पागल है?"

"पागल नहीं तो और क्या है?"

"हमारी स्कूल की बहिन जी कहती थीं, पागल वह होता है जिस को पिछली बातें स्मरण रहें। इसको तो सब–कुछ स्मरण रहता है।"

"इसका पागलपन ऐसा ही है। इसकी बातों का परस्पर कोई सम्बन्ध नहीं रहता।"

लक्ष्मी चुप रही और रोटी तथा दूध लेने लगी। दूध पीने के बाद वह अभी माँ के पास ही बैठी थी कि इस समय कृपाराम गली में से आया और कहने लगा, "राधा चाची जग्गू पागल को पकड़कर कहीं लिए जा रही हैं।"

"कहाँ?" लक्ष्मी ने उत्सुकता से पूछ लिया।

कृपाराम बोला, "मैंने चाची से पूछा तो वे कहने लगीं, 'जेलखाने'। माँ! जेलखाना क्या होता है?"

भोली ने कह दिया, "जहाँ पागलों को रखा जाता है।"

"पर माँ!" लक्ष्मी ने कह दिया, "वह तो पागलखाना होता है।"

"हाँ, हाँ। वह एक ही बात है।"

दोनों चिन्तित मुख देखते रह गये। कृपाराम ने पहले बात की, "माँ, तो इसे वहाँ कैद रखेंगे?"

"तुम्हें क्या?"

"मैं खेलूँगा किसके साथ?"

"मुहल्ले के दूसरे लड़के जो हैं?"

"परन्तु माँ, जग्गू बहुत अच्छी–अच्छी बातें करता है।"

आधा घण्टा पीछे कृपाराम गली में से भागा–भागा आया और लक्ष्मी को कहने लगा, "लक्ष्मी, जग्गू आ गया है।"

"आ गया?"

"हाँ। राधा चाची उसका हाथ पकड़कर, अपने घर ले गई हैं।"

"तो वह पागलखाने नहीं गया?"

"लक्ष्मी! तुम जाकर पूछो।"

"किससे पूछूँ?"

"राधा चाची से।"

"क्यों पूछूँ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मेरा दोस्त है न। सब लड़के कह रहे थे कि उसने चोरी की है और वह अब नहीं आयेगा।"

इस पर लक्ष्मी भी गम्भीर हो गयी। एकाएक वह उठी और बोली, "देख, तू यहीं बैठ। मैं राधा चाची से पूछती हूँ। तू माँ को बताना कि मैं कमल के घर गई हूँ।"

कृपाराम इस झूठ का अर्थ समझ नहीं सका था। इस पर भी वह लक्ष्मी की जगह पर बैठ गया। लक्ष्मी दबे पाँव मकान के नीचे उतर गई। भोली चौके में रात का खाना बनाने का प्रबन्ध कर रही थी। लक्ष्मी राधा के घर पहुँची तो जग्गू को अपने सामने बैठा राधा कुछ कह रही थी। लक्ष्मी उनके समीप बैठ गई तो राधा चुप हो प्रश्न-भरी दृष्टि में उसके मुख पर देखने लगीं। लक्ष्मी ने राधा के समीप बैठ पूछ लिया, "चाची! यह जग्गू को कहाँ ले गई थीं? कृपा कह रहा था कि तुम इसे जेलखाने में ले गई थीं।"

राधा हँस पड़ी तो जग्गू और लक्ष्मी भी हँस पड़े। जब तीनों हँस चुके तो राधा ने पूछ लिया, "हँसी क्यों हो लक्ष्मी?"

"यह जग्गू जो हँसा है। इसे हँसते देख मेरी भी हँसी निकल जाती है।"

"अच्छा तो यह बात है। देखो लक्ष्मी! इसको परसों से जेल खाने में कैद कर दिया जायेगा। यह दिन-भर वहाँ रहा करेगा और रात को माँ के पास घर आ जाया करेगा।"

"तो सच ही इसने चोरी की है?"

"हाँ।"

"क्या चुराया है?"

"इसने मास्टर जी का स्नेह चुरा लिया है।"

स्नेह की चोरी की बात लक्ष्मी समझ नहीं सकी। वह भौंचक्की-सी राधा का मुख देखती रह गई। राधा पुनः हँसने लगी। दोनों बच्चे भी हँसने लगे। राधा ने समझाने के लिए पूछ लिया, "जानती हो? स्नेह क्या होता है?"

"हम दूसरों से प्यार जो करने लगते हैं।"

"हाँ। जब हम बिना किसी बदले की इच्छा से प्यार करते हैं तो वह स्नेह कहाता है। मास्टर जी के मन में बहुत स्नेह भरा हुआ है। जग्गू ने उस स्नेह में से कुछ चुरा लिया है। इस कारण परसों से इस चोरी के लिए इसको उनके पास दिन-भर रखा जायेगा। रात को यह अपनी माँ के पास आ जाया करेगा।"

लक्ष्मी ठीक-ठीक नहीं समझी। यह स्नेह कैसे चुराया जा सकता है, यही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात उसकी समझ में नहीं आ रही थी। परन्तु वह अपने मन के संशयों को शब्दों में व्यक्त न कर सकने के कारण चुप थी।

राधा ने उसको गम्भीर और मौन देखा तो फिर जग्गू से कहना आरम्भ कर दिया– "हाँ तो जग्गू! आज से तुम जगन्नाथ हो। यदि तुम्हें कोई जग्गू कहकर बुलाये तो मत बोलना। समझ गए हो न? दूसरी बात मैंने यह कही थी, जो कपड़े तुमको दिये जायेंगे उनको मैले मत करना। हाथ मैले हो जाएँ तो उन्हें धोकर साफ करना चाहिए। किसी मैली, गन्दी जगह पर बैठना नहीं। दुकान पर कुर्सियाँ हैं। वहाँ सदा कुर्सी पर बैठना। परन्तु यदि कोई बड़ा आदमी आये तो उठकर उसका आदर करना। यदि वहाँ कोई अन्य कुर्सी खाली न हो तो अपनी कुर्सी उसके बैठने के लिये छोड़ देना। कोई जान–पहचान का हो तो उसको हाथ जोड़कर नमस्ते कहना।

"अच्छा, अब तुम भाग जाओ। अपनी माँ से कह देना कि तुम परसों मास्टर जी के साथ आठ बजे दुकान पर जाओगे।"

जग्गू गया। लक्ष्मी हँस पड़ी। राधा ने हँसते हुए पूछ लिया, "अब क्यों हँसी हो? अब तो जग्गू हँस नहीं रहा।"

"चाची! अब हँसी हूँ जेलखाने की बात समझकर। तो जग्गू मास्टर जी की दुकान पर जायेगा?"

राधा हँस पड़ी। हँसते हुए लक्ष्मी की पीठ पर प्यार करते हुए बोली, "हाँ। अब तो लक्ष्मी बहुत ही समझदार हो गई है। अब तुम्हारी माँ से कहूँगी कि तुम्हारा विवाह हो जाना चाहिए।"

लक्ष्मी को लज्जा लगने लगी। उसकी गालों पर किंचित् लाली छा गई। राधा ने प्यार देते हुए उससे पूछा, "कौन–सी श्रेणी में पड़ती हो?"

"दूसरी में।"

"तब तो कुछ नहीं। अभी तुम्हारा विवाह नहीं होगा।"

"चाची! तुम कितना पढ़ी हो?"

"मैं? हाँ, मैं दसवीं श्रेणी तक पढ़ी हूँ। पास नहीं कर सकी।"

"तो फेल हो गई थीं?"

"नहीं। परीक्षा ही नहीं दी। मास्टर जी मुझसे विवाह के लिए जा पहुँचे।"

"तो मैं दसवी पास करूँगी?"

"हाँ। मैं तुम्हारी माँ से कहूँगी। परन्तु एक बात है।"

"क्या?"

"मुझसे आकर पढ़ा करो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो आप मुझको पढ़ायेंगी?"

"हाँ। परन्तु स्कूल की किताबें नहीं। एक अन्य पुस्तक पढ़ाया करूँगी। उसको पढ़कर तुम मनुष्य बन सकोगी।"

"अब मैं क्या हूँ!"

"अभी तुम बच्ची हो। सब दृष्टि से; शरीर से, मन से और बुद्धि से।"

लक्ष्मी समझी नहीं और बोली, "अब जाऊँ चाची?"

"तो यही पूछने आई थीं?"

"जी। कृपा कहता था, चाची जग्गू को जेलखाने में ले गई हैं?"

"तो अब पता चला है? वैसे तो यह भी एक प्रकार का जेलखाना ही है। जब किसी प्रकार के प्रतिबन्ध लग जाएँ तो वह जेलखाना ही हो जाता है।"

लक्ष्मी को माँ की बात स्मरण आ रही थी। मां ने कहा था कि अब वह तीसरी श्रेणी में जा रही है। पढ़ी–लिखी लड़कियों को गली में तथा सड़क पर हँसना नहीं चाहिए। अब उसका विवाह होगा। उसको हँसना मना है।

वह विचार करती थी कि यह भी तो एक प्रकार की बंदिश है तो वह भी एक प्रकार से जेलखाने में जाएगी। तो पढ़ने में भी जेलखाना होता है। इस विचार से तो बरबस उसकी हँसी निकल गई। वह खिलखिलाकर हँस पड़ी।

इस समय वह अपने मकान की सीढ़ियाँ चढ़ रही थी। उसकी माँ छत पर उसके कमरे में खड़ी कृपा से पूछ रही थी, "लक्ष्मी कहाँ गई है?"

कृपाराम थथलाता हुआ बता रहा था, कमल...कमल... और इस समय नीचे सीढ़ियों पर लक्ष्मी के हँसने की आवाज़ आ गई।

भोली ने लक्ष्मी के हँसने का शब्द सुना तो कृपा को छोड़ सीढ़ियों पर जा खड़ी हुई। लक्ष्मी सीढ़ियों में खड़ी हँस रही थी।

माँ ने डाँट के भाव में कहा, "तुम भी पागल हो रही हो। यहाँ खड़ी किसकी बात पर हँस रही हो?"

लक्ष्मी की हँसी एकदम समाप्त हो गई। माँ के मुख पर क्रोध का भाव देख वह कहने लगी, "राधा चाची की बात पर।"

"वहाँ क्यों गई थी?"

"यह देखने कि जग्गू जेल क्यों गया है?"

"वह गया है तो तुझे उससे क्या?"

इस समय कृपाराम को वहाँ बैठे देख उसको स्मरण हो आया कि उसने तो कमल के घर जाने का बहाना किया था। परन्तु सत्य बात मुख से निकल गई तो वह बात को बदल नहीं सकी। इस कारण उसने माँ को बता दिया,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"माँ! वह जेलखाने नहीं गया। राधा चाची उसको चाचा जी की दुकान पर भेजने की बात कह रही हैं।"

इस पर कृपाराम बोल उठा, "नहीं। वे कह रही थीं कि उसको जेलखाने ले जा रही हैं।"

भोली कुछ समझ नहीं सकी! इस पर लक्ष्मी ने सब बात बता दी और अपने हँसने का कारण बताकर पूछा, "तो मां! तुम भी जेलखाने में हो?"

"मैं तो जेल में नहीं हूँ। राधा ने गलत बात कही है।"

"तो विवाह होने पर जेल जाना नहीं होता।"

"नहीं। लड़कियाँ तो ससुराल में खुशी–खुशी जाती हैं।"

"पर विवाह में कुछ तो बंदिश होती है।"

"हाँ।" भोली ने गम्भीर हो कह दिया। "परन्तु...।" वह बात बदलकर बोली, "अब तुम अपना स्कूल का काम करो। यह तुमको सब पता चल जायेगा जब तुम्हारा विवाह होगा।"

लक्ष्मी बैठ गई। उसको जग्गू की बात स्मरण हो आई। उसने भी कहा था, "अब नहीं, फिर बताऊँगा।"

: 4 :

मुहल्ले में विख्यात जग्गू पगला अब प्रातः आठ बजे नये धुले कपड़े पहन मास्टर जी के साथ दुकान पर जाने लगा था। दिन–भर वह वहाँ ही रहता था। मास्टर जी का मध्याह्न का भोजन दुकान पर ही जाता था। उसमें जग्गू के लिए भी खाने को होता था। शाम को शर्बत–पानी लेने मास्टर जी घर पर आते थे। जग्गू भी उस समय उनके घर पर चला आता था। वह अल्पाहार तो मास्टर जी के घर लेता था, परन्तु वापस दुकान पर जाने से पूर्व माँ से मिलकर जाता था। प्रायः उस समय सरस्वती मास्टर जी के घर आ जाया करती थी। अल्पाहार लेते हुए मास्टर शिवराम सरस्वती से उसके परिवार की बात पूछा करता था। धीरे–धीरे कई दिन पूछने पर वह उसका पूर्ण इतिहास जान गया। एक दिन उसने एक बात जो उसके मन में सदा खटकती रहती थी, पूछ ली। उसने पूछा, "सरस्वती बहिन। जग्गू कहता है कि उसका पिता जीवित है।"

सरस्वती इस प्रश्न की आशा करती थी। उसने बता दिया, "जग्गू बहुत बातें किया करता है, जो न मेरी समझ में आती हैं, न ही किसी अन्य के। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण मुहल्ले के लोग उसको पागल कहते हैं। यह एक दिन कहने लगा, ''माँ! मेरे पिता जीवित हैं।''

''नहीं तो।'' मैंने कहा तो वह बोला, ''मैं जानता हूँ माँ! तुम नहीं जानतीं, अच्छा फिर बताऊँगा।'' तब से यह कभी–कभी यही बात कहता रहता है। एक दिन मैंने पूछा था, ''कहाँ हैं तुम्हारे पिता?'' तो यह कहने लगा 'दूर हैं, बहुत दूर।'

अब मास्टर ने गम्भीर हो कहा, ''एक बात जग्गू ने मुझसे कही है। वह कहता है कि वह एक औषधि जानता है जिससे मेरे घर सन्तान हो सकती है।''

''यह पागल है।''

इस पर जग्गू बोल उठा, ''नहीं माँ! मैंने चाचा जी से कहा है कि मुझको गुजराँवाला स्टेशन पर ले चलें। मैं इनको वह औषधि ढूँढ दूँगा।''

''चुप रहो जग्गू! अब तुम काम–काजी लड़के हो। यदि इसी प्रकार बातें करते रहे तो दुकान पर भी लोग पागल कहा करेंगे।''

जग्गू तो यह डाँट खाकर चुप रहा। परन्तु मास्टर शिवराम के मन में उसके पूर्व–जन्म के ज्ञान की कल्पना हरी–भरी हो उठी। दो वर्ष पूर्व उसने भोली को कहा था कि वह गुजराँवाला की रहने वाली है और उसको वहाँ का रास्ता ज्ञात है।

वह मन में विचार कर रहा था कि जग्गू की स्मृति की परीक्षा करनी चाहिए। अतः एक छुट्टी के दिन वह बहुत प्रातःकाल जग्गू को लेकर रेल से गुजराँवाला जा पहुँचा। वे स्टेशन पर पहुँचे तो जग्गू कुछ काल के लिए चकित हो स्टेशन की इमारत को देखता रह गया।

मास्टर ने प्लेटफार्म पर खडे–खड़े ही जग्गू से पूछ लिया, ''क्या देख रहे हो?''

''मैं पहचान रहा हूँ। कुछ बदल गया है। इस पर भी बहुत कुछ वही है।''

''तो तुम इस स्थान को पहचानते हो?''

''जी। परन्तु हम तो वह जड़ी ढूँढ़ने आये हैं न। चलिये।''

जग्गू मास्टर जी की उँगली पकड़कर चल पड़ा। स्टेशन से बाहर निकलने पर टिकट बाबू को टिकट देने लगे तो जग्गू हँस पड़ा।

स्टेशन से बाहर निकल मास्टर ने पूछा, ''क्यों हँसे थे?''

''उस बाबू को देखकर। वह बाबू हँसराज हैं। वह नहीं जानता। मैं जानता हूँ?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कब की बात कह रहे हो?"

"जब मैं यहाँ था।"

"तुम यहाँ थे? कब?"

"जग्गू मास्टर जी का मुख देखने लगा। एकाएक बोला, "चलिए! नहर पर चलना चाहिए।"

"कितनी दूर है यहाँ से!"

"टमटम में चलेंगे।"

शिवराम ने एक टमटम वाले से पूछा, तो उसने बताया नहर यहाँ से पाँच मील है। एक रुपया आने का एक रुपया जाने का।

"चलो।"

टमटम वाले ने आधा घण्टे में नहर के पुल पर ले जाकर खड़ा कर दिया। शिवराम ने टमटम वाले को वहाँ ठहरने को कहा और जग्गू से पूछा, "अब किधर चलें?"

जग्गू ने फिर मास्टर जी की अँगुली पकड़ी और वे नहर के किनारे जंगल में घुस गया। आधे घण्टे में वे लौटे। मास्टर जी के हाथ में एक घास के प्रकार की एक जंगली बूटी का गट्ठर लटका हुआ था। जग्गू उसी प्रकार मास्टर जी की अँगुली पकड़े हुए उनका मार्ग–दर्शन कर रहा था।

जब वे टमटम में बैठे तो कोचवान ने पूछ लिया, "बाबू! यह क्या ले जा रहे हो?"

"एक बूटी है।"

"हम देहाती लोग इसको 'रुद्रा' कहते हैं।"

"अच्छा! यह किस काम आती है?"

"सुखाकर घोड़े के मसाले में डालते हैं।'

"क्या होता है उससे?"

"घोड़े की सब बीमारियों में यह मसाला देते हैं। इसमें और भी कई दवाइयाँ डाली जाती हैं।"

टमटम वापस स्टेशन पर पहुँची तो शिवराम ने दो रुपये उसको दिये और स्टेशन पर जाकर पूछने लगा– "लाहौर की गाड़ी किस समय मिलेगी?"

"सायं पाँच बजे।" एक बाबू ने बताया।

"वहाँ किस समय पहुँचेगी?"

"रात आठ बजे।"

उस समय बारह बजे थे। बीच में पाँच घण्टे का समय था। मास्टर जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का विचार था कि शहर में चलकर कहीं। पूरी खानी चाहिए। जग्गू ने कह दिया, "चाचा जी, सोहन हलवाई से पूरी मिलेगी।"

मास्टर शिवराम समझ गया था कि जग्गू पूर्व–जन्म में गुजराँवाला का रहने वाला था। परन्तु वह इस बात को अभी किसी को कहने का साहस नहीं रखता था। वह जानता था कि इस बात को कहने पर तो कोई विश्वास नहीं करेगा।

वह जग्गू के साथ शहर की ओर घूमा तो टिकट बाबू जिसका नाम जग्गू ने हँसराज बताया था, रेल के क्वार्टरों की ओर से आता दिखाई दिया। शिवराम के मन में एक बात सूझी। उसने हंसराज की ओर घूमकर पूछ लिया, "क्षमा करें, आपका नाम हंसराज है?"

"जी। आप कैसे जानते हैं? मैंने आपको पहले कभी नहीं देखा।"

"यह लड़का आपको जानता प्रतीत होता है। मैंने तो आज ही आपके दर्शन किये हैं।"

हंसराज ने जग्गू की ओर देखा और उसको न पहचानते हुए पूछ लिया, "और तुम्हारा नाम क्या है। मुझे याद नहीं आया कि तुम किसके बेटे हो?"

"जग्गू एक क्षण तक चुप रहा। फिर बोला, "आप किसी भरतराम को जानते थे?"

"भरतराम? उनका देहान्त हुए तो दस वर्ष से ऊपर हो चुके हैं।"

"जी।" वे गाड़ी के नीचे कट कर मर गए थे।" जग्गू ने कह दिया।

"तुम कौन हो? तुम्हारी आयु तो बहुत कम है।"

जग्गू ने स्वभाववश कह दिया, "मेरा नाम जगन्नाथ है। आप मुझे पहचानते नहीं। मैं जानता हूँ। आप नहीं जानते।"

मास्टर शिवराम मुस्कराता हुआ जग्गू और हंसराज को देख रहा था। हंसराज ने मास्टर की ओर देखकर कह दिया "भरतराम को तो मैं जानता हूँ। हम दोनों सहयोगी थे। परन्तु आप कहाँ से आए हैं?"

"मैं लाहौर का रहने वाला हूँ। इस औषधि की आवश्यकता थी। इसको लेने आया था। नहर के किनारे इसका पता चला था। वहाँ से यह लेकर वापस लाहौर जा रहा हूँ। गाड़ी पाँच बजे मिलेगी। इस कारण शहर में पूरी वगैरह खाने के विचार से जा रहे थे।"

"परन्तु भरतराम को कैसे जानते हैं? उसकी पत्नी मेरे क्वार्टर में ही है। यह लड़का भरतराम का क्या है? उसको कैसे जानता है?"

शिवराम इस चर्चा पर तो अनिश्चित मन खड़ा रह गया। वह इस विषय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में कुछ जानता भी नहीं था और वह लड़के के पूर्व–जन्म के अनुमान के विषय में कहना नहीं चाहता था। वह अभी विचार कर ही रहा था कि कुछ उत्तर दे अथवा न कि जग्गू बोल उठा "तो सुहागिन आपके क्वार्टर में है?"

यह नाम सुन तो हंसराज अवाक् जग्गू का मुख देखता रह गया। जग्गू ने मास्टर जी की ओर देखकर कहा, "चाचा जी! चलिए, सुहागिन देवी से मिल लें।"

"हाँ आइये।" हंसराज ने कह दिया, भोजन मेरे गरीबखाने पर ही कर लीजिएगा।"

शिवराम अभी अनिश्चित मन ही खड़ा था कि हंसराज ने कह दिया, "तनिक ठहरिए! मैं स्टेशन पर बड़े बाबू से कहकर आता हूँ।"

हंसराज स्टेशन पर स्टेशन मास्टर के कमरे में चला गया और शिवराम ने जग्गू से कहा, "जग्गू! तुम सबको पहचानते हो और फिर कह देते हो, मैं जानता हूँ, तुम नहीं जानते। यह बात तो ठीक नहीं।"

"इसमें क्या खराबी है? असल बात तो यही है। ये सब लोग मेरी बात समझते नहीं। मैं इनको बता नहीं सकता। बताता हूँ तो मानते नहीं। इसलिए कह देता हूँ कि ये जानते नहीं।"

"जब तुम इनको समझा नहीं सकते तो फिर वह बात कहते ही क्यों हो?"

"मेरे न चाहते हुए भी मुख से निकल जाती है। इस पर भी मैं समझता हूँ कि सुहागिन को समझा सकूँगा।"

"वह कौन है?"

"भरतराम की पत्नी।"

इस समय हंसराज आ गया और शिवराम के हाथ से रुद्रा बूटी का बंडल पकड़कर कहने लगा, "लाइये, आपका बोझ कुछ देर के लिए तो हल्का कर दूँ।"

तीनों क्वार्टरों की ओर चल पड़े। एक क्वार्टर के बाहर पहुँच हंसराज ने आवाज दी, "गुल्लू! गुल्लू!!"

एक सात वर्ष का लड़का भीतर से आया तो हंसराज ने कहा, "गुल्लू, अपनी माँ से चाबी लेकर बैठक खोल दो।"

गुल्लू भीतर गया और क्वार्टर के बगल के कमरे का ताला खोलने की चाबी ले आया। दरवाजा खोला गया और वे सब उसमें बैठ गये। हंसराज ने गुल्लू को कहा, "माँ से कहो मेहमान आये हैं। पूरी बना दे। और देखो, माँ से कहना, जरा बाहर आ जाए। उसको जानने वाले ही आये हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुल्लू गया तो शिवराम ने कहा, ''हंसराज जी! यह कहता है कि यह सुहागिन देवी को जानता है। मैं तो आप लोगों से बिल्कुल परिचित नहीं।''

हंसराज प्रश्न–भरी दृष्टि से जग्गू की ओर देखकर पूछने लगा, ''तुम कौन हो बेटा?''

जग्गू ने मुस्कराते हुए कहा, ''मैं जगन्नाथ हूँ। इस पर भी सुहागिन देवी को आने दीजिए। वह मुझे पहचान सकेंगी।''

हंसराज भौचक्का रह गया। तीनों अपने–अपने विचारों में लीन बैठे रहे। शिवराम भयभीत था। वह समझ गया कि भरतराम की पत्नी सुहागिन बाबू हंसराज की पत्नी बन चुकी है। गुल्लू इन दोनों का लड़का है। वह नहीं जानता था कि जग्गू का भरतराम से क्या सम्बन्ध रहा है और किस प्रकार वह सुहागिन को अपना परिचय देने वाला है।

इस समय गुल्लू फिर आया। वह कहने लगा, ''पिता जी! माँ आ रही है। बिशम्बर सब्जी बनाने लगा है।''

इस सूचना पर भी कोई बोला नहीं।

एक छब्बीस–सत्ताईस वर्ष की अच्छी–खासी सुन्दर स्त्री, सफेद धुले वस्त्र पहने आयी और विस्मय में तीनों का मुख देखती हुई सामने बैठ गई। हंसराज ने ही बात आरम्भ की। उसने कहा, ''यह लड़का मेरा नाम, भरत जी का नाम और तुम्हारा नाम जानता है। जब मैंने कहा कि तुम क्वार्टर में हो तो कहने लगा कि यह तुमसे मिलेगा।''

सुहागिन ने पूछ लिया, ''बेटा! किसके पुत्र हो तुम?''

''मैं आपसे पृथक् में बात करूँगा।''

''क्यों?''

''अपना नाम–घाम बताने के लिए।''

''तो आओ, भीतर आ जाओ। तुम कुछ जाने–पहचाने से हो। आओ।''

''सुहागिन जी! मैं जानता हूँ परन्तु....।'' जगन्नाथ कहते–कहते रुक गया। शिवराम की हँसी निकल गई। वह समझ गया था कि जग्गू क्या कहने लगा है। मास्टर जी को हँसते देख जग्गू चुप कर गया। और उठकर बोला, ''तो चलिए।''

दोनों क्वार्टर के भीतर चले गए। हंसराज और शिवराम बाहर बैठे रह गए। हंसराज ने कहा, ''मुझे कुछ भी समझ नहीं आ रहा। देखिये, मैं आपको बताता हूँ। भरतराम और मैं इकट्ठे ही इस स्टेशन पर आए थे। दोनों नये भरती हुए थे। भरतराम बहुत ही सरल चित्त और मीठा बोलने वाला था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे यहाँ आने पर भरतराम का विवाह हो गया। यह सुहागिन तब चौदह वर्ष की लड़की थी। तब यह और अधिक सुन्दर थी। दो वर्ष तक हम यहाँ रहे। मैं अविवाहित था। भरतराम अपनी पत्नी से सर्वथा प्रसन्न था। एक दिन भरतराम क़ी ड्यूटी रात की थी। और वह शंटिंग करते हुए इंजन के नीचे आकर कट गया।

भरतराम का संस्कार किया गया। उसके गाँव के लोग आये और सुहागिन को साथ ले गए। फिर दो वर्ष उपरान्त सुहागिन आयी। वह मुझसे विवाह की इच्छा करने लगी। मैं अभी अविवाहित था। इस कारण मैं तैयार हो गया। इसको नौ वर्ष के लगभग हो चुके है। मेरी यहाँ से बदली हो गई। मैं इमनाबाद चला गया और यह गुल्लू वहाँ ही पैदा हुआ था। इसके उपरान्त दो बच्चे और हैं। वे भी भीतर हैं। एक लड़की है और एक छोटा लड़का है।

"मैं सुहागिन से बहुत प्रसन्न हूँ। यह निष्ठावान और बहुत ही नेक औरत है परन्तु यह लड़का तो अभी बहुत ही कम आयु का प्रतीत होता है। जब से विवाह हुआ है सुहागिन मुझको छोड़ कहीं नहीं गई। मैं इमनाबाद से शाहदरा चला गया था और वहाँ से फिर यहाँ आ गया। यह हमको कहाँ मिला है; मैं नहीं जान सका।"

इसमें शिवराम को कहने के लिए कुछ नहीं था। उसने केवल यह कहा, "मुझे यह जगन्नाथ बहुत ही प्यारा लगता है। यह हमारे पड़ोस में एक विधवा ब्राह्मणी का लड़का है। मैं आज गुजराँवाला आने लगा तो यह मेरे साथ चला आया है।

"जब आप टिकट ले रहे थे तो इसने बताया कि यह आपको जानता है और आपका नाम बाबू हंसराज है। शेष बात आपके सामने ही हुई हैं।"

ये अभी बातें ही कर रहे थे कि हंसराज का नौकर बिशम्बर दो थालियों में पूरी, साग, चटनी, अचार, और एक–एक टुकड़ी मिठाई की रखकर ले आया। जब उसने थालियाँ उनके सामने रख दीं तो दोनों उठे और हाथ धोने के लिए बैठक के बाहर गुसलखाने में चले गये। नौकर वहीं खड़ा रहा। हाथ धो और पोंछते हुए वे बाहर आये और बिशम्बर को वहाँ खड़े देख हंसराज ने कहा, "उस लड़के के लिए भी ले आओ।"

"बीबी जी कहती हैं आप खाइये। वह भीतर उनके पास बैठकर ही खायेगा।"

"ओह!" हंसराज के मुख से निकल गया। अब वे दोनों खाने लगे। भोजन समाप्त हुआ, परन्तु जग्गू और सुहागिन अभी भी नहीं आये। हंसराज ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवाज दी, ''गुल्लू! ओ गुल्लू!''

गुल्लू बाहर आया तो हंसराज ने पूछ लिया, ''माँ कहाँ हैं?''

''वे भीतर बरामदे में बैठी रो रही हैं और वह लड़का भोजन समाप्त कर सामने बैठा बातें कर रहा है।''

इससे हंसराज परेशानी अनुभव करते हुए उठा और भीतर चला गया। दो–तीन मिनट में ही हंसराज, सुहागिन, जग्गू और हंसराज के बच्चे बाहर आ गये। सुहागिन की आँखें फूल रही थीं। यह स्पष्ट था कि वह बहुत रोई है। जग्गू भी गम्भीर था।

बाहर आकर हंसराज ने कहा, ''आइये, आप वेटिंग–रूम में चल कर आराम करियेगा। गाड़ी के समय से पूर्व आपको गाड़ी में चढ़ाने आऊंगा।''

शिवराम समझ गया कि जग्गू ने कुछ पते की बात सुहागिन से कही है। इससे वह रो पड़ी है। अतः पति–पत्नी को उस दिन की घटना पर विचार करने के लिए एकान्त देने के विचार से वह वेटिंग–रूम की ओर चल दिया। जड़ी का बंडल शिवराम ने पुनः हाथ में लटका लिया था।

: 5 :

फर्स्ट क्लास के वेटिंग–रूम में बैठकर शिवराम ने पूछा, ''उस औरत से क्या कहा है तुमने, जो वह रोने लगी थी?''

''चाचा जी! वह कहती थी कि मुझको यह बात किसी को नहीं बतानी चाहिए। इतना कह वह रोने लगी और रोती ही गई। मैंने पूछा भी कि क्या खराबी है इस बात में? परन्तु वह मेरे पाँव छूकर बोली, उस पर दया करूँ और किसी से कुछ न कहूँ।''

''तो तुम पिछले जन्म के भरतराम हो?''

इस पर जग्गू कुछ देर तक चुप रहा और फिर पूछने लगा, ''चाचा जी, इसमें छुपाने की क्या बात है?''

''जग्गू! तुम नहीं जानते। मैं जानता हूँ कि...।'' मास्टर इसके आगे कुछ नहीं कह सका। जग्गू खिलखिलाकर हँस पड़ा। शिवराम प्रश्न–भरी दृष्टि से उसकी ओर देखने लगा तो उसने अपनी हँसी रोक कहा, ''चाचा जी आज आप भी वही बात कहने लगे हैं जो मैं कहा करता हूँ।''

''मेरी बात दूसरी है जग्गू! मैं आयु में तुमसे बड़ा हूँ। संसार को तुमसे अधिक जानता हूँ और तुम नहीं जानते।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु क्या आप मुझसे बड़े हैं?"

"क्यों? नहीं हूँ क्या?"

"मैं समझता हूँ कि आप और मैं एक ही आयु के हैं। यह शरीर मेरा आपसे कुछ नया है। आपका कुछ पुराना है। परन्तु ये शरीर तो कपड़ों की भाँति बदलते रहते हैं। इनके अतिरिक्त मैं, माँ, आप, चाची और बहुत से हैं जो सब एक ही आयु के हैं।"

"कितनी आयु के हैं?" मास्टर ने गम्भीर हो पूछ लिया।

"गिनी नहीं जा सकती।"

मास्टर शिवराम समझ रहा था कि जग्गू आत्मा की बात कर रहा है। उसने कह दिया, "परन्तु जग्गू! इस शरीर के अतिरिक्त तुम क्या देखते हो?"

"तो आप नहीं देखते?"

"मुझको तो कुछ और दिखाई नहीं देता।" शिवराम ने मुस्कराते हुए कहा।

"ठीक है। आप मुझसे बड़े हैं और मुझसे अधिक पढ़े हैं।"

"अब तो तुम भी पढ़ने लगे हो।"

"मुझे कुछ ऐसा लगता है कि ज्यों–ज्यों मैं पढ़ता जाता हूँ, मुझे कुछ दूसरी बातें भूलती जाती हैं।"

"कौन–सी दूसरी बातें।"

"जो कुछ मुझे इस शरीर से पहले शरीर में विदित थीं।"

"क्या विदित था जो भूल रहे हो?"

"यही बूटी की ही बात है। मुझे इसका नाम भूल गया था। उस ताँगे वाले ने बताया तो याद आ गया। यह 'रुद्रा' है।"

"इसी प्रकार मुझे भरतराम की पत्नी का नाम भूल गया था। हंसराज ने बताया तो याद आ गया कि वह सुहागिन थी।"

शिवराम की हँसी निकल गई। हँसते हुए उसने कहा, "तो सुहागिन ने यही बात किसी को न कहने के लिए कहा है?"

"जी नहीं। वह कोई गुप्त बात थी। मुझे उसके गोपनीय होने का ज्ञान नहीं था। सुहागिन ने बताया है कि वह बात मुझको नहीं कहनी चाहिए। मैंने वचन दिया है कि नहीं कहूँगा।"

"तो यह सुहागिन भरतराम की पत्नी नहीं?"

"जी नहीं। परन्तु मैं नहीं बताऊंगा। आप भी विश्वास नहीं करेंगे।"

"कैसे कहते हो? मैं तुम्हारी सब बातों पर विश्वास करता हूँ। देखो न।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस बूटी को लेने चला आया हूँ।''

''आज से दस वर्ष उपरान्त बताऊँगा।''

''यह क्यों!''

''मैं जो कुछ बताना चाहता हूँ, वह बता नहीं सकता। मन में बात तो है परन्तु कैसे कहूँ यह जानता नहीं। एक बात मुझे आज पता चली है। मैं विचार करता हूँ कि और बातें भी पता चल जायेंगी। तब बताऊँगा।''

''तुम भरतराम नहीं हो?''

''जी नहीं।''

''यह सुहागिन तुम्हारी क्या है?''

''यहीं बात तो बताना नहीं।''

इस पर शिवराम ने बात बदल दी। वह आराम कुर्सी पर बैठा था। जरा सहारा लेकर बैठा तो ऊँघने लगा। जग्गू भी अपने मन की बात में लीन आँखें मूंदकर बैठा तो सो गया।

साढ़े चार बजे के लगभग हंसराज आया। शिवराम गुसलखाने में गया हुआ था। हंसराज आया तो जगन्नाथ पूछने लगा, ''तुम्हारे साथ जो हैं, वे कौन हैं?''

''ये लाहौर में किताबों की दुकान करते हैं। इनकी दुकान पर काम भी करता हूँ और पढ़ता भी हूँ।''

''क्या पढ़ते हो?''

''हिन्दी और गणित। ये कहते हैं कि मुझे संस्कृत पढ़ायेंगे और फिर अंग्रेजी भी।''

''अच्छा देखो। जो कुछ तुमने सुहागिन से कहा है, किसी को नहीं बताना। वह तुमको लाहौर में मिलने आयेगी।''

''तो उसने आपको बता दिया है।''

''हाँ! वह मेरी पत्नी है और पति–पत्नी में कोई बात छुपी नहीं रहती। तुम उसके पति नही हो। इससे तुम्हारी बात दूसरी है।''

''मुझे उसने समझा दिया है। मैं किसी से नहीं कहूँगा।''

इस समय शिवराम गुसलखाने से निकल आया। हंसराज जगन्नाथ से बातें बन्द कर शिवराम से पूछने लगा, ''आपने टिकट अभी खरीदा है अथवा नहीं?''

''नहीं।''

''तो मैं खरीद लाता हूँ। फर्स्ट क्लास का या किसी दूसरे दर्जे का।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"फर्स्ट क्लास का।"

हंसराज उठकर जाने लगा तो शिवराम ने दस रुपये का एक नोट दे दिया। हंसराज टिकट लेने चला गया।

इसके उपरान्त शिवराम ने जग्गू से सुहागिन के विषय की बात नहीं की। जग्गू भी दूसरी बातें करता रहा।

अगले दिन ही जग्गू ने जड़ी की स्वरस निकाल श्वेत मिर्चा पीस गोलियाँ बनाने का ढंग बता दिया। राधा ने वैसा ही किया, जैसा जग्गू ने बताया था। मास्टर ने बताया नहीं कि इस औषधि से क्या होगा। इस पर भी राधा समझ रही थी कि यह उसके सन्तान होने के साथ सम्बन्ध रखती हैं।

गोलियाँ बनने और सूखने में कई दिन लगे। तदनन्तर जग्गू ने तीन–तीन गोलियाँ प्रतिदिन गो–दुग्ध से लेने के लिए कह दिया। एक महीना भर औषधि खाई गई और मास्टर जी के विस्मय का ठिकाना नहीं रहा, जब राधा ने बताया कि उसके नियमित मासिक धर्म नहीं हुआ। मास्टर जी के मन में जग्गू की मान–प्रतिष्ठा बढ़ गई। उसने जग्गू का वेतन दस रुपया मासिक कर दिया। जग्गू की माँ सरस्वती को एक दर्जी से कपड़े सीने का काम सीखने के लिए निश्चय कर दिया।

जग्गू अपनी पढ़ाई में द्रूत–गति से उन्नति कर रहा था। राधा अभी पाँचवे मास में जा रही थी कि जग्गू हिन्दी की तीसरी पुस्तक समाप्त कर चुका था। राधा को भी अब जग्गू की विचित्र बातों का रहस्य पता चल गया था। शिवराम और राधा जग्गू को अपने पूर्व–जन्म की बातें स्मरण करने में सहायता देते रहते थे।

एक दिन हंसराज और सुहागिन, दोनों जग्गू से मिलने आये। वे अनारकली बाजार में 'न्यू बुक एजेन्सी' पर जा पहुँचे। यह मास्टर शिवराम की दुकान थी। मास्टर तो अपनी मेज पर बैठा गवर्नमेण्ट कॉलेज को दे दी गई पुस्तकों का बिल बना रहा था। कई सहस्र रुपये की पुस्तकें थीं और एक लम्बा–चौड़ा बिल था। जग्गू पुस्तकें अल्मारी में झाड़–पोंछकर ठीक तरकीब से रख रहा था। एक अन्य कर्मचारी भी दुकान पर था। कुछ विद्यार्थी किताबें खरीदने आये हुए थे और वह कर्मचारी उनको पुस्तकें दिखा रहा था।

जग्गु ने हंसराज और सुहागिन को दुकान में प्रवेश करते देखा तो अपना काम छोड़ उनके सामने आ हाथ जोड़ नमस्कार करने लगा। "देखो जगन्नाथ! हम तुमसे मिलने आ पहुँचे।" हंसराज ने कहा।

"जी! चाचा जी से मिलियेगा?"

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ! कहाँ हैं?"

"वे पिछले कमरे में हैं। आइये।"

जब सब वहाँ पहुँचे तो शिवराम ने सबको बैठाया और जग्गू को समीप केसरी सोडा वाटर वाले की दुकान से बर्फ और रोज की बोतलें लाने के लिए भेज दिया। जग्गू गया तो शिवराम ने कहा, "आप पाँच मिनट ठहरिए। यह एक अत्यावश्यक और जल्दी का काम है। अभी समाप्त हो रहा है। तब आपकी सेवा करूँगा।"

जग्गू आया और तीन गिलास, तीन बोतलें तथा बर्फ ले आया। दुकान का दूसरा कर्मचारी इस समय अवकाश पा गया था। वह आया तो शिवराम ने बिल तैयार कर लिफाफे में बन्द कर 'पियन बुक' पर चढ़ाकर उसको देते हुए कहा, "देखो निरंजन! इसे बाइसिकल पर ले जाओ और क्लर्क को दे आओ।"

निरंजन ने बिल और 'पियन बुक' ली और दुकान के बाहर रखी बाइसिकल पर सवार हो चला गया। इस प्रकार अवकाश पा शिवराम ने हंसराज इत्यादि के लिए रोज की बोतलें खोल गिलासों में डाल दीं और उनको देते हुए कहा, "अभी हम भोजन करेंगे। पीछे जगन्नाथ की माँ से आपको मिला दूँगा।"

"हम तो आपसे मिलने आये हैं।"

शिवराम ने मुस्कराते हुए पूछा, "मैं समझता था कि जगन्नाथ से मिलने आये हैं?"

"उससे तो मिलेंगे ही।" सुहागिन ने कहा, "परन्तु आपसे भी मिलना था। हम देखना चाहते थे कि आप जगन्नाथ से कैसा व्यवहार करते हैं और इसके पढ़ने–लिखने का क्या प्रबन्ध है। यदि आप चाहें तो इसकी पढ़ाई–लिखाई में हम कुछ सहायता कर सकते हैं?"

"क्या सहायता कर सकेंगे?"

उत्तर हंसराज ने दिया, "जब आप गुजराँवाला में आए थे, मैंने अपने महकमा की परीक्षा दी हुई थी। आपके जाने के एक सप्ताह के भीतर ही मेरा परीक्षाफल घोषित हुआ था। मैं इस वर्ष परीक्षा देने वालों में प्रथम रहा हूँ। अब मेरी नौकरी असिस्टेंट स्टेशन मास्टर लाहौर की जगह पर लग गई है। मुझे यहाँ आये महीना हो रहा है। मेरा वेतन डेढ़ सो रुपया महीना है। इसके अतिरिक्त भी यहाँ पर आय होती है। सब मिलमिलाकर ढाई और तीन सौ रुपया महीना बन जाता है। इस कारण यह सुहागिन कह रही थी कि इसमें से जगन्नाथ के लिए कुछ देना ही चाहिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखो हंसराज जी!" शिवराम ने कह दिया, "जहाँ तक पढ़ाई का सम्बन्ध है, मैंने बी.ए., बी.टी. पास किया है। इस पर भी स्कूलों में दी जाने वाली शिक्षा मैं निरर्थक मानता हूँ। मैं इसको घर पर पढ़ा रहा हूँ। इसको डेढ़ वर्ष के लगमग पढ़ते हो चुके हैं। इतने काल में यह हिन्दी लिखने–पढ़ने लगा है। गणित में भी पर्याप्त उन्नति कर चुका है। तिजारत के प्रश्न करने लगा है। इसको एलजबरा भी सिखा रहा हूँ। अब मैं इसको संस्कृत पढ़ाने का प्रबन्ध कर रहा हूँ। तीन–चार वर्ष में यह उस भाषा को भी पढ़ने लगेगा। यह लड़का अति प्रतिभावान है और मैं समझता हूँ, पन्द्रह वर्ष की आयु तक यह एम. ए. तक पढ़ाई कर लेगा।

"इस पर भी यदि यह और इसकी माँ माने तो आप इसको जिस स्कूल में चाहें भरती करा दें।"

जगन्नाथ समीप बैठा बातें सुन रहा था। हंसराज ने प्रश्नभरी दृष्टि से उसकी ओर देखा तो जगन्नाथ ने पूछ लिया, "बाबू हंसराज! कहाँ भरती करायेंगे मुझको?"

"देखो जगन्नाथ! एक रेलवे स्कूल है। वहाँ रेल–कर्मचारियों के बच्चे भरती होते हैं। गुल्लू को हमने वहाँ भरती करा दिया है। फीस तो कुछ अधिक नहीं। हाँ कपड़े अंग्रेजी ढंग के पहनने होते हैं और उसी पर पच्चीस रुपया महीना खर्च बैठ जाता है। कहो तो उस स्कूल में भरती करा सकता हूँ। तुम पहली श्रेणी में भरती हो सकोगे। वहाँ हिन्दी नहीं पढ़ाई जाती। अंग्रेजी ही पढ़नी होगी। समय पाकर बड़े अफसर बन सकोगे।"

जग्गु की आँखों में चमक दौड़ गई और वह हँस पड़ा। हँसते हुए उसने मास्टर जी की ओर देखकर कहा, "चाचा जी! मैं वहाँ नहीं पढ़ूँगा?"

शिवराम ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "क्यों? अफसर बनने को जी नहीं चाहता?"

"सो तो मैं पहले ही हूँ। देखिये बाबू हंसराज! मैं वहाँ नहीं पढूंगा। मेरी पढ़ाई हो रही है।"

"क्या हो रही है?" सुहागिन ने पूछ लिया।

"तुम नहीं जानतीं। मैं जानता हूँ। दस वर्ष उपरान्त मैं तुमको बताऊंगा।"

इस समय शिवराम मुस्कराता हुआ हंसराज और सुहागिन की ओर देख रहा था। हंसराज तो इस उत्तर से सन्तुष्ट प्रतीत होता था, परन्तु सुहागिन प्रसन्न नहीं थी। शिवराम यह देख रहा था। वह इस विषय को बन्द करना चाहता था। उसका विचार था कि जग्गू अथवा उसकी माँ एक अफसर बनने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के प्रलोभन में फँस सकते हैं और वह समझता था कि यह जगन्नाथ के हित में नहीं होगा। वह उससे बहुत आशाएं लगाने लगा था।

शिवराम ने कह दिया, "अभी भोजन के उपरान्त इसकी मां से मिलकर बात कर लीजियगा। कदाचित् उसको आपकी योजना पसन्द आ जाये।"

यह बात सुहागिन को पसन्द आई।

शिवराम ने बाजार से हलवाई की दुकान से पूरी मंगवा लीं और हंसराज इत्यादि को खिलाईं। उसके उपरान्त वे शिवराम के घर जा पहुँचे। वहाँ ही उन्होंने सरस्वती को बुला लिया। सरस्वती ने तो बात सुनते ही इन्कार कर दिया। जब हंसराज ने आग्रह किया तो सरस्वती ने कह दिया, "जी नही। जगन्नाथ मास्टर जी की ही दुकान पर काम करेगा।"

इस पर बात समाप्त हो गई।

अपराह्न का अल्पाहार लेकर वे विदा हो गये।

: 6 :

राधा के लड़का हुआ। शिवराम इससे बहुत प्रसन्न था। उसने जगन्नाथ का वेतन और बढ़ा दिया। जगन्नाथ को अब बीस रुपये मासिक मिलने लगा। इसके अतिरिक्त सरस्वती और जगन्नाथ को अपने ही मकान की सबसे ऊपर की छत में रहने को स्थान दे दिया। लड़के के नामाकरण संस्कार पर शिवराम ने सरस्वती और जगन्नाथ को नये रेशमी कपड़े बनवा दिये। शिवराम ने जगन्नाथ को बताया, "यह तुम्हारी औषधि का ही परिणाम प्रतीत होता है।" जगन्नाथ ने कहा, "मुझको विश्वास था कि ऐसा होगा।"

"यह सब तुम कैसे जानते थे?"

"तो बताऊँ आपको?"

"हाँ। जरूर बताओ। कुछ सन्देह तो मेरे मन में भी है।"

"क्या समझते हैं आप?"

"यह कि तुम पिछले जन्म में कोई बड़े हकीम रहे हो। या तुम कोई महानात्मा हो।"

"नहीं। ऐसी कोई बात नहीं। मैं महानात्मा उतना ही हूँ, जितने आप हैं। आत्मा तो सदा ही महान् होती है। यह तो मन और बुद्धि से अन्तर पड़ जाता है। मेरा मन और बुद्धि अभी निर्मल हैं। देखिए, अभी मैं इतना ही बताता हूँ कि मैं हकीम सुखदयाल का लड़का रामदयाल था। वे हकीम साहब शायद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभी भी गुजराँवाला में हिकमत करते हैं। यह औषधि मुझे उन्हीं से पता चली थी। उस जन्म में भी मैं विशेषता रखता था। मेरा मन तब भी इतना निर्मल था कि मैं उस जन्म से पूर्व की बातें जानता था।

"इतना और बता सकता हूँ कि मैं भरतराम से दो वर्ष बड़ा था। भरतराम ने आत्महत्या की थी। इसमें कारण सुहागिन थी। दो वर्ष पश्चात् सुहागिन मुझसे विवाह करने आई थी, परन्तु उसके वहाँ पहुँचने से पहले मैं चेचक की बीमारी से मर चुका था।

"आज भी उन दिनों की बातों को भली–भाँति जानता हूँ। इसमें कारण यही है कि मेरा मन इतना सबल और निर्मल है कि तब के संस्कार उस पर भली–भांति अंकित हैं। हाँ, मेरी बुद्धि मेरा साथ नहीं देती। परन्तु आपकी कृपा से वह भी निर्मल होती जाती है। इससे तब की और उससे भी पहले की बातों का अर्थ मुझे समझ में आने लगा है।"

"अभी भी कुछ है जो मैं समझ नहीं सकता। इसी कारण मैं कह देता हूँ कि मैं फिर बताऊँगा।"

"जगन्नाथ! मेरा विचार है कि तुम अब संस्कृत पढ़नी आरम्भ कर दो और साथ ही प्रातःकाल एक घण्टा तक गायत्री मंत्र का जाप तथा प्राणायाम किया करो। इससे बुद्धि भी काम करने लगेगी।"

"बुद्धि प्रत्येक जन्म में नई मिलती है। मन आत्मा के साथ–साथ एक जन्म से दूसरे जन्म में जाता है। यदि इसको काम, क्रोध, मोह, लोभ और अहंकार से बचाकर रखें तो यइ निर्मल होता जाता है।"

"जी। यह बात आपने पहले भी समझाई थी। मैं इस दिशा में यत्न कर रहा हूँ। मैं आज आपको एक और बात बताना चाहता हूँ।"

"यह लक्ष्मी मेरा ही एक अंश है गुजराँवाला का नहीं। वरन् उससे पहले का। मुझको कुछ ऐसा अनुभव होता है कि एक समय था। कब और कहाँ, अभी मैं जान नहीं सका। परन्तु यह और मैं एक समय ऐसे थे, जैसे कमरे की हवा में धूपबत्ती की सुगन्धि मिल जाती है। मुझे कुछ ऐसा समझ आता है कि उस समय, हम एक ही थे। पीछे हम ऐसे दो हो गये जैसे चने के दाने के दो दल पृथक्–पृथक् हो जाते हैं। मैं यह जानता हूँ, परन्तु वह नहीं जानती।"

इस पर शिवराम को लक्ष्मी की माँ भोली की बात स्मरण हो आई। उसने पूछ लिया, "और भोली को कब से जानते हो?"

वह गुजराँवाला में मेरी माँ थी। सुखदयाल जी की पहली पत्नी। मैं अभी छः वर्ष की आयु का था कि इसका देहान्त हो गया तब से यह कदाचित् यहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही है।

"हकीम साहब की मुझसे बनती नहीं थी। उनकी नयी पत्नी मुझसे द्वेष रखती थी। जब उसके कोई संतान नहीं हुई तो हकीम साहब ने यही रुद्रा की औषधि बनवाकर स्वयं खाई थी और फिर मेरी विमाता के घर पाँच बच्चे, एक–एक वर्ष बाद हुए थे।"

इस पर शिवराम हँसकर बोला– "तो तुम समझते हो कि मेरे पाँच बच्चे होंगे?"

जगन्नाथ हँस पड़ा और बोला, "यह मैं नहीं जानता।"

मास्टर शिवराम को जगन्नाथ की बात की सच्चाई का विश्वास हो रहा था। वह देख रहा था कि लक्ष्मी अब जगन्नाथ को देखने के लिए व्याकुल रहती है। इस समय उसकी आयु दस वर्ष की हो चुकी थी। जगन्नाथ अभी सात वर्ष का था। दोनों यौन–आकर्षण के विषय में कुछ भी नहीं समझते थे। केवल जगन्नाथ कुछ पति–पत्नी के विषय में प्राचीन संस्कारों से अनुभव करता प्रतीत होता था। मास्टर शिवराम का अनुमान था कि सुहागिन से उसका सम्बन्ध बना होगा और उसी सम्बन्ध के संस्कार उसके मन पर होंगे। परन्तु इससे अधिक वह क्या और कितना जानता है, शिवराम समझ नहीं सकता था। लक्ष्मी को तो पिछले जन्म का कुछ भी स्मरण नहीं था और वह कदाचित् नहीं जानती थी कि उसकी जगन्नाथ में रुचि कुछ विशेष कारण से है।

इस पर भी शिवराम देखता था कि लक्ष्मी नित्य जगन्नाथ को देखने आती है। लक्ष्मी की माँ भोली भी जग्गू पगले के लिए विशेष स्नेह रखती है। वह प्रायः जगन्नाथ की माँ को अपने यहाँ से मिठाई इत्यादि भेजती रहती थी और जब लक्ष्मी देने आती तो सरस्वती से कह जाती थी कि यह जग्गू भापा के लिए है।

दिन व्यतीत होते जाते थे। हंसराज और सुहागिन प्रायः जग्गू और उसकी माँ से मिलने आते रहते थे। शिवराम को इस बात का ज्ञान हो गया कि हंसराज जानता है कि सुहागिन का शिवदयाल के लड़के रामदयाल से विशेष सम्बन्ध था, और रामदयाल ही अब जगन्नाथ के शरीर में है। इस पर भी वह अपनी पत्नी को लेकर महीने में एक–आध बार आता रहता था। इस सब रहस्य को मास्टर एक दिन जान गया।

एक दिन सुहागिन और राधा, सरस्वती और जगन्नाथ से बातचीत कर रहे थे कि शिवराम हंसराज को लेकर घुमाने के लिये लॉरेंस गार्डन को ले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया। आजकल शिवराम ने एक ताँगा रख लिया था। दोनों उस तांगे में सवार हो घूमने निकल गए। उस दिन दुकान पर छुट्टी थी।

मार्ग में ही शिवराम ने हंसराज के मन की बात जानने के लिये पूछ लिया, "तो यह जगन्नाथ आपको बहुत प्रिय प्रतीत होता है?"

"मुझको तो यह प्रिय प्रतीत नहीं होता। परन्तु सुहागिन इस पर लट्टू हो रही है। सुहागिन कहती है कि यह हमारे गुजराँवाला के एक हकीम सुखदयाल का लड़का रामदयाल है, जिसका देहान्त चेचक से हो गया था।"

"उसको इसका विश्वास है क्या? भला कैसे विश्वास हो गया है उसको?"

मास्टर साहब के इस प्रश्न पर तो हंसराज गम्भीर हो मास्टर साहब का मुख देखने लगा। फिर कुछ विचारकर पूछने लगा, "तो यह बात जगन्नाथ ने आपको कभी नहीं बताई।"

"जगन्नाथ बहुत अंट–संट बातें करता रहता है। परन्तु सब–की–सब बातें विश्वसनीय नहीं हो सकतीं।"

"प्रमाण तो इसने दिया था पहले ही दिन। जब यह सुहागिन से मिला तो इसने उसकी वह गुप्त बात बता दी, जिसको वह और रामदयाल के अतिरिक्त कोई नहीं जानता था।

"बात यह थी कि रामदयाल मेरा और भरतराम का मित्र था और सुहागिन उससे प्रेम करने लगी थी। विशेष बात यह थी कि रामदयाल सुहागिन को बहन ही मानता था। सुहागिन के मन की बात हमको, मेरा मतलब है कि मुझको और भरतराम को ज्ञात नहीं थी।

"एक दिन भरतराम और सुहागिन में झगड़ा हुआ। जगन्नाथ के वहाँ आने के दिन तक मुझे पता नहीं था कि झगड़ा किस बात पर था। इस पर भी झगड़े की बात मैं जानता था। उसी दिन भरतराम इंजिन के नीचे आकर मर गया। सुहागिन ने अब बताया है कि भरतराम सर्वथा क्लीवता से युक्त था। उस दिन सुहागिन ने भरतराम को कहा था कि उसने सर्वथा अयोग्य होते हुए विवाह क्यों किया है? भरतराम का उत्तर था कि उसको अपनी अवस्था का ज्ञान नहीं था। इस पर सुहागिन ने कह दिया कि वह अपना जीवन बरबाद करना नहीं चाहती। वह स्वेच्छा से उसको रामदयाल के हाथ सौंप दे तो ठीक, अन्यथा वह घर से भाग जाएगी। भरतराम की ड्यूटी रात की थी और सुहागिन का कहना है कि भरतराम ने आत्महत्या की थी।

"उसके कुछ दिन उपरान्त उसने रामदयाल से कहा था कि वह अब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उससे विवाह करने के लिए स्वतन्त्र है, परन्तु रामदयाल माना नहीं। बहुत मिन्नत–समाजत करने पर रामदयाल ने यह वचन दिया कि उसके मित्र की मृत्यु के दो वर्ष के उपरान्त वह आयेगी तो वह विवाह कर लेगा।

"परन्तु दुर्भाग्य की बात कि दो वर्ष व्यतीत होने से पूर्व ही रामदयाल का देहान्त हो गया। सुहागिन ठीक समय पर विवाह के लिए आई, परन्तु उसके स्वर्गवास होने की बात जान बहुत व्याकुल हो उठी। फिर मेरे कहने पर उसने मुझसे विवाह कर लिया।

"भरतराम के देहान्त के कुछ दिन उपरान्त, सुहागिन ने रामदयाल को विवाह के बिना ही उसे अपने पास रखने को उत्साहित करने के लिए कुछ कहा था अथवा कुछ किया था, जिसका जगन्नाथ ने उस दिन वर्णन किया तो सुहागिन को विश्वास आ गया कि जगन्नाथ ही रामदयाल है।

"सुहागिन का कहना है कि उस रात की बात उन दोनों के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं जानता था और उसी रात रामदयाल ने वचन दिया था कि ठीक दो वर्ष उपरान्त वह उसको विवाह कर अपनी पत्नी बना लेगा।"

शिवराम भी कुछ इसी प्रकार का अनुमान लगा रहा था। जो विशेष बात थी, वह रामदयाल के उस जन्म में भी एक संयमी होने की थी। इससे मास्टर के मन में यह विश्वास बैठता जाता था कि जगन्नाथ में आत्मा अवश्य अति परिष्कृत और उन्नत है।

वह उत्सुकता में इसका पूर्ण इतिहास जितना वह बता सके, जानने की इच्छा करने लगा। साथ ही वह सुहागिन के वर्तमान भावों को जानने के लिए भी उत्सुकता अनुभव करने लगा था। वह स्वयं उससे पूछ नहीं सकता था। हंसराज से उसने इस विषय में कुछ अधिक पूछना उचित नहीं समझा। उसको भय था कि पति–पत्नी में कहीं झगड़ा खड़ा न हो जाये। एक बात उसने की। वह यह कि उसने राधा को इस विषय में सुहागिन से जानने को कहा। राधा के घर लड़का होने के उपरान्त जगन्नाथ के पूर्व–जन्म के गुजराँवाला से सम्बन्ध की बात राधा और सरस्वती को पता चल गयी थी। राधा और सरस्वती को शिवराम ने यह कह रखा था कि बार–बार जगन्नाथ से उस जन्म के विषय में पूछने से वह कल्पना कर भी लगा सकता है। कल्पना में बहुत कुछ असत्य अनुमान भी हो सकता हे। इस पर भी जब वह स्वेच्छा से कुछ बताने लगे तो उसको बताने में उत्साहित ही करना चाहिए।

शिवराम ने जगन्नाथ को बता दिया था कि उसको अपना लक्ष्मी से सम्बन्ध किसी से बताना नहीं चाहिये। इससे तो उसके माता–पिता यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझने लगेंगे कि तुम उससे विवाह करना चाहते हो। इस बात पर जगन्नाथ गम्भीर हो चुप कर रहा।

अब जगन्नाथ संस्कृत की पढाई में गीता पढ़ने लगा था। वह अब तेरह वर्ष की आयु का हो गया था और संस्कृत भाषा का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर चुका था। गणित में वह ज्योमेटरी और एलजेबरा सीख चुका था। हिन्दी का भी उसको पर्याप्त ज्ञान था। मास्टर जी ने उसकी अंग्रेजी की पढ़ाई भी आरम्भ कर दी थी।

प्रातःकाल उठ, स्नानादि से निवृत्त हो मास्टर जी के कहने के अनुसार संध्या, गायत्री जप इत्यादि में वह लग जाया करता था। तदनन्तर वह प्रातः का अल्पाहार ले मास्टर के साथ दुकान पर चला जाता था। इन दिनों राधा पुनः गर्भ धारण कर चुकी थी। यह तीसरा बच्चा हो रहा था और सरस्वती मास्टर की भोजन–व्यवस्था देखती थी। घर के कामकाज के लिए एक नौकर रखा हुआ था। मध्याह्न के समय वह मास्टर जी और जगन्नाथ का खाना लेकर जाया करता था।

प्रातः दुकान खोल झाड़–पोंछकर जगन्नाथ अपनी पढ़ाई में लीन हो जाता था। एक घण्टा–भर शिवराम उसको संस्कृत पढ़ाता था। इस समय तक दिन के ग्यारह बज जाते थे। डाक का काम आरम्भ हो जाता था। डाक द्वारा पुस्तकों के आर्डर आते तो उनको भेजने का प्रबन्ध किया जाता। एक बजे दोपहर को भोजन होता। इस समय दुकान पर काम कम होता था। जगन्नाथ संस्कृत साहित्य पढ़ने लगता था। वह गीता, हितोपदेश और वाल्मीकि रामायण इत्यादि पढ़ा करता था। तीन बजे के लगभग पुनः दुकान का काम आरम्भ हो जाता था। इक्के–दुक्के ग्राहक आने लग जाते थे। अब तो जगन्नाथ भी उनको पुस्तकें दिखाने में लग जाता था। चार बजे के लगभग चाय अथवा कोई पेय और नमकीन खाने को मिल जाती थी। काम रात के सात–आठ बजे तक चलता था। शिवराम का कार्य तो, दुकान का प्रबन्ध, पुस्तकों को ग्राहकों के पास भेजना, बिल इत्यादि बनाना अथवा हिसाब–किताब रखना था। कभी कोई विशेष ग्राहक होता तो वह उससे स्वयं मिलता अन्यथा निरंजन और जगन्नाथ काम चलाने लगे थे।

जगन्नाथ का प्रातः का समय, चिन्तन और ध्यान का था। लगभग दो घण्टे वह उसमें व्यतीत करता था और इससे उसके अन्तरचक्षु खुलते जाते थे। वह अपने चारों ओर हो रही बातों को देखता था और गायत्री मन्त्र से परिष्कृत हो रही बुद्धि से उसको समझने का यत्न करता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक रात घर जाते हुए ताँगे में बैठ जगन्नाथ ने स्वयं ही बात चला दी। उसने पूछा, "चाचा जी! लक्ष्मी आपसे मिली है?"

"हाँ! क्यों क्या बात है?"

"वह कहती थी कि उसने आपको मेरे विषय में कुछ कहा है।"

"तुम्हारे विषय में तो नहीं कहा। हाँ, अपने विषय में कुछ कहती थी। वह कह रही थी कि उसका चित्त पढ़ाई में लगता नहीं। उसकी माँ ने कहा है कि वह मुझसे मिलकर इसका इलाज पूछे। वह इस वर्ष नौवीं श्रेणी में अनुतीर्ण हुई है।"

"तो आपने उसका क्या इलाज बताया है?"

"जगन्नाथ! मैं हकीम तो हूँ नहीं। इस कारण कोई औषधि बताई नहीं। हाँ, उसको भी गायत्री मन्त्र पढ़ाया है, स्मरण कराया है और जप करने के लिए बता दिया है।

"एक बात तुम्हारे विषय में भी बताई है कि तुम भी इसी मन्त्र का जप किया करते हो।"

"वह मुझसे कहती थी कि मैं उसके विषय में ज्योतिष लगा सकता हूँ।"

"यह मैंने नहीं कहा। परमात्मा जाने वह इस प्रकार की बातें कहाँ से सुन आई है।"

इस पर जगन्नाथ गम्भीर हो गया। फिर कुछ विचारकर कहने लगा, "चाचा जी! मैं कल रात गीता के इन श्लोकों पर चिन्तन करता रहा था–

वहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन,
तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परतप।
अजोऽपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोऽपि सन्,
प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय सम्भवाम्यात्ममायया।।

"भगवान् कृष्ण ने तो स्पष्ट कहा है कि हम सबके बार–बार जन्म होते रहते हैं। कृष्ण जानते हैं और अन्य लोग नहीं जानते। साथ ही दूसरे लोग तो जन्म लेने में किसी दूसरी शक्ति के अधीन हैं परन्तु कृष्ण अपने स्वभाव में स्थित अपनी शक्ति से जन्म लेते हैं।

"मैं विचार करता हूँ कि यह दूसरी बात कैसे प्राप्त हो सकती है। मैं अपने पूर्व–जन्मों के विषय में जान रहा हूँ, परन्तु स्वेच्छा से जन्म लेने की बात तो अद्भुत है। यह कैसे प्राप्त हो सकती है। मैं इसके लिए यत्न करना चाहता हूँ।"

"इसके लिए शास्त्र में योग–ध्यान–तपस्या का आदेश है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह तो ठीक है, परन्तु कैसे?"

"इस विषय में मैं कुछ नहीं जानता। यहाँ मेरे ज्ञान की सीमा है।"

"चाचा जी! रात चिन्तन में मुझे पुनः लक्ष्मी से अपने सम्बन्ध की बात स्मरण आ गई। मेरे मन के संस्कार कुछ अधिक स्पष्ट हो उठे। गुजराँवाला में जन्म से पूर्व की बात है। मैं व्योम में रहता था। सूर्य, चन्द्र, तारागण इत्यादि सम्पूर्ण जगत् मैं देखता था। उस समय मुझे कुछ ऐसा अनुभव हुआ जैसे मुझमें किसी प्रकार का अभाव नहीं। मैं न तो किसी वस्तु की इच्छा रखता था, न ही कुछ भी ऐसी वस्तु थी, जो मुझको प्राप्त नहीं थी।

"एकाएक मुझमें कुछ ऐसी बात उत्पन्न हो गई, जैसे मैं कुछ करना चाहता हूँ। मैं अपने ही शरीर से आलिंगन की इच्छा करने लगा। यह इच्छा उत्पन्न हुई और मैं आलिंगन करने लगा। इसमें कुछ सन्तोष, कुछ सुख तथा कुछ आनन्द अनुभव हुआ। यह अभूतपूर्व था। मैं स्वयं समझ नहीं सका कि यह क्यों है।

"इस समय एक घटना घटी। मैं दो भागों में विभाजित हो गया। दोनों भाग एक समान थे। इस पर भी एक–दूसरे की पूर्ति करते प्रतीत होते थे। ये दोनों भाग एक–दूसरे को देख–देख विस्मय करने लगे। इस समय मुझमें इच्छा हुई कि दोनों भाग पुनः मिलकर एक हो जाएँ। अतएव मैंने अपने आधे भाग को पुनः अपने में ले लेने का यत्न किया, परन्तु मेरे विस्मय का ठिकाना नहीं रहा, जब मेरा दूसरा भाग भयभीत मुझसे भाग खड़ा हुआ और फिर वह मुझसे ओझल हो गया।

"जब मैं इस मुहल्ले में आया और मुझमें देखने और समझने की सामर्थ्य हुई तो मेरी दृष्टि लक्ष्मी पर पड़ी। मुझे वह अपना वही आधा भाग प्रतीत होने लगा।

"परन्तु यह शरीर जो मुझे मिला है और लक्ष्मी का शरीर, हमको पुनः मिलकर एक होने में बाधक हैं। मुझे कुछ ऐसा अनुभव होने लगा है कि मैं एक कमरे में बन्द हूँ। उस कमरे की खिड़कियों में से एक सामने कमरे को देख रहा हूँ और उसकी खिड़की में से अपना आधा भाग देख रहा हूँ। परन्तु न तो मैं अपना कमरा छोड़ सकता हूँ और न ही वह मेरा दूसरा भाग अपने कमरे को छोड़ मुझमें आकर मिल सकता है। हम दोनों कैदी हैं और हमारी कैद की अवधि अभी समाप्त नहीं हुई, यह अनुभव होता है।"

इस समय वे घर पहुँच गए थे। जगन्नाथ ने बात समाप्त नहीं की थी। इस पर शिवराम ने कहा, "अच्छा, उससे कभी पता करना कि वह क्या अनुभव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करती है। क्या वह भी अपने–आपको किसी प्रकार के बन्धन से बँधा पाती है? साथ ही यह जानना कि वह उस बन्धन से छूटने पर क्या करना चाहेगी। परन्तु यह कथा जो तुमने मुझको बताई है, उसे मत बताना। इससे उसको हानि पहुँच सकती है।''

यद्यपि जगन्नाथ समझ नहीं सका कि क्या हानि हो सकती है, इस पर भी एक बात वह समझ रहा था। वह यह इस जन्म में मास्टर जी उसका पथ–प्रदर्शन भली–भाँति कर सकते हैं। वह उनकी बात को सदा मानता रहता था।

घर पहुँचे तो पता चला कि सुहागिन सरस्वती से मिलने आई थी और सरस्वती को अपने घर ले गई है। यद्यपि राधा छटे मास में जा रही थी, परन्तु उसने सरस्वती के एक रात जाने को रोका नहीं। आज रात का खाना उसने ही बनाया था।

सरस्वती का जाना विचित्र प्रतीत हुआ था। जब से वह मुहल्ले में आयी थी, वह रात को कभी घर से बाहर नहीं जाती थी। मास्टर शिवराम के मकान में रहने पर उसको घूमने–फिरने का अधिक काम पड़ने लगा था। वह अब कमीजें–पायजामे और औरतों के कपड़े सीने लगी थी और मुहल्लों की स्त्रियों में कपड़े लेने–देने जाने लगी थी। अब मुहल्ले के बाहर भी उसका काम विस्तार पा रहा था। इस पर भी सायं समय के पूर्व वह घर में आ जाती थी।

इस कारण इस रात उसका घर से बाहर जाना आश्चर्यकारक ही था। सुहागिन तो पहले भी उसको कोठी में चलने का निमन्त्रण दिया करती थी। कभी–कभी दिन के समय वह जाती भी थी, परन्तु रात घर पर लौट आती थी। शिवराम ने राधा के मुख से उसके जाने की बात सुनी तो विस्मय में खड़ा रह गया। जगन्नाथ भी माँ के जाने की बात सुन रहा था! उसने मास्टर जी को चिन्ताग्रस्त देखा तो कहने लगा, ''चाचा जी! यह ठीक नहीं हुआ न?''

''मैं कैसे कह सकता हूँ कि ठीक क्या है और गलत क्या है? मेरा आश्चर्य तो इस बात पर है कि यह अभूतपूर्व है।''

''नहीं चाचा जी! ऐसा नहीं। पर छोड़िये इस बात को। चाची जी को बहुत कष्ट हुआ है। खाना इनको बनाना पड़ा है।''

राधा ने मुस्कराते हुए कहा, ''जो कष्ट होना था सो हो चुका है। अब तुम लोग बैठ जाओ तो मैं खाना परोस दूँ।''

''अगले दिन सरस्वती नहीं आई। जगन्नाथ ने पूजा–जप से निवृत्त हो चौका–बासन और आग जलाकर बहुत–सा काम, राधा के रसोई घर में आने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से पूर्व कर रखा था। राधा जब आई तो जगन्नाथ तवे पर टोस्ट सेंक रहा था। राधा के मुख से निकल गया, ''अरे, यह क्या कर रहे हो?''

जगन्नाथ मुस्कराया और वहाँ से उठकर बोला, ''आगे आप करिये। मैंने दो टोस्ट तो बिल्कुल ही जला दिये हैं।''

अब वह बर्तन निकाल चाय बनाने लगा और राधा टोस्ट सेंकने लगी। जब वे प्रातःकाल का अल्पाहार ले रहे थे तो शिवराम ने पूछ लिया, ''सरस्वती किस समय आने के लिए कह रही थी?''

''वह तो कह गई थी कि सूर्योदय तक आ जायेगी परन्तु अब तो दिन के आठ बज रहे हैं।''

''तो मैं जाकर पता करूँ?'' जगन्नाथ ने पूछा।

''अभी कुछ और प्रतीक्षा की जा सकती है। कदाचित् आने को सवारी न मिली हो और वह पैदल ही आ रही हो।''

मध्याह्न का भोजन लेकर घर का नौकर आया तो पता चला कि सरस्वती अभी तक नहीं आई। सुहागिन का भी कोई समाचार नहीं आया था। इस सूचना पर शिवराम ने जगन्नाथ को कहा, ''तुम ताँगा लेकर हंसराज की कोठी पर चले जाओ और पता करो।'' घर के नौकर को शिवराम ने कह दिया, ''देखो! बीबी जी को कह दो कि किसी औरत को काम की सहायता के लिए बुला लें।

जगन्नाथ दुकान के ताँगे में स्टेशन गया। वहाँ से नहर के किनारे किनारे रेल–विभाग के अफसरों के लिए बने बँगलों में हंसराज के बँगले में पहुँचा। हंसराज और बच्चे घर पर नहीं थे। सुहागिन भी वहाँ नहीं थी। हंसराज का नौकर सीतला बँगले के बरामदे में बैठा था। जगन्नाथ को देख वह उठ खड़ा हुआ और मुस्कराते हुए उसके मुख पर देखने लगा। जगन्नाथ ने पूछ लिया, ''बाबू हंसराज घर पर हैं?''

''काम पर गए हैं।''

''बीबी जी?''

''वे आपकी माँ के साथ छावनी गई हैं।''

''वहाँ क्या है?''

''तो माँ तुमको बताकर नहीं आयीं?'' सीतला ने पुनः मुस्कराते हुए पूछा।

''क्या बताकर नहीं आयीं?''

''यही कि उन्होंने मिस्टर जोन से विवाह कर लिया है?''

''कब?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''विवाह कल रात को हुआ है।''

जगन्नाथ भौंचक्का मुख देखता रह गया। सीतल हँसा तो जगन्नाथ ने सतर्क हो पूछ लिया, ''ये जोन कहा रहते हैं?'' ,

''छावनी में। पक्का पता नहीं जानता। वे छावनी में स्टेशन मास्टर हैं। रात तुम्हारी माँ यहाँ आयीं तो ये जोन साहब और कुछ अन्य लोग भी आ गये और फिर तुम्हारी माता ने नये विवाह योग्य कपड़े पहने और सब लोग गाड़ियों में गिरजाघर चले गए। वहाँ विवाह हुआ। तदन्तर यहाँ सबने खाना खाया और पीछे वर–वधू छावनी को चले गए। सुना है कि वे दोनों आज पन्द्रह दिन के लिए घूमने जा रहे हैं। बीबी जी उनको विदा करने गयी हैं?''

''कब तक लौटने को कह गयी हैं?''

''अब तो उनको आ जाना चाहिए था। दो बजने वाले हैं और ढाई बजे तो बच्चे स्कूल से आ जाते हैं।''

जगन्नाथ इस नयी परिस्थिति में अपने व्यवहार को समझ नहीं सका। वह दुकान पर लौट जाने के लिए बँगले से निकला और सड़क पर खड़े ताँगे की ओर चल पड़ा। वह अभी ताँगे में चढ़ने ही लगा था कि एक ताँगे में हंसराज और सुहागिन आते दिखाई दिये। जगन्नाथ चढ़ता–चढ़ता ठहर गया। जब उनका ताँगा समीप आ खड़ा हुआ तो वह उनके पास जाकर पूछने लगा, ''मैं माँ के विषय में पूछने आया था।''

सुहागिन ताँगे से उतर पड़ी थी। हंसराज ताँगे वाले को भाड़ा दे रहा था। सुहागिन ने जगन्नाथ को कहा, ''भीतर आ जाओ, बताती हूँ।''

हंसराज ने प्यार से जगन्नाथ की पीठ पर हाथ फेरते हुए कह दिया, ''माँ को देखने आये हो?''

जगन्नाथ उस समय पुनः बंगले की तरफ चल पड़ा था। उसने कहा, ''जी। जब वह दोपहर तक नहीं आयीं तो मैंने चाचा जी का ताँगा लिया और इधर चला आया।''

इस समय तक वे बँगले के बरामदे में जा पहुँचे थे। सुहागिन दरवाजा खोल भीतर चली गयी तो ये दोनों भी भीतर जा पहुँचे। हंसराज ने जगन्नाथ को समीप बैठाते हुए वही कथा सुना दी जो सीतला ने पहले उसे सुनाई थी।

जगन्नाथ ने इतना कहा, ''माँ वहाँ किसी को भी कहकर नहीं आयी। इसी से विस्मय हो रहा है।''

''यदि बताकर आती तो तुम क्या कहते?''

''मैं क्या कहता? विवाह माँ ने करना था। इसमें मेरे कहने को क्या था।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम्हारा सम्बन्ध यह है कि तुम्हारा एक नया पिता बन गया है। वह ऐंग्लो–इंडियन है। रहने वाला भी बरेली का है। तुम भी अपने पिता को देख पसन्द कर लेते।"

जगन्नाथ हँस पड़ा। उसके हँसने पर तो सुहागिन और हंसराज प्रश्न–भरी दृष्टि से उसका मुख देखने लगे। जगन्नाथ जब हँस चुका तो बोला, "बाबू जी! भला पिता और माता पसन्द किये जाते हैं।"

हंसराज ने गम्भीर हो कहा, "किसी ने तो पसंद किया ही है। मेरा मतलब है तुम्हारी माँ ने।"

सुहागिन को जगन्नाथ के कथन में एक अन्य गम्भीर अर्थ का भास हुआ। वह विचार करती थी कि माता–पिता की बात तो दूर रही, यहाँ तो पति भी पसन्द कर नहीं लिया जा सका। उसको अपनी बात स्मरण हो आई थी।

उसने भरतराम की आत्महत्या के उपरान्त रामदयाल से एकांत में मिलने का यत्न किया था। यह उससे उत्कट प्रेम करती थी। यों तो रामदयाल उसको कहता रहता था कि वह भरतराम को अपना भाई मानता है और उसकी पत्नी को भाभी। परन्तु इस नयी परिस्थिति में वह समझती थी कि रामदयाल से विवाह कर सकेगी। अभी उसके माता–पिता उसे साथ ले जाने के लिए गुजराँवाला में ही टिके थे कि उसने रामदयाल को बुला लिया। रामदयाल मिलने आया तो उसने उससे हंसराज के क्वार्टर में एकांत में भेंट की। हंसराज रात की ड्यूटी पर स्टेशन को गया हुआ था। रामदयाल उसके सामने बैठा तो उसने उसे बताया कि उसके मित्र ने आत्महत्या कर ली है।

रामदयाल ने सुना था कि वह इंजन के नीचे कटकर मर गया है। पर सुहागिन ने सारी बात सुना दी। उसने कहा, यह तो आप जानते हैं कि वे पुरुषत्व–विहीन थे। मैंने उस दिन उनको अंतिम बात कही थी कि या तो वे मुझे आपके हाथ सौंप दें अन्यथा मैं घर से भाग जाऊँगी। इस पर वे यह कह चले गये कि इस समय तो वे ड्यूटी पर जा रहे हैं, अगले दिन प्रातः सब बात का निर्णय कर देंगे। उनके जाने के दस मिनट पीछे उनके कट मरने का समाचार आ गया। मैं समझती हूँ आपको और मुझको स्वतन्त्र करने के लिए ही उन्होंने यह किया है। यह सब सुनकर भी रामदयाल विवाह के लिए तैयार नहीं हुआ था। इस पर सुहागिन अपना सिर रामदयाल के पाँव पर रख उसके पाँव को पकड़ बैठी।

बहुत मिन्नत–समाजत हुई। रामदयाल वहाँ से भाग जाना चाहता था परन्तु सुहागिन उसके पाँव को दृढ़ता से पकड़े हुए थी। आखिर रामदयाल

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने कह दिया, "देखो सुहागिन! अभी–अमी भरतराम की मृत्यु हुई है। यदि इतनी जल्दी विवाह किया तो लोग मेरे–तुम्हारे सम्बन्धों के विषय में सन्देह करने लगेंगे। मैं यह नहीं चाहता। तुम दो वर्ष तक प्रतीक्षा करो। यदि कर सको तो मैं तुमसे विवाह के लिए वचन–बद्ध हो सकता हूँ।"

इस पर सुहागिन ने पाँवों को छोड़े बिना, अश्रु–भरे नेत्रों से रामदयाल के मुख पर देखा। उसे मुस्कराते देख पूछने लगी, "वचन देते हैं?"

रामदयाल ने कह दिया, "हाँ, मैं अपनी सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि यदि तुम दो वर्ष तक मेरी प्रतीक्षा करोगी, तो मैं तुमसे विवाह कर लूँगा।" सुहागिन का प्रश्न था, "और यदि आपके पिता ने आपका कहीं अन्यत्र विवाह करना चाहा तो?"

"मैं घर छोड़ तुमको लेने चल पड़ूँगा।"

इस पर सुहागिन उठी और सामने खड़ी हो गई। रामदयाल अभी भी वही कुर्सी पर बैठा था। उसने सामने खडे–खड़े ही पूछा, "आप सच कहते हैं न?"

"सुहागिन! मैंने अपनी सौगन्ध खाई है। क्या यह पर्याप्त नहीं?"

उसने कहा, "मुझे आप पर विश्वास है।" वह एकाएक रामदयाल के गले में बाँह डाल उससे आलिंगन करने लगी और उसका मुख चूमने लगी। रामदयाल ने बहुत कठिनाई से उसको अपने से पृथक् कर कहा, "यह क्या पागलपन कर रही हो?"

"कुछ नहीं। अपने चित्त को विश्वास दिला रही थी कि आपसे मेरा विवाह होगा।"

सुहागिन निश्चित तिथि को जब गुजराँवाला आने लगी तो उसकी माँ ने उसके इस प्रकार जाने को पसन्द नहीं किया। उसने स्पष्ट कह दिया कि विधवा का विवाह अधर्म है और यदि उसने ऐसी बात पुनः कही तो वह उसका गला घोंट उसकी हत्या कर देगी।

इस पर तीन मार्च 1902 को वह अपने गाँव से भाग खड़ी हुई और गुजराँवाला आ पहुँची। स्टेशन पर पहुँचते ही उसको हंसराज मिल गया। उसने अपने आने का उद्देश्य बताया तो हसराज ने रामदयाल की मृत्यु का समाचार दे दिया। रामदयाल की मृत्यु 15 फरवरी 1902 को हो चुकी थी। उस रात वह हंसराज के पास रही और फिर दोनों ने राय कर विवाह कर लिया।

आज जगन्नाथ के कहने पर कि पिता–माता पसन्द नहीं किए जाते तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह विचार करने लगी थी कि क्या पति पसंद किए जाते हैं? वह उस दिन की अपने चित्त की व्याकुलता, उत्सुकता और मिलन के लिए उन्माद को स्मरण कर व्याकुलता अनुभव करने लगी थी।

एकाएक वह उठी और अपने पति से बोली, "जगन्नाथ ठीक कहता है। इस मानव–जीवन में हम कैदी हैं। सब अपने कर्मफल भोग रहे हैं। कोई कुछ नहीं करता। अदृश्य ही हैं जो मनुष्य को बाँध कर अपनी दिशा में लिए जा रहे हैं।"

जगन्नाथ भी उठ खड़ा हुआ। हंसराज ने कहा, "जगन्नाथ! चाय का समय हो रहा है। पीकर जाना।"

"जी नहीं। चाचा जी चिन्ता कर रहे होंगे। उनको ठीक–ठीक समाचार देना अत्यन्त आवश्यक है।"

वह बँगले से निकला और ताँगे में सवार हो दुकान की ओर चल पड़ा।

दुकान पर सत्य ही शिवराम चिन्ता अनुभव कर रहा था। जगन्नाथ वहाँ पहुँचा तो शिवराम उसको बांह से पकड़ दुकान के पीछे कार्यालय के कमरे में ले गया, "क्या समाचार लाए हो?" उसने पूछा।

उत्तर देने से पूर्व जगन्नाथ हँसने लगा। शिवराम भी हँसने लगा। जब दोनों हँस चुके तो शिवराम ने पूछ लिया, "माँ नहीं आई न?"

"जी। आप कैसे समझ गये हैं यह?"

"तो उसने विवाह करने का निश्चय कर लिया है?"

इस पर तो जगन्नाथ स्तब्ध हो खड़ा रह गया। फिर बोला, "चाचा जी! माँ ने विवाह कर लिया है। आज वह अपने पति के साथ भ्रमण के लिए कहीं चली गई है। सुना है पन्द्रह दिन के बाद आयेगी।"

"कौन है वह?"

"कोई जोन साहब हैं। छावनी स्टेशन के स्टेशन मास्टर हैं।"

"तुमको दुःख हुआ है अथवा प्रसन्नता?"

"कुछ भी नहीं। हाँ, भय–सा लगा है। परन्तु यह भय कैसा है, समझ नहीं सका।"

"भय करने की कोई बात नहीं। तुम्हारी माता की आयु अभी अट्ठाईस वर्ष की है। वह सुखी रहेगी। तुमने जोन साहब को देखा है?"

"जी नहीं।"

"देखो। मैं कुछ दिन से उसकी आँखों में विवाह करने की इच्छा देख रहा था। इस कारण जब वह कल सदा के प्रतिकूल रात को घर से बाहर रही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो मुझको कुछ यही समझ आया था। परन्तु यह पता नहीं था कि वह इतनी चतुर है कि हमको बताये बिना ही सब प्रबन्ध कर सकती है। खैर! मेरा कहा मानो। तुम उसका विचार छोड़ अपनी उन्नति में लगे रहो। जीवन बहुत छोटा है और भगवान् जाने इस जीवन की कैद में क्या–क्या कर्मफल भोगने हैं। यदि सब कर्मफल निःशेष किये बिना यहाँ से जाना पड़ा तो फिर इसी कैदखाने में आना पड़ेगा।''

''चाची जी के लिये चिन्ता है। उनके कष्ट को हल्का करने के लिये कोई नौकरानी रख दीजिये।''

''यह मैं कर दूँगा। तुम चिन्ता मत करो।''

घर पर लक्ष्मी की माँ भोली की सहायता उपलब्ध कर ली गई। लक्ष्मी भी माँ की सहायता करने मास्टर जी के घर जाने लगी। यह बात मुहल्ले–भर में विख्यात हो गई कि जग्गू पगले की माँ ने नया पति कर लिया है। मुहल्ले की औरतें यह कहने लगी थीं कि आखिर पगले की माँ ही निकली न।

दिन व्यतीत होने लगे। एक दिन सुहागिन आई और कहने लगी ''तुमको माँ बुला रही है।''

''किसलिये?''

''उसका मिलने को जी किया है।''

''जी किया है तो यहाँ क्यों नहीं आ गई?''

''यहाँ मुहल्ले में आते उसको लज्जा लगती है।''

''यदि यह लज्जा की बात थी तो विवाह नहीं करना था।''

सुहागिन इस युक्ति पर आश्चर्यचकित जगन्नाथ का मुख देखने लगी। शिवराम और राधा समीप बैठे सुन रहे थे। वे भी इस वार्तालाप से दुःख अनुभव करने लगे थे। सुहागिन उसको समझाना चाहती थी कि स्त्री–पुरुष में परस्पर सम्बन्ध बनना स्वाभाविक है। इसमें किसी को आपत्ति नहीं करनी चाहिए। जहाँ तक लज्जा का प्रश्न है, यह लोकाचार है।

इस पर भी वह कह नहीं सकी। बात शिवराम ने बना ली। उसने पूछ लिया, ''सुहागिन! कहाँ है, सरस्वती?''

''आज हमारे घर है। सायंकाल तक वहाँ रहेगी।''

''तो हम सब आयेंगे। मैं, राधा, विष्णु, पद्मा और जगन्नाथ।''

दूर खड़ी लक्ष्मी बोल उठी, ''चाचा जी! मैं भी चलूँगी।''

''कहाँ चलोगी?''

''जहाँ आप चलेंगे।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिवराम हँस पड़ा। वह विचार कर रहा था कि जहाँ वे चलेंगे अथवा जहाँ जगन्नाथ चलेगा। वह कुछ दिन से देख रहा था कि लक्ष्मी अब जगन्नाथ को भाषा अथवा नाम से भी नहीं पुकारती थी। एक समय था कि वह जग्गू पगला पुकारा करती थी। फिर जग्गू भामा के नाम से पुकारने लगी। इसके उपरान्त वह जगन्नाथ भापा हो गया और अब वह उसकी ओर रुचि पूर्वक देखती थी। परन्तु उसको कभी सम्बोधन करती थी तो आप के अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं कहती थी।

शिवराम ने तनिक उसकों चिढ़ाने के लिए कह दिया, "हाँ, जगन्नाथ की माँ से मिलाने के लिए तुम्हें भी ले चलेंगे।"

मध्याह्न का भोजन कर दुकान के ताँगे में पूर्ण परिवार जगन्नाथ की माँ सरस्वती से मिलने चल पड़ा। हंसराज तो ड्यूटी पर गया हुआ था। सुहागिन घर पर थी। बच्चे स्कूल गये हुए थे। इन सब को आया देख सुहागिन बँगले से बाहर आ इनका स्वागत करने लगी।

"सुहागिन बहिन!" शिवराम ने कह दिया, "लो हम आ गये।"

"आओ भैया! वह आपकी प्रतीक्षा कर रही है।' बँगले के इक कमरे में सरस्वती बैठी थी। वह इनकी आवाज सुन कमरे से बाहर निकल आई। शहर में तो वह सलवार, कुर्ता और चादर ओढ़ा करती थी। यहाँ उसने साड़ी, जम्पर, मौजे और सैंडल पहिने थे। वैसे होठों और गालों पर किंचित् सुर्खी भी थी और सिर पर चोटी के स्थान जूड़ा बँधा था। इस पर भी माथे पर बिन्दी उसने लगाई हुई थी।

वह आँखें नीचे किये हाथ जोड़ कमरे के दरवाजे में आ खड़ी हुई थी। मिलने के लिए आये लोग उसके रूप–रंग को देखने खड़े हो गये थे। मास्टर शिवराम ने ही सबसे पहले बात की। उसने कहा, "सरस्वती बहिन! नमस्ते। सुनाओ प्रसन्न हो?"

"हाँ भैया!" सरस्वती ने साहस पकड़कर कहा, "आओ! भीतर आ जाओ।" वह उनको कोठी के ड्राइंग–रूम में ले गई।

वहाँ राधा सरस्वती के एक तरफ और लक्ष्मी दूसरी तरफ बैठ गई अन्य सब कुर्सियों पर बैठ गये। सरस्वती ने पद्मा को गोद में ले लिया और उसको गुदगुदी कर हंसाने का प्रयत्न करने लगी।

एकाएक सरस्वती उठी और जगन्नाथ को लेकर अपने कमरे में चली गई। वहाँ उसने जगन्नाथ को अपने समीप पलंग पर बैठा कर पूछ लिया, "जग्गू! मुझसे नाराज हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं माँ!"

"सुहागिन के कहने पर तुमने आने से इन्कार क्यों कर दिया था?"

"मैंने इन्कार नहीं किया था। मेरा अभिप्राय यह था कि तुम बिना बताये वहाँ से चली आई थीं। इस कारण तुमको वहाँ आ, चाचा तथा चाची जी को बताना चाहिए था। मैं तो आता ही।"

"सच?"

"हाँ माँ! जब चाची जी ने कहा कि हम सब यहाँ आएँगे तो मेरा प्रयोजन सिद्ध हो गया। माँ! तुम सुखी हो?"

"हाँ! केवल एक बात पसन्द नहीं।"

"क्या?"

"वे शराब पीते हैं और माँस खाते हैं। मैंने अभी पीनी शुरू नहीं की और ना ही मैंने माँस खाया है। इस पर भी नहीं जानती कि यह परहेज कब तक चलेगा।"

"यह तो गौण बात है माँ! खाना–पीना तो जीवन के साधन हैं। इसके बिना जीवन चल नहीं सकता। मुख्य बात कुछ और है।"

सरस्वती का विचार था कि वह हिन्दू–धर्म की बात करेगा। उसको ज्ञात था कि जगन्नाथ हिन्दू–शास्त्र और गीता पढ़ने लगा है। इस कारण वह मुख्य बात के विषय में पूछने में संकोच अनुभव कर रही थी। बात जगन्नाथ ने ही कह दी, "माँ! मैं वह मुख्य बात जानता नहीं। कदाचित् चाचा जी बता सकें। एक बात मैं समझ रहा हूँ। वह है जीवन के प्रत्येक काम को अनासक्त, संगरहित होकर यज्ञ रूप करें तो उस काम में पाप नहीं लगता।"

"परन्तु ये सब कैसे हो सकते हैं?"

"वह किसी दिन फिर बताऊँगा। एक दिन चाचा जी कह रहे थे कि मानव–समाज के हित में किया कार्य ही यज्ञ होता है। परन्तु हित क्या है और क्या नहीं है यह मुझे अभी पता नहीं। यह तुम समझ लो कि यदि मद्य–माँस सेवन मानव–हित की बात है तो पाप नहीं।"

"परन्तु मानव–हित ही क्यों? प्राणी–हित क्यों नहीं?" माँ ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "माँस खाने के किसी प्राणी का अहित तो होता ही है।"

सत्य ही जगन्नाथ इस विषय में कुछ नहीं जानता था। वह मन में विचार करने लगा था कि वह शास्त्र पढ़ता हुआ भी कदाचित् माँ से कम ही समझता है। इस कारण उसने बात बदल दी। उसने कहा, "कभी जोन साहब के दर्शन करने आऊँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वे अभी आएँगे। आप लोगों के जाने से पहले ही।"

"तब तो ठीक है।"

"जग्गू। मैं विवाह के लिए विवश हो गई थी।"

"माँ। मुझको यह बुरा प्रतीत नहीं हुआ।"

"तो चलो बाहर। उनसे भी मिल लूँ।"

जब दोनों ड्राइंग रूम में आये तो शिवराम ने जगन्नाथ से पूछ लिया, "कर आये हो सुलह माँ से?"

"चाचा जी, माँ से मेरा झगड़ा नहीं था तो सुलह की बात कहाँ से आ गई!"

"प्रातः सुहागिन से बात करते समय कुछ ऐसा ही समझ आया था।"

"मुझे बात करने का ठीक ढँग नहीं आता– मेरा आशय वह नहीं था, जो आप लोगों ने समझा था। मैं कहना चाहता था कि माँ को आपसे मिलने के लिए आना चाहिए था। वह बिना बताये जो गई थी।"

"वह बता कर क्या जाती! हमारा उस पर क्या अधिकार था? नहीं जग्गू वह विवाह के लिए विवश थी।"

"माँ भी यही कह रही थी।"

"वैसे ही जैसे सुहागिन रामदयाल से विवाह के लिए विवश हो रही थी और फिर हंसराज से विवाह करने पर विवश हुई थी।"

जगन्नाथ को पता नहीं था कि सुहागिन की बात चाचा जी जानते हैं और कितनी जानते हैं। इस कारण वह मौन रहा। इस समय लक्ष्मी जगन्नाथ के पास आकर बैठ गई। वह जानना चाहती थी कि माँ, पुत्र में क्या बातें हुई हैं।

दूसरी ओर राधा सरस्वती से कह रही थी, "सरस्वती बहिन? मैं तो तुमको इतनी चतुर नहीं समझती थी।"

"तो तुम इसमें कोई बहुत चतुराई की बात समझती हो राधा बहिन! यह तो कोई अदृश्य शक्ति है जो मनुष्य को एक दिशा में धकेलती हुई ले जाती है। मैं भी इसी प्रकार धकेली जाती हुई इन सज्जन से नाता जोड़ बैठी।"

"तो तुमने इसमें कोई यत्न नहीं किया।"

"किया था। परन्तु वह यत्न इसके विरोध में था। मेरा विरोध असफल रहा। मैं विचार करती थी कि जगन्नाथ अब सज्ञान हो रहा है और उसके मन पर मेरे इस काम की क्या प्रतिक्रिया होगी। मैं इसका विरोध कर रही थी। परन्तु जब मुझमें आवेग उठा तो बुद्धि चकरा गई और मैं मान गई।"

"देखो बहिन राधा! तुमको आज मैं एक रहस्य की बात बताती हूँ। मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूचाल के उपरान्त अपने गाँव से भागी तो होशियारपुर आ पहुँची। मैं कुंवारी थी। स्टेशन पर रेलगाड़ी में सवार हो कहीं चली जाना चाहती थी। परन्तु रेलगाड़ियाँ चल नहीं रही थीं। कई स्थानों पर रेल की पटड़ी उखड़ गई थी। मैं प्लेटफार्म पर खड़ी थी कि ये जोन साहब मुझको मिल गये और अपने घर ले गये।''

''उन दिनों इनके पिता होशियारपुर के स्टेशन मास्टर थे और ये पढ़ते थे। मेरा मन तब ही इनके प्रति प्रेम से भर गया था। जगन्नाथ इनका ही लड़का है। तब इनके पिता हमारे सम्बन्ध की बात जान गये और उन्होंने मुझे घर से निकाल दिया। इन्होंने मुझे ईसाइयों के यतीमखाने में रख दिया। जगन्नाथ का जन्म वहाँ हुआ। पीछे यतीमखाने का मैनेजर मुझको विवाह करने के लिए कहने लगा। इसी निमित्त वह जगन्नाथ को मुझसे पृथक् रखने लगा। मुझको यह भला प्रतीत नहीं हुआ। इस कारण एक दिन मैं वहाँ से भाग खड़ी हुई और लाहौर में आ पहुँची।''

''स्टेशन से एक आना टमटम वाले को दे मैं लाहौर दरवाजे आ पहुँची। दरवाजे में पहली गली आप वाली मिली और मैं उसमें पहुँची तो आपने मुझसे पूछ लिया कि मैं कौन हूँ। फिर आपने मुझको अपने घर में रख लिया।''

''आज से दो मास पहिले मैं सुहागिन से मिलने इस बँगले में आई थी और उस समय ये सज्जन हंसराज से बातें कर रहे थे। मैंने पहिचाना। इन्होंने भी पहिचान लिया तो मुझसे हिन्दुस्तानी में बातें करने लगे। मैं आँखें नीची किये हुए हाँ, हूँ, जी में ही उत्तर देती रही। बस इससे अधिक बात नहीं हुई। उस दिन विवाह इत्यादि के विषय में कुछ बात नहीं हुई। एक दिन और कदाचित् हंसराज के प्रयत्न से वे मुझको यहीं मिले और विवाह का प्रस्ताव कर बैठे। उस समय मैंने इनको बताया कि उनसे मेरा एक लड़का है। इस पर तो बात अधिक खुलकर होने लगी। मैंने कहा भी, मैं आपकी भाषा भी नहीं जानती। मैं हिन्दू हूँ। मैं माँस–मद्य का सेवन नहीं करती। मुझमें विवाह की इच्छा नहीं रही। परन्तु इन सब आपत्तियों का एक ही उत्तर था, यह कुछ नहीं। अभ्यास से सब ठीक हो जायेगा। और जिसको आवश्यकता होती है वह अपने को दूसरों के अनुकूल बना लेता है। इन्होंने अभी तक विवाह नहीं किया था। पूराने संस्कार जाग पड़े। इस पर मैंने कुछ उत्तर नहीं दिया। फिर जिस दिन मैं एक रात के लिए सुहागिन की कोठी में रहने आई थी, मेरा विचार था कि मैं इनको सीधा उत्तर दे दूँगी। परन्तु जब मैंने उनको देखा तो फिर मैं कुछ कह नहीं सकी। उन्होंने विवाह का सब प्रबन्ध कर रखा था और मेरा विवाह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो गया। उसी रात मैं उनके घर चली गई। आज एक मास हो चुका है और अभी तक भगवान की दया है कि किसी प्रकार के पश्चात्ताप का अवसर नहीं आया। अब मैं अंग्रेजी पढ़ रही हूँ।''

इस समय मिस्टर चार्ली जोन वहाँ आ गये। हंसराज ने चार्ली साहब का सबसे परिचय कराया। वह पाँच फुट नौ इंच ऊँचा, हृष्ट–पुष्ट, हँसमुख, सुन्दर युवावस्था का व्यक्ति था। शिवराम का अनुमान था कि वह तीस वर्ष की आयु का होगा।

उसने शिवराम और हंसराज के बीच बैठ कह दिया, ''देखिये जी! मैंने आपके समुदाय की फुलवारी में से एक गुलाब का फूल उखाड़ लिया है। मैं इसके लिए क्षमा चाहता हूँ।''

शिवराम ने मिस्टर जोन स्मिथ से हाथ मिलाते हुए कहा, ''मुझे इसका शोक नहीं है। हम तो अपने सबको एक ही समुदाय का मानते हैं। वह समुदाय है 'मैनकाइंड' (मानव)। हमे प्रसन्नता इस बात की है कि सरस्वती देवी ने स्वेच्छा से विवाह किया है।''

''बहुत–बहुत धन्यवाद। मैं तो मजहब की बात कर रहा था। इस पर भी आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैं उसके विश्वासों को बलपूर्वक बदलने के लिए नहीं कहूँगा।''

''हम मजहब को व्यक्तिगत बात मानते हैं। इसमें जबरदस्ती होनी नहीं चाहिए। किसी भी पक्ष की ओर से नही। यदि हुई तो प्रायः प्रतिक्रिया दुःखद् होती है। हम समझते हैं कि आप जैसे सभ्य मनुष्य को मन की इस अवस्था का ज्ञान होना चाहिए। खैर! एक बात मैं आपसे कहना चाहता हूँ बहिन सरस्वती बहुत ही समझदार है और आप तनिक भी यदि उसके हृदय की बात को समझने का यत्न करेंगे तो वह बहुत सुख अनुभव करेगी और फिर आपको भी सुखी रखेंगी।''

इस प्रकार बातों–बातों में चाय का समय हो गया और चाय लगा दी गई। हंसराज के बच्चे भी आ गये और सबने चाय पी और फिर शिवराम इत्यादि अपने ताँगे में सवार हो लौट आये।

इस भेंट की प्रतिक्रिया लक्ष्मी पर विशेष हुई। एक दिन वह अपनी माँ से पूछने लगी, ''माँ! सरस्वती चाची कहती थी कि वह विवाह करने के लिए विवश हो गई थी। कैसे विवश हो गई थी?''

भोली लड़की के प्रश्न पर उसका मुख देखने लगी। फिर कुछ विचार कर उसने पूछा, ''तो यह उसने तुमको कहा था?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं माँ! वह राधा चाची से बातें कर रही थी और मैं सुन रही थी।"

"देखो लक्ष्मी।" भोली ने बात बन्द करने के लिए कह दिया, "बड़ों की बातें बच्चे नहीं सुना करते। यह पाप हो जाता है। सुनी है, तो अब मन से उसकी बात को निकाल दो और समझो तुमने सुनी ही नहीं।"

लक्ष्मी चुप कर गई, परन्तु वह यह नहीं मान सकी कि उसने सरस्वती की बात सुनी ही नहीं। वह अपने मस्तिष्क में इस विवशता की बात पर विचार करती रही।

एक दिन जगन्नाथ से बात करने का अवसर मिल गया। राधा के प्रसव पीड़ाएँ हो रही थीं। शिवराम और जगन्नाथ दुकान से घर आये तो भोली ने शिवराम को कहा, "शिवराम भैया! अभी जाओ और रक्खी दायी को बुला लाओ। उसको कहना कि तुरन्त चली आये।"

शिवराम पिछले पाँव मकान से उतर गया। भोली ने जगन्नाथ को कह दिया, "तुम भोजन ऊपर अपने कमरे में कर लो। लक्ष्मी तुम्हारा खाना वहाँ लेकर आती है।"

जगन्नाथ ऊपर की मंजिल पर अपने कमरे के चला गया। लक्ष्मी थाली में भोजन लाई तो अपने खाने के लिये भी साथ ले आई। दोनों बैठ खाने लगे। यह अवसर जान लक्ष्मी ने अपने मन में उठ रहे संशय को जगन्नाथ के सम्मुख उपस्थित कर दिया। उसने भोजन करते हुए पूछ लिया, "एक बात पूछूँ। आप बताएँगे?"

"क्या?"

"आपकी माँ कह रही थी वह विवाह करने पर विवश हो गई थी। भला कैसे विवश हुई थी?"

"मैं क्या जानूँ! मैं तो तुमसे भी आयु में छोटा हूँ। मुझको इन बातों का ज्ञान नहीं।"

"मैं समझी थी कि आप मुझसे अधिक पढ़े हैं। कदाचित् आपको ये पता हो।"

"ये बातें मेरी पढ़ाई में नहीं लिखीं।"

"मैं तो यह पूछ रही थी कि क्या पुलिस के सिपाही चाची को पकड़कर साहब के पास ले गये थे?"

जगन्नाथ हँस पड़ा। उसने कहा, "इतना तो मैं जानता हूँ कि माँ को कोई पकड़कर नहीं ले गया था। वह अपनी इच्छा से विवाह करने गई थीं।"

"तो फिर यह क्यों कहती थी कि विवश हो गई?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं तो यह समझता हूँ कि कभी इच्छा भी विवश कर देती है। उस दिन मुझको दस्त लगे थे। चाचा जी ने कहा था कि मुझे रोटी इत्यादि कुछ नहीं खानी चाहिए। घर पर खीर बनी थी। मेरी इच्छा हुई कि खीर खानी चाहिए। इस कारण जब रसोईघर में कोई नहीं था, तो मैं अपनी इच्छा को रोक नहीं सका। मैं चोरी–चोरी वहाँ गया और पेट भरकर खीर खा आया था। कुछ ऐसी ही विवशता रही होगी माँ की भी।"

"तो यह बात है। अच्छा एक बात और कहूँ?"

"क्या?"

"मेरी भी, विवाह करने की इच्छा होती है।"

"सच? किससे?"

"आपसे।"

"पर मेरी इच्छा तो होती नहीं।"

"मेरा मन कहता है कि होती है।"

"वाह! मेरे मन की इच्छा तुम कैसे जानती हो?"

"मैं जानती हूँ। मुझको रात स्वप्न आया करते हैं जब मैं आप से विवाह करती हूँ।"

"कैसे विवाह करती हो?"

लक्ष्मी गम्भीर मुद्रा में कहने लगी, "कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि एक धुआँ–सा एक कमरे की हवा में मिल गया है। वह धुआ मैं हूँ और कमरे की हवा आप हैं। बस हम एक–दूसरे में घुल गये हैं। इससे मुझको सुख प्रतीत होता है। जब नींद खुलती है और मैं अपनी खाट पर होती हूँ तो मेरे चित्त में बहुत व्याकुलता होती है। मैं उठकर बैठ जाती हूँ और फिर चाचाजी ने एक मन्त्र बताया है। उसका जाप करती हूँ तो व्याकुलता कम होती है।"

"देखो लक्ष्मी!" जगन्नाथ इसका अर्थ समझ रहा था। उसने बात टालने के लिए कह दिया, "ऐसी बातें लड़कियाँ मन में भी नहीं लातीं। तुमको भी मेरी भाँति सब पागल कहने लगेंगे। मैं भी पहले ऐसी ही बातें किया करता था। जब तुम सब मुझको पागल कहने लगे तो मैंने चाचा जी से पूछा था कि लोग मुझको पागल क्यों कहते हैं? इस पर उन्होंने बताया था कि मुझको इस प्रकार के स्वप्नों की बातें किसी से नहीं करनी चाहिए।"

"पर मैं किसी से तो कर नहीं रही? मैं तो आपसे ही कर रही हूँ।"

"और मैं कोई नहीं क्या?"

इस पर दोनों हँसने लगे। लक्ष्मी ने हँसकर कहा, "मैं आपको अपने से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथक् नहीं मानती।"

"वाह, पृथक् क्यों नहीं। पृथक् नहीं होते तो पृथक्–पृथक् भोजन क्यों करते। एक के खाने से दूसरे का पेट भर जाता।

अब बात लक्ष्मी की सूझ–बूझ से ऊपर हो गई थी। वह चुपकर रही। एक बात उसके मन में स्पष्ट हो गई थी कि प्रबल इच्छा भी विवश कर सकती है। मीठा खाने की वह भी बहुत शौकीन थी। किसी के भी मना करने से वह मिठाई खाये बिना नहीं रह सकती थी।

राधा ने सरस्वती के जोन से पूर्व–सम्बन्ध की बात अपने पति को बताई तो उसने गम्भीर हो कह दिया, "यह बात जगन्नाथ को बतानी नहीं चाहिए। सरस्वती को भी समझा देना चाहिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय परिच्छेद

सरस्वती के विवाह को दो वर्ष हो चुके थे। उसके घर गौरवर्णीय बच्चा भी हो चुका था। वह लड़का था, नाम था विन्सेन्ट। सरस्वती इस नयी सृष्टि को देख अति प्रसन्न थी। तब तक शिवराम ने भी एक कोठी फिरोजपुर रोड पर ले ली थी और उसको मरम्मत करा, वहाँ जाकर रहने लगा था। राधा के भी अब तीन बच्चे थे। सबसे बड़ा लड़का विष्णुस्वरूप था। वह अब सात वर्ष का हो गया था। दूसरी लड़की थी, पद्मा। वह पाँच वर्ष की थी। एक और लड़का था, नाम रखा गया था महेशस्वरूप।

सरस्वती अब शिवराम की कोठी में आती थी। अब अंग्रेज औरतों की भाँति स्कर्ट और ब्लाउज पहनती थी। अंग्रेजी स्कर्ट भी अब घुटनों तक ऊँचा बनने लगा था। सरस्वती ऊँची एड़ी के बूट, बफ रंग की जुराबें और उस पर बहुत बढ़िया रेशमी स्कर्ट और ब्लाउज पहन कर आया करती थी।

जोन अब लाहौर स्टेशन के चीफ सुपरिण्टेण्डेण्ट के स्थान पर काम करता था और पन्द्रह सौ रुपया वेतन पाता था। उसने एक फोर्ड मोटर गाड़ी रखी हुई थी। कभी तो जोन अपने पूर्ण परिवार के साथ और कभी मिस्टर और मिसेज जोन मोटर गाड़ी में सवार होकर आते थे। अब शिवराम ने अपनी दुकान के दो भाग कर दिये थे। एक भाग था फुटकर बिक्री का और दूसरा भाग था स्कूलों, कालेजों तथा पुस्तकालयों को माल भेजने का। यह विभाग वह स्वयं चलाता था। फुटकर बिक्री विभाग जगन्नाथ चलाता था। यह विभाग दिन के आठ बजे खुलता था और बारह बजे बन्द हो जाता था। फिर सायं चार बजे खुलता था और रात आठ बजे तक खुला रहता था। इस विभाग को सिवाय होली दिवाली इत्यादि त्यौहारों के और छुट्टी नहीं होती थी। दूसरा विभाग तो स्कूल–कालेजों की छुट्टियों के साथ बन्द रहता था।

मध्याह्न के समय जगन्नाथ कोठी पर जाता और आराम करता तथा पौने चार बजे चल कर चार बजे दुकान पर पहुँच जाता। मध्याह्न के समय ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कभी माँ से और अपने छोटे भाई से मिल सकता था।

सन् 1919 के दिन थे। लाहौर में मार्शल–लॉ लगा हुआ था। दुकानों के खुलने और बन्द होने पर प्रतिबन्ध थे। अब दुकाने नौ बजे खुलती थीं और पाँच बजे बन्द होती थीं। बाजारों में चलना–फिरना शाम के छः बजे तक ही हो सकता था। इस कारण फुटकर बिक्री विभाग का भी समय सरकारी कार्यालयों की भाँति नौ से पाँच बजे तक कर दिया गया था।

मई की 16 तारीख थी। कर्फ्यू लगा था, दुकानें बन्द हो रही थीं। जब दुकान बन्द हो रही थी, लक्ष्मी भागी–भागी आयी और जगन्नाथ के पास आकर खड़ी हो गई। "क्या है?" जगन्नाथ ने पूछ लिया।

"मुझको कुछ पुस्तकें चाहिएँ।"

जगन्नाथ ने घड़ी में समय देखा तो कह दिया, "केवल पन्द्रह मिनट हैं, अब नहीं मिल सकती।"

लक्ष्मी परेशानी अनुभव कर रही थी। जगन्नाथ ने पूछ लिया, "कल नहीं आ सकतीं?"

"पुस्तकें तो लेने आ सकती हूँ। परन्तु घर कैसे जाऊँगी?"

"क्यों?"

"माँ आपकी कोठी गई थी। अभी तक लौटी नहीं। पिताजी उसको ढूंढने चले गए हैं। मकान को ताला लगा है।"

"देखो, तुम मेरे साथ बाइसिकल पर बैठ जाओ और समय से पूर्व हम कोठी पर पहुँच जाएँगे।"

"ठीक है।"

: 2 :

लक्ष्मी बाइसिकल के डण्डे पर बैठ गई और जगन्नाथ उसको बैठाकर फिरोजपुर रोड की तरफ चल पड़ा। जगन्नाथ ने पूछा, "लक्ष्मी! किस कॉलेज में दाखिल हुई हो?"

"फोरमैन क्रिश्चियन कालेज' में। और किसी कालेज में लड़कियों को लेते ही नहीं। दूसरे कालेज अभी खुले भी नहीं।"

"किस डिविजन में पास किया है इण्टर?"

"फर्स्ट डिविजन में।"

"यह तो बहुत अच्छा किया है। परन्तु तुम्हारे पिता राजी हो गये हैं तुमको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बी.ए. में पढ़ाने के लिए?''

''वे तो नहीं मानते थे परन्तु क्या करते! परीक्षा के उपरान्त मेरा विवाह होने वाला था और विवाह नहीं हुआ। न जाने क्यों लड़के वाले रूठ गये हैं। जब विवाह नहीं हुआ तो मैंने माँ को कहा और कालेज में भर्ती हो गई हूँ।''

''बहुत अफसोस है।''

''क्यों? अफसोस क्यों है?''

''विवाह हो जाता तो ठीक नहीं था क्या?''

''विवाह हो नहीं सकता था। मैं जानती थी, परन्तु मैं किसी को कह नहीं सकती थी।''

''क्यों नहीं हो सकता था?''

''यह मेरा मन कहता था कि वहाँ विवाह अभी नहीं होना।''

''फिर वही पागलों की–सी बातें करने लगी हो?''

''नहीं जी! मैं जानती हूँ कि मेरा विवाह कहाँ और कब होना है। परन्तु माँ और पिताजी नहीं जानते। वे दो अन्य स्थानों पर यत्न कर चुके हैं और दोनों स्थानों पर बात टूट गई है।''

जगन्नाथ जानता था कि वह कहाँ विवाह की इच्छा कर रही है। परन्तु वह उसके वहाँ विवाह को प्रायः असम्भव मानता था। लक्ष्मी उससे विवाह की इच्छुक थी। वह स्वयं भी जानता था कि उसका लक्ष्मी से किसी दूसरे लोक का सम्बन्ध है। परन्तु इस दुनियाँ में उस लोक की बात चलती नहीं। वह देख रहा था कि मनुष्यों की बुद्धियाँ विलक्षण होने से, उनसे विलक्षण कार्य कराती हैं। इसी से दुःख और सुख होते हैं।

जगन्नाथ चुपचाप बाइसिकल चलाता गया। एकाएक लक्ष्मी ने पीछे हटकर अपना सिर जगन्नाथ की छाती के साथ लगाकर पूछ लिया, ''आप कब विवाह करेंगे?''

''चाचा जी कहते हैं कि छः वर्ष बाद। अभी मैं पन्द्रह का हुआ हूँ और मेरी पढ़ाई अभी समाप्त नहीं हुई।''

''क्या पढ़ते हैं आप?''

''आजकल उपनिषद् पढ़ रहा हूँ और अंग्रेजी में शेक्सपीयर का अध्ययन कर रहा हूँ।''

''कितनी अंग्रेजी पढ़ ली है?''

''बी.ए. की श्रेणी की योग्यता तो है ही। चाचा जी का यही कहना है।''

''तो आप मेरे जितना पढ़ गये हैं?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जगन्नाथ हँस पड़ा। वह समझता था कि उससे कहीं अधिक पढ़ चुका है। इस पर भी उसने कहा नहीं। वह चुपचाप बाइसिकल चलाता गया। लक्ष्मी ने पूछ लिया, ''चाचा जी दुकान से क्या वेतन देते हैं?''

''अब वे वेतन नहीं देते। दुकान की फुटकर बक्री में लाभ का दस–प्रतिशत मेरा भाग है।''

''कब से यह किया है?''

''एक वर्ष हो गया है।''

''कितना मिल जाता है इससे?''

''पिछले वर्ष ढ़ाई हजार मेरे भाग का लाभ मिला है।''

''सच? तब तो आपका वेतन दो सौ रुपया महीना हो गया है।''

''यह वेतन नहीं लक्ष्मी! वेतन तो हानि–लाभ दोनों हालतों में मिलता है और यह तो मैं लाभ–हानि में पत्तीदार हो गया हूँ। कभी हानि भी हो सकती है।''

''और कभी लाभ इससे भी अधिक हो सकता है?''

''हाँ! यह तो है ही।''

''तो एक बात मेरी मान लो।''

''क्या?''

''अब विवाह कर लो।''

जगन्नाथ हंस पड़ा। हँसकर उसने कहा, ''मेरी आयु अभी पन्द्रह वर्ष की है। कौन करेगा मुझसे विवाह?''

''मैं करूँगी। आप देखने में तो मुझसे बड़े लगते हैं।''

''मैं तो पढ़ाई समाप्त कर विवाह करूँगा।''

''इतना पढ़कर क्या करेंगे? साथ ही विवाह के बाद पढ़ाई क्यों नहीं हो सकती?''

''ऊँहूँ। यह नहीं हो सकता। फिर चाचा जी और माता भोली से पूछे बिना तो विवाह हो ही नहीं सकता।''

इस समय वे कोठी के भीतर जा पहुँचे। जगन्नाथ बाइसिकल से उतर पड़ा। लक्ष्मी के माता–पिता कोठी के बरामदे में खड़े थे। उनको देख लक्ष्मी ने कहा, ''अच्छा शेष बात फिर करूँगी। मैंने मन में कुछ निश्चय किया है।''

''पागल मत बनो लक्ष्मी!''

जगन्नाथ बाइसिकल रखने कोठी के पिछवाड़े चला गया। लक्ष्मी बरामदे में अपने माता–पिता के सामने जा खड़ी हुई। भोली ने कहा, ''यह तुमने ठीक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
किया है कि यहाँ आ गई हो। मैं यहाँ आई तो सवारी न मिलने से जा नहीं सकी। सन्त और कृपा विष्णु से कैरमबोर्ड खेलने लगे तो जाने को तैयार नहीं हुए। तुम्हारे पिता अभी भागते–भागते यहाँ पहुँचे हैं और हम तुम्हारे विषय मे चिन्ता कर रहे थे।''

''पिता जी तो कह आये थे कि कमल की चाची के घर चली जाऊँ परन्तु मेरा जी वहाँ जाने को नहीं किया और मैं गली से भाग चाचा जी की दुकान पर जा पहुँची। वहाँ से ये बाइसिकल पर आ रहे थे और मैं भी इनके साथ ही आ गई हूँ।''

भोली भी समझती थी कि कमल की चाची के घर नहीं गई तो ठीक ही किया है। कमल की चाची ने कमल से लक्ष्मी के विवाह को स्वीकार नहीं किया था। इससे दोनों के परिवारों में सम्बन्ध सुखद नहीं रहे थे। उसने बात बदल दी, ''आज रात तो हम यहाँ ही रहेंगे। राधा ने कह दिया है और यदि न कहती तो भी यहाँ रहते ही। भले ही यहाँ बरामदे में सोना पड़ता।''

इस समय शिवराम वहाँ आ गया। वह लक्ष्मी को देख पूछने लगा, ''तो तुम भी आ गयी हो। ठीक किया है। चलो! चाय तैयार हो गई है।''

वे भीतर गये तो जगन्नाथ कोठी के पिछवाड़े से पहले ही वहाँ पहुँचा हुआ था। सब लोग कमरे में बैठ गये। नौकर ने चाय लगा रखी थी। सब सेण्टर टेबल के चारों ओर बैठ पीने लगे।

आज सरस्वती का गोरा बच्चा भी वहाँ ही था। वह माँ के साथ आया था। उसके डैडी ने कहा था कि उसके पास परमिट है। वह किसी समय भी मोटर लेकर आयेगा और उनको ले जायेगा। इससे सब निश्चिन्त हो चाय पीने आ बैठे थे। रामनाथ ने कह दिया, ''भैया शिवराम! मैं तो चाय पीता नहीं। इतनी गर्मी में तो यह सीना जला देगी।''

शिवराम हँस पड़ा। उसने इतना कहा, ''भापा, गरम चाय गर्मियों में ठण्डक पहुँचाती है।''

''नहीं भैया!''

''तो आपके लिए शर्बत बनवा देता हूँ।''

''हाँ! वह ठीक है।''

''लक्ष्मी! तुम क्या पीयोगी?''

वह जगन्नाथ को चाय पीते देख बोली, ''मैं तो चाय पीयूंगी। मुझको यह ठण्डक पहुँचायेगी।''

''और भोली बहिन?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मुझको कुछ भी आवश्यकता नहीं और मैं कुछ भी पी सकती हूँ।"

"बहुत अच्छी है बहिन भोली।"

चाय पीने के साथ-साथ शिवराम अपने कारोबार की बात बताने लगा। उसने कहा, "देखिये रामनाथ जी! मैं स्कूल में पचहत्तर रुपये वेतन पाता था। इतना साधारण वेतन देकर भी हेड-मास्टर मेरी पढ़ाई और मेरी बुद्धि की निन्दा करता था। वह स्वयं उल्टी बात करता था और मुझको अज्ञानी मानता था। जब मैं उसको समझाने लगा तो समझने का यत्न करने के स्थान मुझको आज्ञा करने लगा कि मुझको उसके कहे अनुसार ही पढ़ाना चाहिए।

"मैंने नौकरी छोड़ दी। पीछे मैंने दुकान खोलने के समय उसी हेड-मास्टर को आशीर्वाद देने के लिए बुलाया तो वह आया। आशीर्वाद तो दे गया परन्तु जाने से पूर्व एक-दूसरे मास्टर से कह गया कि शीघ्र ही मेरा दिवाला निकलेगा। उस मास्टर ने मुझे पीछे बताया कि हेड-मास्टर ऐसा कहता है। मैंने यत्न किया और उस बात को अब बीस वर्ष हो गये हैं। जब वह हेड-मास्टर रिटायर हुआ तो मैं उससे मिलने गया था। मैंने उसको दुकान खोलने के समय दी गई आशीर्वाद का धन्यवाद किया तो वह पूछने लगा, 'उस काम से तुम बहुत प्रसन्न हो?"

"मैंने कहा, 'बहुत'। पिछले वर्ष चालीस हजार की नकद आय हुई है।"

"चालीस हजार,!' सुनकर उसका मुख-खुला रह गया। इस पर मैंने यह बता दिया, 'मैं अब एक बहुत अच्छा छापाखाना खोलने वाला हूँ।'

"कितना रुपया लगाकर काम आरम्भ किया था?" उसका अगला प्रश्न था।

"मैंने उत्तर दिया, 'जितना अपने पढ़ने पर व्यय किया था उससे कुछ कम ही पूँजी दुकान में डाली थी। जब मैं पाँचवीं श्रेणी में भरती हुआ था, मेरी आयु दस वर्ष की थी। हमारी समाज में उस आयु के लड़के दस सें बीस रुपया महीना पैदा करने लगते हैं। जब मैंने शास्त्री और बी.ए., बी.टी. की परीक्षा पास की थी, मैं पच्चीस वर्ष का था और पास करने पर मुझको पचहत्तर रुपये की नौकरी मिली थी। इस प्रकार मेरी औसत आय चालीस रुपया महीना की माननी चाहिये। यह मेरी पढ़ाई के काल की थी। यह पन्द्रह वर्ष का काल था। मेरे पिता जी कहते थे कि पढ़ाई करते समय मैंने इतनी ही आय की हानि की थी। यह साढ़े सात हजार रुपया था। इसके अतिरिक्त स्कूल-कालेज की फीसें, किताबें और अन्य प्रकार के खर्च, ये सब भी पिता जी ने ही किये थे। वे चार-पाँच हजार से कम नहीं थे। इस प्रकार मेरी पढ़ाई पर बारह हजार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुपया खर्च हुआ। दुकान पर मैंने पाँच हजार रुपया लगाया था। इस समय दुकान की पूंजी एक लाख रुपये की है। मैंने एक कोठी, जिसमें रहता हूँ, तीस हजार की मोल ली है। एक मकान पुरानी अनारकली में बना रहा हूँ। जिसमें छापाखाना लगेगा।''

''मिस्टर थॉम्प्सन बोले, ''मिस्टर शिवराम! मैं तुमको मुबारकवाद देता हूँ। तुम बहुत ही सौभाग्यवान हो। मैंने पच्चीस वर्ष तक नौकरी की है और बहुत किताबें भी लिखी हैं। इस पर भी मेरा बैंक बैलेन्से चार हजार पौंड से अधिक नहीं है।''

''सर!'' मैंने कह दिया, 'इस पर भी मुझको पढ़ाई कराने की नौकरी छूट जाने का शोक है। पढ़ाना हमारा पैतृक काम है। मेरे बाबा जी मुन्शी फाजल थे और एक मकतब में फारसी पढ़ाते थे। मेरे पिता एक स्कूल में उस्ताद थे। मैं भी अपनी मेहनत से प्राप्त की विद्या को दूसरों को देने में अपना अहोभाग्य मानता, परन्तु यह मेरे भाग्य में था नहीं। मुझे नौकरी छोड़नी पड़ी। यह इस कारण था कि जिसको मैं अविद्या समझता था, वही पढ़ाने के लिए विवश किया जा रहा था और विद्या पढ़ाने से मना किया जा रहा था।'

''इस पर मि. थॉम्प्सन बोले, 'शिवराम, जो तुम पढ़ाते थे वह विद्या थी क्या? देखो, सरकार ने उसको अविद्या करार दिया है। और अब तो हिन्दुस्तान के पढ़े–लिखे लोग भी उसको अविद्या कहते हैं।

''मैंने उन्हें समझाने की कोशिश की। मैंने कहा, 'विद्या–अविद्या के लिए अन्तिम निर्णय कही भी नही हुआ। सरकारी शिक्षा तो नौकरियो के निमित्त है। और इसका विद्या से क्या सम्बन्ध है? विद्या तो इस लोक और परलोक को भली–भाँति जानने का नाम है। उसके ज्ञान से ही मनुष्य का कल्याण होता है।''

''रामनाथ जी! मैंने उसको बताया कि 'सरकार को वास्तविक विद्या देने के लिए सब विद्वानों को स्वतन्त्र कर देना चाहिए। जहाँ तक जीविकोपार्जन के उपाय है उसके लिए प्रत्येक जीविका देने वाला अपनी आवश्यकताएँ घोषित कर दे और विद्वान लोग विद्या के साथ–साथ जीविकोपार्जन के उपाय भी सिखा दिया करेंगे। जिसने किसी को नौकरी देनी है, वह नौकरी देने के समय परीक्षा लेकर देख लेगा कि अमुक विद्यार्थी उसका कार्य कर सकेगा अथवा नहीं।''

''यह नहीं हो सकेगा। थॉम्प्सन का कहना था। मैंने कह दिया, 'इसी कारण मैं नौकरी नहीं कर सका और अब मैं एक विद्यार्थी को घर पर ही पढ़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा हूँ?"

"किसलिए?"

"उसको इस लोक और परलोक का ज्ञान कराने के लिए और साथ ही जिससे वह मेरे ज्ञान को और आगे ले जा सके।"

"वह किस स्कूल में पढ़ता है?"

"किसी स्कूल में नहीं पढ़ता।"

"यह तो तुम उसका भविष्य बरबाद कर रहे हो।"

"कैसे?" मैंने पूछा।

"उसको जीविकोपार्जन के अयोग्य बना रहे हो।"

"मेरी हँसी निकल गयी। मैंने उसको बताया कि वह अभी भी दो सौ रुपये मासिक तक पैदा कर लेता है। इस पर मिस्टर थॉम्प्सन को मेरी बात का विश्वास नहीं आया।"

रामनाथ समझ रहा था कि यह किस लड़के के विषय में बात हो रही है। इस कारण उसने पूछ लिया, "तो यह जगन्नाथ की बात कर रहे हैं?"

"हाँ। वह इस समय मेरे कारोबार के एक विभाग में पत्तीदार है। रुपया मेरा लगा है और योजना तथा राय मेरी चलती है, परन्तु काम वह करता है। काम करने का मैं उसे दस–प्रतिशत देता हूँ। इतनी आय उसकी हो रही है।

"जगन्नाथ अब घर पर अपने भोजन–वस्त्र पर स्वयं व्यय करता है। अभी कोठी में रहने का किराया नहीं देता, परन्तु इसके प्रतिकार में वह घर के अनेकों काम कर देता है।"

इस समय बच्चे खेलने चले गये थे। जगन्नाथ अपने कमरे में स्वाध्याय करने गया तो लक्ष्मी उसके साथ वहाँ जा पहुँची। राधा और भोली पिछले कमरे में जा पहुँची। रामनाथ ने एकान्त देखा तो शिवराम से कहा, "भैया शिवराम! लक्ष्मी की सगाई मैंने कृष्णचन्द बाबू के लड़के से की थी। सगाई एक वर्ष तक रही और इस वर्ष में पाँच–चार सौ रुपया तो वैसे ही उनको दे चुका था। विवाह अप्रैल मास में तय हुआ था। विवाह से दस दिन पूर्व जब सब तैयारी हो चुकी थी तो 'नाई' संदेश लाया कि लड़का पाँच हजार रुपया विलायत पढ़ने का खर्चा माँगता है। मैंने इस प्रकार रुपया देना स्वीकार नहीं किया। उन्होंने सगाई तोड़ दी है।"

"इस बात का लक्ष्मी को ज्ञान हुआ तो वह कालेज में दाखिल होने का हठ करने लगी और पन्द्रह तारीख को स्वयं जाकर 'फोरमैन क्रिश्चियन कालेज' में भरती हो गयी है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो उसका कहीं अन्यत्र विवाह क्यों नहीं कर देते?"

"कमल से सगाई का यत्न किया था। इसको दो वर्ष हो चुके हैं, परन्तु कमल की चाची ने इन्कार कर दिया और उसने कमल की सगाई लाट साहब के दफ्तर के एक बाबू की लड़की से कर दी है।"

"मैं समझता हूँ कि स्कूल–कालेजों में जीविकोपार्जन की पढ़ाई तो कुछ मिलती ही है परन्तु वहाँ अक्ल की बात बताई नहीं जाती। परन्तु क्या लक्ष्मी ने कहीं नौकरी करनी है?"

"तो क्या किया जाये! मैं तो कालेज में भरती कराना नहीं चाहता था। परन्तु उसकी माँ कहने लगी, लड़की खाली बैठी क्या करेगी?"

"उसको नौकर करवा दो।"

"कहाँ?"

"मैं छापाखाना खोल रहा हूँ। काम बढ़ जाएगा। लक्ष्मी को एक–दो महीने में काम सिखाकर दुकान पर बैठा दूँगा और स्वयं छापाखाना चलाने का यत्न करूँगा।"

"और जगन्नाथ क्या करेगा?"

"उसका काम पृथक् है। वह स्कूलों इत्यादि में किताबें नहीं देता। वह तो दुकान पर बिक्री ही करता है।"

"उसकी माँ से बात करूँगा। पर मैं तो एक और बात पूछता हूँ। लक्ष्मी के लिए जगन्नाथ कैसा रहेगा?"

"वह आयु में छोटा है। लक्ष्मी अठारह वर्ष की आयु की है। जगन्नाथ ने तो अभी सोलहवाँ आरम्भ किया है।"

इस पर रामनाथ ने कह दिया, "शरीर से तो वह अठारह वर्ष का प्रतीत होता है।"

"हाँ। बुद्धि में तो वह उससे भी बड़ी आयु का लगता है। इस पर भी विवाह का सम्बन्ध तो शरीर से अधिक है और मैं उसको अभी विवाह योग्य आयु का नहीं समझता।"

इस पर रामनाथ ने बात बदल दी। जगन्नाथ के कमरे में भी इसी विषय में बात हो रही थी। जब वह अपने कमरे में अपनी कुर्सी पर बैठा तो लक्ष्मी उसके समीप जा खड़ी हुई। जगन्नाथ ने पूछ लिया, "कहो कैसे आयी हो?"

"मेरी बात जो मैं बाइसिकल पर बैठी कर रही थी, अभी समाप्त नहीं हुई थी।"

"क्या कहना चाहती हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लक्ष्मी उसकी कुर्सी की बाजू पर बैठ कुर्सी की पीठ पर हाथ रख बोली, "मैं कह रही थी...।"

जगन्नाथ उठ खड़ा हुआ। उसने कहा, "तुम कुर्सी पर बैठो और मैं अपनी खाट पर बैठता हूँ।"

लक्ष्मी हँस पड़ी। हँसते हुए बोली, "जब आप बैठने को जगह न दें तो यहाँ ही बैठना पड़ा था।"

जगन्नाथ खाट पर बैठा तो वह कुर्सी पर बैठ गयी। बैठकर बोली, "मैं आपसे विवाह करने का निश्चय कर चुकी हूँ। इस कारण अब समय व्यतीत करने के लिए कालेज में भरती हो गयी हूँ। जब तक बी.ए. पास करूँगी, आप विवाह कर सकेंगे।"

"पर मैंने निश्चय किया है कि मैं तुमसे विवाह नहीं करूँगा।"

"क्यों?"

"तुम काली–काली हो।"

"काली? काली तो नहीं। हाँ, उतनी गोरी नहीं जितना तुम्हारी माँ का दूसरा बच्चा है।"

"मैं तो उतनी ही गोरी लड़की से विवाह करूँगा।"

"तो मैं मरणपर्यन्त कुँवारी रहूँगी।"

"कालेज में बहुत लड़के मिल जाएँगे जो तुमसे विवाह के लिए राजी हो जाएँगे।"

"परन्तु मेरा विवाह आपसे ही होना है। अन्यत्र कहीं हो नहीं सकेगा।"

"यह देख लेंगे। राधा चाची की मौसी का एक लड़का है। कहो तो चाची से कहूँ।"

"कुन्दन? मैं तो उसके मुख पर थूकती भी नहीं।"

"वह थूकने योग्य है भी नहीं। वह प्यार के योग्य है।"

"अच्छा! मैंने अपनी बात कह दी है। देखूंगी कि तुम किस प्रकार किसी गोरी लड़की से विवाह करते हो।" इतना कह लक्ष्मी क्रोध में उठ कमरे से बाहर चली गई। वह राधा चाची के कमरे में गई तो उसकी माँ राधा से बातें कर रही थी। लक्ष्मी को आया देख भोली ने कह दिया, "लक्ष्मी, तुम विष्णु और बच्चों से कैरमबोर्ड खेलो।"

"तो मैं जाऊँ?"

"हाँ विष्णु के कमरे में।"

लक्ष्मी को सन्देह हो गया कि राधा की मौसी के लड़के कुन्दन की बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो रही है। इससे वह जाने के स्थान वहाँ बैठ बोली, "माँ! मैं अब कालेज में भरती हो गई हूँ। बी.ए. पास करूँगी। तब तक मेरे विवाह की बात मत करना।"

भोली मुस्कराकर बोली, "यह कैसे कहती हो कि तुम्हारे विवाह की बात हो रही है।"

"तो मुझसे छुपकर क्या बात कर रही हो?"

"राधा की मौसी का लड़का कुन्दन है न, उसके विवाह की बात हो रही है। तुम्हारी नहीं।"

लक्ष्मी हँसकर बोली, "उसका विवाह उस मेज से कर रही हो?"

इस पर तो भोली और राधा दोनों हँसने लगीं। भोली ने हँसकर कह दिया, "उस मेज से नहीं लक्ष्मी! इस कुर्सी से जिस पर तुम बैठी हो।"

इस पर तो तीनों हंसने लगीं। लक्ष्मी उठ खड़ी हुई। और बोली, "तो लो, मैं खाली कर देती हूँ। कर लो इससे विवाह। पर मैं बता देती हूँ कि मैं कुन्दन से विवाह नहीं करूँगी।"

इतना कह वह कमरे से निकल गई। इस पर भोली ने राधा को कह दिया, "यह मुझको बता चुकी है कि इसका विवाह जगन्नाथ से होगा। परन्तु लक्ष्मी के भापा कहते हैं कि उसकी माँ का व्यवहार प्रशंसनीय नहीं। वह न केवल अपना धर्म–कर्म छोड़ बैठी है, बल्कि पहिरावा और बोली भी छोड़ चुकी है। वह न हिन्दु रही है, न हिन्दुस्तानी। ऐसी माँ के लड़के से लक्ष्मी का विवाह उचित नहीं।"

"यह ठीक है। परन्तु यह कुन्दन की बात तुमने इससे क्यों की?"

"मैंने यह तो कहा नहीं कि उससे विवाह हो रहा है कुन्दन का।"

"इस पर भी भोली बहिन, तुम्हारे कहने का यही अर्थ निकलता था।"

"इससे हानि हुई है?"

"यह मैं कैसे बता सकती हूँ। हानि–लाभ तो ईश्वर के हाथ में है। हाँ, अब कुन्दन से लक्ष्मी का विवाह नहीं होगा।"

"क्यों?"

"लड़की सज्ञान हो गई है और जब अपने विवाह की बात ऐसे करने लगे तो उसकी इच्छा के विपरीत कुछ नहीं करना चाहिए।"

"तो चार वर्ष तक उसका घर में अचार डालूँगी। देखो राधा! मेरा विवाह तो ग्यारह वर्ष की आयु में हो गया था। तुम भी पन्द्रह वर्ष के लगभग थीं। जब तुम मास्टर जी के घर आई थी। यह अब सत्रहवें में जा रही हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह तो ठीक है परन्तु मैं समझती हूँ। कि उसकी इच्छा के बिना विवाह करोगी तो अच्छा नहीं करोगी।"

रात खाने के समय लक्ष्मी चुपचाप भोजन करती रही। वह बोली नहीं। राधा को समझ आ रहा था कि वह माँ से नाराज है। वास्तव में वह जगन्नाथ से नाराज थी।

अगले दिन आठ बजे के लगभग रामनाथ गया और ताँगा ले आया। उसमें सवार हो वह, भोली और तीनों बच्चे चले गये।

घर पर सबको छोड़कर रामनाथ दुकान पर चला गया। लक्ष्मी कालेज चली गई। माँ ने उसको पचास रुपये पुस्तके खरीदने को दिये हुए थे। कालेज में दो घण्टे पढ़ाई कर वह अपनी दो सहेलियों के साथ 'न्यू बुक एजेन्सी' पर किताबें खरीदने जा पहुँची।

और भी विद्यार्थी पुस्तकें खरीदने आये हुए थे। जगन्नाथ और निरंजन उनको किताबें दिखा रहे थे। जगन्नाथ ने लक्ष्मी को देखा तो वह उसके पास आ पूछने लगा, "तो पुस्तकें लेने आई हो?"

"हाँ।"

"तुम्हारे भापा जी आये हुए हैं।"

लक्ष्मी विस्मय में मुख देखती रह गई। जगन्नाथ ने कहा, "वे चाचा जी से भीतर बातें कर रहे हैं। तुम चलोगी वहाँ?"

"बिन बुलाये चली जाऊँ?"

"इस पर तो जगन्नाथ चुप कर गया। लक्ष्मी ने कह दिया, "मैं जानती हूँ कि वे क्या बातें कर रहे हैं। उसी कुन्दन गधे की बात हो रही होगी।"

"जगन्नाथ हँस पड़ा। उसने हाथ बढ़ा कहा, "सूची दिखाओ। क्या–क्या चाहिए?"

लक्ष्मी ने तीन सूचियाँ दे दीं। एक अपनी थी और दूसरी अपनी दोनों सहेलियों की। उसने स्वयं तो इतिहास, संस्कृत और अंग्रेजी विषय लिए थे। उसकी एक सहेली ने साइंस ली थी और उसकी पुस्तकों की सूची कैमिस्ट्री, फिजिक्स तथा अंग्रेजी के विषयों की थी। तीसरी लड़की ने फिजिक्स, गणित और अंग्रेजी के विषय लिये थे। जगन्नाथ ने सूचियाँ ले लीं और तीनों के लिए पुस्तकें निकालने लगा। पुस्तकें निकाल तीन बण्डल चपरासी को बनाने के लिए कह, उसने तीनों के बिल बनाये। सब में से दस प्रतिशत कमीशन काट दी। लक्ष्मी ने बिल देखा तो पूछ लिया, "यह कमीशन चाचा जी से पूछ कर दे रहे हैं अथवा अपने आप?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अपने आप।"

"क्यों?"

"इसलिए कि तुम लक्ष्मी हो और ये तुम्हारी सहेलियाँ हैं।"

"लक्ष्मी कहने वाली थी कि वह कमीशन कटवाना नहीं चाहती कि इस समय रामनाथ और शिवराम कार्यालय से निकल आये। दोनों ने लक्ष्मी को देखा तो वहाँ ही आ गये जहाँ लक्ष्मी देने के लिए रुपये गिन रही थी। "कैसे आई हो लक्ष्मी?" रामनाथ ने पूछ लिया।

"किताबें खरीदने।"

"ये तीन बण्डल कैसे हैं?"

"दो इनके हैं।" उसने अपनी सहेलियों की ओर संकेत कर कह दिया।

"ठहरो जगन्नाथ!" शिवराम ने जगन्नाथ को रुपये लेने से मना करते हुए कहा, "यह लक्ष्मी अपनी पुस्तकें नहीं खरीद रही। तुम इससे दाम न लो।

लक्ष्मी की समझ में आया कि उसके विवाह का निश्चय हो गया है। उसके माथे पर त्योरी चढ़ गई। रामनाथ कुछ कहने ही वाला था कि शिवराम, उसकी बाँह पर हाथ रखकर उसे चुप रहने का संकेत कर कहने लगा, "तुम पुस्तकें कल खरीद लेना। इधर आओ! तुमको एक बात बतानी है।"

लक्ष्मी अपने पिता का मुख देखने लगी। रामनाथ ने कह दिया, "आओ लक्ष्मी! मास्टर जी का एक प्रस्ताव है। वह भी सुन लो।"

लक्ष्मी मन में निश्चय कर कि वह आज अपने मन के भाव जगन्नाथ के विषय में पिता जी को तथा चाचा जी को स्पष्ट बता देगी, दोनों के साथ कार्यालय के कमरे में चली गई।

जगन्नाथ दोनों लड़कियों से दाम वसूल करने लगा तो एक ने पूछ लिया "क्या अब भी कमीशन देंगे?"

"क्यों नहीं? तुम अब लक्ष्मी की सहेलियाँ नहीं रही हो क्या?"

इस पर वह मुस्कराई। जगन्नाथ ने रुपये वसूल किये और किताबें उनको दीं तो वे 'थैंक्यू' कर दुकान में लक्ष्मी की प्रतीक्षा करने लगीं। जगन्नाथ का भी विचार था कि कुन्दन से विवाह की बातचीत हो गई है। इसी कारण पुस्तकें खरीदने की आवश्यकता नहीं रही। उसने लक्ष्मी की पुस्तकों का बण्डल उठाकर पृथक् एक रैक पर रख दिया और अपने काम में लग गया।

आधा घण्टा–भर भीतर बातचीत होती रही। उसके उपरान्त रामनाथ और लक्ष्मी कार्यालंय से निकले और लक्ष्मी ने प्रसन्नता से उबलते हुए जगन्नाथ को कह दिया, "मैं पुस्तकें नहीं खरीद रही। वे लड़कियाँ कहाँ गई?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वे कुछ समय तक तो यहाँ खड़ी तुम्हारी प्रतीक्षा करती रही थीं। जब तुम नहीं आई तो चली गई हैं।"

जगन्नाथ रामनाथ की ओर प्रश्न–भरी दृष्टि से देखने लगा। रामनाथ ने मुस्कराते हुए कह दिया, "लक्ष्मी के लिए पढ़ाने के अतिरिक्त कुछ अन्य काम ढूँढ़ लिया गया है।"

"तो लक्ष्मी को मैं बधाई दूँ?"

"हाँ, परन्तु अभी नहीं। जब यह काम भली–भाँति करने लगेगी तब?"

"तो तब तक मिठाई खाने को नहीं मिलेगी?"

लक्ष्मी ने अपने पिता की ओर देखा। वे दुकान से बाहर को जा रहे थे। इस पर उसने जगन्नाथ की ओर देखा और जिह्वा निकाल दी और फिर अपने पिता के पीछे चल दी।

: 3 :

ठीक बात तो सायंकाल जगन्नाथ को घर पहुँच कर पता चली। शिवराम ने सायंकाल की चाय लेते हुए राधा को कहा, "मैंने लक्ष्मी को दुकान पर नौकर रख लिया हे।"

"किस काम पर?"

"वह मेरे स्थान पर दफ्तर का काम देखेगी। मैं उसको एक घण्टा प्रातःकाल काम समझाकर छापाखाना का काम देखने चला जाया करूँगा। वह माल बेचने, बिल बनाने, हिसाब–किताब रखने और स्टाक दर्ज करने का काम किया करेगी।"

"वह कर लेगी?"

"अभी तो उसको सिखाना पड़ेगा। कल से वह दुकान पर आयेगी। मैंने उसका लेख देखा है। वह बहुत साफ लिखती है। उसको काम सिखाने में छः मास लगेंगे। छः मास तक उसको पचास रुपया महीना दूँगा। यदि छः मास के उपरान्त उसनें परीक्षा पास कर ली तो वेतन पचहत्तर रुपये कर दूँगा। तब तक छापाखाना फिट हो जायेगा। वह दुकान पर काम करेगी और मैं छापाखाना का काम देखूँगा।"

राधा ने पूछ लिया, "वह मान गई है?"

"हाँ! बहुत प्रसन्न प्रतीत होती है।"

"तो अब दुकान जगन्नाथ और लक्ष्मी के कन्धों पर चलेगी?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं, मैं दोनों को सहायता देता रहूँगा। इस पर भी काम चल पड़ा है। अब यह अपने ही बल पर चल सकेगा।"

जगन्नाथ गम्भीर हो यह वार्त्तालाप सुन रहा था। राधा ने उससे पूछ लिया, "जगन्नाथ, तुम क्या कहते हो?"

"मुझको उसके काम पर सकने में संदेह है।"

"क्यों?"

"यह लड़कियों का काम नहीं।"

"तुमने ही एक दिन कहा था कि लड़का और लड़की अनाज के दाने के दो दल के समान हैं। मैंने भी अपने काम को अनाज के दाने के दलों की भाँति विभक्त किया है। इसी कारण एक–विभाग को एक लड़के के अधीन और दूसरे विभाग को एक लड़की के अधीन करने का विचार किया है।"

"देख लीजिये! लड़कियाँ झगड़ा बहुत करती हैं।"

"तो तुम वहाँ पर किस मर्ज की दवा हो! तुम तो लड़की नहीं हो।"

"परन्तु चाचा जी! वह तो आपके स्थान पर आ रही है न? और आप मुझसे श्रेष्ठ हैं। इस कारण मैं उसकी मर्ज का इलाज करूँगा अथवा वह मुझको भी मरीज बना देगी।"

शिवराम हँस पड़ा। राधा भी इसमें कुछ शुभ की आशा नहीं करती थी।

परन्तु बात आगे नहीं चल सकी। जगन्नाथ अपने स्वाध्याय के लिए, अपने कमरे में चला गया। वह अब स्वयं स्वाध्याय किया करता था। इसके लिए उसे किसी की सहायता की आवश्यकता नहीं रही थी। वह संस्कृत, अंग्रेजी और हिन्दी का बहुत अच्छा ज्ञान रखता था। अब वह इनका अभ्यास करता था और लेखन–कला का अभ्यास कर रहा था।

अगले दिन वह शिवराम के साथ ताँगे में दुकान पर पहुँचा तो लक्ष्मी दुकान के बाहर खड़ी उनकी प्रतीक्षा कर रही थी। शिवराम उसको लेकर अपने कमरे में चला गया।

मध्याह्न के समय जगन्नाथ शिवराम के साथ भोजन किया करता था। लक्ष्मी का खाना उसकी माँ दे गई थी। तीनों ने एक साथ बैठ कर खाया और फिर काम पर लग गये। आजकल 'मार्शल–लॉ' के कारण दुकान मध्याह्न को बन्द नहीं होती थी।

तीन महीने काम इसी प्रकार चलता रहा। इस समय तक लाहौर से मार्शल–लॉ हट गया था। पुरानी अनारकली वाला मकान मार्शल लॉ के कारण बनना बन्द हो चुका था। अब वह पुनः बनाया जाने लगा था। शिवराम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को उसकी देखभाल के लिए भी जाना पड़ता था। इससे वह दुकान का काम अधिक और अधिक लक्ष्मी और जगन्नाथ पर छोड़ रहा था।

छः मास का सीखने का काल समाप्त हुआ तो एक सप्ताह तक शिवराम ने बिना कुछ भी बताये लक्ष्मी को काम करने के लिए कह दिया।

सप्ताह के उपरान्त उसने काम की जाँच–पड़ताल की। काम सन्तोषजनक था। इस पर शिवराम ने लक्ष्मी को कह दिया, ''अब जो कुछ भी कठिनाई हो, तुम जगन्नाथ से पूछकर दूर कर सकती हो। यह नित्य रात को मुझसे आवश्यकतानुसार राय कर लिया करेगा।''

अब तक दिसम्बर, 1919 आ गया था। देश–भर में भारी राजनीतिक हलचल थी। अमृतसर में कांग्रेस का अधिवेशन हो रहा था। प्रत्येक हिन्दुस्तानी जो समाचार–पत्र पढ़ता था, इस हलचल में रुचि रखता था।

जगन्नाथ की इस हलचल में साधारण अभिरुचि थी। परन्तु लक्ष्मी तो इसके लिए दीवानी हो रही थी। उन दिनों शिवराम छापाखाने में मशीनें फिट करा रहा था। वह अब दुकान पर नहीं आ सकता था। इस पर भी रात के समय जगन्नाथ उसको दिन–भर के काम का वृत्तान्त बता दिया करता था।

एक दिन उसने बताया, ''लक्ष्मी एक सप्ताह की छुट्टी माँग रही है।''

''किसलिए?''

''वह अमृतसर में कांग्रेस अधिवेशन देखने जाना चाहती है।''

''अकेली ही?''

''वह तो मुझे चलने के लिए कहती थी। मैं नहीं जा रहा।''

''क्यों? तुम्हारा चित्त नहीं करता, देश के नेताओं को देखने का?''

''चाचा जी! मुझे यह सब कुछ सारहीन प्रतीत हो रहा है।''

''तो तुम अंग्रेजों से मुक्ति नहीं चाहते?''

''चाहता क्यों नहीं। परन्तु ये मुक्ति दिला सकेंगे क्या?''

''क्यों नहीं दिला सकेंगे?''

''इसलिये कि ये मानसिक दृष्टि से स्वयं अंग्रेजों के ही दास हैं। भला इनके नेतृत्व में अंग्रेजों से मुक्ति सम्भव कैसे होगी?''

शिवराम ने कहा, ''ठीक वैसे ही, जैसे किसी जेलखाने के कैदी बगावत कर जेलखाना तोड़ भाग जाएँ।''

जगन्नाथ हँस पड़ा। उसने कहा, ''चाचा जी! इस उदाहरण में दोष है। आप ईंट, चूना, गारा से बने मकान की तुलना कर रहे हैं, मन की दासता के साथ। जब जेल तोड़ी जाये तो जिससे मुक्ति लेनी है, वह टूट जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु हिन्दुस्तान तो दास है मानसिक दासता के कारण। देखिए, गांधी जी हैं। वे अंग्रेजों की दासता से मुक्ति अंग्रेजी में छाप–छापकर पाना चाहते हैं।

"यह दासता है सेना के बल पर। छः अप्रैल की बात मुझको स्मरण है। कई हजार की भीड़ थी। बीस पुलिस वाले लाठियाँ ले भीड़ पर लपके कि हजारों की भीड़ तितर–बितर हो गई। दस बन्दूकचियों ने एक राउण्ड गोली चलाई कि सब शान्ति हो गई। पुलिस और सेना से मुक्ति पाये बिना तो जेलखाना टूटा नहीं समझा जा सकता। इसी तरह अंग्रेजी को छोड़े बिना मानसिक दासता कैसे मिट सकेगी।

"चाचा जी! इन पर तो यह उदाहरण ठीक बैठता है कि जैसे किसी जेल के कैदी, जेल को तोड़–फोड़ कर नहीं वरन् नारे लगा–लगाकर जेल से मुक्त होने की बात सोचें।"

"तो तुमको गांधी जी पर विश्वास नहीं है?"

"विश्वास कैसे हो सकता है। वे तो देश की पुलिस और सेना का विचार किये बिना और बिना इन हिंसकों के साथ हिंसा की बात कहे स्वराज्य लेने की बात कर रहे हैं। यह तो वैसे ही है जैसे जेल की कोठरियों के ताले तोड़े बिना इनमें बन्द कैदी यह घोषणा करने लगें कि 'आजाद हो जाओ। आजाद हो जाओ।"

शिवराम समझने लगा था कि जगन्नाथ अब युक्ति करने लगा है। इससे उसको सन्तोष था। इस पर उसने बात बदल दी। उसने कहा, "यदि लक्ष्मी गई तो दुकान का काम चलेगा क्या?"

"स्कूल–कालेजों में छुट्टियाँ है। बाहर का काम कुछ भी नहीं होगा। कुछ होगा तो मैं देख लूँगा।"

इस प्रकार लक्ष्मी को छुट्टी मिल गई। परन्तु शिवराम चिन्तित था कि वह किसके साथ अमृतसर जा रही है। जब से वह दुकान पर काम करने आने लगी थी, वह सजधज कर रहने लगी थी। शिवराम का विचार था कि लक्ष्मी अपनी कमाई में से अपने श्रृंगार और वस्त्रों पर पहले से अधिक व्यय करने लगी है। परन्तु अब अमृतसर जाने के विचार ने उसके मन में एक और बात उत्पन्न कर दी। उसने समझा कि उसकी संगत भी विस्तार पा रही है। यह राजनीति में रुचि यही बात प्रकट करती है। दुकान पर जगन्नाथ तो इस विषय में कुछ रुचि प्रगट करता प्रतीत नहीं हुआ था। इस कारण शिवराम ने इस विषय में तनिक जाँच करने का विचार कर लिया।

अगले दिन शिवराम छापाखाना जाने से पूर्व लक्ष्मी के घर जा पहुँचा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लक्ष्मी अपनी दुकान पर जाने के लिए तैयार हो ही रही थी कि शिवराम की आवाज सुन, भोली ने खिड़की में से देख लक्ष्मी को कहा, "देखो! भैया शिवराम आये हैं।"

लक्ष्मी भागी हुई नीचे गई और द्वार खोल हाथ जोड़ नमस्कार कर प्रश्न–भरी दृष्टि में उनकी ओर देखने लगी।

"तो तुम एक सप्ताह की छुट्टी चाहती हो?"

"जी।"

"किस मतलब के लिए?"

"मैं अमृतसर कांग्रेस अधिवेशन पर जाना चाहती हूँ। मुझको डैलिगेट सर्टिफिकेट मिल गया है।"

"और कौन–कौन जा रहा है।"

"तीन लडकियाँ तो हमारे मुहल्ले से जा रही हैं। हमने वहाँ स्त्रियों के कैम्प में रहने का प्रबन्ध कर लिया है।"

"पिता जी से पूछ लिया है?"

"माता जी से पूछ लिया है।"

"माता जी को नीचे बुलाओ।"

भोली आई तो शिवराम ने कह दिया, "भोली बहिन! तुमको लड़की के साथ जाना चाहिए। वहाँ तीन–चार लाख की भीड़–भाड़ होने वाली है। इतनी भीड़ में लड़की को अकेले भेजना मैं ठीक नहीं समझता।"

"रात मैंने लड़की के पिता से कहा था। वे तो जा नहीं सकते। दुकान पर अकेला सन्तराम रह जायेगा।"

"तो तुम क्यों नहीं जातीं?"

इस पर लक्ष्मी ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "और माता जी के साथ कौन जायेगा? भला तीन–चार लाख की भीड़ में ये अकेली क्या करेंगी?"

शिवराम ने कुछ विचार कर कहा, "भीड़ से जूझने के लिए तो सेना चाहिए। इस काम के लिए भोली क्या, कोई भी योग्य नहीं। हाँ, तुमसे जूझने के लिये तो तुम्हारी माता पर्याप्त हैं। इतनी बड़ी भीड में तुम पथ भूल सकती हो। तुमको मार्ग दिखाने के लिए भोली बहिन सर्वथा उपयुक्त है।"

इस बात का अभिप्राय लक्ष्मी तो समझ नहीं सकी। भोली समझ गई। उसने कह दिया, "भैया शिव! कोई बड़ा इसके साथ अवश्य जायेगा।"

शिवराम ने अब लक्ष्मी से पूछ लिया, "कब जा रही हो तुम?"

"परसों शनिवार को।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिवराम चला गया तो लक्ष्मी अपनी माँ के साथ घर की ऊपर की मंजिल पर चली गई। वहाँ पहुँच उसने माँ को कहा, "माँ! मैं चाचा जी की दुकान से नौकरी छोड़ रही हूँ।"

"क्यों?"

"मुझे इससे अच्छी नौकरी मिल रही है।"

"कहाँ और कैसी?"

"यह अमृतसर से लौटकर बताऊंगी।"

"तो तुम्हारी नई नौकरी के विषय में तब विचार करूँगी।"

"विचार की क्या आवश्यकता है?"

"तो विचार किये बिना ही नौकरी स्वीकार कर ली जायेगी?"

"नौकरी तो मैं कर रही हूँ और मैंने विचार कर लिया है।"

"क्या विचार कर लिया है?"

"यही कि चाचा जी मुझको पहचत्तर रुपये महीना देकर मेरे जीवन को चलाने का अधिकार समझने लगे हैं।"

भोली इसका अर्थ समझने के लिए लक्ष्मी का मुख देखने लगी। कुछ क्षण तक विचार कर बोली, "मैं समझती हूँ कि यह पचहत्तर रुपये के नाते नहीं। यह तो उनका तुम्हारे प्रति स्नेह है, जिसके कारण वह इस प्रकार का अधिकार समझते हैं।"

"मुझको सन्देह है कि उनका हम में से किसी के साथ भी स्नेह नहीं है।"

"तुम्हारा सन्देह ठीक प्रतीत नहीं होता। इस पर भी रात तुम्हारे पिता जी के सामने बात करूँगी और फिर सब विचार करेंगे। सन्तराम ने भी मुझको कहा था कि लक्ष्मी के साथ किसी को जाना चाहिए।"

"माँ! वह मुझको भी अपने जैसा बुद्धू समझता है।"

"है तो तुमसे बड़ा।"

"आयु से भी भला कोई बड़ा हो सकता है। बड़ा होने के लिए कुछ बुद्धि भी चाहिए।"

माँ इस सब का अर्थ समझने में लीन थी कि लक्ष्मी ने आगे कह दिया, "माँ, अब दुकान का समय हो गया है। मैं जा रही हूँ।" इतना कह वह सीढ़ियाँ उतर गई।

यह तो भोली ने भी समझा था कि लड़की शोख होती जा रही है। परन्तु वह अपने बड़े भाई को मूर्ख समझने लगी है, इसकी वह आशा नहीं करती थी। इससे भी अधिक वह शिवराम के उस पर नियन्त्रण पर आपत्ति की बात भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पसन्द नहीं करती थी। इसके लिए वह पचहत्तर रुपये मासिक की नौकरी को भी छोड़ने के लिए तैयार हो गई थी।

: 4 :

भोली को लक्ष्मी ने जगन्नाथ के साथ अपने विवाह के विचार की बात बता दी थी। यह उसने उसी दिन कही थी जिस दिन वह किताबों की दुकान पर काम करना स्वीकार कर आई थी।

भोली ने नौकरी की व्याख्या लक्ष्मी से पूछी तो लक्ष्मी ने बता दिया था, "माँ! बात यह है कि मैंने करना तो विवाह है। वह अभी हो नहीं रहा। समय व्यतीत करना है। कालेज से चाचा जी की दुकान अच्छी है। यह इस कारण कि वहाँ जगन्नाथ काम करता है और मेरा उससे ही विवाह होगा।"

"कैसे होगा?" भोली ने पूछा।

"जब हम सज्ञान होंगे तो विवाह कर लेंगे। तुम मानोगी तब भी और नहीं मानोगी तब भी।"

"परन्तु लक्ष्मी! वह तुम से आयु में छोटा है।"

"इससे कुछ अन्तर नहीं पड़ेगा। हमारा विवाह पूर्व–जन्म के कर्मों से बँधा है।"

"अच्छा चुप रहो। तुम भी उसकी भाँति पागलों की सी बाते करने लगी हो।"

"मैं चुप हूँ। परन्तु माँ, यह होगा। तुम देखोगी कि यह होगा।"

"और जगन्नाथ क्या कहता है?"

"यही जो तुम कहती हो। एक बात और कहता है कि उसकी पढ़ाई अभी समाप्त नहीं हुई। जब होगी तब उसका विवाह होगा।"

"कब होगी?"

"पता नहीं।"

यह बात तो तब हुई थी। इसके पश्चात् जब वह शृंगार करने लगी तो भोली को यह समझ आया था कि वह जगन्नाथ को प्रसन्न करने के लिए कर रही है। परन्तु आज उसका शिवराम की नौकरी छोड़ने के लिए तैयार हो जाना तो मन की परिवर्तित अवस्था को प्रकट करता था। इससे भोली चिन्ता–ग्रस्त बैठी रह गई।

लक्ष्मी दुकान को जाती हुई विचार कर रही थी कि अवश्य जगन्नाथ ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसकी किसी प्रकार की शिकायत की है। इस कारण वह दुकान पर पहुँचते ही जगन्नाथ से पता करने के लिए उत्सुक थी कि चाचा जी से उसने क्या कहा था।

दुकान पर जाते ही जगन्नाथ को कार्यालय में बुलाकर उसने पूछ लिया, "आपने चाचा जी से मेरी छुट्टी की बात की है?"

"तो नही करनी चाहिए थी क्या?"

"नहीं, यह बात नहीं। करनी तो चाहिए थी। मैं जानना चाहती हूँ कि क्या और किस प्रकार बात कही थी?"

"मैंने उनसे कहा था कि लक्ष्मी एक सप्ताह की छुट्टी माँगती है। उन्होंने पूछा, 'किसलिए?' मैंने कह दिया कि तुम अमृतसर कांग्रेस–अधिवेशन पर जा रही हो।

"चाचा जी ने पूछा कि तुम्हारा काम कौन देखेगा? मैंने कहा, मैं देख लूँगा। काम छुट्टियों के कारण कम ही रहेगा।"

"आप मेरे साथ क्यों नहीं चलते?"

"मैंने बताया तो है कि अमृतसर के हो–हल्ला में मेरी रुचि नहीं।"

"मैं तो आपको अपने साथ ले जाना चाहती हूँ। माँ कह रही हैं कि मुझे अकेली नहीं जाना चाहिए।"

"तो मेरे साथ जाने से तुम अकेली नहीं रहोगी? भला मैं कौन बहुत बुद्धिमान और पहलवान हूँ।"

"पर आप माँ से तो अच्छे रहेंगे। नहीं तो उनको साथ जाना पड़ेगा।"

"एक बात और भी है। दुकान सात दिन के लिए बन्द करनी पड़ेगी।"

"चाचा जी, इसका प्रबन्ध कर लेंगे।"

"मुझको आशा नहीं।"

"तो मैं आज सायंकाल उनसे बात करने कोठी पर चलूँगी।"

"बात तो मैं भी कर सकता हूँ, परन्तु मैं दुकान बन्द करने के लिए नहीं कह सकता।"

लक्ष्मी इसका उत्तर नहीं दे सकी, इस पर भी उसने बात छोड़ी नहीं। सायंकाल पाँच बजे दुकान का कार्यालय बन्द कर वह घर नहीं गई वरन् फिरोजपुर रोड कोठी पर जा पहुँची। जगन्नाथ तो दुकान रात के आठ बजे बन्द किया करता था।

शिवराम छापाखाना से छः बजे आया करता था। छापाखाना का काम चालू हो गया था। छपाई का काम होने लगा था। आज तो उसको और भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देर हो गई थी। राधा ने पूछा कि चाचा जी से क्या काम है, लक्ष्मी ने बता दिया, "दुकान के विषय में है।"

राधा ने उसे चाय पिलाई और प्रतीक्षा करने के लिए कह स्वयं घर के काम में लग गई। शिवराम साढ़े–सात बजे आया। वह लक्ष्मी को बैठा देख विस्मय से पूछने लगा, "कुछ काम है लक्ष्मी?"

"जी। मैं अमृतसर जाना चाहती हूँ। आपने मां को साथ जाने के लिए कहा है। मैं माँ को कष्ट देना नहीं चाहती थी। अब आप से एक बात कहने आई हूँ।"

"कहो।"

"आप जगन्नाथ को छुट्टी दे दें तो वह मेरे साथ चलेगा।"

"यह उसने कहा है?"

"मैंने उसको कहा है। वह कहता था कि उसकी वहाँ जाने में रुचि नहीं है। मैंने कहा कि उसको रुचि के बिना भी मेरे साथ चलना चाहिए। नहीं तो माता जी को जाना पड़ेगा। इस पर उसने कहा है कि उसको छुट्टी नहीं मिल सकती। इस कारण मैं आपसे छुट्टी देने के लिए कहने आई हूँ।"

शिवराम हँस पड़ा। हँसकर बोला, "छुट्टी तो मिल सकती है। परन्तु मैं उसका तुम्हारे साथ जाना पर्याप्त नहीं समझता।"

"तो क्या वह माँ से भी दुर्बल है? आप तो माँ को साथ जाना पर्याप्त मान रहे थे।"

शिवराम ने मुस्कराते हुए कह दिया, "हाँ, वह मां से भी दुर्बल है। वह तुम्हारी रक्षा के लिए अपनी जिम्मेदारी उतनी नहीं मानेगा जितनी भोली मानेगी। दुनिया में जिम्मेदारी ही मुख्य बात है।"

"आप उसको जिम्मेदार बनाकर भेजेंगे तो वह जिम्मेदारी मानने लगेगा। जिम्मेदारी तो जिम्मेदार बनाने से पैदा होती है।"

"मेरे कहने से वह कैसे जिम्मेदार हो सकता है! भोली को तो ईश्वर ने तुम्हारी जिम्मेदार बनाया है। उसको कैसे बनाया जा सकता है। बनाने वाले को भी तो उसकी योग्यता का विश्वास होना चाहिए।

"मैं तो उसको इस योग्य मानती हूँ। माँ से अधिक योग्य मानती हूँ। नहीं तो मेरा एक अन्य प्रस्ताव है। यह जिम्मेदारी आप ले लें। आप तो माँ और जगन्नाथ दोनों से अधिक योग्य हैं?"

"तो तुम्हारा मतलब यह है कि तुम कांग्रेस अधिवेशन पर अपना जाना इतना आवश्यक समझती हो कि मैं सब काम छोड़कर तुम्हारे संरक्षण के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चल पड़ूँ।''

इस पर तो समीप बैठी राधा हँसने लगी। शिवराम भी हँसने लगा। लक्ष्मी भी इनको हँसते देख हँस पड़ी।

शिवराम काम से आकर चाय पी रहा था। लक्ष्मी और राधा तो पहले ही पी चुकी थीं। वे सामने बैठी थीं। एकाएक लक्ष्मी ने चुप होकर कह दिया, ''माँ कह रही थी कि आप मुझमें रुचि मेरे साथ स्नेह के कारण लेते हैं। स्नेह के कारण तो बहुत कुछ छोड़ा जा सकता है।''

इस युक्ति से तो शिवराम ने चाय पीने के लिए उठाया प्याला वापस सॉसर में रख दिया और लक्ष्मी का मुख देखने लगा। राधा और लक्ष्मी भी इस युक्ति की बल देख रही थीं। वे दोनों शिवराम के उत्तर की प्रतीक्षा कर रही थीं।

शिवराम ने, प्याला उठा पुनः सुरुकी लगा, चाय पीनी आरम्भ कर दी। एक दो घूँट पीकर उसने राधा की ओर देखकर कहा, ''तुम क्या समझती हो राधा?''

''किस विषय में?''

''अपने लक्ष्मी से स्नेह के विषय में।''

''स्नेह तो है। परन्तु मैं पूछती हूँ कि क्या लक्ष्मी को भी हमसे स्नेह है?''

''हाँ लक्ष्मी! अब बताओ?''

''मैं तो आपको चाचा समझती हूँ। मैं आपका आदर करती हूँ। आपको अपने से बड़ा मानती हूँ।''

''और बड़ों का कहा मानना चाहिए न?'' राधा ने पूछा।

''यह तो है ही।''

''तो सुनो। हमारी सम्मति यह है कि तुम्हारा डैलीगेट बनकर अधिवेशन में जाना न केवल व्यर्थ है वरन् धोखा भी है। हाँ, मेला देखने यदि तुम एक दिन के लिए जाना चाहो तो मैं, तुम्हारे चाचा जी, जगन्नाथ और सब बच्चे भी चलेंगे। हम दर्शक का टिकट ले लेंगे और वहाँ बैठ नेताओं के दर्शन कर आएँगे। बताओ मानोगी बात?''

लक्ष्मी अपनी ही युक्ति में फँसी चुप रह गई। कुछ विचार कर वह उठी और बोली, ''मैं आपको कल बता दूँगी। अब मुझको बहुत देर हो गई है।''

''तुम हमारे ताँगे में जा सकती हो। लक्ष्मी से स्नेह के नाते राधा उसको छोड़ने चली जायेगी।''

इस पर राधा हँसती हुई उठ खड़ी हुई और लक्ष्मी की बाँह–में–बाँह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डालकर कोठी के बाहर ले गई । लक्ष्मी पूर्ण वार्तालाप का विश्लेषण करना चाहती थी। राधा भी लक्ष्मी के मन की बात जानने की इच्छा रखती थी।

ताँगे में बैठी हुई वह उससे पूछने लगी, "तो तुम कांग्रेस की सदस्या हो?"

"सदस्या तो नहीं।" लक्ष्मी ने बता दिया, "अमीरचन्द है न, जो हमारी गली के आखिर के मकान में रहता है, वड कांग्रेस का बहुत काम करता है। उसने ही मुझको डैलीगेट का टिकट ला दिया है। साथ ही कैम्प में रहने का प्रबन्ध कर दिया है। पाँच रुपये टिकट का मूल्य है और पाँच दिन कैम्प में रहने का खर्च पन्द्रह रुपये लगे हैं।"

"तुम्हारा अमीरचन्द से कैसे परिचय हुआ है?"

"मैं एक दिन मोरी दरवाजे वाले बाग में जलसे में गई थी और तब से वह मुझको मिलता रहता है।"

"परन्तु तुम तो अभी सोलह वर्ष की हो। तुम डैलीगेट बन नहीं सकतीं। डैलीगेट बनने के लिए वयस्क होना आवश्यक है।"

"उसने मेरी आयु इक्कीस वर्ष लिखा दी है। वह कहता था कि लड़कियों की आयु का पता नहीं चल सकता।"

"बहुत झूठा है वह?"

लक्ष्मी का ध्यान इस ओर नहीं गया। उसे चुप देख राधा ने कह दिया, "जानती हो डैलीगेटों का क्या काम होता है?'

"क्या होता है?"

"प्रस्तावों पर सम्मति देना। कुछ प्रस्ताव तो इतने आवश्यक हैं कि इससे देश की कोटि–कोटि जनता के भाग्य का निर्णय हो जाता है। उदाहरण के रूप में देश का नया विधान स्वीकार करना है। बताओ तुम क्या मत दोगी? तुम विधान के विषय में क्या जानती हो?

"फिर एक बात और है। गांधी जी और तिलक जी में इसी प्रस्ताव पर झगड़ा है। भला तुम क्या कहोगी इस झगड़े में?"

"मैं तो तमाशा देखने जा रही थी।"

"वह तो एक दिन में देखा जा सकेगा। टिकट अमीरचन्द को लौटा दो और कह दो कि तुम डैलीगेट बनने का अधिकार नहीं रखतीं।"

"रुपये तो वापस मिलेंगे नहीं।"

"वह तुम कांग्रेस को दान दिये समझ लेना, परन्तु देश के साथ और अपने आत्मा के साथ धोखा तो नहीं होगा।"

लक्ष्मी चुप रही। राधा अपने कथन की प्रतिक्रिया जानने की प्रतीक्षा में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उसके मुख पर बदल रहे रंग देख रही थी। जब ताँगा लाहौर दरवाजे के बाहर पहुँचा तो उसे खड़ा कर राधा लक्ष्मी को शहर में उसके घर छोड़ने के लिए उसके साथ पैदल चल पड़ी। लक्ष्मी ने कहा भी, "चाची जी! मैं चली जाऊँगी।"

"देखो लक्ष्मी! जब तुम स्नेहवश हमारा अधिकार मानती हो तो उसी नाते हमारा भी कुछ कर्त्तव्य हो जाता है। मैं उसका ही पालन कर रही हूँ। तुमको भी हमारे स्नेह का आदर करना चाहिए।"

घर पर भोली चिन्ता अनुभव कर रही थी। लक्ष्मी प्रायः साढे पाँच बजे आ जाया करती थी। आज तो आठ बज चुके थे। लक्ष्मी के साथ राधा को आते देख भोली ने सुख का साँस लिया। उसने राधा से पूछा, "तो यह आपके यहाँ गई थी?"

"हाँ"

"तो यह झगड़ा करने गई थी?" भोली का विचार था कि वह त्याग–पत्र देने गई थी।

"झगड़ा? नहीं तो।"

"तो फिर किस काम से गई थी?"

"माँ!" लक्ष्मी ने कह दिया, "मैं अमृतसर नहीं जा रही। चाची जी कहती हैं कि वे एक दिन घूमने चलेंगी और मैं उनके साथ चल सकती हूँ।"

भोली इस सूचना से तो बहुत प्रसन्न हुई। उसके मुख से अनायास ही निकल गया, "बहिन राधा! हम सब तुम्हारा और शिव भैया का अहसान जीवन–भर नहीं भूलेंगे।"

: 5 :

इस घटना ने एक बात सबके ज्ञान में कर दी कि लक्ष्मी जगन्नाथ से विवाह करना चाहती है। शिवराम इत्यादि एक दिन अमृतसर गये और वहाँ लोगों की भीड़–भाड़ और नेताओं के दर्शन कर लौट आये। जगन्नाथ भी उनके साथ गया था।

जगन्नाथ तो लक्ष्मी के विचारों को जानता था। साथ ही वह ज्यों–ज्यों बड़ा होता जाता था और योग–ध्यान तथा साधना में मन लगा रहा था, उसके मन पर गुजराँवाला के जीवन और उससे भी पूर्व के जीवन का चित्र, स्पष्ट होता जाता था। उसके मन पर चित्रित संस्कार उसको बता रहे थे कि वहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
किस प्रकार रहता था, क्या अनुभव करता था और अब बुद्धि के विकास से वह इस में कारण और कार्य का ज्ञान भी जान रहा था। अभी भी कई बातें उसको ठीक–ठीक समझ नहीं आ रही थीं। इस पर भी वह इतना कुछ जान गया था, कि रात को घण्टा–भर बैठ अपने भूत–भविष्य के विषय में चिन्तन किया करता था।

मन के निर्मल होने से जन्म–जन्मातर के संस्कार जाग्रत हो रहे थे और बुद्धि के तीव्र होने से वह बहुत–सी ऐसी बातों को समझने लगा था जिसके विषय में अन्य लोग स्वप्न में भी विचार नहीं कर सकते थे।

अमृतसर सै लौटने के एक सप्ताह उपरान्त रामनाथ और भोली शिवराम तथा राधा से मिलने आये। शिवराम, राधा और लक्ष्मी के माता–पिता पृथक्, बैठे बातचीत करने लगे। जगन्नाथ अभी दुकान से आया नहीं था। अभी सायंकाल के छः बजे थे।

बात रामनाथ ने ही आरम्भ की। उसने कहा, "शिव भैया! लक्ष्मी कह रही है कि वह तो जगन्नाथ से ही विवाह करेगी। उसका यह भी कहना है कि जगन्नाथ इस बात को जानता है। इस कारण हम यह जानने आये हैं कि तुम इस विषय में क्या समझते हो?"

"मैं इस बात को आज से दस वर्ष पहले से जानता हूँ। यह नहीं कि दोनों ने मुझको विवाह का निश्चय बताया हो, मुझको यह बात जगन्नाथ ने बताई थी कि लक्ष्मी उसके आत्मा का ही एक अंश है।"

"यह उसने बताया था?" विस्मय में रामनाथ ने पूछ लिया, "भला वह कैसे जानता है?"

"यह बात अब विवादास्पद नहीं कि यह कैसे जानता है। जब उसने यह बात कही थी तो मुझको भी विश्वास नहीं आया था। परन्तु उसने कुछ ऐसी बातें बताई थीं जिनसे मेरे लिए उसके इस कथन पर विश्वास करने के अतिरिक्त अन्य कोई उपाय ही नहीं रहा।

"उदाहरण के रूप में मेरा विवाह हुए बारह वर्ष हो चुके थे। और हमारे सन्तान नहीं हो रही थी। जगन्नाथ तब छः वर्ष का था। यह बोला कि वह एक औषधि जानता है, जिसके सेवन से मेरे घर सन्तान हो सकती है।"

"मेरे पूछने पर इसने बताया कि यह पिछले जन्म में गुजराँवाला में था और यदि इसको रेल के स्टेशन पर ले चलूँ तो यह मुझे वह जड़ी ढूंढ़ देगा।

"मैंने परीक्षा की। इसको वहाँ ले गया। यह मुझको टमटम में चढ़ाकर नहर के पुल पर ले गया और वहाँ से जंगल में। तब हम एक बूटी उखाड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाये। इसने राधा को कहकर औषधि बनवाई। मैंने उसका सेवन किया और उसी मास राधा के पेट में विष्णु आ गया। इसके अतिरिक्त और भी मैंने इसकी परीक्षाएँ ली हैं। जगन्नाथ ने मुझको तब ही बताया था कि लक्ष्मी उसके आत्मा का एक अंश है। इस पर मैंने उससे पूछा था, "तो क्या वह तुम्हारी पत्नी बनेगी?"

"इसने बताया था, यह आवश्यक नहीं। हम अपने कर्मफल में बंधे इस संसार में आये हैं और हमको हमारे कर्मफल धकेलते हुए अपनी दिशा में ले जा रहे हैं। इससे कोई नहीं कह सकता कि कौन इस जेल की किस कोठरी में किस साथी के साथ कैद हो जायेगा।

"रामनाथ भैया! एक बात उसने और बताई थी जो आपसे सम्बन्ध रखती है। वह मैंने किसी को बताई नहीं। इस पर भी उसके लक्षण तो स्पष्ट दिखाई देते हैं।"

"क्या?" रामनाथ ने पूछ लिया।

"यदि आप विवेक बुद्धि से सुनना चाहें तो बता सकता हूँ। जगन्नाथ ने गुजराँवाला में अपने पिता का नाम–धाम बताया है। वहाँ इसके पिता की दो पत्नियों थीं। इसकी माता का देहान्त तब ही हो गया, जब यह सात–आठ वर्ष की आयु का था। वह माता भोली बहिन है। उसने अपने गुजराँवाला के कई परिचितो के विषय में भी बताया है और उनसे हमने मिलकर उसके कथन का समर्थन पाया है।"

रामनाथ और भोली तो इस कथन से आश्चर्य–चकित रह गये। कितनी ही देर तक चारों गम्भीर विचार में बैठे रहे। आखिर भोली ने तरल नेत्रों से कहा, "तो यह जग्गू पगला मेरा बेटा रहा है?"

"हाँ, इस जन्म में तो यह सरस्वती के पेट से पैदा हुआ है। परन्तु गुजराँवाला में वह हकीम शिवदयाल का बड़ा लड़का रामदयाल था। इसका देहान्त चेचक की बीमारी से हुआ था।"

"यह सब अत्यन्त विस्मय–जनक है।" भोली ने कहा, "मैं आज आपको एक बात बताती हूँ। जब सरस्वती मुहल्ले में आई थी और एक दिन उसका बच्चा जग्गू भूख से व्याकुल हो रहा था, तो मेरे स्तनों से दूध टपकने लगा था। मैंने इसको गोद में ले लिया और दूध पिलाने लगी। उन दिनों कृपाराम मेरी गोद में था। जग्गू ने पेट–भर दूध पिया और मेरी गोद में ही सो गया। तब से मेरा इसके साथ स्नेह विशेष रहा है। मैं कारण नहीं जानती थी। अब आपके बताने से मुझे अपने मनोभावों में कारण समझ आने लगा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, यह विधाता का विधान है कि हम सब लोग असंख्य बार जन्म ले चुके हैं। हम सब भूल जाते हैं कि हमारा भूत क्या था। कुछ श्रेष्ठ आत्माएँ होती हैं जो इसको जान जाती हैं। इस पर भी वे सभी जन्मों की बात तो जानते नहीं। उनको भी कुछ दूर तक की बात ही दिखाई देती है।"

"तो इस अवस्था में तो लक्ष्मी जगन्नाथ की बहिन हुई? इस कारण इनका विवाह होना नहीं चाहिए।"

"यह तो कोई युक्ति नहीं। बहिन–भाई का सम्बन्ध तो इस शरीर का है। इस शरीर से तो जगन्नाथ का लक्ष्मी से किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं। साथ ही लक्ष्मी की आत्मा का इस शरीर से इतना ही सम्बन्ध है, जितना किसी का कपड़ों के साथ होता है।"

"आत्माएँ क्या हैं, कैसी हैं कितनी बडी हैं और कितनी हैं कोई नहीं जानता। मैं इस विषय पर जगन्नाथ का ज्ञान टटोलने का यत्न किया करता हूँ। परन्तु वह भी स्पष्ट उत्तर नहीं दे सका। उसका यही उत्तर रहता है कि मैं अभी इतना ही जानता हूँ। कभी–कभी वह यह भी कह देता है कि वह जानता तो है। परन्तु उसका वर्णन नहीं कर सकता। ऐसी अवस्था में वह कह देता है कि वह फिर बतायेगा।"

"तो यह विवाह होगा?" रामनाथ ने पूछा।

"यह आवश्यक नहीं। इस पर भी घटनाओं को अपने मार्ग पर चलने दीजिए। आप सब इसमें हस्तक्षेप मत कीजिये। विवाह आत्माओं के मेल से एक पृथक् बात है। विवाह का मुख्य कार्य सन्तानोत्पत्ति है। सन्तान निर्माण शरीरों का सम्बन्ध है। यह ठीक है कि आत्मा शरीर का स्वामी है, जैसे रथी रथों का स्वामी होता है। परन्तु कभी घोड़े और कभी सारथी रथों से बागी हो जाते हैं और तब वे मनमानी करने लगते हैं। विवाह दो रथों का एक साथ एक ही मार्ग पर चलने का नाम है। यह साथ केवल घोड़ों और सारथियों की इच्छाओं पर भी हो जाता है। आत्माएँ इस साथ में सहयोगी नहीं होती। ऐसे साथ अधिक–से–अधिक इस जन्म तक ही रहते हैं। मृत्यु पर शरीर, मेरा मतलब है रथ, टूट–फूट जाते हैं और रथी अपने कर्मफल के अधीन नये रथों पर सवार हो जाते हैं। कभी–कभी तो रथों के मार्ग भिन्न–भिन्न हो जाते हैं। तब विवाह–विच्छेद हो जाते हैं।

"मन और आत्मा की प्रेरणा से भी कभी दो रथ साथ–साथ चलने लगते हैं। ऐसी अवस्था में एक अथवा दूसरे रथ के टूट जाने पर रथी एक ही रथ पर सवार होकर यात्रा करने लगते हैं। यह समागम जन्म–जन्मान्तर का होता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। यह समागम भी यदि आत्मा के सहयोग के बिना, केवल मन की प्रेरणा से बना हो, तो सदा के लिए नहीं रहता। कुछ काल पश्चात् कदाचित् सहस्रों वर्ष के समागम के उपरान्त, यह टूट जाता है।

"यह सब मुझे जगन्नाथ ने बताया है। इससे भी और बहुत कुछ। परन्तु अभी भी वह कहता है कि बहुत कुछ है जो वह स्वयं नहीं जानता अथवा जानता तो है पर शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता।"

शिवराम ने बहुत कुछ बताया। भोली और रामनाथ आश्चर्यवत् उसका मुख देखते रहे। इस समय सवा आठ बजे थे और जगन्नाथ बाइसिकल चलाता हुआ दुकान से आ पहुँचा। वह रामनाथ और भोली को बैठे देख विस्मय करने लगा। जब नमस्कार कर वह उनके पास बैठ गया तो शिवराम ने ही बात प्रारम्भ की। उसने कहा, "ये लक्ष्मी के विवाह की चिन्ता में यहाँ आये हैं।"

"तो कोई वर–घर देखा है इन्होंने?"

"हाँ"

"कब हो रहा है विवाह?"

"जब तुम पसन्द करो।"

"मैं? मेरे पसन्द का प्रश्न किस प्रकार उत्पन्न हो गया?" जगन्नाथ समझ रहा था कि चाचा शिवराम आगे क्या कहने वाला है। परन्तु बात भोली ने की, "शिव भैया ने आज एक रहस्य की बात बताई है कि मेरा तुमसे विशेष सम्बन्ध है। इस कारण तुम्हारी राय की आवश्यकता उत्पन्न हो गई है।"

"तो चाचा जी!" जगन्नाथ ने शिवराम की ओर देखकर पूछ लिया, "आपने सब बता दिया है?"

"सब तो नहीं। हाँ, इनसे सम्बन्ध रखने वाली बात बहुत कुछ बता दी है। लक्ष्मी से विवाह की चर्चा से उसका भी सम्बन्ध था।"

"देखो चाची!" जगन्नाथ ने भोली को सम्बोधन कर कहा, "मेरा आपसे तथा लक्ष्मी से सम्बन्ध इस शरीर का नहीं है। यह शरीर जेलखाना है। ज्यों–ज्यों मैं अपने विषय में जानकारी प्राप्त करता हूँ मैं अपने को इस शरीर में एक बन्दी के रूप में पाता हूँ और अपने सभान अन्य बन्दियों को इस बन्दीखाने से प्रेम करते देख विस्मय करता हूँ। इस बन्दीखाने के कुछ नियम–उपनियम हैं। उन नियम–उपंनियमों का उन कारणों से सम्बन्ध नहीं, जिनसे यह बन्दी जीवन मिला है। वे तो इसमें रहने से सम्बन्ध रखते हैं। यह विवाह इस बन्दीखाने के नियमों में एक है। उसका पालन करना पड़ेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"शरीर, मेरा अभिप्राय है, इस बन्दीगृह का नियम है कि एक निश्चित आयु से पूर्व विवाह नहीं किया जाये। एक नियम यह भी है कि बन्दी–गृह में प्रत्येक बन्दी पर कुछ विशेष प्रतिबन्ध है और विवाह के साथियों को उन प्रतिबन्धों का भी विचार करना होता है।"

"इस कारण मेरा मत है कि बन्दी–गृह के नियम–उपनियम के अनुसार मेरा विवाह कम–से–कम छः वर्ष के उपरान्त होगा। तब मुझ पर क्या–क्या प्रतिबन्ध होंगे; कितने वर्तमान काल के प्रतिबन्ध हट जाएँगे अथवा कोई अन्य प्रतिबन्ध, लग जाएँगे, अभी कहा नहीं जा सकता। इस कारण मैंने न तो लक्ष्मी से विवाह करने का वचन दिया है और न ही उसके प्रस्ताव को अस्वीकार किया है। उसको प्रतीक्षा करनी चाहिए और तब की परिस्थिति में ही अपना मत बनाना चाहिए।"

"तो यह विवाह हो सकता है?" रामनाथ का प्रश्न था।

"जी, हो भी सकता है और नहीं भी हो सकता। देखिये, वह अमृतसर जाने के समय एक मार्ग पर अग्रसर हुई थी। मुझको समझ आया था कि वह मार्ग मुझसे विपरीत दिशा में है। इस पर भी मैंने उसको अमृतसर जाने से मना नहीं किया। यह तो चाची जी ने बात बना दी थी। उसका हाथ पकड़कर वे मेरे मार्ग की ओर लाने में लग गई थीं।"

"कोई नहीं कह सकता कि आगामी छः वर्षों में वह फिर भटक नहीं जायेगी और तब चाची पुनः उसको इस मार्ग पर ला भी सकेंगी अथवा नहीं, कौन कह सकता है! इस कारण मैं उसको इतने काल तक पहले से ही बाँध नहीं सकता।"

इस समय नौकर ने सूचना दे दी कि भोजन तैयार है। शिवराम ने रामनाथ और भोली को भी निमन्त्रण दे दिया। परन्तु उन्होंने घर जाने की उत्सुकता प्रकट की और चले गये।

: 6 :

अगले दिन लक्ष्मी ने मध्याह्न का भोजन जगन्नाथ के साथ बैठ कर खाते समय पूछ लिया, "कल भापा और माँ आपसे चाचा जी के घर मिले थे?"

"हाँ, वे तुम्हारे विवाह के विषय में बातचीत करने गये थे।"

"फिर क्या बात हुई थी?"

"पहले तुम बताओ कि उन्होने क्या बताया है तुमको?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मुझको तो यही बताया है कि आपका छः वर्ष तक विवाह न करने का निश्चय है। इस कारण आप अभी कुछ भी बता नहीं सकते।"

"हाँ, संक्षेप में मेरे कथन का यही अभिप्राय था।"

"परन्तु मैंने अपनी माँ से कहा है कि मै इस समय सत्रहवें वर्ष में हूँ और तब तक विवाह की प्रतीक्षा करूँगी।"

"लक्ष्मी! तुम कर सकती हो, परन्तु तब तक क्या परिस्थिति होगी, उस परिस्थिति में मैं और तुम क्या चाहेंगे, आज कैसे कहा जा सकता है?"

"आपने एक दिन कहा था कि आप जानते है कि मैं और आप एक ही इकाई के दो अंश हैं। यदि यह है तो फिर हमारी परिस्थितियाँ और हमारी रुचियाँ भिन्न–भिन्न क्यों होंगी?"

"जिस कारणों से हम पृथक्–पृथक् परिवारों मे उत्पन्न हुए हैं, जिन कारणों से हमारे पृथक्–पृथक् शरीर हैं, उन्हीं कारणों से हमारी रुचि अथवा परिस्थितियाँ भी भिन्न–भिन्न हो सकती हैं।

"देखो लक्ष्मी! मैंने एक बार यही रहस्य, कि हम एक ही पदार्थ के दो अंश हैं, चाचा जी को बताया था और उन्होंने उसी सूचना से प्रेरित होकर तुमको यहाँ नौकर रख कर, हमको एक समान बनने का अवसर दिया है। इस पर भी भविष्य के विषय में क्या कहा जा सकता है।"

"अच्छी बात है। मैं अपनी ओर से पूरा यत्न करूँगी कि चाचा जी की योजना सफल हो।"

भोजन समाप्त हुआ तो दोनों उठे और लोटे में जल ले हाथ धोने बाहर चले गये।

जगन्नाथ भोजन कर बाहर दुकान पर चला गया और लक्ष्मी कार्यालय में। दुकान अब खूब चलने लगी थी। जगन्नाथ का यत्न था कि वह स्कूल की पहली श्रेणी से लेकर एम.ए. तक की पुस्तकें रखे; जो पुस्तक नगर में कहीं नहीं मिलती थी, वह इस दुकान पर अवश्य मिल जाये। रुपये की कमी नहीं थी और शिवराम स्कूल–मास्टरों से सम्बन्ध बनाकर 'सहायक पुस्तकें' लिखवाता और छपवाता रहता था। इसके अतिरिक्त सामान्य साहित्य जो विद्यार्थी और जनसाधारण के उपयोग का होता था, वह एकत्रित करता रहता था। इस कारण लाहौर में स्कूल–कालेजों के विद्यार्थी और अध्यापक जब भी किसी वस्तु की आवश्यकता होती, विश्वास से दुकान पर आते थे और अपनी इच्छित पुस्तकें पा जाते थे।

लक्ष्मी के विभाग का काम भी खूब चलने लगा था। इसमें शिवराम

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहायता करता रहता था। छापाखाना पृथक् था। इस प्रकार वर्ष–पर–वर्ष व्यतीत हो जाते थे।

जगन्नाथ उन्नीस वर्ष की आयु का हो गया था। इस समय तक ढेरों पुस्तकें वह पढ़ चुका था और इससे जो बुद्धि का विकास हुआ था उस से वह अपने भूत के ज्ञान का अर्थ एक विशेष प्रकार से लगाने लगा। वह संसार में रुचि लेता था और संसार में हो रही घटनाओं का अर्थ अपने ढंग से लगाता था। इन दिनों भी वह नित्य मध्याह्न के भोजन के समय लक्ष्मी से आध–पौन घण्टा भर मिलता था और बातें किया करता था।

आयु बढ़ने से दोनों की रुचि में अन्तर आ रहा था। जगन्नाथ सरल और सस्ते जीवन में विश्वास रखता था। धोती, कुर्ता और पाँव में चप्पल, बस, यह उसका पहिरावा था। सिर से नंगा रहता था। बाल साधारण रूप में प्रति तीसरे मास कटवाता था। हाँ, दाढ़ी और मूँछें वह नित्य स्वयं सेफ्टीरेजर से साफ कर लेता था। इस पर भी नित्य धुले कपड़े पहनने, नित्य स्नान करने और सन्ध्योपासना करने में वह चूकता नहीं था। उसका स्वाध्याय अभी भी चलता था।

लक्ष्मी की रुचि नित्य नये फैशन के कपड़े, मुख पर पाउडर–सुर्खी आँखों में काजल और होठों पर लाली लगाने में बढ़ती जाती थी। बाल बनाने में भी परिवर्तन होता रहता था। वह पहनती तो खद्दर थी। इस पर भी उसके सलवार–जम्परों और ओढ़नी के नमूने नित्य बदलते रहते थे। कभी यह होता था कि दुकान पर आने पर एक पोशाक होती थी और घर जाकर, सभा–समाज में जाने पर दूसरे प्रकार के कपड़े होते थे और बाजार में जाने पर तीसरे प्रकार के होते थे। गली में वह अन्य लड़कियों से अधिक फैशन करने वाली मानी जाती थी।

एक दिन, वह कार्यालय में आई तो उसका बड़ा–सा जूड़ा विलुप्त था। उसने सिर के बाल कटवा दिये थे। उस समय जगन्नाथ दयालसिंह कॉलेज के गणित के प्रोफेसर से बात कर रहा था।

प्रोफेसर ने दसवीं श्रेणी के विद्यार्थियों के लिए ज्योमेट्री की एक पुस्तक लिखी थी। वह चाहता था कि वह छपवा दी जाए। तब वह टेक्स्ट–बुक कमेटी में स्वीकार करवा लेगा और उसकी बिक्री बहुत होगी। उन दिनों दसवीं श्रेणी की परीक्षा में बीस सहस्र से अधिक लड़के प्रतिवर्ष बैठते थे।

पुस्तक जगन्नाथ ने देखी थी और उसने उस पुस्तक में कुछ परिवर्तन करने के सुझाव दिये थे। प्रोफेसर साहब को जगन्नाथ के सुझाव रुचिकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं लगे थे। इस पर जगन्नाथ ने प्रोफेसर साहब को मास्टर शिवराम के पास भेज दिया। प्रोफेसर वहाँ गया और उसने शिवराम से जगन्नाथ की धृष्टता का वर्णन किया तो शिवराम ने जगन्नाथ के सुझावों की जानकारी प्राप्त करवाई। इस पर शिवराम ने कह दिया, ''मिस्टर शर्मा! सत्य हृदय से कहें, उसके सुझावों को स्वीकार करने से पुस्तक अधिक उपयोगी हो जायेगी अथवा नहीं?''

हेमराज शर्मा विस्मय में मुख देखता रह गया। उसे चुप देख शिवराम ने पुनः कहा, ''यदि आप आपत्ति न करें तो ये परिवर्तन और परिवर्द्धन जगन्नाथ ही कर देगा। आपको मेहनत नहीं करनी पड़ेगी और न ही उसको कुछ देना पड़ेगा। पुस्तक दो मास में छपकर तैयार हो जाएगी और तब मैं भी इसको टैक्स्ट–बुक के रूप में स्वीकार करवाने में सहायता कर दूँगा। यदि पाँच वर्ष तक पुस्तक टैक्स्ट में लगी रही तो आप पचास–साठ हजार रुपये पा जाएँगे।''

यह अन्तिम युक्ति शर्मा साहब को अधिक पसन्द आई। शीघ्र ही पुस्तक तैयार हो गई। वह दसवीं जमायत के लिए टैक्स्ट–बुक स्वीकार हो गई और उसकी बिक्री आरम्भ हो गई। उसी अध्याय के लिए जो जगन्नाथ ने लिखा था, शर्मा साहब को बधाइयाँ आने लगीं तो वह जगन्नाथ से मिलने के लिए और उसका धन्यवाद करने आ गया।

जगन्नाथ ने कहा, ''मास्टर शिवराम मेरे गुरु हैं और यह उनकी ही कृपा है कि मैं विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को समझने की योग्यता पा गया हूँ। इस कारण प्रोफेसर साहब, वास्तविक धन्यवाद उनका ही करना चाहिए।''

अभी यह औपचारिक बात हो ही रही थी कि लक्ष्मी दुकान में आई और अपने कार्यालय मे चली गई। जगन्नाथ ने उसके बालो की सफाई देख ली थी और वह तनिक–सा मुस्कराकर बातें करता रहा।

उस दिन मध्याह्न के भोजन के समय लक्ष्मी आशा करती थी कि जगन्नाथ इस विषय में बात करेगा और वह बाल कटवाने के विषय में बहुत तर्क–वितर्क करने की तैयारी कर चुकी थी। परन्तु उसके विस्मय का ठिकाना नहीं रहा जब जगन्नाथ ने उस विषय में बात ही नहीं की। उस दिन बातें चल पड़ी महात्मा जी के हिन्दू–मुसलमानों के बलवों के वक्तव्य पर। जगन्नाथ ने कह दिया–

''लक्ष्मी! अब तो कांग्रेस छोड़ दो।''

''किसलिए?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अब तो यह राजनीति गंदा कीचड़ हो रही है।"

"क्या नई बात हुई है आज?"

"महात्मा जी ने इक्कीस दिन का व्रत भंग किया है और कोहाट के झगड़े पर एक वक्तव्य दे दिया है। उसमें बहुत कुछ विषय के बाहर और असत्य वस्तुस्थिति लिखी गई है।"

"क्या असत्य बात लिखी है?"

"यही कि इस झगड़े में कारण आर्यसमाज का साम्प्रदायिक प्रचार और सिखों का हठ है।"

"तो इसमें असत्य क्या है?"

"ये दोनों बातें असंगत हैं। एक तो कोहाट में आर्यसमाज ही नहीं है; दूसरे फसाद मुसलमानों के हठ के कारण था जो कि सिखों के गुरुद्वारे में कीर्तन की मनाही कर रहे थे। सिखों ने कीर्तन बन्द नहीं किया। इससे झगड़ा हो गया। यह हठ मुसलमानों का था। सिख तो वहाँ पहले भी कीर्तन किया करते थे।"

लक्ष्मी ने लापरवाही से कह दिया, "यह एक साधारण–सी बात है। देश की स्वतन्त्रता कथा–कीर्तन से बहुत ऊँची है।"

"लक्ष्मी!" जगन्नाथ ने खाना खाते–खाते रुककर कहा, "तो इस प्रकार के असत्य भाषणों से जो स्वतन्त्रता मिलेगी, वह भी कथन के अनुसार झूठी ही होगी।"

"इसमें महात्मा जी का दोष नहीं। यह तो उस कमेटी की जांच में दोष है जो वहाँ जांच करने गई थी।"

"मैंने किसी व्यक्ति पर दोषारोपण नहीं किया। मैंने तो इस पूर्ण व्यवहार को मिथ्यावाद बताया है, जिस पर यह कांग्रेस की भित्ति खड़ी की जा रही है।

"देखो, मैं इस लोक और उस लोक का भी, जो हमारी आँखों के सामने दृश्य नहीं, एक नियम बताता हूँ। वह नियम है सत्य ज्ञान। जब भी जो कोई सत्य ज्ञान से विचलित होता है, वह नीचे को जाने लगता है। यदि स्वतन्त्रता कोई ऊपर की बात है तो ये लोग स्वतन्त्रता से दूर जाने लगे हैं।

"यह व्यवहार असत्य है कि अयोग्य को योग्य पर, असत्य को सत्य पर, दुष्ट को भले पर, असुर को देवता पर उपमा दी जाये। ये तो समान भी नहीं हो सकते। उनको उपमा देना तो कभी भी ठीक नहीं हो सकता।"

यदि सब मिल–जुल कर न रहे तो देश स्वतन्त्र कैसे होगा?"

"देश की स्वतन्त्रता से मन और आत्मा की स्वतन्त्रता अधिक आवश्यक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
है। अधिक इस कारण कि मन और आत्मा की स्वतन्त्रता मूल है और देश अथवा यह शरीर शाखाएँ हैं। यदि जड़ ही गल गई तो शाखाएँ और पत्ते जीवित नहीं रह सकते।''

लक्ष्मी ने कह दिया, ''आप प्रत्येक बात में मन, आत्मा, सत्यधर्म, न्याय की बातें करने लगते हैं। इससे तो मनुष्य का जीवन दूभर हो जायेगा।''

''यह तो होगा। जीवन में मन और आत्मा मुख्य हैं। शरीर उनके अधीन है।''

लक्ष्मी विचार कर रही थी कि उसके बाल कटवाने की बात चलेगी। परन्तु वह नहीं चली। भोजन समाप्त हुआ तो दोनों अपने–अपने काम में लग गये। जगन्नाथ ने बालों पर उतनी भी टीका–टिप्पणी नहीं की, जितनी उसने उसके होठों पर लगे रंग पर की थी।

इससे लक्ष्मी को विस्मय हो रहा था। उसको एक बात का सुख अनुभव हुआ था। उसको वे सब तर्क–कुतर्क दुहराने नहीं पड़े, जिनका वह मन में चिंतन कर रही थी। जब दिन–पर–दिन व्यतीत होने लगे तो उसके मन में यह विचार बैठ गया कि जगन्नाथ को उसके बाह्य रंग–रूप में अब रुचि नहीं रही। इससे उसने अधिक और अधिक बनाव–श्रृंगार में धन और समय व्यय करना आरम्भ कर दिया।

इस समय तक लक्ष्मी भी दुकान में पत्तीदार के रूप में काम करती थी। अपने विभाग के हानि–लाभ में वह भी दस प्रतिशत की भागीदार बना दी गई थी। सब प्रकार के खर्च करने पर भी उसका बैंक में धन एकत्रित हो रहा था।

उक्त घटना के दो–ढाई मास उपरान्त लक्ष्मी आई तो उसके मुख पर मुस्कराहट थी। जगन्नाथ ने उससे उसकी विशेष प्रसन्नता का कारण पूछा तो उसने बता दिया, ''आपने ठीक ही कहा था कि हम भविष्य के विषय में कुछ नहीं कह सकते कि किसी के साथ क्या हो जायेगा।''

''हाँ, यह तो है। इस पर भी हम यत्न करते हैं कि कुछ अनिच्छित न हो जाए। अनिच्छित बात को पूर्णरूप से नहीं तो आंशिक रूप से टाला ही जा सकता है।''

''परन्तु अनिच्छित बात कोई करेगा ही क्यों?''

''यह हो जाती है। कारण यह कि मानव–जीवन के मुख्य–मुख्य अंगों में संघर्ष हो जाता है। ये एक–दूसरे के विपरीत दिशा में खींचना आरम्भ कर देते हैं।''

''यह पशुओं में होता है। मनुष्य, जो बुद्धिशील व्यक्ति हैं, ऐसा नहीं कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकते। देखिये! मैं आपके सम्मुख एक रहस्योद्‌घाटन कर रहीं हूँ। मेरा विवाह हो रहा है।''

''ओह! कब? कहाँ?''

''यह आज मध्याह्न के भोजन के पश्चात् पता चल जायेगा। मैं चाचा जी को भी यहीं बुला रही हूँ। मेरे भापा जी भी आने वाले हैं।''

''तब तो बहुत–बहुत बधाई हो लक्ष्मी!''

''बधाई लेने और देने में अभी कई घण्टे हैं। इस समय दस बजे हैं। यह अवसर चार बजे आयेगा।''

''अच्छी बात है।''

जगन्नाथ के मन की विचित्र अवस्था थी। कुछ विस्मय, कुछ आश्चर्य, कुछ बेचैनी और कुछ व्यग्रता थी। वह अपने काम पर बैठा तो उसको काम में ध्यान लगाने में कठिनाई अनुभव होने लगी। उसने काम निरंजन को सौंप दिया और स्वयं दुकान से निकल स्टैंडर्ड रेस्टोराँ में जा बैठा। वहाँ उसने शीतल पेय मंगवा ली और पीते हुए अपने मन की अवस्था का विश्लेषण करने लगा।

आध घण्टा–भर मन की अवस्था का मनन करने पर वह इस व्याकुलता को स्वाभाविक समझ शान्त हो गया। उसको समझ आया कि बन्दी–गृह के अध्यक्ष ने लक्ष्मी का किसी अन्य बन्दी के साथ 'ट्रान्सफर दिया है। इसमें वह और लक्ष्मी, दोनों विवश हैं। सोच करना व्यर्थ है।

: 7 :

श्यामलाल वकील के सुपुत्र सुदर्शनलाल से लक्ष्मी के विवाह का प्रबन्ध हो गया था। सुदर्शनलाल दो वर्ष की जेल–यात्रा के पश्चात् छूट कर आया तो कांग्रेस में जीवन–संचार करने के लिए सार्वजनिक कार्य करने लगा था। वैसे वह लक्ष्मी बीमा कम्पनी लाहौर शाखा का चीफ एजेण्ट नियुक्त था। इस व्यवसाय से उसको हजार–बारह सौ रुपया महीने की आय हो जाती थी।

अपने सार्वजनिक कार्यों में ही उसका सम्पर्क लक्ष्मी से हुआ था। पिछले दिनों लाहौर म्युनिसिपल कमेटी के निर्वाचन हुए थे और सुदर्शनलाल हीरामण्डी तथा शाही मुहल्ला क्षेत्र से कमेटी का सदस्य निर्वाचित हो गया था। इस निर्वाचन में लक्ष्मी ने भी कुछ काम किया था। सुदर्शनलाल उसके काम से संतुष्ट था और लक्ष्मी उसके रूप–रंग तथा धन–सम्पदा से प्रसन्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी। शाही मुहल्ले में उसका सबसे बड़ा और सबसे ऊंचा मकान था। दोनों परस्पर आकर्षण अनुभव करते थे। कमेटी के निर्वाचन के दिनों में परिचय बढ़ा तो घनिष्ठता बनने लगी। इसके उपरान्त दोनों में सायंकाल मेल–मिलाप होने लगा। और एक दिन विवाह की बात हो गई। सुदर्शनलाल ने प्रस्ताव किया। इस पर लक्ष्मी के मन में झिझक उत्पन्न हुई। परन्तु इच्छा इतनी प्रबल थी कि वह झिझक उसमें डूब गई। झिझक थी जगन्नाथ के विषय में। इच्छाओं ने कह दिया, वह तो पहले ही कह चुका हैं कि परिस्थितियों और अभिलाषाएँ बदल सकती हैं। बस, बात बन गई। लक्ष्मी ने प्रस्ताव को स्वीकार किया तो दोनों में समागम उसी समय हो गया। इस समागम के अनुभव ने तो रही–सही झिझक को कामनाओं के सागर में डूबो दिया। इसके उपरान्त विवाह की योजना बनने लगी।

सुदर्शनलाल रामनाथ से मिला। उसने शिवराम से मिलने के लिए कह दिया। वह पहुँचा तो शिवराम ने उसको अपराह्न चार बजे 'न्यू बुक एजेन्सी' में चाय पर आमन्त्रित कर दिया। उसका कहना था कि दोनों उसके माता–पिता के सामने बात करेंगे तो बात निश्चय की जा सकेगी। इस प्रकार रामनाथ, भोली, वकील श्यामलाल, उसकी पत्नी ललिता और शिवराम तथा राधा चाय पर आ पहुँचे।

चाय का प्रबन्ध स्टैंडर्ड रेस्टोराँ में था। सब इकट्ठे तो किताबों की दुकान पर हुए, परन्तु चाय पीने रेस्टोराँ में चले गये। जगन्नाथ को जानबूझ कर इस समारोह में आमन्त्रित नहीं किया गया।

रेस्टोराँ में जब प्रारम्भिक बातें निश्चय हुई तो वे लोग अपने–अपने घरों को चले गये। शिवराम को एक बात ज्ञात हुई। लक्ष्मी शीध्र विवाह के लिए कह रही थी। उसको कुछ यह समझ आया कि वह देरी होने से किसी अनिष्ट की आशा करती है।

सुदर्शनलाल यद्यपि जल्दी के लिए उत्सुक नहीं था। इस पर भी उसने लक्ष्मी की इच्छा का विरोध नहीं किया। इसका अर्थ शिवराम को यही समझ आया था कि दोनों में समागम हो चुका है और लक्ष्मी इस सम्बन्ध में किसी प्रकार के विघ्न की आशंका करती हैं। यह संतोष की बात थी कि सुदर्शनलाल किसी प्रकार के विघ्न की आशंका नहीं करता था।

दिन–मुहूर्त देखने की आवश्यकता नहीं समझी गई और विवाह का दिन निश्चय हो गया।

जब सब चले गये तो लक्ष्मी और शिवराम दुकान पर आ गये। कार्यालय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में पहुँच शिवराम ने जगन्नाथ को बुलाकर सूचना दे दी कि लक्ष्मी का विवाह श्यामलाल के लड़के सुदर्शनलाल म्युनिसिपल कमिश्नर से निश्चय हो गया है।

"जी।" जगन्नाथ ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, "कब हो रहा है विवाह?"

"शनिवार बारात आयेगी। रात बारह बजे के उपरान्त विवाह होगा और रविवार प्रातः नौ बजे डोली होगी।"

"तो मुझे लक्ष्मी के लिए कोई अच्छा–सा प्रेजेन्ट खरीदना चाहिए?"

"हाँ, खरीदने के समय लक्ष्मी को साथ ले जाना।"

"कब चलोगी लक्ष्मी? आज बृहस्पतिवार है। एक कल का ही दिन तो बीच में है।"

"जब आप कहेंगे चल दूँगी।"

"कल मध्याह्न के समय। ठीक है?"

शिवराम ने उसी रात खाने के समय जगन्नाथ से पूछ लिया, "अब तुम विवाह कब करोगे?"

"अभी एक वर्ष है इसमें।"

"कहो तो प्रबन्ध अभी कर दें?"

"नहीं चाचा जी। कुछ जल्दी नहीं। मैं धैर्य से अपने जीवन के करवट की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।"

विवाह हो गया और शिवराम को लक्ष्मी के स्थान पर अपना एक अधीनस्थ नियुक्त करना पड़ा। न तो लक्ष्मी दुकान पर काम करना चाहती थी, न ही सुदर्शनलाल यह पसंद करता था कि उसकी पत्नी किताबें बेचा करे। शिवराम भी अब लक्ष्मी को दुकान पर जगन्नाथ के समीप रखने में कोई प्रयोजन नहीं समझता था।

जगन्नाथ का काम नियम से चल रहा था। उसकी माँ सरस्वती जोन भी अपने पुत्र के लक्ष्मी से विवाह की आशा कर रही थी। जब उसको पता चला कि लक्ष्मी का विवाह हो गया है तो उसने इस विषय में अपने लड़के की सहायता करने का यत्न आरम्भ कर दिया।

मिस्टर जोन की रिश्ते में मौसी लन्दन में एक दुकानदार स्टिलवैल की पत्नी थी और वह अपने बच्चों के साथ हिन्दुस्तान भ्रमण के लिए आई हुई थी। वे लोग ठहरे तो नीडोज होटल में थे, परन्तु इनके घर आते–जाते थे। मिसेज स्टिलवैल की एक लड़की थी इड्डा और उसको अपनी मां से दस हजार पौंड का दहेज मिलने वाला था। लड़की बीस वर्ष की आयु की लम्बी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वस्थ और सुन्दर थी।

स्टिलवैल परिवार कश्मीर से लौटकर आया तो इड्डा ने कह दिया, "मैं तो हिन्दुस्तान में ही रह जाना चाहूँगी।"

उसकी माँ ने पूछ लिया, "भला यह क्यों?"

"इसलिए कि यह सस्ता देश है। यहाँ आधे शिलिंग में मुर्गी मिल जाती है। पाँच पैसे में दर्जन अण्डे मिल जाते हैं। मैं अपने दहेज के रुपये से यहाँ एक बहुत ही धनवान महिला की भांति रह सकूंगी।"

"परन्तु यहाँ रहने के लिऐ तो पति यहाँ का ही ढूंढना पड़ेगा। बिना पति पाये तो दहेज मिलेगा नहीं।"

"तो मम्मी! यहाँ ही विवाह कर लूँगी।"

"किसके साथ कर लोगी?"

"सिस्टर!" उसने मुस्कराते हुए सरस्वती की ओर देखकर पूछा, "क्या यहाँ कोई 'हस्बैंड' नहीं मिल सकेगा?"

"मिल क्यों नहीं सकेगा?" सरस्वती ने मुस्कराते हुए कह दिया।

"तो सिस्टर! एक ले दो। जिससे मम्मी मेरी दस हजार की 'डोरी' दे सके।" इस पर सब हँसने लगे।

"यदि तुम अपने भाई जोन की भाँति पूर्वग्रहों से ग्रसित नहीं तो एक हिन्दुस्तानी पति कल ही दिखा सकती हूँ।"

"डू शो मी, सिस्टर डीयर (मुझको जरूर दिखाओ)।"

अगले दिन रविवार था। सरस्वती ने जगन्नाथ को टेलिफोन कर दिया। अब दुकान पर टेलिफोन लग गया था। जगन्नाथ बोला तो उसकी मां ने कह दिया, "जग्गू! मैं सरस्वती बोल रही हूँ।"

"माँ, नमस्ते। क्या बात है?"

"मुझे तुमसे मिले एक महीने से ऊपर हो गया है। यहाँ कुछ मेहमान आये हुए थे, इस कारण उधर आ नहीं सकी। कल रविवार है। दोपहर भोजन हमारे यहाँ खाओ, मिल लेंगे। तुम्हारे बहिन–भाई भी तुमसे मिलने के लिए कह रहे हैं।"

यूँ तो पहले भी, जगन्नाथ जोन के घर जाया करता था। उसके छोटे बहिन–भाई उससे स्नेह रखते थे। वे शिवराम के घर भी आया करते थे। इस कारण माँ के निमन्त्रण में जगन्नाथ को किसी प्रकार का वैचित्र्य प्रतीत नहीं हुआ। उसने शनिवार रात मास्टर जी से कह दिया, "माँ ने मुझको लंच उसके घर लेने का निमन्त्रण दिया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कुछ विशेष बात है?"

"नहीं, वे कह रही थीं कि घर में मेहमान आये हुए हैं और इस कारण उसे मिलने आने का अवकाश नहीं। मिलने को उसका चित्त करता है।"

"अच्छी बात है, जा सकते हो। कल रविवार है। छापाखाना बन्द रहेगा। मैं दुकान पर आ जाऊँगा।"

जगन्नाथ रेलवे कालोनी में मिस्टर जोन के बंगले में जा पहुँचा। उसने देखा कि सत्य ही उनके घर में भीड़ लग रही है। जगन्नाथ आया तो जोन ने उसका परिचय अपने सम्बन्धियों से करा दिया। जोन ने बताया, "देखो जगन्नाथ। यह मेरी आण्टी मेरा मतलब है कि मेरी माँ की रिश्ते में छोटी बहिन है। यह मिस्टर एडविन स्टिलवैल लन्दन की बौंड स्ट्रीट पर एक विख्यात ग्रौसर स्टोर्ज के मालिक की पत्नी हैं। मिस्टर स्टिलवैल ने पिछले युद्ध के दिनों में बहुत धन कमाया है और आण्टी लैला स्टिलवैल अपने तीन बच्चों को साथ लेकर विश्व–भ्रमण और हिन्दुस्तान की सैर के लिए आयी हुई हैं। इनके पति लन्दन में हैं।

"और यह देखो। यह है इड्डा स्टिलवैल। लैला की बड़ी लड़की। यह मुझे बड़ी प्यारी लगती है। यह इड्डा का भाई है। कारमाइकल और यह उसकी छोटी बहिन है नीना।"

"और आण्टी!" जोन ने अपनी मौसी को सम्बोधन कर कहा, "यह सरस्वती का लड़का है। नाम है जगन्नाथ। इस नाम के अर्थ है, 'द लार्ड आफ यूनिवर्स'।"

अभी खाने में समय था। सब ड्राइंग–रूम में बैठे थे। कोल्ड ड्रिंक ले रहे थे। जोन का बैरा जानता था कि जगन्नाथ मद्य मिश्रित कोई भी पेय नहीं लेता। इस कारण दूसरों को वह फलों के रस में व्हिस्की मिश्रित करके देता रहा, परन्तु जगन्नाथ के लिए वह केवल फलों का रस ही लाया। जगन्नाथ ने प्रश्न–भरी दृष्टि से बैरे की ओर देखा तो उसने कह दिया, "बाबू इसमें मद्य नहीं है।"

इड्डा उसके समीप बैठी थी। उसने विस्मय में पूछ लिया, "तो आप मद्य का सेवन नहीं करते?"

"नहीं।"

"क्यों?"

"जिस मतलब के लिए यह पी जाती है उस मतलब के लिए मुझे इसकी आवश्यकता नहीं।"

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या मतलब होता है इसके पीने का?"

जगन्नाथ ने इड्डा के मुख पर देखते हुए कहा, "कुछ लोगों को चलते समय छड़ी के आश्रय की आवश्यकता रहती है। परन्तु जिस व्यक्ति की टाँगें स्थिर हों, उसको छड़ी एक बोझा उठाना प्रतीत होगी। इसी प्रकार मद्य सेवन का अर्थ थोड़ी उत्तेजना लानी है। मुझे इसकी आवश्यकता अनुभव नहीं होती। बिना इस उत्तेजक पेय के ही मैं अपने को सतर्क और सजग अनुभव करता हूँ।"

"यह तो 'ऐपिटाइजर' के तौर पर भूख उकसाने के लिए ली जा रही है।"

"यही तो मैं कह रहा हूँ। मुझे इसके बिना ही पर्याप्त भूख लगी रहती है।"

"तो आपके मद्य न लेने में कोई 'रिलिजस' कारण नहीं?"

"नहीं, मेरा मजहब इतना दुर्बल नहीं कि दो घूंट मद्य से बिगड़ जाय। मैं तो इसको अनावश्यक वस्तु समझ कर नहीं लेता।"

"परन्तु यहाँ कुछ लोग हैं जो यह मानते हैं कि मद्य पीने से उनका मजहब बिगड़ जाता है। हमारे होटल का एक बैरा है, नाम हं इलमदीन। मैंने उसको कहा था कि उसने हमारी बोतल में से थोड़ी व्हिस्की चुरा ली है तो वह कहने लगा, यह हमारे मजहब में मना है।"

"वह मुसलमान है। मुसलमानों के मजहब में यह मना है।"

"तो आप किस मजहब के हैं?"

"मैं मानव–धर्म को मानता हूँ।"

"और हमारी सिस्टर इन लॉ, मेरा अभिप्राय है सरस्वती बहिन किस मजहब को मानती है?"

"यह तुम उससे पूछ लो। जहाँ तक मुझको पता है, वह भी मानव–धर्म को ही मानने वाली है।"

"परन्तु वह तो कह रही थी कि वह अपने पति के साथ ईसाई मजहब को मानने लगी है।"

"यह भी ठीक है और जो कुछ मैं कहता हूँ वह ठीक ही प्रतीत होता है। भ्रम इस कारण है कि मैं धर्म की बात कर रहा हूँ और आप मजहब की बात कर रही हैं। दोनों बातों में अन्तर है। धर्म कर्त्तव्य (ड्यूटी) को कहते हैं। मानव होने से हमारे कुछ कर्त्तव्य हैं। जो उन कर्त्तव्यों को मानते हैं और उनका पालन करते हैं वे मानव–धर्म के मानने वाले हैं। मुझको यह समझ आ रहा है कि माँ उन कर्त्तव्यों का पालन करती हैं।

"मजहब तो मनुष्य जन्म के अन्तिम उद्देश्य तक पहुँचने के मार्ग को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहते हैं। इस मार्ग में भी कुछ कर्त्तव्य पालन करने योग्य होते हैं। यह आवश्यक नहीं कि मानव–धर्म के कर्त्तव्य और उस उद्देश्य तक पहुँचने के लिए पालन करने योग्य कर्त्तव्य समान हो।

''बात यह है कि भिन्न–भिन्न रहनुमाओं ने मानव–जीवन का उद्देश्य एक नहीं बताया। साथ ही उस उद्देश्य तक पहुँचने का मार्ग एक ही नहीं मानते। स्वाभाविक रूप से उस मार्ग पर चलते हुए पालन करने वाले कर्त्तव्य भी एक समान नहीं।''

''इस संसार में सुख एवं शान्ति से रहने के लिए जो कर्त्तव्य हैं; वहीं मानव–धर्म है। यह प्रायः सब भले लोगों ने एक समान माने हैं।''

''वे कर्त्तव्य क्या हैं?''

जगन्नाथ ने मनु के धर्म के दस लक्षण बता दिये और उनका मुकाबला बाइबिल के लिखे दस 'कमाण्डमेंट्स' के साथ कर दिया। उसने आगे कहा, ''ये तो धर्म हैं। परन्तु गिरजाघर में जाकर मरियम तथा हजरत ईसा के बुत के सम्मुख घुटने टेक कर अजील के कुछ अंशों को पढ़ना मजहब है।''

''और यह मद्य पीना अथवा न पीना किस श्रेणी में आते हैं?''

''यह मजहब के साथ सम्बन्ध रखता है। हजरत ईसा ने शराब से शपथ लेने की बात लिखी है। हजरत मुहम्मद ने इसको चखना भी मना किया है। यह इस कारण कि दोनों की स्वर्ग की कल्पना भिन्न–भिन्न है और उस स्वर्ग तक पहुँचने का मार्ग और उस मार्ग पर चलते हुए कर्त्तव्य भिन्न–भिन्न हैं।''

इड्डा समझने लगी थी। इस पर भी उसने पूछ लिया, ''तो आपका मजहब क्या है?''

''मेरा भी एक मजहब है। मेरा मजहब स्वर्ग और नर्क की वह कल्पना नहीं करता जो मुहम्मद साहब अथवा हजरत ईसा ने बताया है। मेरा स्वर्ग तो यहाँ, चाँद अथवा सूर्य इत्यादि किसी भी नक्षत्र अथवा ग्रह पर अथवा इनके बिना भी खुले आकाश में हो सकता है! वहाँ यह शरीर जो इस समय मेरे आत्मा पर है, नहीं होगा। इस कारण भूख–प्यास, सर्दी–गर्मी और शरीर की अन्य कठिनाईयाँ नहीं रहेंगी। उसमें एक विशेष प्रकार का संतोष, तुष्टि, प्रसन्नता और आत्मा की अनुभूति होती है। यह मेरा स्वर्ग है। इसको प्राप्त करने के लिए मार्ग वह नहीं है जो उस स्वर्ग तक पहुँचने का है, जिसमें शराब की नदियाँ बहती हैं। अथवा जहाँ पर सुन्दर हूरें इत्यादि हैं।''

इड्डा हँस पड़ी।

इस समय बैरा ने खाने पर चलने के समय की सूचना दी तो सब उठकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाने के कमरे में चले गये। इड्डा उत्सुक थी जगन्नाथ के स्वर्ग की व्याख्या सुनने के लिए। इस कारण जब सब खाने की मेज पर बैठे तो वह जगन्नाथ के पास जा बैठी। जगन्नाथ की बहिन ऐमिली अपने भाई के दूसरी ओर आ बैठी। वह अभी सात वर्ष की थी, परन्तु वह उन दोनों की बात बहुत ध्यान से सुन रही थी।

जब प्लेटें रखी जा रही थीं, बैरा सूप ले आया। इड्डा ने ड्राइंगरूम के वार्तालाप को आगे चला दिया। उसने पूछा, "तो आपके कल्पना के स्वर्ग की क्या विशेषता है और वह कहाँ है?"

"यदि मैं कुछ बताऊँ तो तुम स्वीकार नहीं करोगी।"

"क्यों?"

"मैं उसका अनुभव तो करता हूँ परन्तु उसको ठीक–ठीक शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता।"

"क्यों नहीं कर सकते?"

"इस कारण कि मनुष्य की कोई भी भाषा उस अवस्था का वर्णन करने के लिए पर्याप्त विकसित नहीं।"

"अंग्रेजी भी नहीं।"

जगन्नाथ हँस पड़ा। हँसकर कहने लगा, "अंग्रेजी से तो संस्कृत सैकड़ों गुणा श्रेष्ठ है, परन्तु संस्कृत भाषा भी इसी पृथ्वी पर विकसित हुई है और यहाँ की आवश्यकताओं का ही वर्णन करने की क्षमता रखती है। अंग्रेजी तो बहुत ही अटपटी भाषा है। इसमें भावों की अभिव्यक्ति उतने सुन्दर ढंग से नहीं हो सकती, जितनी संस्कृत भाषा में हो सकती है। इस पर दोनों भाषाएँ यहीं की हैं।

"तो स्वर्ग की भाषा कौन–सी है?"

"है एक! उस भाषा को बोलने के लिए यह गला, मुख, जिह्वा समर्थ नहीं।"

इस पर तो इड्डा और भी जोर से हँसने लगी। सबका ध्यान उसकी ओर गया तो वह सरस्वती को सम्बोधन कर कहने लगी, "सिस्टर! ये कह रहे हैं कि स्वर्ग में यह शरीर नहीं होता। इस कारण यह मुख, गला और जिह्वा नहीं होती। इसलिए यह अंग्रेजी अथवा हिन्दुस्तानी वहाँ बोली नहीं जा सकती।"

इस पर जोन बोल उठा, "तो इसमें हँसने की बात क्या है? यदि यह शरीर वहाँ होगा तो भूख लगेगी। फिर भोजन करोगी तो टट्टी–पेशाब जाओगी। साथ ही इस शरीर को ढाँपने के लिए कपड़ों की आवश्यकता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहेगी। फिर वहाँ भी कपड़े के कारखाने लगाने पड़ेंगे। कारखाने होंगे तो मजदूर होंगे, मालिक होंगे। टट्टियाँ होंगी तो सफाई करने वाले मेहतर होंगे। तो फिर स्वर्ग में विशेषता क्या हुई?''

इड्डा इतनी लम्बी युक्ति को सुनकर जोन का मुख देखती रह गई। इस पर इड्डा की मां ने जोन से पूछ लिया, ''परन्तु वह स्वर्ग किसने देखा है?''

''यह जगन्नाथ कहता है कि कई हैं, जिन्होंने देखा है। उन देखने वालों में कुछ हैं जिनको यहाँ आने पर भी उसकी याद है। कुछ उस याद को शब्दों में व्यक्त कर सकते हैं और कुछ नहीं कर सकते। जो कर सकते हैं वे भी मानव भाषा में 'एडिक्वेटली' (पूरे तौर पर) नहीं कर सकते।''

मैं दूसरों की वात नहीं कर रही। मैं इस युवक की बात कर रही हूँ। ये किस श्रेणी में हैं?''

''यह तो कहता है कि यह स्वर्ग में से वापस आकर इस मानव–शरीर में कैद हो गया है। इस पर भी इसको वहाँ की बातें बहुत–सी याद हैं। वह उन सब बातों का मुख से वर्णन नहीं कर सकता। इस पर भी इसके पास एक शक्ति है, जिससे यह कुछ–एक को वहाँ की बात बिना बोले अनुभव करा सकता है।''

''वण्डरफुल!'' इड्डा बोल उठी। जगन्नाथ डीयर! तुम मुझको यह करा सकते हो?''

''मैं यत्न कर सकता हूँ। इसमें एक शर्त है। तुम उस घर में चल कर रात को सोओ, जिस घर में मैं सोता हूँ। मैं इतनी ऊंची आवाज में, मेरा मतलब है कि इतने दूर रहते हुए बता नहीं सकता।''

''तो ऐसा करो। तुम मुझे, मेरी मम्मी तथा सिस्टर और ब्रदर को एक रात सोने का अपने अंकल से निमन्त्रण दिलवा दो।''

''यह कठिन नहीं है। मैं मिस्टर जोन से प्रार्थना करूँगा कि वे अपनी मोटरगाड़ी में आप सबको अपराह्न की चाय पर हमारे घर ले चलें। उसके लिए तो मैं निमन्त्रण दे देता हूँ। रात के रहने का निमन्त्रण चाची राधा से दिलवा दूँगा।''

इस पर लैला जोन से बातें करने लगी। वे जगन्नाथ के इस निमन्त्रण पर विचार करने लगे थे। इस पर इड्डा बोल उठी, ''ब्रदर डीयर! मैं लॉर्ड आफ द युनिवर्स (जगन्नाथ) का निमन्त्रण स्वीकार करती हूँ।''

इस पर तो सब बैठे हुए हँसने लगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: 8 :

भोजन के उपरान्त सब ड्राइंग–रूम में ताश खेलने लगे। परन्तु सरस्वती जगन्नाथ को अपने सोने के कमरे में ले गई। वे अभी वहाँ पहुँचे ही थे कि इड्डा उनके पीछे जा पहुँची। इड्डा ने जाते ही कहा, "सिस्टर, मेरी निन्दा न करना।"

सरस्वती ने हँसते हुए इड्डा के गले में बाँह डालकर कहा, "तुम्हारी निन्दा क्यों करूँगी? तुम तो मुझको बहुत ही प्यारी लगती हो।"

"इस लॉर्ड आफ द युनिवर्स से भी ज्यादा प्यारी?"

सरस्वती युरोपियन समाज में रहते–रहते बात करने में बहुत चतुराई पा चुकी थी। उसने कह दिया, "मैं दोनों में भेद नहीं कर सकती। यदि वह भेद है तो दोनों को जानने की सीमा में है। उस सीमा के अन्तर में जगन्नाथ को मैं तुमसे अधिक जानती हूँ परन्तु जहाँ तक तुम दोनों के गुणों को पसन्द करने की बात है, मुझे अन्तर प्रतीत नहीं होता।"

"सत्य कहती हो सिस्टर?"

"बिल्कुल। तुम्हें मेरे कथन पर अविश्वास कर मेरा अपमान नहीं करना चाहिए।"

"तो मैं इनके सामने यह कहने आई हूँ कि इनसे मेरी सिफारिश कर दो।"

सरस्वती तो मन से समझ गई थी कि वह कैसी सिफारिश लगवाना चाहती है, इस पर भी न समझने का बहाना करते हुए कहने लगी, "किस विषय में सिफारिश चाहती हो?"

"तो तुम भूल गयी हो? मैं हिन्दुस्तान में ही रहना चाहती हूँ।"

"ओह! परन्तु इड्डा डीयर! वह तो तुम हमारे घर में भी रह सकती हो। मैंने मिस्टर जोन से रात पूछा था। वह कह रहे थे कि यदि तुम हस्बैंड हंटिंग के लिए हिन्दुस्तान में रहना चाहती हो तो जब तक तुमको एक मिल नहीं जाता, तुम हमारे घर में रह सकती हो।"

"ओह सिस्टर, तुम कितनी अच्छी हो! परन्तु मैं समझती हूँ कि मेरी हस्बैंड के विषय में खोज समाप्त हो गयी है।"

"तो मैं तुमको बधाई दूँ? तुमने परस्पर कुछ निश्चय कर लिया है?"

"खोज के अन्त का यह अर्थ कैसे हो गया कि हमने बातचीत भी कर ली है। मैंने आज एक डिजायरेबल हस्बैंड देख लिया है। अब मैं तुम्हारी सिफारिश चाहती हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जगन्नाथ! सरस्वती ने लड़के को सम्बोधन कर कह दिया, "समझ रहे हो यह क्या कहती है?"

"कुछ–कुछ ही माँ!"

"तो सुनो। यह लड़की हिन्दुस्तान में विवाह करना चाहती है और इसने तुमसे विवाह की इच्छा प्रकट की है। कल मैंने इसको तुम्हारा नाम–पता बताया था तो इसने कहा था कि मैं तुमको यहाँ लँच पर निमन्त्रण दे दूँ? मैंने फोन पर निमन्त्रण दिया। उसके बाद यह तुम्हारी दुकान पर तुमको देखने गई थी। वहाँ से यह कुछ पुस्तकें भी खरीद कर लाई है। वह कहती है– कि इसने तुमको देखा था और जहाँ तक रूप–राशि का प्रश्न है, पसन्द किया था। इस पर भी यह तुमसे बातचीत कर तुम्हारी मानसिक अवस्था जानना चाहती थी। अब इसके कहने का अर्थ मैं यह समझी हूँ कि इसने तुमको पूर्ण–रूप से पसन्द कर लिया है।"

"तो मां, तुम क्या कहती हो?"

"मुझसे किसलिए पूछ रहे हो? अपने आप निश्चय क्यों नहीं कर लेते?"

"वह तो पीछे करूँगा। माँ की पसन्द के बिना तो मैं इस सम्बन्ध पर विचार भी नहीं करूँगा। मां, मेरे विवाह के विषय में तो संस्कार हिन्दुस्तानी हैं न?"

"ठीक है। इस पर भी मेरे मन की, बात तो तुम जान गये हो। इड्डा एक प्यारी लड़की है। वह तुम्हारी पत्नी बनती है अथवा नहीं बनती, इसके अतिरिक्त भी मेरा इससे स्नेह है। किसी भी लड़के के, सामने मैं इसकी सिफारिश कर सकती हूँ।"

इससे तो इड्डा अति प्रसन्न थी। उसने सरस्वती के गले में बाँह डालकर अपनी कृतज्ञता, उसका मुख चूमकर प्रकट कर दी। फिर एकाएक वह उठ खडी हुई और पूछने लगी, "तो आज इनके निमन्त्रण पर चाय पर चलेंगे न?"

"जोन से कहो। मोटर तो वह ही चला सकता है?"

"यदि मोटर नहीं होगी तो हम जा नहीं सकेंगे?"

"तो कैसे जाओगी?"

"जैसे कल इनकी दुकान पर गई थी।"

"फिर भी मोटर में चल सकें तो अच्छा है।"

इड्डा कमरे से निकल गई। वह गई तो सरस्वती ने कहा, "मैं तुम्हें इस कमरे में इसी विषय पर बात करने के लिए लाई थी। इसने आकर मेरा काम बहुत सरल कर दिया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मां! मैं अभी बीस वर्ष की आयु का हूँ। अभी मुझे विवाह एक वर्ष उपरान्त करना है। क्या यह इतनी देर तक प्रतीक्षा कर सकेगी?"

"दो बातें हैं। एक तो सगाई हो जाय और प्रतीक्षा हो और दूसरे सगाई के लिए भी प्रतीक्षा हो।"

"हाँ, माँ! मैं चाहता हूँ कि यह मुझको भली–भाँति देख–भाल ले। जब इसको मेरी सब बातें, मेरे सब काम और मेरे विचार पसन्द आ जाएँ तब ही इसको सगाई का निश्चय करना चाहिए।"

"तो आज सायंकाल यह तुमसे इस विषय पर बातचीत करेगी। तुम भली–भाँति विचार कर रखो कि तुम्हारे लिए क्या उचित है और क्या उचित नहीं। वैसे मैंने इसको बताया है कि स्त्री का मजहब पति का मजहब होता है।"

"इसकी आवश्यकता नहीं माँ! यदि यह मुझे इसमें स्वतन्त्रता देगी, तो मैं भी इसको स्वतन्त्रता दे दूँगा। हाँ, धर्म की बात दूसरी है। वह मैं इसको समझा दूँगा।"

जगन्नाथ तो बाइसिकल पर आया था और वह बाइसिकल पर ही विदा हो गया। जोन ने जगन्नाथ को कह दिया था कि वह सब बच्चों सहित पाँच बजे फिरोजपुर रोड पर पहुँच जायगा।

जगन्नाथ ने चाची राधा को बता दिया कि "जोन साहब के कुछ रिश्तेदार पाँच बजे चाय के लिए आयेंगे। वे लन्दन के रहने वाले हैं।" साथ ही उसने बता दिया, "इनमें जोन साहब की एक मौसिया बहिन है वह मुझसे विवाह का प्रस्ताव करना चाहती है। मैं चाहता हूँ कि आप और चाचा जी उसके विषय में मेरा पथ–प्रदर्शन करें।"

"परन्तु इतनी बड़ी बात एक दिन में कैसे निर्णय कर सकते हैं?"

"वह लडकी माँ के पास रह जाने की इच्छा कर रही है। उसकी माँ और भाई तो अगले मास वापस इंग्लैड जाना चाहते हैं और वह यहाँ रह जायेगी। मैं विवाह तो अगले वर्ष के अन्त में ही करूँगा। तब तक तो आप अपनी ठीक सम्मति दे सकेंगी।"

"अच्छी बात है। उसको आने दो। तुम्हारे चाचा जी को भी बुला लेंगे।"

"नहीं, यह निश्चय है कि रात वे यहाँ ही रहेंगे। आप उनको रात यहाँ रहने का निमन्त्रण दे दें। तब तक तो चाचा जी भी आ जाएँगे।"

जगन्नाथ आशा कर रहा था कि इड्डा उससे विवाह के विषय में बात करेगी। परन्तु ऐसी कोई बात नहीं हुई। चाय के समय और रात के खाने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय भी इधर–उधर की बातें होती रहीं।''

इड़डा उसको इंगलैंड के विषय में बताने लगी, ''वहाँ जातीय अभिमान की पराकाष्ठा हो गई है। हम लोग स्वप्न में भी यह नहीं मान सकते कि इंगलैड कभी भी किसी जाति से पराजित हो सकता है। न ही हम किसी को अपने से अधिक बुद्धिमान मानते हैं। यह जातीय अभिमान इस सीमा तक जा पहुँचा है कि दुनिया के लोग अंग्रेजों को 'स्नौब्स' (अभिमानी मूर्खो) की जाति मानने लगे हैं।''

जगन्नाथ ने मुस्कराते हुए कहा, ''हम जो पिछले सौ वर्षों से अंग्रेजों के अधीन हैं, अंग्रेजों की इस मूढ़ता को भली–भाँति जानते हैं। आप लोग न तो किसी की सीख सुनने को तैयार हैं और न ही कोई विचार जो दूसरों के मस्तिष्क से निकला हो, आपको ठीक प्रतीत होता है।''

''क्या सीख देना चाहते हैं आप?''

''मैं एक सुझाव ररवता हूँ। सीख तो मैं उसको कह नहीं सकता। सीख देने योग्य मेरी आयु नहीं। वह सुझाव यह है कि 'लीग आफ नेशन्स, जिसके निर्माण और जिसको चालु रखने में इंगलैंड, फ्रांस और इटली मुख्य हैं, इसमें भाँति–भाँति के पक्षी भरती करने से हानि में रहेंगे। इसमें दो–तीन जातियो को, जो नेकी के नियमों का पालन करने वाली हों, सम्मिलित होकर अपनी शक्ति इतनी प्रबल बना लेनी चाहिए कि संसार में कोई भी नेक जाति को कष्ट पहुँचाने का साहस न कर सके।''

''मुझे राजनीति में रुचि नहीं। मैं तो व्यक्ति के जीवन में ही रुचि रखती हूँ। व्यक्ति का जीवन है सुन्दर सुखद् मकान, पेट–भर स्वादिष्ट भोजन और प्रचलित ढंग से साफ–सुथरे कपड़े।''

''यह तो है ही। परन्तु इड़डा, कुछ लोगों को ये पदार्थ आवश्यकता से अधिक उपलब्ध हैं और कुछ को जीवन चलाना भी, दूभर हो जाता है। यह तुमने कभी देखा है अथवा नहीं?''

''हाँ, लंदन में तो यह नित्य देखने में आता है।''

''इसमें कारण यह है कि कुछ दुष्ट, स्वार्थी और क्रूर मनुष्यों ने मिलकर दूसरे सरल चित्त व्यक्तियों को लूटने की योजना चला रखी है।''

''तो आप सोशलिस्ट हैं?''

''मैं इस शब्द का अर्थ नहीं जानता। 'एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका', में सोशलिज्म के अर्थ ढूँढ़ता रहता हूँ। बहुत लम्बा लेख इस विषय पर वहाँ है और इसका एक लम्बा इतिहास भी दिया हुआ है। परन्तु इसका रूप क्या है,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहाँ नहीं मिला। कई प्रकार की योजनाएँ हैं, जिनमें यह असमानता दूर करने का ढंग बताया है। परन्तु सोशलिस्ट एक दूसरे की योजना की निन्दा करते है। एक धुँधला–सा सिद्धान्त है कि व्यक्ति समाज के अधीन रहे। समाज सब पर नियन्त्रण रखे। परन्तु समाज क्या है? बहुसंख्या समाज है क्या? यदि बहुसंख्या समाज मान लेंगे तो मूर्ख संख्या में अधिक होने से समाज मूर्ख हो जायेगा। उनकी बात चलेगी तो पूर्ण जाति ही डूबेगी। कुछ कहते हैं, शासन समाज है। तो समाज दो वर्ग हो गये। शासक और शासित। शासक शासितों को कष्ट दे सकेंगे। फिर कुछ कहते है कि शासित ही शासकों का निर्वाचन करें। कुछ भी हो निर्वाचन होने के उपरान्त तो शासक और शासित हो जाएँगे। यदि निर्वाचित शासक वास्तव गै दृष्टि प्रकृति के हुए तो वे तो शासितों को तीन–चार वर्ष में ही बरबाद करके रख देंगे।

"इसलिए मुझे सोशलिजम से सांत्वना नहीं होती। मैं तो एक ही बात का विचार कर सकता हूँ कि नेकी के लक्षण होने चाहिएँ और उन लक्षणों और वैसे व्यवहार वाले लोगों को एक प्रबल संगठन बना लेना चाहिए। वे अपने संगठन से दुष्ट प्रकृति के लोगों को सदा दबा कर रखें।"

"परन्तु नेकी के लक्षण तो समय–समय पर तथा व्यक्ति–व्यक्ति में बदलते रहते है।" इड्डा ने कह दिया।

"यही तो गलत बात है। नेकी तो आदिकाल से आज तक एक ही रही है। यह तो बदलती नहीं।"

"बदलती क्यों नहीं! देखिये, हिन्दुस्तान में पुरुष एक से अधिक पत्नियाँ रख कर भी नेक कहाता है। यहाँ 'यूजरर' (बहुत अधिक ब्याज लेने वाले) भी जब किसी मन्दिर में धन दे दें तो वह नेक बन जाते हैं। इस प्रकार योरुप में एक लॉर्ड कुछ काम नहीं करता और अपने काश्तकारों की कमाई में से हिस्सा बाँटकर कहीं किसी हस्पताल में दान देकर नेक कहाने लगता है। क्या यह नेकी के बदल रहे अर्थों के कारण नहीं?"

जगन्नाथ हँस पड़ा। उसने हँसते हुए कहा, "तो इड्डा ने नेकी के अर्थ वह कह दिये हैं जिसको पार्लियामेण्ट कानून के रूप मे पारित करती है अथवा जिसको दस–बीस लोग स्वीकार कर लेते है। यह तो नहीं है। नेकी न तो पार्लियामेण्ट की इच्छा–अनिच्छा से निश्चित होती है। न ही कुछ समाज के चौधरियों के कहने से।"

"तो कैसे निश्चित होती है?"

"कुछ अटल नियम हैं। संसार के आदि में ईश्वर–परायण महापुरुषों ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये नियम बताये थे। वे बदलते नहीं। वे नेकी के लक्षण है। हमारे शास्त्र में उनकी गणना दस में की हैं। ईसाई मजहब में वे दस खुदाई हुक्मों के नाम से लिखे हैं। न्यूनाधिक यही है जो सब देशों में, सब कालों में और सब व्यक्तियों के लिए मान्य हैं।''

''इन दस नियमों के अतिरिक्त एक सर्वमान्य व्यवहार है। दूसरों के साथ वैसा ही बर्ताव करो जैसा तुम अपने साथ पसन्द करते हो।''

''तो एक विवाह करना अथवा दो–तीन या अधिक विवाह करना भले और बुरे आदमी के लक्षण नहीं हैं?''

''विवाह करना अथवा न करना अच्छाई और बुराई का लक्षण नहीं। अच्छाई है संयम। मन से और इन्द्रियों से। यह एक विवाह करने से नहीं भी हो सकता और एक से अधिक विवाह करने से भी हो सकता है। विवाह की रस्म समाज में व्यवस्था रखने से सम्बन्ध रखती है। समाज की अवस्था बदलती रहती है। इस कारण विवाह व्यवस्था भी बदलती रहती है। इसका सम्बन्ध, देश, काल, आयु तथा स्वास्थ्य से है।''

''हमारे यहाँ भले लोगों के योग्य आचरण को धर्म का नाम दिया है।''

इस प्रकार की बात में रात के साढ़े दस बज गये। सब के सोने का प्रबन्ध हुआ तो शिवराम ने उठ कर कह दिया, ''रात सोने के लिए बनी है। अब हमें सो जाना चाहिए।''

इस पर जगन्नाथ ने कह दिया, ''मैं तो बहुत जल्दी जाग जाता हूँ। इस कारण मुझको अब सो जाना चाहिए।''

इड्डा ने कहा, ''मैं तो आपसे उस स्वर्ग के विषय में बातचीत करने आई हूँ, जिसका आपने वचन दिया था।''

''मुझे स्मरण है।''

''तो कब?''

''कल प्रातःकाल इस विषय में बातचीत होगी।''

''हम कल दिल्ली, आगरा देखने जा रहे हैं।''

''किस समय?''

''दस बजे गाड़ी जाती है।''

''बहुत समय है।''

''तो मैं आपसे किस समय मिल सकूंगी?''

''ब्रेकफास्ट के समय।''

इड्डा समझ नहीं सकी कि वह कब और किस प्रकार बतायेगा। कुछ न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझती हुई वह जाकर सो रही। उसकी माँ और भाई–बहिन को एक बड़े कमरे में स्थान मिल गया। सरस्वती भी वहाँ रही थी। जोन अपनी मोटर में चला गया था। उसको बहुत प्रातःकाल दफ्तर का काम था।

: 9 :

ठीक आठ बजे प्रातः के अल्पाहार के समय इड्डा जगन्नाथ सें मिली तो वह मुस्कराती हुई कहने लगी, "बहुत–बहुत धन्यवाद 'लॉर्ड आफ द युनिवर्स।'"

जगन्नाथ खिलखिलाकर हँस पडा। समीप शिवराम और सरस्वती खड़े लैला स्टिलवैल से बातें कर रहे थे। इड्डा के धन्यवाद से सबका ध्यान इनकी ओर चला गया। शिवराम ने पूछा, "किस बात के लिए जगन्नाथ को धन्यवाद कर रही हो इड्डा?"

"इन्होंने कल यह वचन दिया था कि यदि मैं रात इस कोठी में सोऊँ तो ये मुझको स्वर्ग के विषय में बताएँगे। सो रात इन्होंने मुझको वहाँ की सैर कराई है।"

सरस्वती और लैला विस्मय में मुख देखती रह गई। लैला को संदेह होने लगा था कि रात इड्डा जगन्नाथ के कमरे में सोने न चली गई हो। पर उसको विश्वास नहीं होता था। माँ–बेटी दोनों एक ही पलंग पर सोई थीं। पलंग बडा अवश्य था। इस पर भी रात वह दो–तीन बार जागी थी और इड्डा को अपने समीप सोये देखती रही थी। सरस्वती को भी कुछ वैसा ही सन्देह था। शिवराम तो सब बात समझता था। इस कारण वह इड्डा की बात सुन हँसता रहा। जब सब खाने की मेज पर बैठ गये तो लैला ने शिवराम से पूछ लिया, "यह इड्डा क्या कह रही थी, जिस पर आप हँस रहे थे?"

"देखो मिसेज लैला! हम मुख से बोलते हैं, हाथों से काम करते हैं, और पाँव से चलते हैं। इसी प्रकार हम कानों से सुनते, आँखों से देखते और छूने से अनुभव करते हैं। इन सब कामों का करने वाला हमारे शरीर में आत्मा है। यह हाथ, नाक, कान इत्यादि तो यन्त्र हैं। वास्तव में इन यन्त्रों के बिना भी आत्मा सुनता, सूंघता, देखता और सब प्रकार के काम करता है।

हमारे शास्त्रों में लिखा है–

एषः हि द्रष्टा स्प्रष्टा श्रोता घ्राता।
रसयिता मन्ता बोद्धा कर्ता विज्ञानात्मा पुरुषः।।

"देखने वाला, छूने वाला, सुनने वाला, चलने वाला, मनन करने वाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और कार्य करने वाला सब के भीतर आत्मा है।''

''वह आत्मा इन इन्द्रियों के बिना भी ये सब काम करता है। परन्तु उसकी बोलने की भाषा, सुनने के शब्द, अथवा अन्य काम करने के ढंग पृथक् हैं। जब मनुष्य सो जाता है, तो आत्मा का सम्बन्ध इन शरीर के यन्त्रों से हट जाता है। तब यदि आत्मा में सामर्थ्य हो और कोई दूसरी आत्मा उससे बात करनी चाहे, अथवा उसको कहीं ले जाना चाहे तो इस शरीर की सहायता के बिना सब–कुछ कर सकता है।

''ऐसा प्रतीत होता है कि जगन्नाथ ने इसकी आत्मा से रात कुछ बातें की हैं अथवा उसको कुछ दिखाया है जो इस शरीर के बन्धन के कारण यह देख नहीं सकती थी।''

''वण्डर फुल।'' लैला के मुख से अकस्मात् निकल गया। यह सुन उसने इड्डा से जो उसके दूसरी ओर बैठी थी, घूम कर पूछ लिया, ''तो तुम रात–भर जगन्नाथ से बातें करती रही हो?''

''रात–भर नहीं मम्मी! यदि यह कहूँ कि बहुत प्रातःकाल था तो ठीक होगा।''

''पर तुम तो मेरे पास सोई थीं।''

''हाँ। पर मम्मी, यह बहुत विचित्र बात हुई। एकाएक किसी ने मुझको हिलाकर जगाया। मैंने समझा कि तुम हिला रही हो। परन्तु तुम तो पलंग पर बैठी थीं और हाथों को फैलाये प्रभु से दुआ बार रही थीं।''

''मैं जागी तो ये पलंग के पास खड़े थे। इन्होंने मुझको उठने का संकेत किया तो मैं उठ खड़ी हुई, परन्तु मेरा शरीर तो वहीं पलंग पर पड़ा रहा और मैं पलंग के समीप खड़ी तुमको दुआ करते और अपने शरीर की गहरी नींद सोते देख, भयभीत खड़ी रह गई। इस समय उन्होंने मेरे कन्धे पर हाथ रखा तो मैं उनकी ओर घूमी। अब मैंने उनको देखा, फिर अपने को देखा। कुछ अद्वितीय, अकथनीय और अलौकिक था। उस समय जो मैंने देखा वह वर्णन नहीं कर सकती। उसका वर्णन करने के लिए तो मेरे पास शब्द नहीं हैं। इन्होंने कहा, मैं तुझको दिखाना चाहता हूँ, आओ! मैं, इनके पीछे चल पड़ी। मैंने जो कुछ देखा, सुना और स्पर्श किया तथा समझा वह बहुत ही विचित्र था।

''हम घूम कर आये तो तुम मेरे समीप, मेरे गले में बाँह डाले सो रही थी। मैं भी नियमित साँस लेती हुई गहरी नींद सो रही थी। इन्होंने मुझको कहा, अब सो जाओ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं अपने शरीर में गई और जो कुछ मैं देख–सुन रही थी वह सब कुछ समाप्त हो गया।

"प्रातःकाल छः बजे मैं उठी। तुम पहले ही जाग रही थीं। शौच तथा स्नान करते हुए मैं इस घटना पर विचार करती रही। मैं यह निश्चय नहीं कर सकी थी कि मैंने कोई मधुर स्वप्न देखा है अथवा कुछ वास्तविक वस्तु देखी है।

"इसी कारण मैंने इनसे मिलते ही जब इनका धन्यवाद किया तो ये हँस पड़े। हँसते हुए ये मुझे कहने लगे, मैंने अपना वचन पालन किया है। मैंने तुमको उस स्थान के एक बहुत ही छोटे से भाग का दर्शन कराया है जिसको हम लोग परलोक कहते हैं।

"ये कहते हैं कि, यह कुछ ऐसा ही है जैसे किसी जेल से कोई कैदी 'पेरोल' पर कुछ काल के लिए छुट्टी प्राप्त कर ले। पेरोल का समय व्यतीत होने से पहले ही उसको पुनः स्वयमेव जेल में लौट आना होता है।

"मम्मी! मैंने जो कुछ देखा, वह इतना अद्भुत था कि उसका वर्णन नहीं किया जा सकता।"

लैला को सन्देह होने लगा था कि उसकी लड़की किसी प्रबल हिप्नाटिक (सम्मोहिनी) प्रभाव में पड़ी हुई बातें कर रही है। उसने कहा, "अच्छा! यह बात किसी से मत कहना। नहीं तो लोग तुमको पागल कहने लगेंगे।

इड्डा गम्भीर हो चुप कर रही। वह अपने को पागल नहीं समझती थी। वह सब को खाते–पीते, बातें करते, हँसते वैसे ही देख रही थी, जैसे सदा देखा करती थी। वह मम्मी की बात सुन समझ गई थी कि उसे अपने अनुभव की बात किसी को बतानी नहीं चाहिए। जब वह सब कुछ ठीक–ठीक समझ रही है और सबसे ठीक बात करती है, तो वह पागल नहीं है।

वह टोस्ट मक्खन खाकर कॉफी पीने लगी थी कि एक बात उसके मन में आई। उसने शिवराम की ओर देखकर पूछ लिया, "अंकल! मैं पागल दिखाई देती हूँ क्या?"

"कौन कहता है यह?"

"मम्मी कह रही हैं।"

लैला ने बात बीच में ही रोक कर कहा, "इड्डा! मैंने तुम्हें पागल नहीं कहा, मैंने कहा है कि तुम्हारी बातें सुनकर तुमको सब पागल कहने लगेंगे। तुम्हारी बातें दुनिया की बातें नहीं हैं।

"इस पर शिवराम ने कह दिया, "लैला बहिन ठीक कहती हैं। यह बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो तुमने रात देखी है दुनिया के दूसरे आदमी देख नहीं सकते। कुछ देखते भी हैं तो वे जागने पर तुरन्त भूल जाते हैं। यदि उनके सामने तुम यह बात कहोगी तो वे इसको अनहोनी बात समझ, अवश्य तुमको पागल समझेंगे। पागल कहते ही उसको हैं जो दूसरों से विलक्षण बात करे।''

इड्डा चुप रही। अल्पाहार के उपरान्त लैला इत्यादि विदा हो गये। जगन्नाथ दुकान को और शिवराम छापाखाना को चला गया।

रात भोजन के समय राधा ने जगन्नाथ से पूछ लिया, ''तो इड्डा से कुछ बात हुई है?''

''किस विषय में?''

''विवाह के विषय में।''

''कुछ नहीं।''

''उसकी माँ ने मुझसे बात की है। वह कहती थी कि लड़की हिन्दुस्तान में रहना चाहती है। यहाँ की बातें विशेष रूप में कश्मीर के कुछ दर्शनीय स्थान उसको विशेष पसन्द आये हैं। यहाँ रहने के लिए उसको धन चाहिए। उसको दहेज में दस हजार पौंड मिलने वाला है। यह रकम विवाह पर ही मिलेगी। इस कारण वह विवाह करके दहेज प्राप्त करना चाहती है। इसके अतिरिक्त उसकी अन्य कोई अभिलाषा नहीं।''

''चाची! यह बात मुझको माँ ने बताई थी। इससे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं। वैसे मैंने भी निश्चय नहीं किया कि यह विवाह होगा ही। देखें क्या होता है?''

''लड़की अच्छी है, समझदार है। एक बात और। उसने हिन्दुस्तान के विषय में कुछ पढ़ा भी है।''

''ये सब बातें गौण हैं। मुख्य बात है आत्मा की स्वतन्त्रता को स्वीकार करना। जिसकी अपनी आत्मा इस संसार की बातों से मुक्त है वह दूसरों की आत्मा को भी स्वतन्त्रता दे सकता है और फिर वह उस जेल के कैदी की भाँति ही होता है, जिसका मोह जेल से न हो जाये। जो बन्दी–बन्दीगृह से ही मोह करने लगता है, उसके मन में बन्दी–गृह की सुविधाओं को प्राप्त करने के लिए ऐसे कार्य करने की अभिलाषा बनी रहती है जिनसे वह इसमें आता रहता है। यह तो दासता है। स्वतन्त्रता नहीं।''

''हाँ,'' शिवराम ने कह दिया, ''यही तो बात है जिससे आत्मा की अवस्था का ज्ञान होता है। उन्नत आत्माएँ कभी जेल में चली भी जाएँ तो वे जेल के नियमोपनियम पालन करते हुए भी सदा जेल से मुक्त होने की बात सोचती रहती हैं।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह लक्ष्मी से अच्छी प्रतीत हो रही है। मुझको यह प्रतीत हुआ था कि एक समय लक्ष्मी मेरी आत्मा का अंग रही है। यह बात तो ठीक है, परन्तु वह अब इस संसार से मोह करने लगी है और मैं समझ रहा हूँ कि मेरा वह अंग मुझमें मिलने को अभी तैयार नहीं।"

"तो क्या उसके स्थान पर कोई दूसरा आ सकता है?"

"यह मैं नहीं जानता। मैं इस रहस्य को जानने का यत्न करता रहता हूँ कि वे तो अन्न के दो दलों की भाँति पृथक्–पृथक् हुए थे, क्या वे एक ही थे अथवा एक में भी दो थे। अभी मैं इस रहस्य को समझ नहीं सका।"

एक–दो दिन में इड्डा की चर्चा ठंडी पड़ गई। लैला और उसके बच्चे एक मास का दक्षिण का भ्रमण कर लाहौर लौटे तो पुनः इड्डा का विषय सबके सामने उपस्थित हो गया। जगन्नाथ को नीडोज होटल से फोन आया, "मैं इड्डा बोल रही हूँ?"

"मैं जगन्नाथ हूँ। आप लोग कब आये हैं?"

"अभी–अभी यहाँ पहुँचे हैं। अभी सरस्वती सिस्टर से मिलने नही गये। जोन भैया स्टेशन पर ही थे। वह कह रहे थे कि सरस्वती लंच के समय यहाँ आयेगी।"

"तुम्हारी मम्मी कैसी हैं?"

"वह तो अब 'होम सिक' (घर जाने के लिए उदास) प्रतीत होती हैं।"

"और इड्डा होम–सिक नहीं है?" जगन्नाथ ने पूछ लिया।

"मेरा तो घर यहाँ ही है। मैं अपने घर में ही हूँ। आप लंच के समय यहाँ आ सकते हैं क्या?"

"चाचा जी से पूछना पड़ेगा।"

"वे कहाँ हैं!"

"छापाखाना में।"

"वहाँ फोन नहीं है क्या?"

"है, नम्बर है तीन–चार–छः।"

"तो मैं उनको कहती हूँ कि वे आपको छुट्टी दे दें। मम्मी बम्बई से जहाज में सीट रिजर्व कराने का यत्न कर रही हैं। किसी भी दिन मम्मी यहाँ से चल सकती हैं। मैं यहाँ ही रहना चाहती हूँ। कैसे और कहाँ, यह सब मैं मम्मी के जाने से पूर्व निश्चय करना चाहती हूँ।"

"तो तुम चाचा जी को फोन कर लो।"

आधे घण्टे उपरांत शिवराम का फोन जगन्नाथ को आया। मास्टर जी ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा, "जगन्नाथ! इड्डा चाहती है कि तुम आज लंच उसकी मम्मी तथा उसके साथ लो। उसने राधा को भी बुलाया है। इस कारण तुम ठीक साढ़े–बारह बजे फिरोजपुर रोड पर पहुँच जाना। राधा तुम्हारे साथ जाने के लिए तैयार होगी। उसको लेकर तुम रूम नं. 45 में चले जाना। आज तुम्हारे विवाह के विषय में बातचीत होगी।"

"चाचा जी! आप क्या कहते हैं?"

"मैंने राधा को समझा दिया है। तुम उससे राय कर लेना।"

: 10 :

ताँगे में होटल जाते हुए जगन्नाथ ने राधा से पूछ लिया, "चाची! मुझको कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि इड्डा विवाह के विषय में बात करना चाहती है।"

"हाँ, तुम्हारे चाचा जी यही कह रहे थे। उनसे इड्डा और उसकी माँ की फोन पर लम्बी बातचीत हुई है। इड्डा की माँ का कहना है कि यद्यपि इड्डा अब सज्ञान है और वह अपने विवाह के विषय में स्वतन्त्र है, इस पर भी तो उसने उसको राय दी है कि यदि तो उसके जाने से पूर्व उसका विवाह हो जाता है तब तो ठीक है अन्यथा वह उसको यहाँ रहने की सम्मति नहीं दे सकती। तुम्हारे चाचा ने लैला को कहा है कि मैं और तुम वहाँ आ रहे हैं और वह हमसे निश्चय कर ले। उन्होंने यह भी कह दिया है कि तुम हमारे स्नेहपात्र अवश्य हो, परन्तु हमारे अधीन नहीं हो। हम तुम्हें केवल सम्मति देने का अधिकार रखते हैं।"

"पर चाची!" जगन्नाथ ने गम्भीर होकर कहा, "इस जीवन की सब बातों में तो मैं अपने को अधीन ही मानता हूँ।"

यह विवाह की बात हमारे जीवन से भी दूर तक जाने वाली है। सब अवस्थाओं में पति–पत्नी का सम्बन्ध इस जीवन में ही समाप्त हो जाता है, यह हमारा विचार नहीं है। कभी–कभी तो यह इस भूमण्डल में ही जन्म–जन्मान्तर तक चलता है। तुमने ही एक बात बताई थी कि यह परलोक में भी चलता है। अब बताओ कि हम इस विषय में क्या राय दे सकते हैं?"

"चाची! प्रत्येक व्यक्ति उस दृष्टि से ही बात करता है जिसे वह रखता है। हम लोग तो जो कुछ इस संसार में देखते हैं, उसी के अनुसार अपने व्यवहार का निर्णय करते हैं। इसी कारण अभी तो उस दृष्टि से ही मैं आपकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राय पूछ रहा हूँ।"

"तो मेरी सम्मति है कि इड्डा किसी प्रकार भी बुरी लड़की नहीं है। भविष्य के विषय में कौन बता सकता है। हमारी दृष्टि तो उसके शरीर, उसकी बुद्धि और अधिक–से–अधिक उसमें मानसिक विकास तक ही जाती है। इनमें भी हम अपने ज्ञान से ही निर्णय दे सकते हैं। इस कारण मेरा और तुम्हारे चाचा जी का कहना है कि यदि विवाह करना है और इड्डा से करना है तो उसकी मम्मी के सामने ही हो जाना चाहिए।"

वे होटल में पहुँचे तो वहाँ सरस्वती पहले ही पहुँची हुई थी। इड्डा बहुत प्रसन्न प्रतीत होती थी। इसके वहाँ पहुँचते ही भोजन के लिए वे डाइनिंग हॉल में चले गये। वहाँ बैठते हुए लैला ने अपने मन की बात बता दी। उसने कहा, "मेरा अभिप्राय यह है कि यदि विवाह होना है तो हो जाये। बहुत–सी बातें हैं जो विवाह के उपरांत स्वयमेव ठीक हो जाती हैं। इस संसार में कोई भी दो व्यक्ति सर्वथा समान नहीं हो सकते। मतभेद और व्यवहार–भेद सदा बना रहता है। जहाँ जीवन की दो बातें समान हो जाएँ, वहाँ सम्बन्ध बन जाने में हानि नहीं। एक बात है निबाहने की भावना। विपरीत प्रकृति और विचार वालों से 'एकॉमोडेशन' (समजन) की योग्यता। दूसरी बात है परस्पर निर्भरता और स्वतन्त्रता में सीमा को पहचानना। यदि ये दोनों इन दो बातों को समझ कर चलेंगे तो मैं समझती हूँ कि विवाह में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। मैंने यह सब कुछ इड्डा को समझाया है और वह कहती है कि वह इन दोनों क्षेत्रों में अपना संतुलित व्यवहार रखने का यत्न करेगी।"

"जब यह है तो विवाह हो जाना चाहिए।"

जगन्नाथ ने इसमें अपनी सम्मति दे दी, "जहाँ तक मेरा ज्ञान है, मैं उसमें इड्डा से विवाह में आपत्ति नहीं देखता। इस पर भी मैंने चाचा और चाची को पूर्ण अधिकार दे रखा है। जैसा वे कहेंगे, वैसा ही होगा।"

विवाह हो गया। अगले ही दिन। आर्य–समाज मन्दिर में। आर्यसमाजी संस्कार विधि के विधानानुसार। लैला के जाने के पूर्व इड्डा फिरोजपुर वाली कोठी के एक कमरे में जा पहुँची।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय परिच्छेद

सुदर्शनलाल और लक्ष्मी का विवाह हुए तीन वर्ष हो चुके थे। एक लड़का एक वर्ष का था और लक्ष्मी पुनः गर्भवती थी। प्रथम प्रसव के पश्चात् तक तो सम्बन्ध सर्वथा प्रेमपूर्ण चलते रहे। प्रथम विषमता उत्पन्न हुई लड़के के नामकरण संस्कार के अवसर पर। इस समय तक जगन्नाथ का विवाह हो चुका था। लक्ष्मी के लड़के के नामकरण संस्कार पर आने का निमन्त्रण जगन्नाथ और श्रीमती जगन्नाथ को भी था।

जगन्नाथ ने इड्डा से चलने के विषय में पूछा तो उसने कह दिया, "मैं तो उनको जानती नहीं। न ही लक्ष्मी को, न ही उसके पति को। यदि आप कहेंगे तो चलूँगी।"

"मैं समझता हूँ कि चलना चाहिए।"

आप किसलिए कहते हैं?"

"यह लड़की बचपन से मेरे साथ विवाह की इच्छा करती थी। हम दोनों अपने समय की प्रतीक्षा कर रहे थे और जब यह सज्ञान हुई तो किसी अज्ञात आकर्षण के कारण यह इस पुरुष के साथ जा बँधी। तब से मेरा इससे मेलजोल बहुत कम हो गया था। हमारे विवाह के समय यह प्रसव के बहुत समीप थी। इस कारण यह आई नहीं। इसके पति भी नहीं आये। इसके माता–पिता तो आये थे।

"अब निमन्त्रण आया है तो मैं समझता हूँ कि हमें चलना चाहिए। कम–से–कम उसके पति को मैं यह बताना चाहता हूँ कि विवाह कोई ऐसी बात नहीं, जिससे मनुष्य की मानवता में अन्तर पड़ जाता है। मैं लक्ष्मी के लिए वही आदर और सत्कार रखता हूँ, जो तब रखता था, जब वह मेरी पत्नी बनने वाली थी।"

निश्चित दिन दोनों शाही मुहल्ले में सुदर्शनलाल म्यूनिसिपल कमिश्नर के घर जा पहुँचे। शिवराम और राधा भी आमन्त्रित थे। सुदर्शनलाल लक्ष्मी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के समीप बैठा संस्कार में भाग ले रहा था। उसने बैठे–बैठे ही इस अंग्रेजी औरत को साड़ी और जम्पर में जगन्नाथ के साथ आते देखा तो चकित रह गया। उसको वह लक्ष्मी से कई गुणा अधिक सुन्दर प्रतीत हुई।

सुदर्शनलाल जगन्नाथ को पहचानता तो था। वह उसके विवाह के समय लक्ष्मी को भेंट देने आया था। पीछे लक्ष्मी से वह सुन चुका था कि वह भी 'न्यू बुक एजेन्सी' में काम करता था और कभी उससे विवाह की इच्छा करता था। सुदर्शनलाल ने जगन्नाथ को मन से निकाल रखा था। उसकी याद तब आई थी जब उसके विवाह का निमन्त्रण आया था। उस समय भी लक्ष्मी ने साधारण रूप में ही बताया था कि यह लड़का 'न्यू बुक एजेन्सी' में काम करने वाला साथी है।

"परन्तु यह क्या लिखा है? लड़की जिससे विवाह हो रहा है, इड्डा स्टिलवैल है?" सुदर्शनलाल ने पूछा था–

"तो इसमें वैचित्र्य क्या है।"

"किताबों की दुकान के एक सैल्जमैन का एक अंग्रेज लड़की से विवाह और फिर आर्य–समाज में?"

"कोई होगी?"

"तुम तो जा नहीं सकोगी?"

"आप जाईये।" लक्ष्मी ने कहा।

परन्तु सुदर्शनलाल गया नहीं।

उस दिन के अनन्तर लड़के के नामकरण–संस्कार के निमंत्रण–पत्र भेजते समय, जब लक्ष्मी ने जगन्नाथ और मिसेज जगन्नाथ का नाम आमन्त्रित करने वालों की सूची में लिखा तो सुदर्शन को विस्मय हुआ। सुदर्शनलाल ने कहा था, "यह छोकरा कभी तुमसे मिलने तो आया नहीं। फिर इसको बुलाने की क्या आवश्यकता है।"

"हम भी तो कभी उससे मिलने गये नहीं।"

"हममें और उसमें अन्तर नहीं है क्या?"

"क्या अन्तर है?" लक्ष्मी ने विस्मय में पूछा था।

"मैं म्यूनिसिपल कमिश्नर हूँ। एक धनी बाप का योग्य पुत्र हूँ। जनता में मेरा मान है। इस बार तो मैं बिना कांग्रेस की सहायता के ही चुनाव जीत गया हूँ। आगामी चुनावों में मैं केन्द्रीय विधान सभा के लिए खड़ा होने का विचार कर रहा हूँ और यह एक दुकान का सेल्जमैन। जिसकी माँ ने दूसरा विवाह कर लिया है और वह भी धर्म–परिवर्तन करके। भला मेरी उससे क्या तुलना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो सकती है?''

''अब मतदाता सूची तो बढ़ाई जा रही है न?'' लक्ष्मी ने कह दिया था, ''क्या जाने आगामी निर्वाचन तक सब वयस्क मतदाता हो जाएँ। तब तो आपको सब की आवश्यकता पड़ेगी। दो बाप के बेटे की भी और एक बाप के बेटे की भी। सम्बन्ध तो कुंजर–कबाड़ियों से भी बनाना पड़ेगा। यह तो फिर ब्राह्मण का लड़का है।''

सुदर्शनलाल चुप कर गया था। परन्तु जब उसने जगन्नाथ और उसकी पत्नी को देखा तो दो विचार उसके मन में पैदा हुए। एक तो यह कि एक सुन्दर विदेशीय लड़कीं ने जगन्नाथ को वरा है। इससे जगन्नाथ में कुछ तो विशेषता होनी ही चाहिए। भूषण तथा वस्त्रों से भी, सुदर्शनलाल को समझ आया कि जगन्नाथ अकिंचन नहीं हो सकता। साथ ही जगन्नाथ स्वयं भी एक गौरवर्णीय सुन्दर और तेजस्वी युवक था।

जगन्नाथ एक ओर कोने में बैठ गया। इतने में लक्ष्मी के माता–पिता तथा भाई–बन्धु आये तो वे जगन्नाथ से तथा उसकी पत्नी से बातचीत करने लगे। जगन्नाथ की पत्नी हिन्दुस्तानी में सब के प्रश्नों का उत्तर देती दिखाई दी तो सुदर्शनलाल के मन में उससे परिचय प्राप्त करने की लालसा जाग पड़ी।

संस्कार समाप्त हुआ। बच्चे का, नाम जगमोहन रखा गया। अब बच्चे को सगे–सम्बन्धियों ने भेंट दी। प्रायः लोग खिलौना लाये थे। बच्चे की नानी ने एक चाँदी का छोटा–सा छनकना दिया था। साथ ही बच्चे, बच्चे की माँ तथा बच्चे के पिता के कपड़े तथा पाँच सौ एक रुपया नकद दिया। जब सब दे चुके तो इड्डा उठी और एक सोने की चैन बच्चे के गले में डालने लगी।

लक्ष्मी ने कहा, ''इज इट नोट मच मोर दैन ही डिजर्व्ज!''

''नहीं बहिन!'' इड्डा ने हिन्दुस्तानी में उत्तर दिया, ''यह तो प्राणी अमूल्य है। बहुत प्यारा है।''

इस पर सुदर्शनलाल ने कह दिया, ''यह तो आप हमको दे रहे हैं न?''

''जी नहीं।'' इड्डा का सतर्क उत्तर था, ''यह आपके लिए नहीं।''

''तो आप इसको अपना ऋणी बना रही हैं?''

''जी नहीं, इसे नया रिश्ता स्थापित करना कह सकते हैं।''

बस इतनी ही बात हुई परन्तु सुदर्शनलाल को यह लड़की विशेष प्रतिभायुक्त प्रतीत हुई। उसने उत्तर बहुत सतर्कता से दिये थे।

संस्कार के उपरान्त सब जाने लगे तो लक्ष्मी ने इड्डा को भोजन करके जाने के लिए कहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पहले आप हमारे घर आएँगी, तब हम यहाँ भोजन कर सकते हैं।" इड्डा का सतर्क उत्तर था।

"तो आप निमन्त्रण दीजिये। देखिय, हम आते हैं या नहीं।"

निमन्त्रण का अवसर बनाया गया। घर जाकर इड्डा ने पूछ लिया, "आपका जन्म–दिन कब पड़ता है?"

"मुझको ठीक ज्ञान नहीं। माँ कहती हैं कि जनवरी–फरवरी में कभी है।"

"तो आप इन दिनों में कोई दिन निश्चय कर लें और उसको मनाना आरम्भ कर दें।"

167975

"इससे क्या होगा?"

"आप कहते हैं न कि यह दुनिया बन्दी–गृह है। तो इस बन्दी–गृह में जीवन की घड़ियाँ सुखमय व्यतीत होती अनुभव होंगी।"

"हाँ, यह तो है। मुझे वर्तमान जीवन में आये बाईस वर्ष होने जा रहे हैं। इस प्रकार प्रत्येक बारह महीने के उपरान्त स्मरण होता रहेगा कि मेरी कैद की अवधि कम हो रही है।"

"तो बताइये, आप कब अपना जन्म–दिन मनाया करेंगे?"

"मैं समझता हूँ कि हम दोनों का जन्म–दिन एक ही दिन मना लिया जाये तो क्या हानि है?"

"वण्डरफुल आईडिया स्वीकार है। मेरा जन्म–दिन बीस सितम्बर को पड़ता है। आज से दस दिन उपरान्त, तो मैं निमन्त्रण–पत्र छपवा दूँ?"

"हाँ।"

इन दिनों जगन्नाथ एक भाड़े की कोठी में रहता था। यह शिवराम की कोठी से आधे फर्लांग के अन्तर पर थी। भाड़ा एक सौ रुपया मासिक, बिजली, पानी और अन्य खर्च पृथक् थे। इसी कोठी में जगन्नाथ और श्रीमती जगन्नाथ ने अपने जन्मदिन मनाने का निश्चय कर लिया। निमन्त्रण–पत्र छपे और सब को भेजे गये। इड्डा ने सुदर्शनलाल, श्रीमती सुदर्शनलाल और मास्टर जगमोहन को भी निमन्त्रण भेज दिये।

इस समय लक्ष्मी पुनः गर्भवती थी, इड्डा के निमन्त्रण पर विचार हुआ कि वह जाये अथवा ना। लक्ष्मी का कहना था कि मुझे जाने में लज्जा लगती है।

"लज्जा किस बात की?" सुदर्शनलाल ने पूछा।

"दूसरा बच्चा भी होने वाला है।"

"तो क्या यह लज्जा की बात है?"

"बच्चे रखना लज्जा की बात नहीं। मैं तो पेट में रखने की बात कह रही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हूँ। इस अवस्था में परिचितों में लज्जा लगेगी।''

''तो यह तुमने कोई अनहोनी बात की है? दूसरों की माताएँ क्या पेट में निर्माण न कर हवा में उड़ता हुआ पकड़ लेती हैं।''

इस पर तो लक्ष्मी हँस पड़ी। एक बात उसके मन में खटकी। यह अपने पति का इड्डा के निमन्त्रण स्वीकार करने का आग्रह था। एक समय था कि वह जगन्नाथ को निमन्त्रण देते समय अनिच्छा प्रगट कर रहा था। उस समय वह अपनी और जगन्नाथ की स्थिति में अन्तर का उल्लेख करने लगा था। अब वह उसको प्रेरणा देने लगा है कि इड्डा का निमन्त्रण स्वीकार करना चाहिए और वहाँ चलना चाहिए।

इस पर उसने पति के मन की अवस्था को जानने के लिए पूछ लिया, ''तो आप भी चलेंगे?''

''निमन्त्रण तो मुझको भी है।''

''तो मैं भी चलूँगी।''

इस प्रकार लक्ष्मी इस विचार से कि उसको अपने पति के साथ चलना चाहिए, जाने के लिए तैयार हो गई।

लगभग बीस व्यक्ति ही आमन्त्रित थे। जोन, सरस्वती और उसके बच्चे थे। शिवराम और राधा तथा उनके बच्चे थे, दुकान और छापाखाना के कुछ कर्मचारी थे तथा उनकी पत्नियाँ थीं।

सुदर्शन को कुछ ऐसा समझ आया कि यह तो घर के प्राणियों का ही एकत्रित–मात्र है। बाहर का कोई व्यक्ति नहीं बुलाया गया। नगर का, सार्वजनिक ख्याति का कोई व्यक्ति नहीं था। ये भी परिचितों में बहुत समीप के प्राणी ही थे। इससे सुदर्शनलाल यह विचार करने लगा कि उसको इस अन्तरंग सम्बन्धों में किसलिए बुलाया गया है। उसके मन में एक अज्ञात धुंधला–सा संदेह अंकुरित होने लगा। इस सन्देह की एक छाया–सी जगमोहन के नामकरण के समय भी थी, परन्तु तब यह अस्पष्ट थी। अब यह रूप स्वीकार करती प्रतीत हो रही थी। वह अब समझने लगा कि लक्ष्मी और जगन्नाथ में साधारण से अधिक घनिष्ठ सम्बन्ध रहा होगा।

इसके विपरीत लक्ष्मी समझने लगी थी कि उसका पति इड्डा की गोरी खाल पर मुग्ध हो वहाँ आया है। वह समझती थी कि यह उसका कर्त्तव्य है कि वह इनमें किसी प्रकार का सम्पर्क उत्पन्न न होने दे। इससे वह सतर्क थी। उसको यूरोपियन लड़कियों की भाँति इड्डा के फ्लर्ट होने की आशंका थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुदर्शनलाल और लक्ष्मी आए तो जगन्नाथ ने उठकर उनका स्वागत किया। उसने सुदर्शनलाल से हाथ मिलाया। फिर लक्ष्मी को हाथ जोड़, नमस्कार कर कह दिया, ''मुझको भय था कि आप लोग यहाँ आना स्वीकार नहीं करेंगे।''

''यह भय क्यों था?'' लक्ष्मी ने पूछा।

''एक बड़े व्यक्ति की पत्नी अपने बचपन के साथियों को स्मरण रख सकती है क्या? यह भय था।''

''तो अब भय निर्मूल हो गया है न?''

सुदर्शनलाल दोनों को नोक–झोंक करते देख अपने संदेह का समर्थन पा रहा था।

जगन्नाथ ने लक्ष्मी के आश्वासन का उत्तर दिया, ''हाँ, यदि सत्य हृदय से कहती हो तो।''

''तो मैं असत्य हृदय से भी कभी कहती समझ आई हूँ!''

लक्ष्मी ने कह तो दिया, परन्तु उसको अपने जगन्नाथ से विवाह करने के हठ की बात स्मरण कर, अपने ही कथन के थोथापन का ज्ञान हो गया और उसे लज्जा लग गई। उसके गालों पर लाली दौड़ गई। उसने उक्त, कथन कहा और जगन्नाथ के इस कथन का प्रतिवाद करने से पूर्व ही इड्डा के पास जाना उचित समझा। सुदर्शनलाल जगन्नाथ के पास खड़ा रह गया। लक्ष्मी इड्डा के पास चली गई। वह लक्ष्मी की माँ भोली से बातें कर रही थी।

सुदर्शनलाल को लक्ष्मी के इस प्रकार भाग जाने से अपने संदेह पर विश्वास–सा हो गया। इसके किसी प्रकार के प्रमाण के हेतु उसने जगन्नाथ से घनिष्ठता उत्पन्न करनी उचित समझी। वह जगन्नाथ से कहने लगा, ''मैं आपकी 'परसनेलिटी' (व्यक्तित्व) से बहुत ही प्रभावित हुआ हूँ और आपसे परिचय प्राप्त कर अपना अहोभाग्य मानता हूँ।''

''आप ऐसा कहते हैं तो मैं आपका कृतज्ञ हूँ। वास्तव में आप जैसे व्यस्त और कामकाजी आदमी के अपने अमूल्य समय में से इतना समय निकाल कर यहाँ आना हम पर भारी कृपा ही है।''

''आइये! मैं आपको अपने लोगों से परिचय करा दूँ।''

वह सुदर्शनलाल को लेकर शिवराम के पास चला गया। उसने उनका परिचय देते हुए कहा, ''न्यू बुक एजेन्सी तथा न्यू प्रेस के मालिक मास्टर शिवराम दीक्षित जी। मेरे तो ये सर्वेसर्वा हैं। मैं जो कुछ भी हूँ, इनकी देन ही हूँ और यह साथ में हैं इनकी धर्मपत्नी चाची राधा; मेरी दूसरी माँ। ये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी पहली माँ हैं। इन्होंने मुझको यह शरीर प्रदान किया है। यह व्यक्तित्व जिसका आप उल्लेख कर रहे हैं इनका दिया हुआ ही है। इधर ये हैं मेरे पीछे बने पिता। मेरा अर्थ है मेरी माता के दूसरे पति। इनका नाम है श्री चार्ली जोन। आजकल नार्दन रेलवे में चीफ सुपरिण्टेण्डेण्ट हैं और यह जिनके जन्म–दिन पर आप बधाई देने आये हैं, श्रीमती इड्डा देवी। मेरी धर्म–पत्नी।''

सुदर्शनलाल ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, ''निमन्त्रण–पत्र में तो पति–पत्नी दोनों के जन्म–दिन के समारोह की बात लिखी थी।''

''जी! हम गरीब आदमी हैं इस कारण दो–दो समारोहों के स्थान एक ही करने के लिए मैंने भी अपने जन्म–दिन का समारोह इसी समय कर लिया। वैसे तो मैं अपना जन्म–दिन जानता भी नहीं हूँ।''

''ओह! तो इड्डा देवी जानती हैं क्या?''

''वे कहती हैं कि यह उनकी माँ ने इन्हें बताया है।''

''और आपकी माँ ने नहीं बताया?''

''मेरे जन्म–दिन के समय वह अचेत थीं। पीछे वे रुग्ण रहीं। इस कारण वे ठीक दिन भूल चुकी हैं।''

''मैं आपसे सहानुभूति रखता हूँ। जन्म–दिन का ज्ञात न होना तो एक भारी दुःख की बात है।''

''जी! यह दुःख चिरकाल तक नहीं रह सकता। इस शरीर के समाप्त होने पर तो यह दुःख रहेगा ही नहीं।''

''तब फिर क्या रह जायेगा?''

''मेरे शरीर के समाप्त होने पर मैं तो रहूँगा ही।''

''तो आप शरीर से कुछ पृथक् वस्तु हैं?''

हाँ, मैं और मेरा शरीर दो पदार्थ हैं ही। अन्यथा भाषा में ''मेरा शरीर, शब्द होता ही नहीं।''

''यह कोई युक्ति है क्या?''

जगन्नाथ हँस पड़ा। हँसकर उसने कहा, ''ठीक है। यह युक्ति नहीं। यह वस्तुस्थिति का वर्णन है। युक्ति तो दूसरी है। परन्तु वस्तुस्थिति का वर्णन अयुक्ति–संगत नही है।''

सुदर्शनलाल समझ रहा था कि जगन्नाथ केवल किताबें बेचने वाला ही नहीं, अपितु उससे कुछ अधिक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: 2 :

सुदर्शनलाल बातें तो जगन्नाथ से कर रहा था, परन्तु उसका ध्यान लक्ष्मी और इड्डा की ओर था। लक्ष्मी इड्डा से सम्बन्ध घनिष्ठ करने के लिए उससे घुल–मिलकर बातें कर रही थी। सुदर्शनलाल उस वार्त्तालाप में लक्ष्मी के मुख पर बदलते रंग देख रहा था। यद्यपि वह उसकी बातों को सुन नहीं रहा था और ना ही उनके वार्त्तालाप के विषय को जानता था, इस पर भी लज्जा से लाल हुए मुख पर अब तेज–हीनता और पीलापन देख वह समझ रहा था कि अवश्य जगन्नाथ की श्रेष्ठता का उल्लेख हुआ है और लक्ष्मी को जगन्नाथ से विवाह न कर सकने का शोक लगने लगा है।

दूर इड्डा से बातें करती हुई लक्ष्मी भी अपने पति की चंचल आँखों को बार–बार उधर आते देख रही थी, जिधर इड्डा और वह बैठी थीं। उसके मन में सन्देह हो रहा था कि उसके पति के मन में विकार आ गया है। यद्यपि अभी तक कोई प्रमाण नहीं मिला था, जिससे वह अपने पति पर किसी प्रकार का लाँछन लगा सके, तथापि मन में दृढ़ हो रहे संशय को दबाकर रखने में वह असमर्थता अनुभव कर रही थी। चित्त से बात निकालने के लिए वह अपनी माँ के पास जा बैठी। जगन्नाथ की माँ भोली से जगन्नाथ की उन्नति का उल्लेख कर रही थी। लक्ष्मी उसकी बातों को सुनने बैठ गई।

सरस्वती बता रही थी कि कैसे इड्डा जगन्नाथ को देखते ही उस पर मुग्ध हो गई और अपनी माँ से लड़कर भी यहाँ जगन्नाथ के पास रह जाने के लिए हठ करने लगी।

"तो लंदन में इसका पिता क्या करता है?" लक्ष्मी ने पूछ लिया।

"लंदन की एक फैशनेबल रोड वौड स्ट्रीट पर सौदागर है। सुना है कई मिलियन पौंड की सम्पत्ति है।"

"तो इतने धनी बाप की लड़की को इस पिता विहीन जगन्नाथ में क्या दिखाई दिया?" लक्ष्मी ने पूछ लिया।

सरस्वती चुप रह गई। वह मन्त्र–मुग्ध जगन्नाथ की ओर देखने लगी। वास्तव में वह जगन्नाथ के मुख पर, लक्ष्मी के प्रश्न का उत्तर खोज रही थी। उसके समीप राधा बैठी थी। उसके मन में लक्ष्मी का दर्शनलाल से विवाह एक फूहड़पन ही था। इससे वह बोल उठी, "लक्ष्मी! यह तो देखने वाला ही बता सकता है कि उसने जगन्नाथ में क्या देखा है। यद्यपि इड्डा की माँ एक अंग्रेज औरत की भाँति हिन्दुस्तानियों को निम्न–स्तर का प्राणी मानती थी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर भी वह जगन्नाथ में कोई दोष नहीं देख सकी। उसने दस हजार पौंड का दहेज तो अपनी लड़की को तब ही दिया था। पिछले वर्ष मिस्टर स्टिलवैल हिन्दुस्तान आया था और लड़की से मिलकर दस हजार पौंड का एक चौक उसको दे गया है। वह भी जगन्नाथ से प्रसन्न था।

इस व्याख्या से तो लक्ष्मी की आँखें तरल हो उठीं। वह उठी और अपने पति के पास जा पहुँची। सुदर्शनलाल इस समय इड्डा से हँस–हँस कर बातें कर रहा था। इससे लक्ष्मी के कलेजे में छुरियाँ चल रही थीं। सुदर्शनलाल कह रहा था, ''आपके एक हिन्दुस्तानी को अपना जीवन–साथी बनाने से हम सब हिन्दुस्तानी अपने–आपको गौरवान्वित अनुभव करते हैं।''

इड्डा का उत्तर था, ''वह एक हिन्दुस्तानी नहीं है। मेरा कहने का अभिप्राय यह कि वह तो कोई देवता है, जो देश, जातियों और रंग–रूपों से ऊपर होता है।''

''आप देवताओं के विषय में क्यों जानती हैं?''

''उन्होंने मुझे बताया है। जो विशेष गुणों से सम्पन्न हो, वह देवता होता है। इनकी आत्मा विशेष गुणों से युक्त होने से देवता ही है। मैं इसका नित्य अनुभव करती हूँ। वे अंग्रेज, फ्रॉंसिसी, जर्मन हिन्दुस्ताती अथवा हिन्दू–मुसलमान, ईसाई इत्यादि की सीमाओं को पार कर चुके हैं।''

सुदर्शनलाल चकित हो इड्डा का मुख देखने लगा। इस प्रकार देखने ने तो लक्ष्मी के मन में रही–सही बात स्पष्ट कर दी। वह वार्तालाप के बीच में ही बोल उठी, ''हमें अब इन्हें बधाई देकर चलना चाहिए।''

''अभी? ये तो भोजन से पहले जाने नहीं देंगे।''

''परन्तु मेरी तबियत खराब हो रही है।''

इड्डा को ज्ञात था कि लक्ष्मी सातवें मास में जा रही है। इस कारण उसने कह दिया, ''लक्ष्मी बहिन, तुम हमारे कमरे में चलकर लेट सकती हो। यदि कोई कष्ट हो तो डॉक्टर को बुला दूँ।''

''नहीं,'' उसने अपने पति के कन्धे का आश्रय ले उठते हुए कहा, ''चलिए।''

सुदर्शनलाल ने इड्डा से क्षमा माँगी और अपनी पत्नी को आश्रय दे बाहर चला गया। वे दोनों अपनी मोटर में आये थे।

मोटर में बैठते हुए सुदर्शनलाल ने पूछ लिया, ''क्या बात है लक्ष्मी?''

''मेरे सीने में आग लग रही है।''

''तो पहले डाक्टर के यहाँ चलें?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं, पहले घर चलिये। वहाँ से फोन कर दूँगी?"

सुदर्शनलाल समझ न सका कि यह मानसिक कष्ट है अथवा शारीरिक। इस पर भी इस समय इस बात की व्याख्या करना ठीक न समझ वह चुप कर रहा।

घर जाकर लक्ष्मी अपने बिस्तर में घुस गई। सुदर्शन ने पूछा, "डाक्टर को टेलिफोन कर दूं?"

"नहीं, मैं ठीक हो रही हूँ।"

सुदर्शनलाल मुस्कराया और बाहर बैठक में चला आया। वहाँ उसका साथी, एक अन्य म्यूनिसिपल कमिश्नर खलीफा शुजाउद्दीन बैठा था। "आइये खलीफा साहब! कैसे आना हुआ है?" सुदर्शनलाल ने उससे हाथ मिला बैठते हुए पूछ लिया।

खलीफा साहब ने अपने आने का मतलब बताने से पहले पूछ लिया, "मुझको यहाँ आये एक घण्टा होने जा रहा है। कहाँ गये थे सुदर्शन भाई?"

"मैं फिरोजपुर रोड पर एक परिचित के जन्म–दिन समारोह में गया था। मिसेज भी साथ थीं। उनकी तबियत खराब हो गई तो वक्त से पहले ही लौट आया हूँ।"

"मैं इस मतलब के लिए आया हूँ कि निजामुद्दीन ठेकेदार के बिल पर बहस के लिए पाँधा जी का प्रस्ताव आया है।"

"क्या प्रस्ताव आया है?"

"पचास हजार के बिल में वह बीस हजार का बिल जाली बताता है और कहता है कि सब–कमेटी को रिश्वत देकर बिल पास किया गया है।"

"तो फिर?"

"फिर यह कि सब–कमेटी में एक मैं हूँ, दूसरे आप और तीसरे सेक्रेटरी साहब हैं।"

"देखो खलीफा साहब! इसमें से कितना आपको मिला है?"

खलीफा ने मुस्कराते हुए कहा, "यों तो सात हजार मुझको, सात हजार आपको और पाँच हजार सेक्रेटरी को मिला है। जाली रकम बीस हजार नहीं, पच्चीस हजार है। शेष छः हजार निजामुद्दीन का हिस्सा है। इसमें से दो हजार तो छोटे 'स्टाफ' को देना पड़ा है। उसके पास तो केवल चार हजार ही बचा है।"

"कुछ बचा ही तो है। कुछ हानि तो नहीं हुई?"

"यह तो ठीक है। शिकायत निजामुद्दीन नहीं कर रहा, यह तो पाँधा कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा है।''

''पाँधा को मैं ठीक कर दूँगा। बताओ, उसकी तली गरम करने के लिए तुम क्या देते हो?''

''सुदर्शन, हम बराबर–बराबर के पत्तीदार हैं। जो तुम दोगे, वह मैं भी दे दूँगा।''

''तो एक हजार सायंकाल तक यहाँ पहुँच जाये। मैं यत्न करूँगा कि प्रस्ताव के दिन वह बम्बई की चौपाटी पर सैर कर रहा हो और यहाँ प्रस्ताव उपस्थित करने वाला न होने से प्रस्ताव उपस्थित ही न हो सके।''

''भाई, तुम गुरु हो। इस काफिर का बन्दोबस्त कर दो। रुपया पहुँच जायेगा।'

''कब तक?''

''सायंकाल पाँच बजे तक।''

सुदर्शनलाल ने उसी समय पाँधा को फोन कर दिया। पाँधा बोला तो सुदर्शनलाल ने अपना नाम बता कर कहा, ''पाँधा जी! आप से एक अत्यावश्यक काम है।''

''क्या?'' फोन पर पाँधा ने पूछा।

''फोन पर नहीं बता सकता। बताइये, आप किस समय आ सकते हैं?''

''देखो सुदर्शन! क्या लाभ होगा इससे? अब तो कमेटी नियुक्त होगी ही। हम मुसलमान सदस्यों से राय कर रहे हैं।''

''उनकी बात छोड़िये पाँधा जी! मैं तो आपका बच्चा हूँ। जरा आकर मेरी बात सुन लीजिये। एक अत्यन्त लाभ की बात करूँगा।''

''तो किस समय मिलने आऊँ?''

''देखिये। ठीक पाँच बजे सायंकाल मेरी मोटर शाहाल्मी दरवाज़े के बाहर खड़ी आपकी प्रतीक्षा करती होगी। सराजदीन साहब भी उसी गाड़ी में आ रहे हैं। आप ठीक समय पर आ जाइये और यहाँ गरम–गरम चाय तैयार रहेगी।''

बात तय हो गई। इस पर खलीफा जी ने सराजदीन साहब को फोन कर दिया। वे इस समय प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के प्रधान थे। सराजदीन साहब ने पूछा, ''क्या बात है खलीफा साहब?''

''मैं सुदर्शनलाल के मकान से बोल रहा हूँ।''

''आप वहाँ क्या कर रहे हैं?''

''उनके यहाँ हलुवा बहुत स्वादिष्ट बनता है। वह खाने के लिए आया हुआ हूँ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो क्या मुझको भी हलुवे का दावतनामा है?"

"जी नहीं। आपके लिए केक, पेस्ट्री, शामी और चिकन कटलट तैयार किये जा रहे हैं। आपकी कोठी पर ठीक साढ़े–चार बजे मोटर आयेगी। देखिये, आने के लिए तैयार रहियेगा। वरना शामी बासी हो जाएँगे।"

"एक बात है खलीफा साहब! यदि इस खाने के साथ कुछ चूर्ण न हुआ तो यह पेट में दर्द करने लगेगा।"

"तो मैं सुदर्शन जी को कहे देता हूँ कि गुमटी बाजार से भाइयों की दुकान का चूर्ण मँगवा रखें।"

"नहीं भाई। वह चूर्ण तो इश्तहारबाजी है। उनको कहो कि ग्रिंडले बैंक वाला चूर्ण मँगवाएँ। आजकल कांग्रेस के काम से वकालत का काम कुछ ढीला पड़ रहा है।"

"अच्छी बात है। आप आ जाइये।"

फोन बन्द हुआ तो दोनों जोर–जोर से हँसने लगे। खलीफा उठकर जाने लगा तो सुदर्शनलाल ने स्मरण कराने के लिए कह दिया, "आपके हिस्से का रुपया यहाँ आ जाना चाहिए।"

"मैं जाते ही भिजवा देता हूँ।"

जिस दिन पाँधा जी का प्रस्ताव उपस्थित होना था, पाँधा जी कमेटी से अनुपस्थित थे। कमेटी के चेयरमैन ने कहा, "यदि कोई दूसरा मैम्बर पाँधा जी का प्रस्ताव उपस्थित करना चाहे तो कर सकता है।"

एक डॉक्टर भाग्यचरण भी कांग्रेस के सदस्य थे। वे कहने लगे कि मैं प्रस्ताव तो उपस्थित करना चाहूँगा, परन्तु सब कागजात पाँधा जी के पास हैं। मैं प्रस्ताव पर कुछ कह नहीं सकूंगा।"

चेयरमैन ने कहा, "अगर आपके बयान का, जिसका कोई सबूत नहीं दूसरे मैम्बर मंजूर करना चाहें तो कर सकते हैं।"

इस पर खलीफा शजाउद्दीन ने कह दिया, "अगर कोई बेबुनियाद बात कही गई तो मैं हत्तक इज्जत का दावा दायर कर दूँगा।"

इस पर डॉक्टर साहब चुप कर रहे और प्रस्ताव रद्द समझ लिया गया।

कमेटी की मीटिंग के उपरान्त 'सेसिल' में सुदर्शनलाल ने अपने मित्रों को दावत दी और पाँधा की सेहत का जाम पिया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: 3 :

लक्ष्मी की अवस्था ठीक थी और वह घूमने–फिरने लगी थी। सुदर्शनलाल को जब अपनी पत्नी पर, विवाह से पहिले, जगन्नाथ से घनिष्ठता होने का सन्देह हुआ तो वह उसके व्यवहार पर आरम्भ से विचार करने लगा। जितनी सुगमता से लक्ष्मी विवाह के लिए मानी थी और फिर विवाह के पहले ही आत्म–समर्पण करने के लिए उद्यत हो गई थी, यह व्यवहार उसके सन्देह की पुष्टि ही करता था।

वह जगन्नाथ के इतिहास से यह समझता था कि उस समय जगन्नाथ एक निर्धन व्यक्ति था। दुकान पर बिक्री करने के लिए नौकर था। पिता था नहीं। मां ने नया पति कर लिया था और वह भी भिन्न मजहब और समुदाय वाला।

जगन्नाथ के मुकाबले में वह अपनी स्थिति देखता था। वह दो वर्ष की जेल काट कर आया था और जनता में एक बहादुर नेता समझा जा रहा था। पिता एक सफल वकील था और वह अपने पिता का सबसे बडा पुत्र था। पिछले म्यूनिसिपैलिटी के निर्वाचनों में अपने प्रतिस्पर्धी की वह जमानत जब्त करा चुका था। वह स्वयं प्रॉपर्टी डीलर था। लाखों का लेन–देन कर रहा था। लक्ष्मी बीमा कम्पनी का काम पृथक् था।

बैंक से लाखों की 'ओवर–ड्राफ्ट' की सुविधा उसे मिली हुई थी। वह स्वयं नये मकान बनवाता था और फिर लाभ पर बेच देता था। इसके अतिरिक्त कई उद्योगों में वह पत्तीदार था।

इस पर भी वह देखता था कि जगन्नाथ एक विशेष प्रकार का आकर्षण रखता है। वह स्वयं उसकी ओर आकर्षित हुआ था और जितने भी स्त्री–पुरुष उसकी पत्नी के जन्म–दिवस के उत्सव पर गये थे, सब उसकी उन्नति का बखान ही करते थे। सब उसके प्रशंसकों में से थे।

लक्ष्मी यद्यपि मुख से उसकी प्रशंसा नहीं करती थी, परन्तु वह देख रहा था कि उसकी आँखों में उसके लिए मोह है। इससे वह ईर्ष्या अनुमव करने लगा था। वह जगन्नाथ की ख्याति पर डाह करता था।

वह स्वयं अब अपनी ख्याति खो रहा था। कांग्रेस छोड़ने के उपरान्त जनता में वह बदनाम हो रहा था। यद्यपि नवीन निर्वाचनों में उसे कांग्रेस का टिकट नहीं मिला था, इस पर भी कांग्रेस के नेता उसकी सहायता करते रहे थे। उसके मुकाबले में एक बहुत ही साधारण स्थिति के एक व्यक्ति को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांग्रेस का टिकट दिया गया था। वह हार गया तो वह सुदर्शनलाल की निन्दा करने लगा। इस पर सुदर्शनलाल ने उसको दो सौ रुपये प्रति मास पर अपना प्राइवेट सेक्रेटरी नियुक्त कर लिया था।

कांग्रेस के नेता भीतर–ही–भीतर सुदर्शनलाल की सहायता करते थे। वह सबके मुख में 'घी और शक्कर' डालता रहता था। जिस दिन सुदर्शनलाल ने पाँधा के प्रस्ताव के रद्द होने के उपलक्ष्य में सैसिल में चाय–पार्टी दी थी, उसी दिन पार्टी के बाद वह सात बजे के लगभग अपने प्राइवेट सेक्रेटरी लाल मोहन के साथ अनारकली बाजार से गुजर रहा था कि उसको जगन्नाथ की बात याद आ गई। सुदर्शनलाल मन में यह निश्चय कर चुका था कि अब अपनी पत्नी को इस युवक के सामने नहीं लायेगा। वह अपने घर के जीवन को विषाक्त करना नहीं चाहता था। इस पर भी उसके मन में जगन्नाथ के विषय में अधिक जानने की लालसा बन रही थी। उसके अन्तरात्मा में यह प्रश्न उपस्थित हो रहा था कि जब वह कांग्रेस के धर्मात्मा–से–धर्मात्मा नेता को रुपये का रसास्वादन करा, अपने अँगूठे के अधीन कर चुका है तो इस युवक को क्यों नहीं कर सकेगा? इससे वह अपने मन में एक योजना बनाने लगा था।

इस समय उनकी मोटर 'न्यू बुक एजेन्सी' के सामने से गुजरी। उसने मन में एक बात विचार की और मोटर दुकान के सामने खड़ी कर ली।

''लाल मोहन!'' सुदर्शनलाल ने कह दिया, ''आओ! एक–आध किताब खरीद लें।''

यह शौक सुदर्शनलाल में नहीं था। इससे लाल मोहन उसका मुख देखने लगा। सुदर्शनलाल ने कह दिया, ''कोई मजेदार पुस्तक तुम चुन देना।''

लाल मोहन मुस्कराया और उसके साथ दुकान में जा खड़ा हुआ। जगन्नाथ ने सुदर्शनलाल को दुकान में दाखिल होते देखा तो उठकर सामने आकर हाथ जोड नमस्ते करने लगा।

सुदर्शनलाल ने कुशल–समाचार पूछा तो जगन्नाथ ने पूछ लिया, ''लक्ष्मी कैसी है?''

''अब ठीक है। उस दिन उसका चित्त घबराने लगा था। घर जाकर उसको दवा दी तो तबियत ठीक हुई।''

इसके बाद उसने लाला मोहन से कह दिया, 'विक्टर ह्यूगो' के जो भी उपन्यास उपलब्ध हैं ले लो। मैं जरा जगन्नाथ से बात करता हूँ।''

जगन्नाथ उसको अपनी मेज पर ले गया। वहाँ कुर्सी पर बैठा कर पूछने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगा, ''चाय मँगवाऊँ या कॉफी?''

''कुछ नहीं। अभी–अभी कुछ मित्रों के साथ चाय पीकर आ रहा हूँ। उस दिन मैं इड्डा के जन्मदिन के भोजन में सम्मिलित नहीं हो सका। इसके लिए मेरी ओर से उससे क्षमा माँग लीजियेगा। मेरी इच्छा है कि आप सपत्नीक जिस दिन भी अवकाश हो, मेरा, चाय का निमन्त्रण स्वीकार करें। इससे मुझे बहुत प्रसन्नता होगी।''

''हमें भी बहुत प्रसन्नता होगी।'' जगन्नाथ ने कह दिया, ''इस पर भी मेरा निवेदन है कि यह लक्ष्मी के प्रसव के उपरान्त हो तो बहुत ठीक रहेगा। इस समय हम उसको कष्ट देना नहीं चाहेंगे।''

''चाय तो मैं 'सैसिल' में दूँगा। उसको कुछ भी कष्ट नहीं होगा?''

''इस पर भी उसको आना तो पड़ेगा। उस दिन उसकी तबियत खराब हुई तो हमें बहुत चिन्ता लग गई थी। इड्डा दो दिन तक टेलीफोन पर उसके स्वास्थ्य का समाचार पूछती रही थी।''

''तो उसके बिना चाय पर आप लोग नहीं आ सकते?''

''इड्डा इसको बहुत पसन्द करेगी। स्त्रियाँ–स्त्रियाँ अपनी बिरादरी पृथक् समझती हैं।''

''परन्तु वह तो इंगलैंड की रहने वाली है। वहाँ तो सुना है, औरतें मर्दों की संगत में अधिक सुख और आनन्द अनुभव करती हैं।''

''मैं इस विषय में कुछ जानता नहीं। इस पर भी इतना मुझको समझ आया है कि इड्डा स्त्रियों की संगत में अधिक प्रसन्न रहती है।''

''तब तो लक्ष्मी 'सैसिल' में आ जायेगी। अब वह सर्वथा स्वस्थ प्रतीत होती है।''

''देख लीजिए! मैं समझता हूँ कि आप अपने घर जाकर लक्ष्मी के स्वास्थ्य पर विचार कर रात किसी समय टेलीफोन कर दीजियेगा। हमको लक्ष्मी के साथ चाय लेकर बहुत प्रसन्नता होगी।''

इस समय लाल मोहन चार पुस्तकें ले आया। उसने बताया, ''यहाँ अभी ये चार ही मिली हैं।''

''दाम दे दिया है?''

''जी, रसीद ले ली है।''

''तो चलो।''

''उठते ही सुदर्शनलाल ने जगन्नाथ को बता दिया, ''मैं रात के खाने के उपरान्त साढ़े–नौ बजे टेलीफोन करूँगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसी रात खाना खाने से पहले इड्डा ने अपने एक वर्ष के बच्चे विसैंट को भोजन कराकर उसकी दाई को दे दिया और कहा, "अब इसको बाहर लॉन में थोड़ा घुमाकर सुला दो।"

जब वह चला गया तो जगन्नाथ ने बैरा को उनके लिए प्लेटें लगाने के लिए कह, सुदर्शनलाल की बात बता दी। इड्डा का कहना था, "आपने ठीक ही कहा है कि लक्ष्मी के बिना मैं निमन्त्रण स्वीकार नहीं करूँगी।"

"क्यों?"

"इसलिए कि मुझे लक्ष्मी का पति अच्छा आदमी प्रतीत नहीं होता।"

"उसकी आखों में वासना भरी प्रतीत होती थी।"

"उसने तुमसे कुछ कहा था?"

"कहा तो नहीं। इस पर भी उसके हाव–भाव ठीक नहीं थे। मुझको सन्देह है कि उस दिन लक्ष्मी ने भी उसके व्यवहार मे कुछ खराबी देखी होगी। तभी वह उस दिन उसको लेकर भाग गई थी। वैसे वह बीमार नहीं थी।"

"इस पर भी बिना किसी स्पष्ट प्रमाण के एक भले मनुष्य पर सन्देह तो ठीक बात नहीं।"

"मेरे पास प्रमाण तो नहीं है न मैं अपनी जानकारी के किसी भी व्यक्ति के सम्मुख उसको बदनाम करने की बात नहीं कह रही हूँ।"

"तब तो ठीक है।" जगन्नाथ ने कह दिया, "मैंने तो अपने हिन्दुस्तानी आचार–विचार की दृष्टि से ही कहा था। इस पर भी मैं डरता था कि कहीं मैंने कुछ अनिच्छित बात कह दी हो!"

"आपने गलत बात नहीं कही। मैं यूरोपियन आचार–विचार को ठीक नहीं मानती। मुझको वहाँ का अनुभव है। वहाँ मैं इसको ठीक मानती थी। जब यहाँ आकर राधा चाची और सरस्वती सिस्टर का व्यवहार देखा तो मुझको वहाँ की समाज की बात फूहड़ प्रतीत होने लगी है।

"देखिये मैं बताती हूँ। वहाँ लड़के और लड़कियाँ अपनी सृष्टि में कारण ही यह मानते हैं कि उन्हें यौन–सम्वन्ध बनाना है। इस कारण वहाँ दोनों अपने–अपने अनुकूल साथी ढूँढ़ते रहते हैं। यह खोज हमारे यहाँ लड़कियों में चौदह वर्ष की आयु में और लड़कों में सोलह–सत्रह वर्ष की आयु में आरम्भ होती है। इस खोज में बहुत हैं जो ठोकर खा गिर पड़ते हैं। इसका परिणाम गर्भपात, अवैध बच्चों का जन्म, मस्तिष्क का बिगड़ जाना, हत्याएँ, आत्म–हत्याएँ इत्यादि अनेक प्रकार की घटनाएँ होती हैं। लगभग साठ प्रतिशत लड़के–लड़कियाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस जीवन की ऊँच–नीच में से गुजरते हैं। बीस प्रतिशत तो इस ऊँच–नीच में ही मर–मिट जाते हैं। इन मर–मिटने वालों में लड़कियों की संख्या अधिक रहती है। इसमें से पचास प्रतिशत बड़ी आयु में पहुँचने तक अपनी खोज के अन्त में पहुँच जाती हैं। वे अपने अनुकूल अपना साथी पा, विवाहित जीवन में स्थिर हो जाते हैं। 40 प्रतिशत अपनी टिमिडिटी (भीरुता) के कारण मन में विवाहित साथी के लिए उत्कट अभिलाषा रखते हुए भी साथी पा नहीं सकते और दस प्रतिशत तो विवाह को व्यर्थ का झंझट मान आवारा जीवन व्यतीत करते हुए, जीवन के अन्त तक अविवाहित रह जाते हैं।

"यह गणना मेरी नहीं है। यह हमारे एक विद्वान् जज का कहना है। उसे मानव–जीवन में इस विषमता को दूर करने के लिए उपाय लिखे हैं। जिसमें उसने हिन्दुस्तानी विवाह–पद्धति की प्रशंसा की है।"

जगन्नाथ ने हँसते हुए पूछ लिया, "तो इड्डा रानी को बहुत अनुभव है?"

"जी, मैंने भी अपना जीवन चौदह वर्ष की आयु में आरम्भ किया था। तब माँ मुझको बहुत बढ़िया फैशनवाले कपड़े पहनाकर समाज में ले जाने लगी थीं। लोगों से दिये गए नाच में सम्मिलित होने के लिए हम लालायित रहती थीं। जब किसी स्थान पर कोई बाल होता तो माँ उसमें आमन्त्रित होने का यत्न करती रहतीं। मैंने एक बार अपनी मम्मी से पूछा था कि तुम इस प्रकार निमन्त्रणों के लिए लालायित क्यों रहती हो? माँ का कहना था, यह तुम्हारे लिए ही करती हूँ। तुमको जीवन में स्थिर देख मुझे बहुत प्रसन्नता होगी। किसी अच्छे घर में और सुन्दर, स्वस्थ तथा सम्पन्न युवक से तुम्हारा विवाह कर मेरा बोझा हल्का हो जायेगा।

"उस समय मैं समझ नहीं सकती थी कि मेरा किस प्रकार का बोझा मम्मी पर है। जब मैं सत्रह–अठारह वर्ष की हो गई तो मैं स्वयं भी नाच–तमाशे, दावतें इत्यादि में जाने के लिए उत्सुक रहने लगी। पिछले तीन वर्ष में बहुत से युवक मेरे सम्पर्क में आए। उनमें से कुछ तो मुझको अपने सामयिक मनोरंजन का साधन मात्र मान, मेरा प्रयोग करना चाहते थे। मम्मी बहुत सतर्क थी और मुझे उनसे बच कर रहने के लिए समझाती रहती थी। मम्मी के उन दिनों के कथनों से मेरे ज्ञान का विस्तार हो रहा था। मैं बहुत कुछ समझने लगी थी। शेष मुझे एक लार्ड नार्यब्रुक के साहबजादे सैमुअल ने बता दिया। तब मैं उसके साथ अकेली रात के भोजों पर जाने लगी थी। सौभाग्य से उन दिनों ही मेरी दृष्टि में उस जज साहब की पुस्तक 'दी रौट इन योरोपियन सोसायटी' पड़ गई। मैं उसको खरीद लाई और पुस्तक पढ़ते–पढ़ते मैं उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भयावह मार्ग की अनुपयोगिता को समझ गई, जिस पर सैमुअल नार्थब्रुक मुझको ले जा रहा था।

"एक दिन मैं यूनिवर्सिटी से अपनी पढ़ाई कर लौटी कि वह केवल मुझे अपने साथ ले चलने के लिए आया। वह लंदन से बीस मील के अन्तर पर अपने एक मित्र के घर एक नाच पर ले जाने के लिए आया था। वह मम्मी से स्वीकृति लेकर मुझसे कहने लगा, मरीना के जन्मदिन की दावत और नाच पर ले चलने के लिए आया है। मरीना उसके मित्र की बहिन थी। ऐसे अवसरों पर मैं प्रसन्नता से उबल पड़ा करती थी। परन्तु उन दिनों जज साहब की पुस्तक ने मेरे मस्तिष्क पर बहुत गहरा प्रभाव उत्पन्न कर रखा था। मैने शोक–मुद्रा बना कह दिया, मैं जा नहीं सकूंगी।"

इस पर वह बोला, "तुम्हारी मम्मी ने तो स्वीकृति दे दी है।"

"मैंने कहा, जाना तो मैंने है। मैं मम्मी को जाने से मना नहीं कर रही?

"इस पर तो वह भौंचक्का हो मेरा मुख देखता रह गया। फिर विचार कर पूछने लगा, मुझसे नाराज हो इड्डा? मैंने कहा, नहीं तो, पर मैं चाहती हूँ कि हमारा सम्पर्क बिना विवाह हुए नहीं होना चाहिए। उसका कहना था, विवाह अभी हो नहीं सकता क्योंकि वह अल्पवयस्क था और अपने पिता पर आश्रित था।

"इस पर मैंने कह दिया, उसको अपने पिता से पूछ कर आना चाहिए। मेरी मम्मी भी, जब उसको हमारे इतने घनिष्ठ सम्बन्धों का पता चलेगा, तो वह हमें मिलने की स्वीकृति नहीं देगी।

"मैंने यह भी कहा कि मैंने मम्मी को उस घनिष्ठता के विषय में सब कुछ बताने का निर्णय ले लिया है।"

"इस पर वह कहने लगा, 'तुम मूर्ख हो रही हो इड्डा?' यह कह वह चल दिया और पुनः मुझसे मिलने नहीं आया।"

"इससे कुछ उपरान्त मैं अपनी पढ़ाई में लीन हो गई। मेरी मम्मी ने दुनिया की सैर की योजना बनाई तो हम तीनों बच्चे भी चलने के लिए तैयार हो गये। जब अमरीका, न्यूजीलैण्ड, आस्ट्रेलिया, जापान, थाईलैण्ड, लंका इत्यादि स्थानों से घूमते हुए हम हिन्दुस्तान में पहुँचे तो मेरी इच्छा यहीं रह जाने की हो गई। मेरे यहाँ रह जाने में सिस्टर सरस्वती सहायक हो गई और मैं आपके आश्रय एक नवीन संसार में पहुँच गई हूँ।"

"अब मैं समझने लगी हूँ कि मूर्ख मनुष्य ने किस प्रकार इस पृथ्वी रूपी जेल में पहुँचकर इससे मोह बना लिया है और फिर हम कैसे सब कैदी अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को जातियों, देशों, मजहबों और वर्गों में बाँट–बाँटकर, परस्पर लड़ते–झगड़ते, एक–दूसरे के रक्त के प्यासे बन रहे हैं।''

''पिछले विश्व–युद्ध में, हमने परस्पर झगड़ा करके बीस लाख युवकों की हत्या कर दी थी। इस पर भी हम समझे नहीं। किसी बुद्धिमान ने लीग ऑफ नेशन्स की योजना बनाई। जो इसमें सम्मिलित हुए थे, वे इस बन्दी–गृह के अस्तित्व को समझे नहीं। विपरीत इसके, जिन बन्दियों को उन्होंने परास्त किया था, उनको वे अपमानित करने लग गये।''

''मैं तो अब अपने जीवन से अत्यंत सन्तुष्ट हूँ और इस बन्दीगृह से छूटने की प्रतीक्षा में हूँ। इसमें रहते हुए मैं कोई ऐसा अपराध करना नहीं चाहती जिससे मेरी कैद लम्बी कर दी जाये।''

''इड्डा! मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूँ। तुम मेरे आशय को ठीक समझी हो। इस पर भी मैं जीवन–संघर्ष से डरता नहीं। हाँ, संघर्ष का उद्देश्य इस संघर्ष में विपक्षी और सहयोगियों के विषय में मैं अपने विशेष विचार रखता हूँ। मैं इस संसाररूपी बन्दी जीवन के नियमोपनियम को कई बार बता चुका हूँ। मुझे यही समझ आया है कि उनका पालन करने से हमारी कैद की अवधि शीघ्र ही समाप्त हो सकेगी।''

इस समय भोजन समाप्त हो गया। वे उठ और हाथ धो कुल्ला कर बाहर ड्राइंग–रूम में जा बैठे। वहाँ दोनों स्वाध्याय किया करते थे। उनके सोने का समय दस बजे होता था। उनका भोजन प्रायः साढ़े–आठ बजे समाप्त हो जाया करता था। डेढ़ घण्टा दोनों पढ़ा करते थे अथवा पढ़े हुए पर विचार–विनिमय किया करते थे।

: 4 :

इस समय फोन की घण्टी खड़की। जगन्नाथ समझ गया कि सुदर्शनलाल का फोन है। फोन इड्डा ने उठाया और पूछने लगी, ''कौन बोल रहा है? मैं इड्डा हूँ।''

फोन सुदर्शनलाल का ही था। उसने निमन्त्रण की बात दुहराई तो इड्डा ने कह दिया, ''हाँ उन्होंने बताया है कि आपका चाय पर निमन्त्रण है। साथ ही यह भी बताया है कि उन्होंने इस निमन्त्रण को लक्ष्मी बहिन के पूर्ण स्वस्थ हो जाने पर स्वीकार करने की बात कही थी। मैं समझती हूँ कि आपको उसे लेकर बहुत भाग–दौड़ नहीं करनी चाहिए।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर सुदर्शनलाल ने टेलीफोन लक्ष्मी को दे दिया। इड्डा ने कहा, "लक्ष्मी बहिन! हम चाय के निमन्त्रण से बहुत सम्मानित मानते हैं। परन्तु हम तुमको कष्ट देना नहीं चाहते। उस दिन तुम यहाँ बीमार हो गई थीं। हमें कई दिन तक चिन्ता लगी रही। हम वैसी बात फिर दुहराना नहीं चाहते।"

"................"

"नहीं! मेरा स्पष्ट मत है कि बिना तुम्हारे चाय का मजा नहीं आयेगा। मैं इसके लिए तीन महीने की प्रतीक्षा करना उचित समझूंगी।"

"................"

"पर मैं पूछती हूँ कि इसमें इतनी जल्दी ही क्या है?"

"................"

"अच्छी बात है, यदि तुम अपने लिए इसको हितकर समझती हो तो आ जाऊँगी।"

टेलीफोन बन्द हो गया। जगन्नाथ समझ गया और चिन्ता में इड्डा के मुख पर देखने लगा। इड्डा ने अपने पति के देखने का अभिप्राय समझ कह दिया, "मैं इससे प्रसन्न नहीं हूँ। मुझे कुछ ऐसा समझ आया है कि सुदर्शन जी ने लक्ष्मी को विवश किया है कि वह इस दावत पर चले।"

"तो तुम भी न जा सकने का कोई बहाना बना देतीं।"

"मैं टेलीफोन पर कह नहीं सकी। मैं इससे लक्ष्मी के लिए किसी प्रकार की बुरी आशंका करती थी।"

"तो तुम रविवार की चाय पर चलोगी?"

"चलना चाहिए।"

परन्तु जो कुछ और जैसी आशा इड्डा और जगन्नाथ करते थे वह नहीं हुई। ये समय पर सैसिल होटल में पहुँच गये। वहाँ सुदर्शन लाल और तीन अन्य आदमियों के लिए सीट रिजर्व थी। ये वहाँ जा बैठे। आधा घण्टा प्रतीक्षा करने पर सुदर्शनलाल अकेला आया। उसने बताया, "एकाएक लक्ष्मी की तबियत खराब हो गई है। इस कारण वह नहीं आ सकी।"

इस पर इड्डा ने कह दिया, "इस अवस्था में हमको तुरन्त आपके मकान पर चलना चाहिए।"

सुदर्शनलाल ने कहा, "नहीं, वहाँ जाने की जरूरत नहीं। डॉक्टर ने उसके लिए पूर्ण आराम की राय दी है और वह बिस्तर में लेटी हुई है। उसको बातचीत करना भी मना है और फिर यहाँ चाय का दाम दिया जा चुका है।"

इस पर चाय तो ली गई, परन्तु न तो सुदर्शनलाल खुल कर बातचीत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर सका, ना ही मेल–मुलाकात से जो रस जगन्नाथ और इड्डा को प्राप्त होना था, हो सका।

चुपचाप चाय पी गई। सुदर्शनलाल ने बिल का शेष दाम दिया और जगन्नाथ ने सुदर्शनलाल का धन्यवाद करते हुए कहा, "मैं कल फोन कर पता करूँगा कि लक्ष्मी कैसी है?"

सुदर्शनलाल ने उत्तर नहीं दिया। वह इन दोनों को मोटर में बैठा फिरोजपुर रोड पर छोड़ चला गया।

ज्यूं ही सुदर्शन की मोटर कोठी से निकली, इड्डा भागी हुई भीतर गई और सुदर्शनलाल के घर फोन करने लगी। वह सुदर्शनलाल के घर पहुँचने से पहले लक्ष्मी से पूछना चाहती थी कि वह क्यों नहीं आई। उसे सुदर्शनलाल के इस कथन पर विश्वास नहीं आया था कि डॉक्टर उसे किसी से बात करने से मना कर गया है।

फोन पर कोई बोला, तो इड्डा ने पूछ लिया, "लक्ष्मी जी कहाँ हैं?"

उत्तर मिला, "कौन पूछ रहा है?"

"इड्डा नाथ।"

"क्या काम है?"

"लक्ष्मी बहिन से काम है।"

"वे यहाँ नहीं हैं।"

"कहाँ गई हैं?"

"जहाँ तक मैं जानता हूँ वे अपनी माँ के घर गई हैं।"

"आप कौन बोल रहे हैं?"

"मैं लाल मोहन, सुदर्शनलाल जी का प्राइवेट सेक्रेटरी हूँ।"

"अच्छा सेक्रेटरी साहब! सुदर्शनलाल जी से कह देना कि इड्डा नाथ का फोन आया था और, वह लक्ष्मी के विषय में पूछ रही थी।"

इड्डा ने जब जगन्नाथ को पूर्ण बात बताई तो वह कहने लगा, "मैं तो सुदर्शनलाल का मुख देखकर ही समझ गया था कि सख्त झगड़ा हुआ है। आज उसके हाव–भाव और बातचीत में वह प्रसन्नता और चुलबुलापन दिखाई नहीं दिया था, जो तुम्हारे जन्म–दिन को था।"

"परन्तु अब क्या करेंगे?"

"मैं लक्ष्मी की माता के घर जाकर पता करना चाहूँगा कि क्या बात हुई है?"

"मैं समझती हूँ कि आप मत जाइए, मैं जाऊँगी। परन्तु आज नहीं कल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रातः काल।''

''आज क्यों नहीं?''

''मैं चाहती तो थी कि सुदर्शनलाल को अपने फोन करने की बात का पता न चलता, परन्तु जब मैं उसके सेक्रेटरी को अपना नाम बता चुकी थी तो मैंने विचार किया कि वह बताइएगा अवश्य ही। इस कारण उसको बताने के लिए स्वयं ही कह दूँ।''

''अब उसको पता चल जाएगा कि हमें लक्ष्मी की माँ के घर चले जाने का पता चल गया है तो वह आशा करेगा कि हम उसकी माँ के घर जाकर पूछताछ करेंगे। यदि कहीं हमारे वहाँ जाते समय वह भी वहाँ आ गया तो झगड़ा हो सकता है। उसके वहाँ जाने और हमारे वहाँ न जाने पर तो उसको सांत्वना मिलेगी और उसके मस्तिष्क पर यह प्रभाव होगा कि हम उसमें अथवा उसकी पत्नी में किसी प्रकार की रुचि नहीं रखते।''

जगन्नाथ चुप कर रहा। वह दुकान पर चला गया। रात्रि दुकान बन्द कर वह लौटा तो घर पर शिवराम, राधा, भोली, रामनाथ और लक्ष्मी आकर बैठे हुएं मिले।

जगन्नाथ विस्मय में उनका मुख देखता रह गया। बात शिवराम ने बताई। उसने कहा, ''सुदर्शनलाल ने लक्ष्मी को घर से निकाल दिया है।''

''किसलिए?''

''वह कहता है कि विवाह से पूर्व लक्ष्मी का तुम्हारे साथ अनुचित सम्बन्ध रहा है।''

''यह उसको किसने बताया है?''

''वह कहता है कि लक्ष्मी की आँखों ने इस रहस्य को बताया है।''

''तो लक्ष्मी ने इसका समर्थन किया है क्या?''

सब लक्ष्मी का मुख देखने लगे। लक्ष्मी ने कहा, ''मैंने इससे इन्कार किया है, परन्तु वे माने नहीं। जब मैंने उनके साथ सैसिल में चाय पर जाने से इन्कार किया तो वे भड़क उठे और मुझसे बोले, लक्ष्मी समझ लो कि तुम्हारा अन्न–पानी इस घर से समाप्त हो गया है। यदि तुम स्वयमेव मेरे घर से निकल नहीं गईं तो धक्के दे–देकर निकाल दूँगा।

''मुझे भी क्रोध आ रहा था। मैंने पूछ लिया, 'कब जाऊँ?' तो वे कहने लगे, 'तुरन्त।'

''मैं अपने वस्त्र तैयार करने लगी तो सैसिल में चाय लेने चले गये।

''मैं माँ के घर चली आई। वहाँ पिता जी आये तो वे चाचा जी से राय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने चले आए हैं।''

जगन्नाथ ने पूछा, ''राय करने से क्या होगा? लक्ष्मी, धैर्य से बैठ कर अपना कर्तव्य–पालन करती जाओ। अच्छे काल की प्रतीक्षा करो।''

''क्या कर्तव्य–पालन करती जाऊँ?''

''अभी तीन महीने का काम तुमको मिला है उसको समाप्त करो। तब तक विचार कर लेंगे और यदि इस बीच सुदर्शनलाल जी को अपनी भूल का ज्ञान हो गया तो तुम उसके साथ चली जाना।''

रामनाथ ने कहा, ''उसने लड़की को पीटा भी है।''

इस पर लड़की ने पिता के कथन का संशोधन भी कर दिया, ''पीटा नहीं। केवल मुख पर एक चपत लगाई है। वह इस कारण कि मैंने उन पर चरित्रहीनता का लांछन लगाया था।''

''क्या लांछन लगाया था?'' राधा ने पूछ लिया।

''यही कि वे स्वयं मन के खोटे हैं और दूसरों पर सन्देह करते हैं।''

''तुम्हारे पास इसका प्रमाण है क्या?''

''जो अर्थ मेरे कहने का निकलता है उसका प्रमाण तो है नहीं। मेरा अनुमान मात्र ही है, परन्तु अन्य दिशाओं में उनके चरित्रहीन होने के प्रमाण तो हैं।''

''किन दिशाओं में?'' राधा का अगला प्रश्न था।

''उदाहरण के रूप में घूस लेना, चोरी करना, झूठ बोलना इत्यादि।''

इस पर सब चुप कर गए। इड्डा ने कह दिया, ''यदि तुम यह बात जानती हो तो फिर तो तुमको उनकी कमाई में से एक पैसा भी लेना नहीं चाहिए।''

इस पर शिवराम हँस पड़ा। जब इड्डा ने पूछा, ''चाचा जी! क्या मैंने कुछ गलत कहा है?''

शिवराम गम्भीर हो गया। कुछ समय तक वह मौन रह विचार करता रहा। इस समय जगन्नाथ बोला, ''चाचा जी! इड्डा गलत नही कह रही। यदि लक्ष्मी का विश्वास है कि उसकी कमाई पापमय है तो उस कमाई पर आश्रित जीवन भी तो पापमय हो जाएगा। महर्षि व्यास जी ने कहा है कि सूखी लकड़ियों में यदि एक–आध गीली लकड़ी पड़ी हो तो सूखी लकड़ियों के जलने पर वह गीली लकड़ी भी जलकर भस्म हो जाती है।''

''पर जगन्नाथ! क्या केवल गलत बातों पर ही हँसा जाता है? क्या जब कोई मैट्रिकुलेशन की श्रेणी का विद्यार्थी एम.ए. की पढ़ाई की बातें करने लगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो हँसी की बात नहीं होती?''

अब हँसने की बारी जगन्नाथ की थी। उसने पूछा, तो चाचा जी इड्डा को मैट्रिकुलेशन की छात्रा मानते हैं और यह बातें एम.ए. की श्रेणी की करती है। वयों इड्डा! तुम क्या समझती हो?''

''मैं समझती हूँ कि चाचा जी ठीक कहते हैं? यद्यपि मेरी योग्यता एम.ए. की श्रेणी की हो गई है परन्तु आप मुझको ऊपर की श्रेणियों में बैठने नहीं देते।''

इस पर रामनथ ने बात पुनः लक्ष्मी पर घुमा दी। उसने पूछ लिया, ''तो फिर लक्ष्मी के लिए आप क्या सम्मति देते हैं। मैं यह जानने आया था कि क्या किसी प्रकार का नोटिस वगैरह देना चाहिए? यदि देना चाहिए तो कब?''

उत्तर जगन्नाथ ने दिया, ''भापा! नहीं। इसकी आवश्यकता नहीं पड़ेगी। कम–से–कम प्रसव तक तो लक्ष्मी बहिन को किसी प्रकार की चिन्ता करनी ही नहीं चाहिए।''

''पीछे?'' रामनाथ का प्रश्न था।

उत्तर भोली ने दिया, ''यह अभी कैसे बताया जा सकता है।''

इसने गोष्ठी समाप्त कर दी। जगन्नाथ ने सबको भोजन का निमन्त्रण दे दिया। रामनाथ, भोली और लक्ष्मी तो ताँगे में सवार हो लाहौरी गेट को चले गए। शिवराम और राधा वहीं रह गए। उन्होंने भोजन वहीं करने का निश्चय कर लिया।

: 5 :

भोजन करते समय राधा ने लक्ष्मी के विषय में अपना अनुमान बताया। उसने कहा, ''मैं तो लक्ष्मी के विवाह के समय ही समझ गई थी कि यह नौका पार नहीं लगेगी। सुदर्शनलाल धनी बाप का बेटा अवश्य है, परन्तु उसने अपने जीविकोपार्जन और जीवन–कार्य को राजनीति बना लिया हुआ था। मैं इसको अस्वाभाविक और अनुचित मानती थी। इस प्रकार अनुचित व्यवसाय करने वाले से किसी भलाई की आशा बबूल के पेड़ से आमों की आशा के समान थी।''

''परन्तु चाची!'' जगन्नाथ ने कहा, ''आज तो संसार में राजनीति अनेकों का जीवन–कार्य बन रहा है।''

''मैं यह जानती हूँ। परन्तु आज दुनिया की अवस्था किसी प्रकार भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शोभनीय नहीं है। यदि इसकी खराबी का मूल कारण ढूंढ़ा जाए तो घूम–घुमाव कर यह कारण पेशेवर राजनीतिज्ञ ही निकलेंगे। यह संसदीय प्रजातन्त्रात्मक पद्धति ही है कि पेशेवर राजनीतिज्ञों की सृष्टि हो रही है।

"जैसे कोई यतीमखाने का अध्यक्ष यतीमखाने को अपना व्यवसाय बना ले तो वह पतनोन्मुख हुए बिना नहीं रह सकता। यही बात म्युनिसिपल कार्पोरेशन की सदस्यता की है। सुदर्शनलाल ने इसको व्यवसाय समझा हुआ है। वह इससे अधिक–से–अधिक लाभ उठाने का यत्न कर रहा है। परिणामस्वरूप उसका अन्न दूषित हो रहा है और उसकी मति भ्रष्ट हो गई है।"

यह तो परिवार में सब जानते थे कि सर्वथा अकिंचन भी म्युनिसिपल कमेटी के सदस्य बनने पर हवेलियों में रहने लगे हैं। इस पर भी शिवराम एक बात समझ नहीं रहा था। वह था इन लोगों के निर्वाह का उपाय। उसने राधा से एक बात कह दी, "आगामी निर्वाचनों में प्रान्तीय कौंसिल की मेम्बरी के लिए हिन्दू महासभा के लोग मुझे तैयार कर रहे हैं। मैं विचार कर रहा हूँ कि यदि मैंने निर्वाचन लड़ा तो बीस–तीस हजार रुपया खर्च होगा ही। फिर बहुत–सा समय कौंसिल के काम के लिए और जनता के काम के लिए व्यय होगा। तो क्या यह फोकट में ही होगा? नियम से तो मुझको आठ रुपए कौंसिल की मीटिंग में हाजिर होने के लिए मिल जाया करेंगे, परन्तु खर्च तो इससे कहीं अधिक हो जाएगा।

"इस सब हानि का प्रतिकार क्या होगा? यदि किसी प्रकार से दो–तीन सहस्र रुपए मासिक की आय वहाँ से न हुई तो मेरा दिवाला ही पिट जाएगा।"

"पर चाचा जी!" जगन्नाथ ने पूछ लिया, "आप इस कीचड़ में जाने का विचार ही क्यों कर रहे हैं?"

"मेरे पास कुछ नेता लोग आए थे और वे कह रहे थे कि यदि ईमानदार और विद्वान् लोग इस काम में आगे नहीं आएँगे तो फिर यह काम चलेगा कैसे?"

"परन्तु यदि दुनिया आपको ईमानदार और विद्वान् मानती है तो आपके विरुद्ध किसी को खड़े होने का साहस ही नहीं होना चाहिए। मेरी सम्मति तो यह है कि आप नामन–पत्र दाखिल करिए और अपने प्रतिस्पर्धियों को विश्वास दिलाइए कि आप किस प्रकार सबसे अधिक योग्य हैं। यदि वे समझ जाएँ तो ठीक, अन्यथा अपना नामन–पत्र वापस कर लीजिएगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इसको तो कोई मानेगा नहीं और लोग मुझे मूर्ख समझेंगे।"

"यह मैं जानता हूँ कि इस मानव–समाज में विवेक नहीं रहा। आपके प्रतिस्पर्धी नहीं मानेंगे, परन्तु आपके नामन–पत्र वापस लेने पर आपको मूर्ख क्यों मानेंगे?"

"वे लोग कहेंगे कि मैं अपने–आपको भगवान् का अवतार मानता हूँ। भला देखो न कि पंजाब में लाला लाजपतराय जैसे लोगो का विरोध करने वाले भी तो निकल आये थे तो फिर मैं किस खेत की मूली हूँ।"

"असल बात यह है चाचा जी! कि वह संसदीय प्रजातन्त्र ही भारी भूल है। इसका स्थानापन्न ढूंढ़ना चाहिए। यह मानव–प्रकृति के अनुकूल नहीं। देखिये, मैं बताता हूँ। यह बुद्धि–यन्त्र सबको एक समान नहीं मिला। इस कारण सब एक–समान विचार नहीं कर सकते। परिणामस्वरूप सबके काम एक–समान चलते नहीं। इस कारण यह आशा करनी मिथ्या है कि किसी काम पर भी मनुष्य–मात्र एक मत हो सकेंगे। यह सदा रहेगा कि कुछ बुद्धिमान लोग ही यहाँ का कारोबार चलायेंगे। इन बुद्धिमानों की परख साधारण जन नहीं कर सकता। साधारण जन तो मनुष्य की चतुराई, धन–सम्पत्ति और सौंदर्य की परख ही कर सकता है। इन बातों का विद्वत्ता के साथ किसी प्रकार का भी सम्बन्ध नहीं। अतः जनसाधारण विद्वानों का निर्वाचन नहीं कर सकता। जनसाधारण किसी के ठग सकने की योग्यता से ही प्रभावित होता है।"

"बहुत मुसीबत है जगन्नाथ! छापाखाना और घर पर लोग आते रहते हैं। मैं गांधी जी और कांग्रेस की नीति का विरोध करता रहता हूँ। इस पर लोग मुझे पूछने लगे हैं कि मैं ही क्यों नहीं निर्वाचन लड़ता? मैं यही विचार करता हूँ कि बीस–तीस हजार व्यय कर और दो–तीन हजार मासिक की हानि उठाकर कहीं मैं सार्वजनिक कार्य करने लगूं तो मैं भी अपनी हानि की पूर्ति न करने लग जाऊँ। आज तो राधा सुदर्शनलाल को बेईमान और भ्रष्ट–बुद्धि कहती है, कल वह मुझे भी कहने लगेगी।"

"चाचा जी! आप कौंसिल के निर्वाचन अथवा कहीं के भी निर्वाचन मत लड़िये। हम जब यह जानते हैं कि गलती कहाँ है तो फिर स्वयं ही उस गलती का शिकार क्यों बन जाएँ? गलती है प्रजातन्त्रात्मक पद्धति में। इसके विकल्प का हमें प्रचार करना चाहिए। यदि तो लोग इस बात को समझ जाते हैं कि किसी व्यक्ति को वह काम नहीं करना चाहिए, जिसके वह योग्य नहीं, तब तो प्रजातन्त्रात्मक रद्द हो जाएगा। यदि मनुष्य यह बात नहीं समझ सकता तो

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर हम भी वही गलती करने वाले क्यों बनें?

"मैं तो प्रजातन्त्रात्मक–पद्धति का स्थान एक प्रकार की धर्ममय पद्धति को चालना देना चाहता हूँ। उसमें धर्म की स्थापना होगी। यही हमारे लिए करणीय है।"

शिवराम ने बात बदल कर जगन्नाथ से पूछा, "तुम्हारे कथनानुसार यह लक्ष्मी तुम्हारी भार्या बननी चाहिए थी। घटनावश यह भार्या बन गई सुदर्शनलाल की। जो कुछ आज हुआ है वह उस अस्वाभाविक स्थिति का स्वाभाविक परिणाम ही है। प्रश्न है कि अब क्या होना चाहिए?"

"मैंने अपनी सम्मति दे दी है। उसको धैर्य से अपने भाग्य की प्रतीक्षा करनी चाहिए। मैंने लक्ष्मी को अपनी आत्मा का अंश तो आज से सत्रह–अठारह वर्ष पहले अनुभव किया था। अब तो यह केवल अनुभव की बात नहीं रही। अब मैं अपनी दिव्यदृष्टि से बहुत कुछ अधिक देख रहा हूँ। यह बहुत पहले की बात है। मैं ऐसी स्थिति में था, जिसको युवावस्था कहा जा सकता है।

"कहीं–कहीं शास्त्र में लिखा मिलता है कि एक समय मनुष्य की आत्मा सर्व–व्यापक परमात्मा में ही विलीन हो जाती है। मेरी वह अवस्था नहीं थी। इस पर भी मैं आजकल की भाँति बन्धन में नहीं था। आज तो मेरे पाँव में बोझ–सा बँधा है। जैसे समुद्र में डुबकी मारने वाले को भारी शीशे के तल वाले जूते पहना दिये जाते हैं और मनुष्य सागर की तह पर जा पहुँचता है। वैसे ही जब मुझको यह शरीर मिला तो मैं भू–आकर्षण के कारण इस पृथ्वी से सम्बद्ध हो गया हूँ। मैं इसको छोड़ नहीं सकता। इसके साथ ही मेरा यह शरीर जिसमें मैं बैठा हूँ, बिना हवा के नहीं रह सकता। बिना ऊष्मा के यह जीवित नहीं रह सकता। ये सब बन्धन हैं, जिनके कारण मैं इस पृथ्वी पर एक बन्दी की भाँति पड़ा हूँ। इन बन्धनों से मुक्ति मेरे बस की बात नहीं है।

"जब मैं इन बन्धनों में नहीं था, तब मेरे लिये इस पृथ्वी पर अथवा किसी भी नक्षत्र पर पड़ा रहना आवश्यक नहीं था। मैं चन्द्र, सूर्य और उससे भी दूर तक स्वेच्छा से आता–जाता था। मुझे भूख नहीं लगती थी। प्यास मुझको कष्ट नहीं देती थी। सर्दी–गर्मी का प्रभाव मुझ पर नहीं होता था।

"तब मुझमें किसी प्रकार का अभाव अनुभव नहीं होता था। मुझे आज स्मरण आ रहा है कि एक बार मेरी इच्छा हुई कि मैं अपने उसका अन्त देखूं जिसमें मैं भ्रमण कर सकता हूँ। मैं चल पड़ा। मेरे जाने की गति प्रकाश की गति से अधिक नहीं तो कम भी नहीं थी। मैं जा रहा था। मुझको थकावट नहीं हो रही थी। किसी प्रकार की मेरे जाने में बाधा भी नहीं थी। अन्तरिक्ष में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाँति–भाँति के उल्कापात हो रहे थे। कहीं तो लाखों–करोड़ों योजनों में प्रकाश–पुँज चक्की की भाँति घूम रहे थे। कहीं आस्मानी गोलों के फटने के सदृश विस्फोट हो रहे थे। कहीं असंख्य सूर्यों के एक स्थान पर एकत्रित होने के समान प्रकाश–युक्त पुँज चल रहे थे। सब कुछ अद्‌भुत और अवर्णनीय ही था।''

''जब चलते–चलते अमित काल व्यतीत हो गया और इस सबका अंत दिखाई नहीं दिया तो मैं ठहर गया और अपने इस प्रयास की मूर्खता पर विस्मय करने लगा।''

''मैं ठहर कर विचार करने लगा कि यह सब क्या है? इस समय ही मुझको कुछ ऐसा स्मरण है, मुझमें एक नवीन अभिलाषा उत्पन्न हुई। वह अभिलाषा पहले तो समझ में नहीं आई। पीछे जब उसका स्पष्ट रूप प्रत्यक्ष हुआ तो मैं किसी से आलिंगन की इच्छा करता अनुभव करने लगा। तब मैं दो भागों में विभक्त हो गया।''

इस विभक्त होने पर ही अपने आलिंगन की इच्छा पूर्ण करने के लिए अपने आधे भाग से आलिंगन करने की इच्छा हुई। विचित्र बात यह हुई कि आलिंगन करने पर भी मैं और मेरा आधा भाग पुनः एक नहीं हो सके।

''इसके कुछ कालोपरान्त मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि मैं एक ओर को आकर्षित होने लगा हूँ। मेरा आधा भाग कुछ दूर तक तो मेरे साथ–साथ आकर्षित होता रहा। फिर वह मेरे पीछे–पीछे रहने लगा। जैसे जल में दो वस्तुएँ गिर पड़े। एक–दूसरे से कुछ भारी हों तो भारी वस्तु गिरने में आगे निकल जाती है। इसी प्रकार मेरे दो भागों से हुआ। अपने दूसरे भाग से कुछ भारी सिद्ध हुआ और द्रुत गति से एक ओर आने लगा। दूसरा अंश पीछे रह गया। कुछ ही काल में हम एक–दूसरे से अलग हो गये।

''मैं इस पृथ्वी के वायुमंडल में पहुँच गया। उससे पहले मेरी आँखें नहीं थीं, परन्तु मैं सब कुछ देखता था। मेरे कान नहीं थे, इस पर भी मैं सब प्रकार के शब्द सुनता था। मेरी त्वचा नहीं थी, परन्तु मैं सर्दी–गर्मी अनुभव करता था। परन्तु पृथ्वी के वायुमण्डल में आते ही वह मेरी नैसर्गिक देखने, सुनने, छूने इत्यादि की सामर्थ्य कम होने लगी। इस पर भी मैं पृथ्वी की ओर आता गया। फिर एक समय मेरी देखने, सुनने इत्यादि की सब सामर्थ्य विलुप्त हो गई। मेरा अनुभव, मेरे ज्ञान की शक्ति भी निःशेष होने लगी। एक प्रकार से मैं मूर्छित हो गया। तदनन्तर मुझको चेतना हुई और मैं गुजराँवाला में हकीम साहब की पत्नी सदारानी के गर्भ में बन्दी था। इस पर भी चेतना ऐसी थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि मुझे कष्ट नहीं था, परन्तु एक बन्धन–सा था। मेरा जन्म हुआ। बन्धन कुछ ढीला हुआ और मुझे मेरा भूत स्मरण आने लगा।

"मैं सदारानी से बहुत स्नेह रखता था। इस कारण उसको कभी–कभी अपने भूतकाल के जीवन की बातें बताया करता था और वह मुझे पागल कहा करती थी। यद्यपि अपने पिता हकीम साहब को मैंने अपने मन की बात कभी नहीं बताई थी। इस पर भी वे मुझे पागल ही मानते थे। एकाएक सदारानी का शरीर छूटा और मैंने उसकी आत्मा को शरीर से निकलते देखा, तो मुझे उस समय की बातें स्मरण आने लगीं, जब मैं अन्तरिक्ष में भ्रमण करता था और असंख्य आत्माओं को देखता था और उनसे बातें करता था। अब सदारानी के आत्मा को मैं देख रहा था, परन्तु मैं उससे कुछ कह नहीं सका। वह शरीर से निकल हकीम साहब के मकान के सामने मकान की मुंडेर पर जा बैठी। कुछ समय तक वह वहाँ बैठी अपने सगे–सम्बन्धियों को रोते–धोते देखती रही। फिर वहाँ से ऐसे उड़ गई जैसे कोई पक्षी उड़कर आकाश में चला जाता है।

"मेरे पिता मुझसे प्यार नहीं करते थे। इससे मैं भी घर से विरक्त रहता था। जब पिता ने दूसरा विवाह किया तब तो मेरा सम्बन्ध घर से और भी ढीला पड़ गया।

"एक दिन मैं अकारण रेल के स्टेशन पर घूम रहा था कि भरतराम से भेंट हो गई। उससे बहुत बातें हुईं तो हम मित्र हो गये। मेरा घर पर चित्त लगता नहीं था। इस कारण मैं रेल के स्टेशन पर दिल बहलाने जा पहुँचता था। वहाँ भरतराम से मेल–मुलाकात बढ़ने लगी।

"भरतराम का विवाह हुआ तो वह उदास रहने लगा। मुझे उसकी उदासी का कारण विदित नहीं था। विवाह हुए छः मास हुए थे कि भरतराम की मृत्यु हो गई। इसके अनन्तर उसकी पत्नी ने मुझसे विवाह करने का यत्न किया। मुझको उस पर दया आ गई थी। इस पर भी मैं उससे विवाह करने के लिए तैयार नहीं हुआ। यह मुझमें उसके प्रति दया उत्पन्न होने के कारण ही था कि मैंने उससे दो वर्ष उपरान्त विवाह का वचन दिया था।

"उसके लौटने के पूर्व ही मेरा शरीर छूट गया। इस पर भी मैं अन्तरिक्ष में नहीं जा सकता। अभी भी मुझे ऐसा अनुभव हुआ, जैसे किसी जल के गिलास में मिट्टी के कण नीचे पेंदे में बैठ जाते हैं। वैसे मैं भी एक पेड़ की डाल पर बैठ गया था।

"एक दिन हवा का झोंका आया और मैं वहाँ से उड़कर पुनः मूर्छित–सा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माँ सरस्वती के पेट में पहुँच गया। मुझको वहाँ पर भी अपनी पूर्ण यात्रा का स्मरण था। मेरा जन्म हुआ और फिर वही प्रक्रिया आरम्भ हुई जो रामदयाल के शरीर में हुई थी। मैं जब माँ को अपने जन्म से पूर्व की बातें बताता था, तो वह मेरी पीठ पर प्यार देकर कहती थी कि ये बातें मुझे किसी को नहीं बतानी चाहिएँ। मैं जब कहता, माँ! यह सब ठीक है। वह कहती, मुझे विश्वास है, परन्तु ये बातें बताने की नहीं, मन में रखने की हैं।

"सौभाग्य से आप मिल गये। आप मुझको चुप रहने के स्थान कहने में प्रोत्साहन देने लगे और मैं दिन–प्रतिदिन अपने भूतकाल की बातें स्मरण करने लगा। मुझे लक्ष्मी की माँ भोली सदारानी ही समझ में आने लगी। मुझको लक्ष्मी अपना ही खोया हुआ अंश दिखाई देने लगा।

"परन्तु चाचा जी! हम दोनों अपने–अपने अदृश्यों से बँधे हुए अपने–अपने मार्ग पर जा रहे हैं। अन्तर यह है कि मैं जानता हूँ और वह नहीं जानती।

"तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ.....।"

: 6 :

आज जगन्नाथ ने अपनी पूर्व कथा इतनी स्पष्टता से वर्णन की जितनी उससे पहले कभी नहीं की थी। राधा, शिवराम और इड्डा भी मन्त्र–मुग्ध उसके कथन को सुनते रहे। इस समय रात के साढे–दस बज रहे थे। सबका ध्यान भंग हुआ टेलीफोन की घंटी बजने से। इड्डा ने फोन का चोगा उठाया तो सुनकर बोली, "विष्णु अपनी माँ के विषय में पूछ रहा है?"

राधा ने उठकर टेलीफोन सुना तो बोली, "उन सबसे कह दो कि वे चले जायें। कल प्रातःकाल ही वे पण्डितजी से मिल सकेंगे। इस समय उनको अवकाश नहीं है।"

राधा ने टेलीफोन बन्द कर दिया। सब राधा की ओर देखने लगे तो उसने बताया, "हिन्दू–महासभा और कांग्रेस, दोनों के लोग विष्णु के पिता से मिलने के लिए आये थे। विष्णु ने कहा था कि आप शीघ्र ही लौटने वाले हैं। बस वे वहाँ बैठ गये। इसी कारण विष्णु पूछ रहा था कि आप कब तक लौटने वाले हैं?"

"और राधा! तुमने उनको भगा दिया है?"

"जी।"

"और झूठ बोलकर?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यथार्थ में मैंने कुछ भी झूठ बात नहीं कही। आपको उनसे मिलने के लिए अवकाश है क्या? अब तो सोने का समय है न?"

इस पर सब हँसने लगे। शिवराम उठा और बोला, "तो अभी सोने को चलें क्या?"

"कुछ देर तक ठहरिये। उन लोगों को जा लेने दीजिये। नहीं तो रात के बारह बज जायेंगे। रात के समय, दिन–भर काम करने से थके हुए मस्तिष्क के साथ कोई गलत वचन दे बैठे तो जीवन–भर का झंझट गले पड़ जायगा।"

शिवराम पुनः बैठ गया। इड्डा ने पूछ लिया, "यदि संसदीय प्रजातन्त्र गलत पद्धति है तो इंग्लैंड में यह सफल क्यों हो रही है?"

शिवराम ने कह दिया, "इड्डा रानी! यह संसदीय प्रणाली में अथवा किसी भी प्रणाली में, दोष नहीं। दोष है मनुष्य के स्वभाव में। स्वभाव तीन प्रकार का माना है। सात्विक, राजसी और तामसी। मनुष्य में इन तीनों का संतुलन रहे तो सुख और शान्ति रहती है। इसी प्रकार इस स्वभाव का सन्तुलन जातियों में भी आवश्यक है। यह सन्तुलन रहता नहीं। कुछ बाह्य कारणों से न तो यह व्यक्ति में रहता है न ही जातियों में। इस पर भी जो व्यक्ति अथवा जो जाति इस बिगड़े सन्तुलन को शीघ्रातिशीघ्र स्थापित करने में सफल होती है, वह व्यक्ति अथवा वह जाति सफल होती है। इंग्लैंड में यह गुण है कि जब–जब भी इसमें इन तीन प्रकार के स्वभावों में सन्तुलन टूटता है तो वह उसको पुनः बनाने में सफल होता रहता है।"

इस पर जगन्नाथ ने कह दिया, "चाचा जी! आप एक बात विस्मरण कर रहे हैं। आप जातीय स्वभाव की तुलना कर रहे हैं राज्य प्रणाली से। अंग्रेज जाति में यह सन्तुलन तो है। कभी बिगड़ जाता है तो इस जाति में यह गुण है कि वह इस सन्तुलन को शीघ्र ठीक कर लेते हैं, परन्तु इससे उनकी राज्य–प्रणाली श्रेष्ठ है, कैसे सिद्ध हो गई। देखिये, प्रजातन्त्र में वयस्क मतदान की प्रथा सबसे अधिक दोषयुक्त है। जब से इंग्लैंड में इसका चलन हुआ है तब से इंग्लैंड में ह्रास ही हुआ है। यह ठीक है कि पहले इंग्लैंड की पार्लियामेंट राजसी और तामसी स्वभाव वालों के अधीन थी। परिणाम यह हुआ था कि ब्रिटिश–साम्राज्य फैला, परन्तु न तो उसके उपनिवेशों में सुख और शान्ति प्राप्त हुई, न ही देश में सुख और शान्ति की सृष्टि हो सकी। देश के कुछ लोग असीम धन–सम्पद् और सुख प्रभुता प्राप्त कर गये। अधिकांश निर्धनता, कष्ट और विवशता की स्थिति में पड़े रहे। इसका प्रथम परिणाम हुआ, अमेरिका का स्वतन्त्र होना। द्वितीय परिणाम हुआ कनाडा, आस्ट्रेलिया,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अफ्रीका इत्यादि उपनिवेशों का स्वतन्त्रता प्राप्त करना। देश में कार्लमार्क्स और एंजिल्स धर्मविहीन विभ्रान्तों का प्रादुर्भाव। इधर हिन्दुस्तान भी स्वतन्त्र हो रहा है और इसके स्वतन्त्र होते ही ब्रिटिश साम्राज्य एक छोटा–सा द्वीप ही रह जायगा।

"वयस्क मतदान के उपरांत भी राज्य सात्विक और तामसी स्वभाव वालों के हाथ में है। तामसी स्वभाव का बल अधिक है। सात्विक स्वभाव शिथिल हो रहा है। परन्तु राजसी स्वभाव का नितान्त अभाव है। इससे जो भयंकर परिणाम होने वाले हैं, भविष्य के गर्म में छिपे हैं? यह सम्भव है कि अन्तिम परिणामों तक पहुँचने से पहले अंग्रेज का जातीय स्वभाव करवट ले और पुनः सात्विक तथा तामसी स्वभाव के साथ राजसी स्वभाव का भी समावेश हो जाए और देश नष्ट होता–होता बच जाये। इस समय तो इंग्लैड नीचे–ही–नीचे जा रहा है।

"यह पतन संसदीय प्रणाली के कारण है। इस प्रणाली में एक सन्तुलित मन्त्रि–मण्डल एवं सन्तुलित स्वभाव का सत्ताधीश दल निर्वाचित हो सकेगा, प्रायः असम्भव है।"

इड़डा ने बात समझते हुए कह दिया, "यह तो ठीक है कि इस समय हमारे साधु–स्वभाव नेतागण 'लीग ऑफ नेशन्स' को जीवित रखने के लिए अपने को शिथिल करते जा रहे हैं। यह कुछ ऐसी बात है जैसे कोई रोगी रोग से छुट्टी पाने के लिए लंघन करने लगे। इन लंघनों में एक सीमा तक रोग दबता है, परन्तु उससे अधिक रोगी का शरीर दुर्बल हो जाता है और वह स्वयं रोग का विरोध करने के योग्य भी नहीं रहता।

"लीग ऑफ नेशन्स' का जन्म तो सात्विक स्वमाव वालो! के प्रयत्नों का फल है। परन्तु इसको चलाने वाले तामसी स्वभाव के व्यक्ति हैं। इसी प्रकार देश में तामसी स्वभाव वालों का बाहुल्य होने के कारण उन सात्विक स्वभाव वालों के शुभ कर्मों का मलियामेट किया जा रहा है। अमरीका ने यही कुछ विलसन के साथ किया। वही कुछ फ्रांस और इंग्लैंड में हुआ।"

"होना यह चाहिए था कि इन सात्विक विचार वालों के सहयोग के लिए राजसी स्वभाव वाले लोग होने चाहिए थे। यह राजसी स्वभाव ही है जो एक ओर सात्विक को सीमा से अधिक नरम होने नहीं देता और दूसरी ओर तामसी स्वभाव वालों को नियन्त्रण में रख दुष्टता करने से रोकता है। संसदीय प्रजातन्त्र इस प्रकार का सन्तुलन रखने में सशक्त नहीं है।"

"परन्तु जगन्नाथ!" शिवराम का प्रश्न था, "होना क्या चाहिए?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"होना यह चाहिए कि जातीय स्वभाव ऐसा बन जाए कि जाति में तीनों प्रकार के स्वभाव का सन्तुलन बना रहे। व्यक्ति तो एक स्वभाव प्रधान होता है। जातियों के अपने राज्य–कार्य में तीनों प्रकार के स्वभाव वालों को अपना–अपना उचित स्थान मिलना चाहिए। उसी को धर्मयुक्त राज्य कहते हैं। जाति में तीनों प्रकार के स्वभाव वाले लोग साहित्यकार, शास्त्री और शिक्षक–वर्ग ही निर्माण करते हैं और इनको ये सब निर्माण करते रहना चाहिए। शेष काम तो सरकार का है कि वह अपने में तीनों प्रकार के लोगों को सम्मिलित करती रहे। साथ ही उनमें सन्तुलन रख सके। वर्तमान संसदीय प्रणाली ऐसा करने में सफल नहीं हो रही।

"निर्वाचन के समय प्रत्याशी ऐसे–ऐसे आकर्षक झूठ बोलते हैं जिनको वे अपने हृदय से भी असत्य मानते हैं। ऐसी छलना तो तामसी स्वभाव वाले ही कर सकते हैं। छल–कपट, असत्य भाषण, रिश्वत, हत्या, सब कार्य तामसी प्रकृति वालों के हैं और ऐसा करने वाले ही सफल होते हैं। परिणाम–स्वरूप तामसी स्वभाव वाले ही वयस्क मतदान में बहुमत प्राप्त कर लेते हैं। सात्विक और राजसी स्वभाव वाले प्रायः वयस्क मतदान में असफल होते हैं।"

जब ग्यारह बजे तो शिवराम और राधा अपने घर को लौट गए।

: 7 :

सुदर्शनलाल 'सैसिल' होटल में चाय पर जाने लगा तो उसने देखा कि लक्ष्मी अपने बढ़िया पहरावे में, भूषण और श्रृंगार से युक्त हो चलने को तैयार है। वह कहीं बाहर से आया था। जब उसने अपनी पत्नी को इस तरह सज–धज के साथ तैयार देखा तो उसके मन में जगन्नाथ के विषय में सन्देह पुनः फूट पड़ा। उसने कुछ विक्षुब्ध होकर पूछ लिया, "बहुत सज–धज कर चली हो?"

"जी।"

"क्या प्रयोजन है इसका?"

"मैं अपनी वर्तमान अवस्था में निस्तेज हो रही हूँ। इस अवस्था को छुपा कर रखने की आवश्यकता अनुभव हुई है।"

"यही तो पूछ रहा हूँ कि किसलिए?"

"यह इसलिए कि वह गोरी लड़की मुझ पर बाजी न ले सके।"

"उसका तुमसे क्या सम्बन्ध हैं?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मुझसे तो नहीं। परन्तु आपसे तो है।"

"मुझसे? भला मेरा उससे क्या सम्बन्ध है?"

"जो एक सुन्दर लड़की का कामी पुरुष के मन से हो सकता है।"

"तो तुमको में कामी प्रतीत होता हूँ?"

"आज की चाय के आयोजन से तो मुझे इसके अतिरिक्त अन्य कोई कारण ही प्रतीत नहीं होता।"

"बहुत बदतमीज हो गई हो लक्ष्मी!"

"मैंने अपने मन की बात ही आपको बताई है।"

"और मैं तुमको जगन्नाथ की ओर आकर्षित हो रहा अनुभव करता हूँ। तुम्हारी इस सजधज में मुझे यही प्रयोजन समझ में आ रहा है। और सुनो, मैं तुमसे अपने विवाह को भूल समझने लगा हूँ। तुम उस भिखमंगे के मोह में फँसी थीं। मेरे धन का भोग करने के लिए तुम मेरे गले में पड़ गईं और अब फिर तुम्हें उधर की लालसा उत्पन्न हो रही है।"

"मेरे मन में कोई ऐसी बात नहीं है। यह आपके मन का पाप है जो मुझ पर लांछन लगाने लगे हैं।"

"तो मैं पापी हूँ?" सुदर्शनलाल को क्रोध चढ़ आया था। उसने अपने पूरे बल से लक्ष्मी के मुख पर चपत लगा दी। लक्ष्मी को चक्कर आ गया और सब कुछ उसकी आँखों के सामने घूमने लगा। वह दोनों हाथों से सिर को पकड़ पुनः पलंग पर बैठ गई।

लक्ष्मी की आँखों में आँसू भर आये थे। इस समय सुदर्शनलाल ने घड़ी में समय देखा, साढ़े–चार बज रहे थे।

"अच्छा।" उसने कहा, "अब चलो। शेष बात वहाँ से लौटकर कर लेंगे।"

"मैं नहीं जा रही।" लक्ष्मी ने आँखें पोंछते हुए कहा।

"तुमको चलना पड़ेगा। मैं जगन्नाथ को दिखाना चाहता हूँ कि तुम किस प्रकार उसके समक्ष बन–ठन कर और किस प्रयोजन से आई हो।"

"मैं नहीं जा रही। मैं आपकी दासी नहीं हूँ।"

सुदर्शनलाल इतनी दूर तक जाना नहीं चाहता था, परन्तु वह उसी दिन सट्टे के काम में दस हजार से अधिक हानि उठाकर आया था और इस हानि ने उसके मस्तिष्क में अस्थिरता उत्पन्न कर रखी थी। इस मानसिक अवस्था में वह अपनी पत्नी की अवहेलना सहन नहीं कर सका। उसने कह दिया, "दासी नहीं तो क्या हो?"

"मैं तो पत्नी बनाकर यहाँ लाई गई थी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पत्नी तो तुम किसी अन्य की पहले ही बन चुकी थी।"

"किसकी?"

"जगन्नाथ की। और किसकी?"

"यह सब झूठ है।"

"तो मैं कामी हूँ, पापी हूँ, और झूठा हूँ। देखो लक्ष्मी, बस हद हो गई है। निकल जाओ मेरे घर से। समझ लो कि तुम्हारा इस घर से अन्न–पानी समाप्त हो गया है। चली जाओ, यहाँ से।"

इतना कह सुदर्शनलाल मकान से बाहर निकला और मोटर में सवार हो सैसिल होटल में चला गया।

लाल मोहन दफ्तर में बैठा था। सैसिल में चाय का समय हो गया समझ, वह अपने मालिक को चाय का स्मरण कराने आया था और लक्ष्मी के कमरे में उक्त तकरार सुन द्वार के बाहर ही खड़ा रह गया। सुदर्शनलाल को बाहर आते देख वह पुनः दफ्तर में आ गया। सुदर्शनलाल गया तो वह उठकर देखने आया कि लक्ष्मी क्या करने वाली है।

लक्ष्मी ने इस समय तक अपने मन में एक संकल्प बना लिया था। वह उसी प्रकार, जैसे थी, वहाँ से अपनी माँ के घर चली जाना चाहती थी। एक बात उसने की। वह गुसलखाने में गई और मुख धो आँखें पोंछ आई थी। इस आँसू पोंछने से पाउडर, रूज, लिपस्टिक इत्यादि भी साफ हो गए थे।

जब वह अपने कमरे से निकली तो बाहर लाल मोहन खड़ा था। उसने लक्ष्मी को घर के द्वार की ओर जाते देखा तो कहा, "ताँगा ला दूँ। पैदल जाने में तो कष्ट होगा।"

लक्ष्मी ने लाल मोहन के मुख पर देखा तो उसने पुनः कह दिया, "मैं समझता हूँ कि आप अपने वस्त्रादि तो ले जाइये। न जाने कब तक घर से बाहर रहना पड़े।"

"तो तुम जानते हो कि मैं कहाँ जा रही हूँ?"

"जी! मैंने सब सुना है। मेरी राय मानिये। अपना सब कुछ ले जाइये! बाबू आपको वापस लाने को तैयार नहीं होंगे।"

लक्ष्मी अनिश्चित–मन खड़ी थी। लाल मोहन ने आगे कह दिया, "आप सामान इकट्ठा कर लीजिए और मैं चौंक से ताँगा ले आता हूँ।"

लाल मोहन् चला गया। लक्ष्मी को लाल मोहन की बात ठीक ही प्रतीत हुई। इस पर भी वह कुछ अधिक सामान नहीं ले जा सकी। उसने नकदी, भूषण और तीन–चार जोड़ी पोशाक की जल्दी–जल्दी एक सूटकेस में रख लीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और ताला लगा तैयार हो गई।

ताँगा आया तो वह उसमें सवार हो गई। जब ताँगा चलने लगा तो लाल मोहन ने कह दिया, "इसको आप एक रुपया दे दीजियेगा।"

लक्ष्मी विस्मय कर रही थी कि लाल मोहन उसके मन की बात कैसे जान गया है। परन्तु कुछ अधिक पूछने का अवसर नहीं था। उसने तांगे वाले को कह दिया, चलो।

भोली तो लक्ष्मी की कथा सुन मूढ़ हो बैठी रह गई। उसने संतराम के लड़के को दुकान पर भेज लक्ष्मी के पिता को बुला लिया। वह आया तो उसने यही राय दी कि मास्टर शिवराम से राय करनी चाहिए।

शिवराम कोठी में जाकर रहने लगा था। इस पर भी उसने मुहल्ले वालों से मेल–जोल रखा हुआ था और जो कुछ उससे बन पड़ता था, दूसरों की सहायता करता रहता था। लक्ष्मी के माता–पिता में तो उसकी विशेष रुचि थी। जगन्नाथ को वह एक विशेष व्यक्ति मानता था जो कहता था कि भोली उसकी पहले जन्म की माँ है और लक्ष्मी उसके आत्मा का अंश ही है। उसको जगन्नाथ के इस कथन पर उसकी अनेकों अन्य बातों की भाँति विश्वास था और वह एक बुद्धिशील पढ़ा–लिखा विद्वान् होने के कारण इस परिणाम की गति विधि जानने में विशेष रुचि रखता था।

रामनाथ को भी शिवराम से उचित राय मिलने की पूर्ण आशा थी। इस कारण लक्ष्मी और उसकी माता को लेकर वह शिवराम की कोठी पर जा पहुँचा। शिवराम ने जब पूर्ण बात सुनी तो वह उनको लेकर जगन्नाथ के घर जा पहुँचा। उसका विचार था कि यदि चाय आधा घण्टा भी चली और जगन्नाथ तथा इड्डा वहाँ से ताँगे में आये तो अभी वे कोठी पर नहीं पहुँचे होंगे। परन्तु उन सबके पहुँचने से पूर्व ही जगन्नाथ इड्डा को छोड़कर दुकान पर जा चुका था।

इड्डा ने 'सैसिल' होटल में जो कुछ हुआ था, सब बता दिया। सब वहाँ बैठ जगन्नाथ की प्रतीक्षा करते रहे थे। जगन्नाथ आया तो उसने अपनी सम्मति दे दी कि लक्ष्मी कुछ भी न कर धैर्य से माँ के घर में रहे। प्रसव के पश्चात् इस बात पर विचार करने का समय होगा कि क्या करना चाहिए।

भोली को जगन्नाथ की बात पसन्द आई और वह लक्ष्मी को लेकर अपने घर लौट गई।

अगले दिन लक्ष्मी स्नानादि से निवृत्त हो अल्पाहार ले रही थी कि लाल मोहन ने नीचे का द्वार खटखटाया। लक्ष्मी ने ऊपर से झाँक कर देखा तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाल मोहन ने नीचे से नमस्ते कर दी।

''कुछ काम है भैया?'' लक्ष्मी ने पूछा।

''हाँ बहिन जी।''

''तो ठहरो, मैं आ रही हूँ।''

वह नीचे आई। भोली उसके साथ थी। उन्होंने लाल मोहन को बैठाया और चाय–पानी पूछ लिया।

''नहीं। कुछ नहीं चाहिए। मैं अपने मन से ही आपको एक बात बताने आया हूँ। मेरे मन में आपके साथ उत्पन्न हो रही सहानुभूति ही इसमें कारण है।

''कल आपके वहाँ से चले आने के उपरान्त इड्डा नाथ का टेलीफोन आया था। मैंने जब उनको बताया कि आप अपनी माँ के घर में हैं तो उनको विस्मय हुआ था। उनके बोलने के लहजे से मैं यह समझ सका हूँ।''

''पीछे मेम्बर साहब घर पर आये और मुझसे यह जान कि आप ताँगे में सवार हो चली गई हैं, मुझसे पूछने लगे कि क्या मैं जानता हूँ कि आप कहाँ गई होंगी। मैंने उनको बता दिया था कि आप यहाँ आई हैं। उन्होंने यह भी पूछा था कि आप क्या–क्या ले गई हैं। मैंने बताया है कि एक छोटा–सा सूटकेस साथ था।''

''इसके अनन्तर वे अपना सेफ खोल उसमें की वस्तुएँ देखते रहे थे। प्रत्यक्ष रूप में उनको संतोष हुआ दिखाई देता था। रात को कुछ मित्रों से आपके विषय में विचार–विनिमय होता रहा है। उस विचार का परिणाम है कि यह पत्र इड्डा के नाम पर टाइप कर दस्ती देने के लिए मैं ले जा रहा हूँ।''

''यदि चाहें तो मैं आपको बता सकता हूँ कि इस पत्र में क्या लिखा है। मैंने ही इसको टाइप किया है।''

''साथ ही मेरी सम्मति है कि आप इड्डा जी से मिल लें। मुझको विश्वास है कि वह आपको यह पत्र दे देंगी। इससे आपका बहुत काम निकलने वाला है। मैं यह विश्वास से कह सकता हूँ।'

लक्ष्मी सुनती रही। उसने कुछ नहीं बताया। वह मन में निर्णय नहीं कर सकी थी कि लाल मोहन उससे वास्तविक सहानुभूति रखता है अथवा उस पर जासूसी ही कर रहा है। इस कारण उसने बताया नहीं कि वह इड्डा से पिछली रात मिल चुकी है। उसने यह भी नहीं बताया कि इड्डा पर वह उससे अधिक विश्वास रखती है।

उसने केवल एक दीर्घ श्वास लिया और कह दिया, ''भैया, बहुत धन्यवाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। मैं इड्डा से मिलने का यत्न करूँगी।''

इस पर लाल मोहन खड़ा हो गया। भोली और लक्ष्मी भी खड़ी हुई तो लाल मोहन ने कह दिया, ''कदाचित् आप नहीं जानती कि मैं कौन हूँ। मैं जालन्धर का एक वकील हूँ। किस्मत के फेर से असहयोग आन्दोलन के उपरान्त लाहौर में प्रेक्टिस करने चला आया था। सन् तेईस के निर्वाचनों में मैंने सुदर्शनलाल जी की बहुत सहायता की थी। इस बार सन् छब्बीस में वे कांग्रेस के टिकट के बिना खड़े हो गए। कांग्रेस ने विरोध किया और मुझको ही उनके विरुद्ध खड़ा कर दिया। तीन साल में मैंने अपनी प्रेक्टिस से कुछ रुपया जमा किया था और मूर्ख बन सुदर्शन जी के विरुद्ध खड़ा हो गया। कांग्रेस का प्रभाव तो क्षीण हो चुका था और मैं मुकाबले में धन व्यय करने के लिए विवश हो गया। जो कुछ अपने पास था, उससे ऊपर दस हजार कर्ज लेकर भी व्यय किया और मेरी जमानत जब्त हुई। मैं बिल्कुल तबाह हो चुका था। उस समय सुदर्शन जी ने दया करके मुझे दो सौ रुपये महीने पर नौकर रख लिया और साथ ही ऋण उतारने में मेरी सहायता कर दी।

''वैसे तो अब मैं पहले से अच्छी अवस्था में हूँ परन्तु अभी स्वतन्त्र रूप में प्रेक्टिस नहीं कर सकता। मैं अपने कानूनी ज्ञान से ही कह रहा हूँ कि यह चिट्ठी आपके काम की ही है।''

''अच्छी बात है। मैं इड्डा से मिलने का यत्न करूँगी।''

लाल मोहन गया तो भोली ने कह दिया, ''यह तो बहुत ही बेईमान आदमी प्रतीत होता है।''

''भगवान् जाने कौन क्या है? माँ! हमें दूसरों पर फतवा देने के स्थान अपने विषय में ही विचार करना चाहिए। यही कारण है कि मैंने इसको कुछ भी बताने का यत्न नहीं किया।''

लक्ष्मी इड्डा के पास जा नहीं सकी। वह आशा करती थी कि जगन्नाथ उससे मिलने का यत्न करेगा। जब वह चार–पाँच दिन तक नहीं आया तो उसने भी लाल मोहन की बात को मन से निकालने का यत्न कर दिया। जब वह उसको भूलने का यत्न कर रही थी कि वह फिर उससे मिलने के लिए आ पहुँचा।

इस दिन वह रात के समय आया था। रामनाथ घर पर ही था। संतराम और कृपाराम भी घर पर ही थे। सब बैठक में बैठे थे। लाल मोहन परिवार को एकत्रित देख कुछ हिचकिचाहट अनुभव करने लगा। वह हाथ जोड़ नमस्कार कर वहाँ बैठ गया।

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लक्ष्मी समझ गई कि वह किसी प्रयोजन से आया है। अतः वह अपनी माँ को और लाल मोहन को एक दूसरे कमरे में लेकर चली गई। उसने पूछा, "हाँ भैया! अब क्या संदेश है?"

"आप इड्डा देवी से मिली हैं।"

"नहीं जा सकी। क्यों, क्या बात है?"

"उन दोनों में एक नियम से पत्र-व्यवहार चल रहा है। आज मुझे तीसरा पत्र दिया गया है। यह कल मैं प्रातःकाल उनको देने जाऊँगा। अब पत्र मुझसे नहीं लिखाये जाते। इस कारण मैं नहीं जानता कि उनमें क्या लिखा जा रहा है।"

"तो इसमें मैं क्या कर सकती हूँ। इस संसार में स्त्रियों की कमी नहीं। इड्डा न होती तो वे किसी अन्य को पत्र लिखते। इड्डा के लिए भी यदि हमारे बाबू न होते तो कोई और मिल जाता। कहाँ तक कोई किसी का पीछा करे।"

"मैं तो यह समझता हूँ कि यदि ये पत्र किसी प्रकार आपको मिल जाते तो आपको खर्च मिलने में सुभीता होता। यद्यपि मैं नहीं जानता कि इन दो दिनों में बाबू ने क्या-क्या लिखा है, परन्तु उनके पहले पत्र की शैली से मेरा अनुमान है कि बाबू आपसे बे-वफाई कर रहे हैं।"

लक्ष्मी ने कहा, "भैया, मैं तुम्हारी इस सूचना के लिए आभारी हूँ। परन्तु मैं सत्य हृदय से कहती हूँ कि मैं बाबू जी पर न किसी प्रकार का दावा करने का विचार रखती हूँ और ना ही मैं अपने लिए किसी प्रकार के खर्च की इच्छा करती हूँ। उनको मेरी ओर से किसी प्रकार की चिन्ता नहीं करनी चाहिए।"

लाल मोहन ने समझा कि लक्ष्मी उस पर सन्देह कर रही है कि वह सुदर्शनलाल की ओर से उसके मन के भाव जानने आया है। इस सन्देह का निवारण करने के लिए उसने कह दिया, "बाबू सुदर्शनलाल किसी प्रकार से भी आर्थिक कष्ट में नहीं हैं। वे आपका खर्च देने की क्षमता रखते हैं। केवल एक बात है कि आपको कष्ट देने के निमित्त ही खर्च देना नहीं चाहेंगे। ऐसे दुर्जन को सबक सिखाने के लिए मैंने सब आपसे कहा है।"

"ठीक है। परन्तु मेरा विचार उनसे किसी प्रकार का झगडा करने का नहीं है। वे वफाई करें या बेवफाई करें। यह उनके अपने विचार का विषय है।"

"देखो भैया! यदि तो आपका अपने मालिक के साथ विश्वासघात करने के अतिरिक्त कुछ काम हो तो आप यहाँ आ सकते हैं अन्यथा यहाँ आने की आवश्यकता नहीं। मैं, इड्डा और बाबूजी के बीच में किसी प्रकार से भी बाधा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं बनूँगी।''

''यदि कुछ और बात हो तो बताइये। जगमोहन की खबर तो आप लाते नहीं। मैं तो उसमें रुचि रखती हूँ।''

''जगमोहन अपनी दादी के पास भेज दिया गया है। वह शाही मुहल्ले वाले मकान में नहीं है। इस कारण उसके विषय में मैं कुछ जानता नहीं।''

''अच्छी बात है। अब आप जा सकते हैं।''

लाल मोहन इस डाँट से भौंचक्का हो वहाँ से चल दिया। जब वह चला गया तो भोली ने फिर कहा, ''मुझे यह अच्छा आदमी प्रतीत नहीं होता।''

''माँ! मैंने उसको यहाँ न आने के लिए कह दिया है। यह कार्य जो वह करने आता है, मुझे रुचिकर नहीं। इस कारण मैं उस कार्य के विषय में कुछ भी सुनना नहीं चाहती। मैंने उसको संकेत से बताया भी है कि मैं किस विषय पर बात सुनने की इच्छुक हूँ।''

परन्तु मैं तो कहती हूँ कि इस व्यक्ति से बातचीत करनी भी भय से रहित नहीं।''

''अच्छी बात। इसको यहाँ आने से मना कर दूँगी।''

: 8 :

आखिर कांग्रेस वालों ने शिवराम को प्रान्तीय कौन्सिल की सदस्यता का निर्वाचन लड़ने के लिए राजी कर लिया। कांग्रेस वालों का कहना था कि वह उत्तरी शहर के क्षेत्र से 'नामन–पत्र' भर दे, वे यत्न करेंगे कि वह बिना विरोध के निर्वाचित हो जाये और यदि किसी ने विरोध करने का यत्न मी किया तो उसको बिना कुछ अधिक खर्च किये पराजित किया जा सकेगा।

यद्यपि नामन–पत्र भरने की तिथि भी अभी घोषित नहीं हुई थी, परन्तु प्रत्याशी अभी से लंगर–लंगोट कसने लगे थे। शिवराम के विरोध में लाल मोहन एडवोकेट क्षेत्र में सभाएँ कर रहा था और विज्ञापन दे रहा था।

जिस दिन शिवराम ने कांग्रेस वालों को निर्वाचन लड़ने का वचन दिया था, उस दिन रात के समय वह राधा के साथ जगन्नाथ के घर इसी बात की सूचना देने चला गया। उसने कहा, ''जगन्नाथ, मैं निर्वाचन लड़ रहा हूँ। कल तक कांग्रेस यह घोषणा कर देगी कि मैं प्रत्याशी हूँ।''

''तो हिन्दू महासभा वाले आपके विरोध में प्रत्याशी खड़ा करेंगे?''

''मैंने उनसे कहा है कि वे ऐसा न करें। अभी तक तो वे मान रहे प्रतीत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होते हैं। मैंने उनसे स्पष्ट शब्दों में पूछ लिया था कि वे किस लिए मुझे अपने टिकट पर खड़ा करना चाहते हैं?''

''उनका कहना था कि वे मुझे पूर्ण हिन्दू मानते हैं। वैसे लाहौर के चोटी के विद्वानों में भी मेरी गिनती होती है। इस पर मैंने पूछा तो आप क्या चाहते हैं हिन्दू और चोटी का विद्वान् पराजित हो जाये अथवा विजयी हो?''

''इस पर वे बोले, हम तो आपके विजयी होकर कौन्सिल में जाने की कल्पना करते हैं। मैंने कहा, तो फिर मुझे विजयी होने के लिए उचित नीति का अवलम्बन करने दो। मैं कांग्रेस के टिकट पर विजयी होने की अधिक आशा करता हूँ।''

''वे बोले, इसमें कांग्रेस की विजय हो जायेगी। मैंने कहा, विजय होगी एक हिन्दू की। कांग्रेस का टिकट मिल जाने से मैं हिन्दू से अहिन्दू नहीं हो जाऊँगा।''

''इस पर वे निरुत्तर हो चले गये हैं। मैं यह विचार करता हूँ कि कांग्रेस दल में एक हिन्दू विचार का व्यक्ति निर्वाचित हो गया तो उनका हिन्दुओं से विरोध कम हो जाएगा।''

जगन्नाथ ने मुस्कराते हुए कहा, ''और नमक की खान में आप भी नमक हो गये तो।''

शिवराम ने पूछ लिया, ''तो क्या तुम लाला लाजपतराय को नमक हो गया अनुभव करते हो?''

''नमक नहीं, तो नमक–नुमा हो गया तो समझता ही हूँ।''

''क्या नमकीनपन देखा है उनमें?''

''वे आयु में शिक्षा में और अनुभव में मुझसे बड़े हैं। इस कारण मैं उनमें छिद्रान्वेषण करना नहीं चाहता। आप उनके साथ कार्य करेंगे तो जान जायेंगे।''

''देखो जगन्नाथ, कोई बात है तो बताओ। जिससे मैं यह बात करने का अपराध न करूँ।''

''समय आने पर बता दूँगा। मैं एक बात पूछता हूँ कि यदि शिक्षा–मंत्री शिक्षा–विभाग में मुसलमानों की रियायतन भर्ती करे तो आप क्या करेंगे?''

''इस राजनीति की बात में तो हम सदस्य हस्तक्षेप नहीं कर सकेंगे।''

''यह राजनीति की बात कैसे हो गई? यह तो सिद्धान्त की बात है। सिद्धान्त यह है कि शिक्षक योग्य और शुद्ध पवित्र–विचार के होने चाहिएँ। और यदि रियायत से अयोग्य और विकृत मानसिक अवस्था के लोग उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विभाग में अधिक संख्या में हो गये तो शिक्षा का स्तर गिरेगा।

"शिक्षा जैसे विभाग में कोई भी व्यक्ति अयोग्य और विकृत बुद्धि न हो। मुसलमानों में कदाचित् कोई ही ऐसा होगा जो निर्मल बुद्धि रखता हो। इस पर भी यदि परीक्षा, जैसी कैसी भी हो, उसमें बिना उत्तीर्ण हुए शिक्षक नियुक्त हो गये तो प्रान्त में अनर्थ हो जायेगा।"

"हाँ, स्तर को ऊंचा करने के लिए तो हम वचनबद्ध हैं।"

"परन्तु ये दो बातें तो परस्पर विरोधी हो गईं। रियायत का अर्थ ही यह होता है कि अयोग्य को नौकरी दी जाये। यह तो ठीक नहीं होगा। देखिये, कांग्रेस ने मुसलमानों को पृथक् प्रतिनिधित्व देकर यह स्वीकार कर लिया है कि मुसलमान कम–से–कम राजनीतिक विचार से हिन्दुओं से एक पृथक् समुदाय है। यदि यह है तो जहाँ मुसलमान मुसलमानों का निर्वाचन करें तो वहाँ हिन्दु, हिन्दु का निर्वाचन क्यों न करें? यदि हिन्दुओं का निर्वाचन हिन्दुओं ने ही करना है तो फिर हिन्दुओं को टिकट देने वाली संस्था कांग्रेस नहीं हो सकती। कांग्रेस में तो हिन्दू–मुसलमान, दोनों समुदायों के लोग हैं।

"इसी प्रकार 'हिन्दू–मुसलमान बंगाल ऐक्ट' के अनुसार मुसलमानों के लिए नौकरियों की संख्या निश्चित कर दी गई है। अब उसी के आधर पर दूसरे प्रान्तों में भी मुसलमानों के लिए नौकरियों का अनुपात निश्चय करने की मांग हो रही है। पंजाब में तो साँठ–गाँठ कर बिना हिन्दुओं से पूछे ही वह अनुपात बनाने का यत्न किया जा रहा है। कांग्रेस इसका विरोध नहीं कर रही। कारण स्पष्ट है। इनके नेता मुसलमानों से समझौता कर चुके हैं। अब आप कांग्रेस में जाकर इसका विरोध क्या और कैसे करेंगे?"

"मैं विरोध करूँगा।"

"आप कर नहीं सकेंगे।"

"जब मैं अपने को अशक्त पाऊँगा तो कांग्रेस को छोड़ दूँगा।"

"उसके टिकट पर निर्वाचित होकर पहले आपको कौंसिल छोड़नी पड़ेगी और पीछे ही कांग्रेस छोड़नी होगी।"

"मैं इसके लिए बाध्य नहीं होऊँगा।"

जगन्नाथ कहना तो चाहता था कि यह बेईमानी होगी, परन्तु वह शिवराम के लिए अपने मन में आदर करता था। अतः वह इतना कठोर शब्द कह नहीं सका। राधा भी देख रही थी कि वे तो आये थे निर्वाचन के कार्य की योजना बनाने और यहाँ पर बहस आरम्भ हो गई सिद्धान्त पर, साथ ही बहस में व्यक्तिगत व्यवहार भी आलोचना का विषय बन गया है। इससे तो द्वेष उत्पन्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो जाने की सम्भावना है। उसने तुरन्त बात बदल दी। उसने इड्डा से पूछ लिया, ''लक्ष्मी पुनः मिली है अथवा नहीं?''

इस प्रश्न पर इड्डा खिलखिलाकर हँस पड़ी। उसके हँसने से दूसरों का ध्यान उसकी ओर चला गया। राजनीति की बात बन्द हो गयी। इड्डा ने कह दिया, ''चाचा जी! लक्ष्मी का समाचार तो नहीं मिला, परन्तु अब सुदर्शनलाल का समाचार मिलने लगा है।''

''सुदर्शनलाल का! क्या समाचार मिलता है और कैसे मिलता है?''

''उनके पत्र आने लगे हैं। पत्र उनके प्राइवेट सेक्रेटरी लाल मोहन लेकर आते हैं। पत्रों का उत्तर भी वे ही ले जाते हैं।''

''तो तुमने उनसे पत्र–व्यवहार करने लगी हो?''

''जी।''

''क्या विषय होता है पत्र–व्यवहार का?''

''पहला पत्र तो आया था जिसमें मेरे सौन्दर्य, मेरी बुद्धि और मेरी उदारता की प्रशंसा की गई थी। उसने लिखा था कि वह मेरे इन गुणों से बहुत प्रभावित हुआ है। वह मुझसे सम्पर्क बनाकर लाभ उठाने की इच्छा करता है। इसी प्रयोजन से उसने स्वयं हमें चाय–पार्टी दी थी, परन्तु उस पार्टी से पहले लक्ष्मी के साथ एक दुर्घटना हो गई। इस कारण उसका चित्त स्थिर नहीं था और वह चाय–पार्टी में जीवन नहीं डाल सका।''

''उस पत्र में उसने यह इच्छा प्रकट की थी कि हम उससे सम्बन्धों का घनिष्ठ, करने के विषय में अपने विचार लिखें। मैंने मिस्टर नाथ से राय की और उनको गोल–मोल उत्तर दे दिया। मैंने यह नहीं बताया था कि हम लक्ष्मी से मिल चुके हैं और उस दुर्घटना की बात जानते हैं जो उसके साथ हुई है। मैंने यही लिखा था कि मानव–समाज का निर्माण ही व्यक्तियों के सम्बन्धों से हुआ है। दूसरों से मेलजोल मनुष्य का स्वभाव ही है। इससे भला कौन इन्कार कर सकता है! मिस्टर नाथ आजकल कुछ अधिक व्यस्त हैं। उनकी दुकान का वार्षिक लेखा–जोखा हो रहा है। इसमें दो–तीन सप्ताह लगने वाले हैं। तदनन्तर हम आपको और बहन लक्ष्मी को अपने घर पर दावत देंगे। इससे हम आशा करते हैं कि हमारे सम्बन्ध बढ़ेगें।''

''इसके पश्चात् उनके तीन–चार पत्र आ चुके हैं और उनमें वह अपनी आर्थिक अवस्था का वर्णन करता रहा है। उसका विचार यह है कि जब तक जीवन में कोई साँझा उद्देश्य अथवा कार्य न हो तब तक सम्बन्धों में घनिष्ठता उत्पन्न नहीं हो सकती। इसी कारण उसने अपनी आर्थिक एवं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजनीतिक स्थिति लिखी है जिससे इनमें वह हमारे साथ सहचारिता के लिए तैयार है।''

''इन पत्रों में लक्ष्मी के विषय में किसी प्रकार का उल्लेख नहीं था। हम भी उसके विषय में कुछ नहीं लिख रहे थे। परन्तु यह आँख–मिचौनी कुछ अधिक देर तक चल नहीं सकेगी।''

''अंतिम पत्र उनका नाथ जी के नाम आया है और उसमें मेरे विषय में भी विचार है। इसका हमने अभी उत्तर नहीं दिया। हम विचार करना चाहते हैं कि इस पत्र–व्यवहार में लक्ष्मी को किस प्रकार लाएँ।''

''मैं समझती हूँ कि लक्ष्मी से मिलना चाहिए और उनको एक भोज पर यहाँ एकत्रित कर लो।'' राधा ने अपनी सम्मत्ति दे दी।

''परन्तु उसने लक्ष्मी के विषय में तो अभी तक कुछ लिखा नहीं। हम उसको इस वार्तालाप में लाने के ढंग पर विचार कर रहे हैं।''

''यह तो एक सहज बात है। आगामी रविवार को अपने घर पर उसको पत्नी सहित निमन्त्रण दे दो। देखो, वह स्वीकार करता है या नहीं।''

''बात तो ठीक है।''

इस प्रकार निर्वाचनों पर आरम्भ हुई बात घर की बातों पर समाप्त हो गई। इस पर भी इड्डा ने इस योजना को चलाने से पूर्व लक्ष्मी से मिलना उचित समझा। राधा ने इसमें सहायक होना स्वीकार कर लिया। उसने कहा, ''मैं एक दिन जाऊँगी और लक्ष्मी को अपने घर ले आऊँगी और वहाँ उसके विचारों को जान, हम अपना कार्यक्रम बना सकते हैं।''

''चाची जी! आज मंगलवार है। रविवार को लंच का निमन्त्रण बृहस्पतिवार को चला जाना चाहिए। इस कारण यदि आप कल लक्ष्मी को ला सकें तब ही निमन्त्रण बृहस्पतिवार को भेजा जा सकता है।''

''तब तो मैं कल ही उसको यहाँ ले आऊँगी।''

अगले दिन लक्ष्मी राधा के साथ आई और मध्याह्न के भोजन के समय जगन्नाथ, इड्डा तथा शिवराम भी वहाँ पहुँच गए। खाना खाते समय लक्ष्मी ने लाल मोहन से हुई बातचीत बता दी। साथ ही उसने कहा, ''जब से मैंने उसको डाँटा है, वह पुनः अपने स्वामी की निन्दा करने वहाँ नहीं पहुँचा।''

''तो तुम बताओ।'' इड्डा ने पूछ लिया, ''यदि हम तुम्हारे पति को सपत्नीक निमन्त्रण भेजें तो तुम आना चाहोगी?''

''आप निमन्त्रण भेजिये। उनको यदि मुझे साथ लाना मंजूर हुआ तो वे मुझसे सुलह करने का यत्न करेंगे। आप अभी इतना कुछ तो करिये। तब जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिस्थिति होगी, उसके अनुसार कार्य किया जाएगा।''

जगन्नाथ की ओर से सुदर्शनलाल को रविवार के दिन लक्ष्मीदेवी सहित मध्याह्न के भोजन पर, निमन्त्रण भेज दिया गया। उसके उत्तर में पत्र आया। सुदर्शनलाल ने लिखा था– भोजन के समय मैं आपसे एक प्रस्ताव करने वाला हूँ। उसका लक्ष्मी से कोई सम्बन्ध नहीं। इस कारण मैं अकेला ही भोजन पर आऊँगा। लक्ष्मी उस विचार–विमर्श में बाधक ही होगी।

''साथ ही वह आजकल अपनी माँ के घर गई हुई है। कदाचित् उसकी वर्तमान अवस्था में उसका घर से बाहर निकल सकना सम्भव नहीं।''

बृहस्पतिवार को सुदर्शनलाल के पत्र पर विचार किया गया और यह निश्चय हुआ कि अभी लक्ष्मी और उसके, परस्पर सम्बन्धों के विषय में अपने ज्ञान का पता न दिया जाये। यह तो स्पष्ट ही था कि सुदर्शनलाल किसी योजना पर काम कर रहा है। जब तक उसकी योजना का सिर–पैर पता न चले, तब तक उससे कैसा व्यवहार किया जाये, निश्चय नहीं किया जा सकता।

राधा और शिवराम भी इस विचार–विनिमय के समय उपस्थित थे। इनका यह विचार था कि जब तब वह लक्ष्मी के विषय में बातचीत नही चलाता, तब तक हमें भी उसे बीच में नहीं लाना चाहिए। निमन्त्रण जगन्नाथ ने दिया था, इस कारण यदि यह लक्ष्मी को साथ नहीं ला रहा, तो इड्डा को भी इस खाने के समय उपस्थित रहने में कारण नहीं है और वह बहाना बना अनुपस्थित रह सकती है।

वह बहाना बना लिया गया। शनिवार सायंकाल की गाड़ी से राधा और इड्डा हरिद्वार गंगा–स्नान के लिए चली गईं। संयोग से उस दिन बैसाखी का पर्व था।

सुदर्शनलाल आया तो शिवराम भी जगन्नाथ के निमन्त्रण पर वहाँ उपस्थित था। अब तक आगामी निर्वाचनों में शिवराम के, पंजाब कौंसिल के लिए कांग्रेस टिकट पर खड़े होने की घोषणा कर दी गई थी।

सुदर्शनलाल ने औपचारिक आवभगत के उपरान्त पूछ लिया, ''इड्डा देवी दिखाई नहीं देतीं?''

जगन्नाथ ने उत्तर दिया, ''हाँ, वह राधा चाची के साथ हरिद्वार बैसाखी स्नान पर गई हुई हैं।''

''कब गई हैं?''

''कल सायंकाल और कदाचित् कल प्रातःकाल लौट आएँगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो जाने का कार्यक्रम पहले का बना हुआ था?"

"जी नहीं। यह तो कल एकाएक ही राधा जी के जाने के विचार पर बन गया। वे कहने लगीं, लक्ष्मी बहिन तो आ नहीं रही, इस कारण मेरा रहना आवश्यक भी नहीं और वह चल दी।"

"परन्तु मैं तो उनसे ही एक प्रस्ताव करने वाला था।"

"क्या?"

"मैंने लिखा था कि हम लोगों में परस्पर घनिष्ठता बढ़नी चाहिए। ऐसी मेरी इच्छा है।"

"मैं चाहता हूँ, कि इसमें मैं अपनी ओर से आपको सहयोग दूँ। मैं राजनीतिक क्षेत्र में कार्य करता हूँ। यदि इस ओर इड्डा देवी की रुचि हो तो मैं उनको विधान सभा की सदस्यता के लिए निर्वाचित होने में सहायता कर सकता हूँ। मैं शेयर मार्केट में रुचि रखता हूँ। यदि वे अपना रुपया इस क्षेत्र में लगाना चाहें तो मैं इसमें भी उनका पथ–प्रदर्शन कर सकता हूँ।"

"तो यह बात है? तब वे स्वयं यहाँ होतीं तो ठीक था। इस पर भी सामान्य रूप में मैं कह सकता हूँ कि इड्डा देवी इन दोनों ही कामों को पसन्द नहीं करेंगी। फिर मैं भी अपनी पत्नी को एक व्यवसायी जीव बनाना नहीं चाहता।"

"परन्तु क्या वह भी बनना नहीं चाहती?

"मेरी इस विषय पर उससे कभी बातचीत नहीं हुई। मैं कह नहीं सकता कि वह क्या चाहेगी। मैंने तो केवल उसके विषय में अपने मन के अनुमान ही बताये हैं।"

"तो इसका अभिप्राय है कि उससे मिल कर बात की जानी चाहिए। मुझे कुछ ऐसौ समझ आया था कि वह यूरोपियन सभ्यता में पली स्त्री स्वतन्त्र जीवन में विश्वास रखती होगी। इसी से मैं उसको सहायता देना चाहता था।"

जगन्नाथ ने कह दिया, "मेरा विचार है कि आप उसको अपनी पूर्ण योजना लिख कर बताएँ। इस विषय में अपने मन की प्रतिक्रिया तो वह स्वयं ही बतायेगी। केवल आपके एक भ्रम के विषय में मैं बताना चाहता हूँ कि वह बिना किसी व्यवसाय में लगे हुए भी पूर्णरूपेण स्वतन्त्र है।"

इस समय भोजन का समय हो गया और तीनों पुरुष उठ कर खाने के कमरे में चले गए।

भोजन करते हुए बात शिवराम के कांग्रेस टिकट पर खड़े होने पर चल पड़ी। यह बात भी सुदर्शनलाल ने ही आरम्भ की। उसने कहा, "एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हल्की–सी आवाज आ रही है कि मास्टर जी कांग्रेस की ओर से नगर के उत्तरी क्षेत्र से निर्वाचन लड़ रहे हैं?''

''हाँ। मेरी बातचीत कुछ कांग्रेसियों से हुई है। उनका मुझको इस निर्वाचन में कांग्रेस टिकट से लड़ने का निमन्त्रण है।''

''कौन हैं वे लोग?''

''पंजाब कांग्रेस कमेटी के प्रधान श्री सराजदीन हैं। उनके साथ डाक्टर सत्यपाल जी हैं। कुछ अन्य लोग भी हैं।''

''मैं समझता हूँ कि ये आपको कांग्रेस का टिकट दिलवा नहीं सकेंगे। यदि कहीं आपने किसी प्रकार ले–देकर टिकट ले भी लिया तो निर्वाचन में आपको धोखा देंगे।''

''यदि टिकट नहीं देंगे तो ठीक ही है। मैं कौंसिल का सदस्य बनने के लिए कुछ अधिक उत्सुक भी नहीं हूँ'' शिवराम ने कह दिया।

''आपकी उत्सुकता तो समय पर देखेंगे। यह राजनीति जुए का नशा है। जब कोई इसमें लग जाता है तो फिर वह इसको छोड़ नहीं सकता। मेरा विचार है कि या तो आप स्वतन्त्र रूप में खड़े हों अन्यथा लाला लाजपतराय के दल से खड़े हो जाएं। आज उनका सितारा तेज है। वे केन्द्रीय असेम्बली के लिए खड़े हो रहे हैं। आप लाहौर दक्षिण क्षेत्र से कौंसिल के लिए खड़े हो जाएँ। सफलता निश्चित है।''

''तो मैं लाला जी से बातचीत करूँगा।''

''मेरे साथ एक दिन चलिये। मैं सब कुछ निश्चय करा दूँगा।''

''तो आप भी इस विषय में रुचि रखते हैं?''

''म्यूनिसिपल कमेटी के चुनाव में मैंने कांग्रेस को पराजित किया था। इस कारण कांग्रेस के विरोधी क्षेत्रों में मेरा मान है।''

''तब तो आपसे सहायता ली जा सकती है।''

''हाँ, मैं आपकी सेवा के लिए तैयार हूँ। देखिये, मैं नगर के उत्तरी क्षेत्र से खड़ा होने का यत्न कर रहा हूँ। मैं कांग्रेस टिकट तो लूँगा नहीं। या तो स्वतन्त्र रूप से खड़ा हूँगा अन्यथा लालाजी के दल से खड़ा हूँगा।''

''यदि मैं लालाजी के दल से खड़ा न हुआ तो वह मेरे विरुद्ध किसी को खड़ा करने का विचार रखते हैं क्या?'' शिवराम ने पूछ लिया।

''एक प्रस्ताव उनके पास गया हुआ है। यह आपके विषय में सूचना मिलने से पहले की बात है। लाल मोहन वकील इस क्षेत्र से खड़ा होने का विचार रखता है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कौन है लालमोहन?"

"वही, जो कमेटी के निर्वाचनों में मेरे विरुद्ध खडा हुआ था और जिसकी जमानत जब्त हुई थी।"

"तो वह फिर निर्वाचन लड़ेगा?"

"हाँ। मैंने बताया है न कि यह जुए के समान है। हारा हुआ व्यक्ति तो और भी अधिक लालसा करने लगता है।"

"मैंने आज तक न मद्य का सेवन किया है और न जुआ खेला है। इस कारण मैं जानता नहीं कि मुझमें राजनीति के लिए नशा चढ़ सकेगा अथवा नहीं।"

खाना समाप्त हुआ। इस खाने पर भी सुदर्शनलाल को प्रसन्नता नहीं हुई। जो कुछ वह चाहता था, वह हो नहीं सका। एक बात वह समझता था कि वह 'सैसिल' होटल की चाय के समय से अपने उद्देश्य की पूर्ति की ओर कई पग बढ़ चुका है।

यद्यपि इस दिन के प्रयास से वह प्रसन्न नहीं था, परन्तु इससे असन्तुष्ट भी नहीं था।

इसके उपरान्त पुनः इड्डा से पत्र–व्यवहार आरम्भ हुआ। इड्डा ने उसके मुख्य प्रस्ताव का उत्तर लिखकर दे दिया था। उसने लिखा था, "मैं भी एक काम कर रही हूँ। यद्यपि संसार की दृष्टि में वह कार्य व्यवसाय नहीं कहाता, परन्तु है वह भी व्यवसाय ही।"

"व्यवसाय का अर्थ मैं यह समझती हूँ कि जिसमें किये गए पुरुषार्थ का फल मिलता है। इन व्यापक अर्थों में तो मनुष्य के प्रत्येक कार्य का फल मिलता है। करने वाला इच्छा करे अथवा न करे। किया कर्म व्यर्थ नहीं जाता। यही एक सिद्धान्त मैंने हिन्दुस्तान में आकर सीखा है। अतएव मैं जो कुछ कर रही हूँ, वह भी एक व्ययसाय ही है।"

"अपने लंदन के स्कूल में, जिसमें मैं पढ़ती रही हूँ मैंने पचास के लगभग छात्र–वृत्तियाँ दे रखी हैं। उसमें मैं अपनी आय का तीन–चौथाई भाग व्यय कर रही हूँ। ये छात्र–वृत्तियाँ कम आय वाले लोगों के बच्चों को दी जाती हैं। जितनी किसी बच्चे के माता–पिता की आय कम होती है उतनी ही बड़ी छात्र–वृत्ति उसको मिलती है।"

"मेरा यह व्यवसाय मुझको फल देगा। ऐसी मेरी धारणा है।"

इसके उत्तर में एक दिन बिना सूचना के सुदर्शनलाल तीन बजे के लगभग जगन्नाथ की कोठी पर आ गया। पहले तो इड्डा घबराई। कारण यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि लक्ष्मी उससे मिलने आई हुई थी। परन्तु पीछे उसने स्थिर हो बुराई का सामना करने का निश्चय कर लिया। वह लक्ष्मी को ड्राइंग–रूम में ही छोड़, सुदर्शनलाल के स्वागत के लिए कोठी के बरामदे में जा पहुँची। सुदर्शनलाल से हाथ मिला, उसको ड्राइंग–रूम में लाते हुए कहने लगी, "आपका आना तो बहुत ही समयोचित हुआ है। लक्ष्मी बहन आज मिलने के लिए आई हुई है।"

इस सूचना पर तो सुदर्शनलाल खड़ा हो इड्डा का मुख देखने लगा। इड्डा मुस्कराती हुई उसकी ओर देख रही थी। आखिर सुदर्शनलाल ने। आगे पग उठाया और कहा, "तब तो ठीक है। उसका सुख–समाचार भी मिल जायेगा।"

दोनों ड्राइंग–रूम में पहुँचे तो लक्ष्मी ने उठ कर हाथ जोड़ सुदर्शनलाल को अभिवादन किया, "यह तो मेरा अहोभाग्य है कि आज आपके अनायास ही दर्शन हो गये हैं। बताइये, ठीक तो हैं?" लक्ष्मी ने कहा।

"हाँ, मैं तो सब प्रकार से ठीक हूँ। तुम सुनाओ?"

"यह बोझा अभी एक मास तक और ढोना है। अभी तक तो इस मेहनत के कार्य से साहस नहीं छूटा। आशा है कि वह कार्य सुगमता से निभा सकूंगी।"

"तब तो ठीक है।"

"जगमोहन कैसा है?"

"उससे मिलने की इच्छा हो रही है?"

"कुछ विशेष नहीं। इच्छा–अनिच्छा कुछ भी नहीं। यह तो औपचारिक प्रश्न ही समझना चाहिए।"

"मेरे घर आने की भी इच्छा हो रही है अथवा नहीं?"

"कुछ विशेष नहीं।"

"ओह! तो यहाँ बहुत प्रसन्न हो?"

"यहाँ तो मैं आज ही हूँ। हाँ, जगन्नाथ जी कुछ दिन हुए माँ के घर आये थे और एक घण्टा–भर की बातचीत से आपके प्रति मेरे मन की घृणा निकाल गये हैं। जब आपसे घृणा नहीं तो मोह भी नहीं रहा। मोह नहीं तो भय भी नहीं रहा। अब आपसे सम्बन्ध केवल इसके कारण रह गया है। सो एक मास में यह सम्बन्ध भी छूट जायेगा।" लक्ष्मी ने अपने पेट के बच्चे की ओर संकेत कर दिया।

"इससे भी क्या सम्बन्ध है मेरा?"

"इसके शरीर निर्माण में आपका सहयोग है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मुझको सन्देह है।"

"सत्य? तब तो यह भी छुट्टी हुई। यद्यपि मुझको संदेह नहीं, परन्तु अपि अपना दावा इससे हटाते हैं तो लिखकर दे दें। तब तो मैं आपके साये से भी मुक्त हो जाऊँगी।"

"लिखकर दे सकता हूँ, परन्तु अपने मन की बात ही लिखूँगा। मेरे मन में यह विश्वास है कि यह बच्चा जगन्नाथ जी का है।" इतना कह सुदर्शनलाल ने अपने कथन की प्रतिक्रिया इड्डा के मुख पर देखने के लिए टेढ़ी दृष्टि से उसकी ओर देखा, परन्तु उसके विस्मय का ठिकाना नहीं रहा, जब इड्डा खिलखिलाकर हँस पड़ी। लक्ष्मी भी मुस्कराती हुई इड्डा को ओर देख रही थी।

सुदर्शनलाल ने विस्मय में पूछ लिया, "आप हँसी क्यों हैं?"

"मैं हँसी इस कारण हूँ कि आप अति उदार और दयालु प्राणी हैं। बच्चे पैदा कर दूसरों को बाँटना बहुत कम लोग कर सकते हैं।"

"नहीं इड्डा जी! यह बच्चा मेरा नहीं। इस कारण मैं इसके बाँट की उदारता प्रकट नहीं कर रहा। यह तो मेरी सतर्कता और जागरूकता का ही सूचक है।"

"कुछ भी हो। हैं आप दयालु ही। बच्चों का मिलना सौभाग्य की बात होती हे।"

"तो यह किसके पास जायेगा?"

"अभी तक तो," लक्ष्मी ने गम्भीर हो उत्तर दिया, "यही विचार था कि इसके पिता अर्थात आपको देकर मैं आपके ऋण से मुक्त हो जाऊँगी। यदि आप विश्वास से कहते हैं कि आप इसके पिता नहीं, तो विचार करूँगी कि किसको यह दूँ।"

"तो जगन्नाथ नहीं मानता क्या?"

"अभी उनसे इस दृष्टि से बात नहीं हुई। उस दिन तो वे यह समझाते रहे थे कि यह शरीर बन्धन है। इस बन्धन से छूटने का एक ही उपाय है। इससे भी सम्बन्धित सब क्रियाओं से तटस्थता ग्रहण करना। न मोह हो न घृणा, न लगन हो न द्वेष, न इच्छा हो न अनिच्छा।"

"सगे-सम्बन्धियों और मित्र-शत्रुओं से सब नाते इस शरीर के कारण हैं। इस कारंण शरीर बन्धन से मुक्ति इन सबसे निर्लिप्त व्यवहार रखने से ही सम्भव है।"

"मुझको उनकी बात में सार प्रतीत हुआ था। इसी कारण मैंने शरीर के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस अंग से जो एक मास में शरीर से पृथक् होने वाला है, अपने को पृथक् मान लिया हुआ हैं।''

''तो इसको नाली में फेंक दोगी?''

इस पर इड्डा ने कह दिया, ''इसकी क्या जरूरत है? नाली के बाहर अभी बहुत स्थान रिक्त है। यह इसके जन्म के उपरान्त विचार कर लेंगे।''

''ठीक है, जगन्नाथजी का कारोबार एक–दो बच्चों का बोझा सहन कर सकता है।''

''हाँ, वे भी यही समझेंगे।''

''परन्तु इड्डा जी! आपको यह कुछ अटपटा प्रतीत नहीं होगा।''

''मुझको भला वह बुरा क्यों लगेगा?''

''अपनी सौतन के पुत्र को पालना देखकर।''

''देखिये जी, मैं आपको अपने मन की बात बताती हूँ। मेरा बच्चों के साथ बहुत मोह है। इसमें कारण यह नहीं कि वे अपने पेट से पैदा हो रहे हैं अथवा किसी दूसरे के पेट से। इस मोह में कारण है कि वे बच्चे हैं मनुष्य जात हैं। साथ ही भावी समाज के अंग हैं। इस कारण मानवता के नाते और मानव समाज के नाते उनकी ठीक परवरिश में, उनके ठीक लालन–पालन में और उनकी ठीक शिक्षा में मेरी रुचि है। इसी कारण पचास से साठ बच्चों की छात्र–वृत्ति लंदन में देती हूँ। एक–दो को यहाँ भी दे सकती हूँ।''

''परन्तु आपको ईर्ष्या नहीं होती लक्ष्मी से?''

''ईर्ष्या तो मूर्खों को होती है और मैं अपने को उस श्रेणी में नहीं समझती।''

''तो अपने पति के दूसरी औरतों से सम्बन्ध से भी दुःख और ईर्ष्या नहीं होती क्या?''

''ईर्ष्या की बात तो मैंने बता दी है। मैं मूर्ख श्रेणी में हूँ नहीं। शेष रहा ऐसे पति से सम्बन्ध। वह तो मैं अपने हनि–लाभ का विचार कर ही निर्णय करती हूँ। एक स्त्री को अपने पति से मुख्य रूप में तीन बातें प्राप्त होती हैं। प्रथम है संरक्षण, दूसरा है यौन आवश्यकता की पूर्ति और तीसरी बात है आत्म–तुष्टि। इसमें संगत, सहवास, सहयोग, सहानुभूति और सहृदयता इत्यादि व्यवहार आते हैं। मैं समझतीं हूँ कि इन सब में मुझको अपने पति से सब कुछ प्राप्त है। इस कारण लक्ष्मी मेरी इन मुख्य बातों में बाधक प्रतीत होती नहीं। फिर मुझे चिन्ता क्या है?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: 10 :

सुदर्शनलाल ने एकाएक बात बदल कर कहा, "मैं तो आपसे पृथक् में बातें करने आया था।"

"आपके पत्र से तो पता चला था कि आप किसी व्यवसाय की बात करने वाले हैं। उसमें कुछ लुकाव–छुपाव की बात कैसे हो सकती है। न तो मिस्टर नाथ से न ही लक्ष्मी जी से।"

"परन्तु व्यवसाय तो सम्बन्धों को बढ़ाने के लिए ही था न। जब आप किसी व्यवसाय में भाग नहीं लेना चाहतीं तो फिर किसी अन्य ढंग से सम्बन्ध बढ़ाने पर विचार करना था।"

"एक व्यवसाय में तो यहाँ भी भाग लेने के लिए अवसर मिल रहा है। एक बच्चे के पालन–पोषण का काम आप दे रहे हैं। आप तो जानते हैं कि यह मेरा व्यवसाय है।"

"मैं कुछ दिन में कश्मीर भ्रमण के लिए जा रहा हूँ और मैं आपको अपने साथ चलने का निमंत्रण देने आया हूँ। दो मास का कार्यक्रम है। मैं समझता हूँ कि इतने में हमारे सम्बन्ध पर्याप्त घनिष्ठ हो जाएँगे।"

"मैं समझती हूँ कि मैं कश्मीर नहीं जा रही। इससे आपकी यह योजना तो विफल गई। कोई और ढंग सोचिए।" इड्डा हँस पड़ी।

"तो किसी अन्य पहाड़ी स्थान पर जा रही हैं?"

"नहीं, इस वर्ष कहीं भी जाने का विचार नहीं है।"

"यहाँ लाहौर में तो बहुत अधिक गर्मी हो जाती है।"

"मुझको उससे कोई कष्ट नहीं होता।"

"तो यहाँ पर मेल–मुलाकात का ही प्रबन्ध हो जाये।"

"हाँ, यह हो सकता है सायंकाल छः बजे सें आठ बजे तक आप निस्संकोच किसी भी दिन यहाँ आ सकते हैं। आपको यहाँ भले लोगों की संगत मिल जाया करेगी।"

"परन्तु में तो आपकी संगत पाने का इच्छुक हूँ।"

"उन भले लोगों में मैं भी यहाँ होती हूँ।"

"मैं आपसे अकेले में व्यवहार रखना चाहता हूँ।"

"वह भी हो सकेगा।" इड्डा ने हँसते हुए कहा, ""परन्तु वह तब ही हो सकेगा जब आपके एक भला व्यक्ति होने का विश्वास हो जायेगा।"

"यह कैसे होगा?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उस समाज में आइये। वहाँ आपकी परीक्षा हो जाएगी। तदनन्तर आपसे पृथक् में भी बातचीत हो सकेगी।"

सुदर्शनलाल को यह योजना पसन्द नही आई। उसने कई बार छः बजे सायंकाल आने का प्रयास भी किया। उसने देखा कि लक्ष्मी वहाँ होती है। राधा, भोली और कुछ अन्य स्त्रियाँ भी वहाँ होती हैं। पुरुषों में जगन्नाथ, शिवराम, रामनाथ और कुछ अन्य आस–पास की कोठियों के लोग होते हैं।

उस समय जगन्नाथ कुछ योग–क्रियाओं के करने का ढंग बताया करता था। सुदर्शनलाल को यह सब ढोंग प्रतीत हुआ। एक दिन लक्ष्मी नहीं थी। शिवराम भी उस दिन नहीं था। जगन्नाथ बैठा था और सब लोग अपने–अपने अनुभवों की बातें बता रहे थे। उस दिन भोली बता रही थी, "पिछले दो मास के प्राणायाम से मुझमें अपने संस्कारों को समझने की सामर्थ्य उत्पन्न हो रही है।"

एक स्त्री ने पूछा, "क्या सामर्थ्य उत्पन्न हो रही है।"

"बचपन से मेरी जगन्नाथ के प्रति विशेष सहानुभूति थी।। मैं इसको भूखा–नंगा देख व्याकुल हो उठा करती थी। मुझे शान्ति होती थी जब इसके लिए इसकी माँ के घर कुछ फ़ल–मिठाई इत्यादि भेज देती थी। यह बड़ा हो गया और लक्ष्मी इससे विवाह की इच्छा करने लगी। मुझे यह भला प्रतीत होता था। पीछे लक्ष्मी ने विवाह कहीं अन्यत्र कर लिया। मुझको प्रसन्नता नहीं हुई।"

"अब लक्ष्मी के कहने पर मैं यहाँ आने लगी और इसने प्राणायाम की विधि बताई तो मैं यह करने लगी। मुझको कुछ इसके कथन पर विश्वास हो रहा है कि इससे मेरा पूर्व–जन्म का सम्बन्ध है। इस सम्बन्ध के साथ मेरे पूर्व–जन्म के अन्य संस्कार भी जाग्रत होने लगे हैं।"

"मुझे दिखाई देने लगा है कि एक मकान है। मकान के बाहर एक कुआँ है। मकान में कोई हकीम साहब बैठे रोगी देखा करते हैं। मैं उस घर में रहती थी। वहाँ जगन्नाथ भी था। यह बालक मात्र ही था।"

भोली से पूछने वाली स्त्री ने कहा, "तो तुम जगन्नाथ के कथन का समर्थन कर रही हो?"

"क्या कथन है जगन्नाथ का?" सुदर्शनलाल ने पूछ लिया।

"यही कि इससे पूर्व के जन्म में जगन्नाथ भोली का लड़का था।"

सुदर्शनलाल खिलखिलाकर हँस पड़ा। आज अपने मन की बात बता उसने कहा, "जगन्नाथ एक बहुत बड़ा दी फ्राड (छलना) है। यह आप लोगों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को बेवकूफ बनाता रहता है।''

इस पर सभी उपस्थित स्त्री–पुरुष हँस पड़े। सुदर्शनलाल गम्भीर हो चुप कर गया। जब सब हँस चुके तो एक अन्य ने कहा, ''लाला सुदर्शनलाल, यह सब धोखा है न?''

''बिल्कुल।''

''एक बात मैं भी बताऊं?''

''हाँ, आप भी अपने मस्तिष्क की विकृतियों का बखान कर सकते हैं।''

''मेरे घर में आज से बीस वर्ष पहले एक लड़का हुआ था। नाम है भद्रसेन। उसका जन्म गुजरात नगर में हुआ था। उसके पैदा होते ही मुझको ऐसा जान पडा था कि बहुत से गीदड़ मकान के बाहर आकर चीखने लगे हैं। मैंने अपने सम्बन्धियों से कहा कि उन गीदड़ों को भगा दे, परन्तु वे कहने लगे कि वहाँ तो कोई गीदड़ दिखाई नहीं देते। मैं चुप कर रहा। ज्यों–ज्यों लड़का बड़ा होता गया मेरा उससे झगड़ा होता गया। आखिर वह सोलह वर्ष का हुआ तो मुझसे और मेरी पत्नी अर्थात् अपनी माँ से लड़ने लगा।''

''एक दिन उसने क्रोध में अपनी माँ का गला घोंट कर उसकी हत्या कर दी। मैंने अपने इकलौते पुत्र की रक्षा की और उस पर हत्या का आरोप लगने नहीं दिया। मैंने उसको बचाने के लिए उसकी माँ की मृत्यु की एक झूठी कहानी बनाई और सबको बताई। पुलिस को पता चला, परन्तु मैंने भारी रकम खर्च कर लड़के को बचा लिया।''

''इसके उपरान्त मैं गुजरात छोड़ लाहौर आ गया। यहाँ मैंने लड़के को अपने से पृथक् कारोबार करा दिया। इससे उसका मुझसे लड़ना कम हो गया। कुछ तो वह मेरे उसको बचाने से प्रभावित हुआ। कुछ उसके विवाह के लिए मैंने उसकी सहायता की। उसकी बहू उसको समझाती रहती है।''

''मेरा सम्बन्ध जगन्नाथ जी से तब से हैं जब इन्होंने विवाह कर यह कोठी ली थी। इनको मैंने अपनी कथा बताई तो इन्होंने मुझे प्राणायाम से अपनी बुद्धि निर्मल करने का ढंग बता दिया।

''अब मुझे समझ आ गया कि व लड़का मेरा छोटा भाई था। जब हम अभी बच्चे थे, हम खेलते हुए एक तालाब के किनारे जा पहुँचे। हम दोनों में किसी बात पर झगड़ा हो गया। मैंने क्रोध में उसको तालाब में धक्का दे दिया और वह उसमें डूब गया। मैं भयभीत अपने घर पहुँचा और झूठ बोल दिया कि उसका पाँव फिसल गया था और वह डूब गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वही मेरा भाई हमारे घर में पैदा हुआ। उसने अपनी मां की हत्या कर दी है। मैंने उससे और भी हमदर्दी का व्यवहार करना आरम्भ कर दिया। इस पर एक दिन उसने बताया कि वह तो मेरी हत्या करने वाला था। मां ने मना किया। उसने यह समझ कि मां उसका भेद न खोल दे, उसका ही काम तमाम कर दिया।"

"मैंने अपने लड़के को उसके पूर्व–जन्म की बात बताई नहीं, परन्तु वह कहता था कि मां की हत्या और मेरे उसकी रक्षा करने से पूर्व वह जब भी मुझको देखता था तो अकारण ही वह क्रोध से भर जाया करता था। अपने मन में काल्पनिक कारण अनुभव करने लगता था जिससे वह मुझे अपना शत्रु मान लेता था।

"अब वह अपने कार्य पर लज्जा अनुभव करता है और कभी–कभी अपने को अपनी मां का हत्यारा समझ रोया करता है। मैं उसें भी बुद्धि निर्मल करने का उपदेश देता हूँ। इस पर भी वह अभी कुछ भी जान नहीं सका।"

"तो आपको कैसे पता लगा कि वह आपका भाई ही है।"

"मैं जब उसको देखता हूँ तो मुझे वही रूप–रेखा दिखाई देने लगती है। उसके वर्तमान रूप–रेखा के पीछे अपने छोटे भाई का क्रोध से भरा मुख प्रकट हो जाता है।"

"तो मैं समझता हूँ कि यहाँ सब पागल एकत्रित हो रहे हैं।"

इस पर पुनः सब हँसने लगे।

सुदर्शनलाल ने मन में यह निश्चय कर लिया कि अब वह इस जगह कभी नहीं आयेगा। उसको भ्रम लग गया था कि वह भी इन लोगों की भांति अपनी बुद्धि खो देगा और पागलों के संसार में जीने लगेगा। वह उठा तो उसको भोली एक ओर खड़ी दिखाई दी। अनायास ही उसके मुख से निकल गया, "लक्ष्मी नहीं आई आज?"

"वह पाँच–छः दिन से नहीं आ रही। उसके घर लड़का हुआ है।"

"सत्य?"

"हाँ, और उसका रूप–रंग सर्वथा आपसे मिलता है।"

वह गम्भीर हो गया और चुपचाप कोठी से निकल मोटर में सवार हो चला गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुर्थ परिच्छेद

शिवराम निर्वाचनों के लिए खड़ा नहीं हुआ। इसमें एक कारण तो विरोधी दलों का सैद्धान्तिक बातों पर भी एकमत न हो सकना था। वह लाला लाजपतराय के दल के मुख्य–मुख्य कार्यकर्ताओं से मिला था। उसने उनसे कहा था, "मैं एक हिन्दू विचार का व्यक्ति हूँ। मेरी सहानुभूति और निष्ठा हिन्दू संस्कृति में है। इस कारण मैं किसी भी दल से खड़ा हो जाऊँ, हिन्दू विचार के लोगों को मेरा विरोध नहीं करना चाहिए।"

इस पर उन लोगों ने दो बातें बताईं। उनका कहना था, "एक तो राजनीतिक दृष्टि से सब लोग बराबर हैं। कांग्रेस यह मान जाये तो हम कांग्रेस के प्रत्याशी का विरोध नहीं करेंगे। दूसरी बात यह है कि हिन्दुओं को अपना सांस्कृतिक कार्य करने की स्वतन्त्रता हो और उसके कारण उनके किसी राजनीतिक अधिकार में कमी नहीं की जाए।

"अभी तक कांग्रेस इन दोनों बातों को अस्वीकार कर चुकी है। वह इन बातों की इस प्रकार घोषणा कर दे तो हम आपके विरुद्ध अपने दल का व्यक्ति खड़ा नहीं करेंगे।"

शिवराम ने कांग्रेसी नेताओं से भी विचार–विमर्श किया। इनमें प्रमुख डॉक्टर सत्यपाल थे। उनका कथन था कि इतने लम्बे–चौड़े देश में एक स्थान के लिए इस प्रकार की सैद्धान्तिक बातों की घोषणा नहीं की जा सकती। इस दिशा में हमारा राजनीतिक व्यवहार बदल नहीं सकता।"

शिवराम का प्रश्न था, "तो क्या मैं इन प्रश्नों पर अपना व्यवहार स्वतन्त्र रख सकूंगा?"

"कोई व्यक्ति आपको किसी प्रकार का वचन नहीं दे सकता। समय और परिस्थिति की जो कुछ माँग होगी उसके अनुसार पार्टी निर्णय करेगी और आपको उसका पालन करना होगा?"

"यदि इन प्रश्नों पर मैं पार्टी के आदेश की अवहेलना करूँ तो क्या

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होगा?''

आपको पार्टी से बाहर कर दिया जायेगा और यदि आपने कौंसिल की मेम्बरी न छोड़ी तो आपको जनता में बदनाम किया जायेगा।''

शिवराम इस मतभेद पर सन्तुष्ट नहीं था। उसने घर पर जगन्नाथ से राय की। सब बात सुनकर जगन्नाथ हँस पड़ा। हँसते हुए उसने पूछ लिया, ''चाचा जी! क्या आप कौंसिल के मेम्बर बने बिना नहीं रह सकते?''

''मेरे मन में यह विचार उत्पन्न हुआ था कि राजनीति में विचारशीलता का समावेश किया जाय।''

''यह तो ठीक है। परन्तु यह नहीं हो सकेगा। आप अपनी शक्ति का अपव्यय करेंगे। विचार बुद्धि का विषय है। इसके आधार दो हैं। पहला है ज्ञान। संस्कार भी इसी ज्ञान का अंश है। इसका अर्थ है यथार्थ बात को जानना। संस्कार दूषित होने से ज्ञान भी दूषित हो जाता है। इसके अतिरिक्त शिक्षा भी ज्ञान का स्रोत है। वर्तमान युग में शिक्षा अति दूषित है। यह तो आप स्वयं भी जानते हैं। राजनीति में सत्य इतिहास का ज्ञान परमावश्यक है। इतिहास स्कूल–कालेजों में पढ़ाया जाता है और वह बहुत अंशों में मिथ्या होता है। अतएव मिथ्या शिक्षा और मिथ्या संस्कारों से ज्ञान अशुद्ध हो रहा है और विवेक भी दूषित ही बन रहा है।''

''विचार का दूसरा आधार है युक्ति करना। युक्ति करने के लिए निर्मल बुद्धि परमावश्यक है। आज के नेता मद्य का सेवन व्यापक रूप से करते हैं और विषय–वासना में रत रहते हैं। इसके कारण इनके कार्य काम, क्रोध, मोह, लोभ एवं अहंकार के अधीन हो रहे हे। अतः इन लोगों से विचारशीलता की आशा असम्भव है।''

''जगन्नाथ! यह सब मैं जानता हूँ, परन्तु अकर्मण्य होकर घर बैठे रहना भी तो शोभनीय नहीं। कुछ–न–कुछ तो करना ही है। मैं कौंसिल में इसी कारण जाना चाहता था।''

''परन्तु चाचा जी, यह उपाय निरर्थक है। आप कौंसिल में जाएंगे। वहाँ पार्टी आपको आदेश देगी। आपकी आत्मा उसको मानेगी नहीं। आप उसका विरोध करेंगे और फिर दल से निकाल दिये जायेंगे। आपको बदनाम किया जायेगा। जनता उनका विश्वास करेगी जो अधिक हल्ला करेंगे। सर्वसाधारण में विचार की शक्ति नेताओं से भी कम होती है।

''आप जनता को अपनी अवस्था की सफाई देंगे। लोग आप पर पत्थर बरसाएंगे। आप सरकार के पक्षपाती तो हैं नहीं। आपकी रक्षा सरकार कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं सकेगी। यदि सरकार करेगी भी तो अपने व्यवहार से प्रत्यक्ष रूप में आप दगाबाज माने जाएँगे।"

"तो तुम्हारा विचार है कि अन्न गन्दा कर इस संसार से चल दिया जाय?"

"जी नहीं। करने को एक ही कार्य है ज्ञान का प्रसार। इसमें धारना समाधि का ठीक ज्ञान भी सम्मिलित है।"

"इस विशाल जगत् में यह पृथ्वी एक सराय की भांति है। जैसे मार्ग पर चलते हुए यात्री के लिए रात आने पर सराय में ठहर जाना आवश्यक है। वैसे ही इस पृथ्वी पर हम विवश होकर टिके हुए हैं। सराय में भी जिसमें रात को बसेरा होना है, साफ–सुथरी और भले लोगों के रहने का स्थान होना आवश्यक है। अन्यथा एक रात–भर किसी गन्दी सराय में रहने के कारण ऐसी छूत की बीमारी में ग्रस्त हो सकते हैं जो शेष जीवन–भर कष्ट देती रहे। अथवा सराय में रहते हुए अपने पूर्ण संचित धन से भी वंचित कर दिये जा सकते हैं। इस कारण सराय की सफाई और यहाँ रहने वालों की भलमनसाहत भी अपने हित में ही होती है। इस पर भी इसके करने अथवा कराने का ढंग यह नहीं कि आप रात में वहाँ रहने वाले चोर और जुआरियो के साथ बैठकर चोरी करने लगें अथवा जुआ खेलने लगें।"

"यह लोभ, कि इनसे मेल–जोल रखकर आप उनको श्रेष्ठ बना लेगे, पूरा नहीं होगा। सराय की और सराय वालों की भलाई करने के लिए आपको अपने को श्रेष्ठ और साफ–सुथरे रहना अत्यावश्यक है।"

"सराय में रहने वालों में जितने भी श्रेष्ठ व्यक्ति हैं उनको ही आप अपने साथी बना सराय के अन्य लोगों को विश्वास दिलाइये कि आप लोगों के साथ मै रहने में उनका भला है। सराय में शुद्धता होगी तो श्रेष्ठ पुरुष उनमें आकर ठहरने लगेंगे।"

"इस दुनिया के उन्नत होने पर ब्रह्माण्ड की श्रेष्ठ आत्माएं यहाँ आकर रहना स्वीकार कर लेंगी। तब यहाँ के रहने वालों का कल्याण होगा। इस दुनिया को श्रेष्ठ बनाना ही एक कर्त्तव्य है। यह यहाँ के जन–साधारण के ज्ञान में वृद्धि से ही हो सकेगा।

"शास्त्र में इसकी महिमा व्यर्थ नहीं लिखी। लिखा है–

न हि ज्ञानसदृश्यं पवित्रमिह विद्यते
तत्स्वयं योग स सिद्धिः काल नात्मनि विदति

इस लोक में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला अन्य कुछ नहीं है। ज्ञान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्त करने पर समय पाकर मनुष्य स्वयं ही कर्मयोगी हो जाता है।

शिवराम ने निर्वाचन लड़ने का विचार छोड़ दिया, परन्तु उसके क्षेत्र से लाल मोहन खड़ा हुआ। लाल मोहन ने लालाजी की नेशनलिस्ट का टिकट स्वीकार किया था। कांग्रेस ने इसके विरुद्ध एक बहुत ही साधारण योग्यता और ख्याति का व्यक्ति खड़ा कर दिया। परन्तु जब नामन–पत्र स्वीकार हो गये तो लाल मोहन ने नेशनलिस्ट पार्टी का टिकट वापस कर दिया और अपने को कांग्रेसी प्रत्याशी घोषित कर दिया। परिणाम यह हुआ कि नेशनलिस्ट दल का कोई भी व्यक्ति मुकाबले में नहीं रहा और लाल मोहन व्यावहारिक रूप में बिना विरोध के निर्वाचित हो गया।

सुदर्शनलाल नेशनलिस्ट दल की ओर से खड़ा हुआ और सफल हो गया।

इस शतरंज की चाल में शिवराम को यह समझ आया कि कांग्रेस और नेशनलिस्ट दोनों दल ठगे गये हैं और ठगने वाला सुदर्शनलाल है। लाल मोहन उसके बल–बूते पर ही यह चाल चल सका था।

शिवराम ने जब इसमें सुदर्शनलाल की चतुराई देखी तो उसे सुदर्शनलाल की उसके और जगन्नाथ के साथ मैत्री का भाव समझ आने लगा। वह उनके साथ भी किसी प्रकार की वंचना खेलने वाला था। वह वंचना चल नहीं सकी। न तो इड्डा ने उससे मिलकर कोई व्यवसाय करना पसन्द किया और न ही शिवराम ने निर्वाचन लड़ना स्वीकार किया।

जगन्नाथ का विचार था कि धन का लोभ देकर वह इड्डा की बुद्धि भ्रष्ट करने का विचार रखता था और फिर उसको अपनी भोग सामग्री बनाने का प्रयत्न करना चाहता था साथ ही राजनीतिक शतरंज में शिवराम को अपना मोहरा बनाकर उसे अपने अँगूठे–तले रखना चाहता था। न तो शिवराम ने सुदर्शनलाल के हाथ में खेलना पसन्द किया और न इड्डा धन के लोभ में फँसी।

जब निर्वाचन समाप्त हुए तो लक्ष्मी का दूसरा लड़का नौ मास का हो चुका था। इस सब काल में अपने राजनीतिक कार्य में व्यस्त रहने के कारण सुदर्शनलाल लक्ष्मी की ओर ध्यान नहीं दे सका। लक्ष्मी ने एक दिन अपनी मां के घर में ही हवन किया और लड़के का नाम मनमोहन रख लिया। इस बात की सूचना भी लड़के के पिता को नहीं भेजी गई।

रामनाथ का पिता यद्यपि लक्ष्मी के इस कार्य से सन्तुष्ट नहीं था परन्तु लक्ष्मी के हठ के सामने उसकी चल नहीं सकी। भोली भी लक्ष्मी का ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समर्थन कर रही थी।

कभी–कभी लक्ष्मी और भोली जगन्नाथ के बँगले पर सायंकाल गोष्ठी में जाती थीं। रामनाथ बहुत कम जाया करता था। उसको जगन्नाथ द्वारा बनाये प्राणायाम से कुछ भी लाभ नहीं हुआ था। इससे वह धीरे–धीरे उस गोष्ठी से पृथक् हो गया था। उसको शिवालय में जल चढ़ाने से अधिक सान्त्वना मिलती थी।

इस प्रकार समय शान्ति में व्यतीत हो रहा था। सुदर्शनलाल निर्वाचन जीता तो उसके क्षेत्र के नागरिकों ने उसको अभिनन्दित किया। एक विशाल चाय–पार्टी का आयोजन कर दिया गया। इसमें जगन्नाथ, इड्डा, शिवराम, राधा और लक्ष्मी भी आमन्त्रित थे।

: 2 :

यह तो निश्चित ही था कि सूची में जगन्नाथ इत्यादि का नाम सुदर्शनलाल ने ही लिखाया था। इसी कारण चाय–पार्टी के पहले सब बैठ विचार करने लगे कि वहाँ जाना चाहिए अथवा नहीं। राधा ने छूटते ही कह दिया, "मैं वहाँ जाने में कोई प्रयोजन नहीं मानती।"

"परन्तु चाची, मैं तो वहाँ जाना चाहती हूँ।" लक्ष्मी का कहना था, "मैं शीघ्रातिशीघ्र ऐसा अवसर पाना चाहती हूँ, जिससे मेरे और उसके सम्बन्धों में अन्तिम कड़ी भी टूट जाये।"

"क्या है अन्तिम कड़ी?" इड्डा ने पूछ लिया।

"इस बच्चे के विषय में निश्चय हो जाये तो मेरे मन से एक बोझा हल्का हो जायेगा।"

"और यदि बच्चे को देते–देते तुम भी उसके साथ चली गईं तो अच्छा नहीं हो जायेगा क्या? इस कारण में लक्ष्मी बहन की सहायता के लिए उसके साथ जाऊँगी।"

"शिवराम का विचार था कि उसको भी चाय–पार्टी में जाना चाहिए और वहाँ पर एकत्रित लोगों को पूर्ण परिस्थिति से अवगत करने का यत्न कराना चाहिए।"

"तो चाचा जी जा रहे हैं? चाची नहीं जा रहीं। इधर मेरी श्रीमतीजी जा रही हैं तो सन्तुलन ठीक रखने के लिए मैं नहीं जा रहा।"

इस पर सब हँस पड़े। जगन्नाथ ने अपने व्यवहार की सफाई देते हुए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा, "यह व्यक्ति ठग है। लक्ष्मी इसके घर जाये अथवा न जाये, इससे इसका कल्याण होना सम्भव नहीं। अतः मैं उससे सम्पर्क रखना पसन्द नहीं करता।"

जगन्नाथ के इस कथन पर तो लक्ष्मी पुनः डोल गई। उसने कह दिया, "मेरा विचार वहाँ जाकर उससे यह कहना है कि वह मनमोहन को जगमोहन के साथ ही रख ले। अब तो उसका रूप–रंग इस बात का साक्षी है कि वह उसका लड़का ही है। बस और इससे अधिक कुछ नहीं।"

"ठीक है। इड्डा ने कह दिया। परन्तु मैं इसका अर्थ यह भी समझती हूँ कि जब पति–पत्नी का आह्वान करेगा तो वह विवश हो उसके संरक्षण में चली जायेगी। शरीर का यही नियम है।"

जगन्नाथ ने इड्डा के विचार का खण्डन नहीं किया। चाय–पार्टी के दिन ठीक समय पर लक्ष्मी इड्डा के घर आ गई और वहाँ से इड्डा की मोटर गाड़ी में लक्ष्मी, इड्डा और शिवराम परेड ग्राउण्ड में चाय के आयोजन पर पहुँच गये।

इड्डा ने अब एक ब्यूक गाड़ी ले ली और उसका खर्च अपने पास से कर रही थी। ये लोग शामियाने के बाहर गाड़ी से जा उतरे सुदर्शनलाल द्वार पर खड़ा मेहमानों का स्वागत करने लगा। इनको आया देख वह आगे बढ़ इनका स्वागत करने लगा। उसने शिवराम को देखा तो मुस्करा कर कहा, "ओह शिवरामजी! बहुत–बहुत धन्यवाद! मैं आपसे इतनी आशा तो करता ही था। परन्तु लक्ष्मी... तुम भी आई हो? यह अप्रत्याशित ही हुआ है। सत्य ही तुम मुझे बधाइ देने आई हो क्या?"

लक्ष्मी मुस्करा दी और चुप रही।

सुदर्शनलाल ने इड्डा से पूछ लिया, "दो व्यक्ति दिखाई नहीं दे रहे। राधा चाची और जगन्नाथ दादा कहाँ रह गये हैं?"

"वे नहीं आये।"

"क्यों?"

"यह तो वे ही बताएँगे।"

"तो उन्होंने आपको बताया नहीं?"

"मैं जानती हूँ कि वे क्यों नहीं आये परन्तु चूंकि उन्होंने इस विषय में मुझे अपना प्रतिनिधि नहीं बनाया, इस कारण मैं बताऊँगी नहीं, पर मैं तो आ गई हूँ।"

"मैं आपसे यही आशा करता था। एक अंग्रेज लड़की पति की दासी नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो सकती।''

इस समय कुछ अन्य लोग आ गये और सुदर्शनलाल यह कह, ''चाय के उपरान्त आप ठहरियेगा। शेष बात पीछे कर सकूंगा।'' चला गया।

इड्डा इत्यादि शामियाने में आ गये और पाँच सौ से ऊपर लोगों के लिए लगी मेजों में से एक छोटी–सी मेज पर जा बैठे।

ये अभी बैठे ही थे कि लाल मोहन शिवराम के समीप आकर पूछने लगा, ''आप तो हिन्दू हैं। इस कारण मैं समझता हूँ कि आप लाला लाजपतरायजी के दल के निर्वाचित सदस्य के लिए दो शब्द कहने की कृपा करेंगे।''

''लाल मोहन! तुम किस नाते कह रहे हो?''

''मैं अभी भी बाबू सुदर्शनलाल की नौकरी में हूँ।''

''ओह! तो कांग्रेस इसको पसन्द करेगी क्या?''

''कांग्रेस के नेताओं की इच्छा से ही यह सब कुछ हो रहा है।''

''तब तो मानना पड़ेगा कि हमारे कांग्रेसी अब बहुत समझदार हो गये हैं।''

''तो ठीक है न?''

''हाँ, तो दो शब्द मैं भी क़हना चाहूँगा।''

लाल मोहन ने अपने हाथ में पकड़े कागज पर शिवराम का नाम लिख लिया और अन्य वक्ताओं से पूछने चला गया।

इड्डा ने कह दिया, ''लीजिये चाचा जी, आपकी अमिलाषा तो पूरी हो रही है।''

''मुझे इसकी आशा ही थी। परन्तु यह बात समझ नहीं आई कि लाल मोहन यहाँ क्या कर रहा है?''

''यह भी ठीक ही है।'' इड्डा का कहना था।

लक्ष्मी ने गम्भीर होकर कह दिया, ''और हमारी बात भी हो रही लगती है। बाबू साहब हमसे चाय के उपरान्त शेष बात करने का विचार रखते हैं।

शमियाना मेहमानों से भर गया था और खाना–पीना आरम्भ हो गया था। लक्ष्मी ने किसी भी चीज को हाथ नहीं लगाया। इड्डा और शिवराम खाना–पीना करने लगे थे।

अभी खाना चल ही रहा था कि बाहर बज रहा बैंड बन्द हो गया और दल के स्थानीय नेता डॉक्टर साहब ने सुदर्शनलाल के सफल होने पर बधाई दी और फिर दस मिनट में दल के सिद्धातों पर प्रकाश डाला गया। इसके उपरान्त मुहल्ले के एक–दो लोग बोले और उन्होंने सुदर्शनलाल की लोकप्रियता के पुल बाँध दिये। अब बारी शिवराम की आई। शिवराम अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थान से उठकर बीच वाली मेज़ के समीप खड़े होकर कहने लगा, "जब हम राजनीति में किसी व्यक्ति की सफलता का उल्लेख करते हैं तो हम यह भली–भाँति जानते हैं कि वह व्यक्ति अब जनता की दृष्टि में आ गया है और उसको अपना व्यवहार जनता के समक्ष आदर्श रूप में बनाना चाहिए।

"बाबू सुदर्शनलाल राजनीति क्षेत्र में नये व्यक्ति नहीं हैं। ये पिछले साढ़े–चार वर्ष से लाहौर म्यूनिसिपल कमेटी के सदस्य हैं। क्षेत्र बहुत छोटा था। वर्तमान क्षेत्र बहुत बड़ा है वह कार्य भी इतना बड़ा नहीं था, जितना कौंसिल का काम होना चाहिए। इससे वर्तमान पदवी पहले से ऊँची है।"

"हमें आशा करनी चाहिए कि अब तो सुदर्शनलाल जी अपने को पहले से अधिक सैद्धान्तिक, बुद्धिशील और कर्मशील सिद्ध करेंगे। इनका म्युनिसिपैलिटी के कार्य का रिकार्ड तो कुछ शोभनीय नहीं रहा। ये पहले कांग्रेस के टिकट पर कमेटी के सदस्य बने। परन्तु दो वर्ष के भीतर ही इनको कांग्रेस दल से निकलना पड़ा। इसके उपरान्त ये स्वतन्त्र रूप में कमेटी के सदस्य बन गये।

"अब वे नेशनलिस्ट दल के सदस्य हैं। हम प्रजागण उनसे यह पूछना चाहेंगे कि यहाँ भी दल को उन्हें अपने से बाहर निकालना पड़ेगा क्या? मुझको लक्षण कुछ ऐसे ही प्रतीत होते हें। यहाँ के आयोजन के कर्ता–धर्ता एक कांग्रेस के टिकट पर सफल हुए सदस्य हैं। वे वहाँ भी धोखा देकर सफल हुए हैं।

"हमारा व्यक्तिगत रूप में उनसे कोई सरोकार नहीं। इस पर भी प्रजा के नाते मैं यह पूछने का अधिकार रखता हूँ कि जैसे उन्होंने नेशनलिस्ट दल को धोखा दिया है, वैसे ही वे कांग्रेस को देने वाले हैं क्या?"

"इस देश में हम हिन्दू लाखों करोड़ों वर्षों से रह रहे हैं। हमारा इस देश के साथ बहुत ही घना सम्बन्ध है। अतः वे ऐसा कोई कार्य नहीं करेंगे जिससे हिन्दू विचारधारा एवं आचारसंहिता को हानि पहुँचेगी, यह कम–से–कम आशा है। जो हम बाबू सुदर्शनलाल से करते हैं।

"प्रश्न केवल यह है कि यह आँख–मिचौनी, एक दल से दूसरे दल में जाना, प्रत्यक्ष रूप में और कारण बताकर होनी चाहिए। साथ ही विरोधी दल के नेताओं से व्यवहार भी स्पष्ट और प्रत्यक्ष तथा कारण सहित होना चाहिए।"

"मैं सुदर्शनलालजी को इस अवसर के प्राप्त होने पर बधाई देता हूँ वे अब अपनी स्थिति को स्पष्ट कर सुधार सकते हैं।"

शिवराम जब बोल रहा था तो सर्वथा शान्ति विराजमान थी। सब इतनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहसपूर्ण आलोचना की इस अवसर पर कोई भी आशा नहीं करता था। परन्तु यह कही गई थी और सब उत्सुकता से सुदर्शनलाल के उत्तर की प्रतीक्षा कर रहे थे। किसी ने भी शिवराम के कथन पर ताली नहीं बजाई।

शिवराम के उपरान्त नगर के प्रसिद्ध नेता डॉक्टर बलवन्त बोलने लगे। आप नेशनलिस्ट दल के लाहौर में सर्वे–सर्वा थे। आपने कहा, "पंडित शिवराम दीक्षित के विचारों की मैं सराहना करता हूँ। इस पर भी मैं उनको यह बताना चाहता हूँ कि सुदर्शनलालजी को दल ने भली–भाँति ठोक–बजाकर देखने के उपरान्त ही अपना टिकट दिया है। इससे दल को उन पर विश्वास है। पहले भी सुदर्शनलालजी का कांग्रेस दल से निकाला जाना इसी कारण था कि वे हिन्दू–संस्कारों से प्रभावित होने के कारण कांग्रेसी लोगों के सुस्वर नहीं थे।

"हमें सुदर्शनलालजी पर पूर्ण विश्वास है कि वे पंजाब की सामान्य रूप में और हिन्दुओं की विशेष रूप में सेवा कर सकेंगे।"

डॉक्टर साहब के कथन का, जनता ने तालियाँ बजाकर समर्थन कर दिया।

अन्त में सुदर्शनलाल स्वयं बोला। उसने कहा, "मेरे इस आयोजन में कुछ कांग्रेसी भी सम्मिलित हैं और इसमें कारण है मेरी हर दिल अजीजी। मैं कांग्रेस में रहा हूँ। उसमें त्याग और तपस्या भी की है। अपने पूरे यत्न से कांग्रेस की मान–प्रतिष्ठा को ऊँचा करने का यत्न किया है। यदि उनको मेरी सेवाएँ किसी प्रकार से निकृष्ट समझ आई हैं तो इसमें मेरा दोष नहीं है। मैंने तो जो कुछ किया, अपनी सामर्थ्य और सूझ–बूझ के अनुसार ही किया है।

"मैं देश को कांग्रेस और नेशनलिस्टों में बँटा हुआ नहीं समझता। देश तो एक ही है और मेरी सेवाएँ देश के लिए हैं। नेशनलिस्ट लेते हैं तो लें। कांग्रेसी लेना चाहें तो ले सकते हैं। केवल मुझे विश्वास होना चाहिए कि वे देश के लिए ही हैं।

"मैं तो देश का सेवक हूँ और देश के लिए ही अपनी सब सामर्थ्य लगा रहा हूँ।"

सुदर्शनलाल के इस वक्तव्य पर भारी करतल ध्वनि हुई।

सब बहुत प्रसन्न उठे। दावत भी अच्छी थी। शिवराम अपने साथियों के साथ उठकर विचार ही कर रहा था, कि जाय अथवा ठहरे कि इस समय लाल मोहन इनके पास आकर मुस्कराते हुए कहने लगा, "आपने तो मुझे भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रगड़ दिया।''

''क्षमा करना लाल मोहन। मुझे अस्थिर बुद्धि पसन्द नहीं।''

''परन्तु यह आपने कैसे समझ लिया कि मैं अस्थिर बुद्धि हूँ।''

''नामन–पत्र स्वीकार होने के बाद दल बदलना यही तो प्रकट करता था।''

''और यदि निर्वाचन के उपरान्त दल बदलता तो अधिक अच्छा था क्या?''

''नहीं, तब तो और भी बुरा होता। नामन–पत्र भरने से पहले ही इस विषय में निश्चित घोषणा कर देनी थी।''

''वही तो की थी। वही घोषणा लालाजी ने अब भी की है। अब देखियेगा कि लालाजी को दल छोड़ना पड़ेगा।''

''पंडितजी! यथार्थ बात यह है कि राजनीति में स्थिरता रह नहीं सकती। सब–कुछ अपनी राजनीतिक स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए किया जाता है। बड़े–से–बड़ा नेता भी यही करता रहता है। सिद्धान्त तथा उद्देश्य, साधारण जनता को बताने के लिए होते हैं।''

शिवराम उसका मुख देखता रह गया। वह मन में विचार कर रहा था कि उसने ठीक ही कहा है। उन्हें चुप देख लाल मोहन ने कह दिया, ''साधारण जनता ने तो आपके कथन को ठीक नहीं समझा। साधारण जनता ने बाबू सुदर्शनलाल की ही बात को उचित समझा है।

''इस पर भी मैं आपके साहस की प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकता आपको अपने कथन पर एक भी ताली न बजने पर यह समझ जाना चाहिए कि हम जनता के अधिक समीप हैं और आप नहीं।''

शिवराम समझ रहा था कि सत्य ही यह संसार दूसरा है। इसमें उसका कोई काम नहीं। उसने लक्ष्मी की ओर देखकर पूछ लिया, ''तो अभी ठहरने का विचार है?''

उत्तर लाल मोहन ने दिया, ''मैं समझता हूँ कि बहनजी ठहरें तो आज हम एक और दावत का प्रबन्ध कर सकेंगे।''

शिवराम को कुछ ऐसा समझ आया कि लक्ष्मी को निमंत्रण किसी योजनान्तर्गत भेजा गया था। यद्यपि उस निमंत्रण पर लक्ष्मी के आने की आशा नहीं थी तो भी वह निरुद्देश्य नहीं था। लाल मोहन के उक्त कथन से यही अनुमान लगाया जा रहा था।

शिवराम और लक्ष्मी ने लाल मोहन के कथन का कुछ उत्तर नहीं दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाल मोहन वहाँ से चल डॉक्टर बलवन्त के पास जा पहुँचा। दो–तीन हँसी–मजाक की बातें कर वह सुदर्शनलाल के पास चला गया। डॉक्टर बलवन्त शिवराम के पास आ हाथ जोड़ प्रणाम कर कहने लगा, ''पंडितजी! आपका कथन अवसर के अनुकूल नहीं था। इसको 'इन बैड टेस्ट' कहा जा सकता है।''

''परन्तु डॉक्टर साहब! वह एक सत्य सम्भावना को प्रकट करता था।''

''कैसे जानते हैं आप इसे?''

''बोलने के समय तो मैं इनकी प्रकृति से अनुमान लगा रहा था परन्तु अब तो इनके कथन का अर्थ समझ विश्वास से कह रहा हूँ।''

''यह कथन तो आपके उत्तेजनामय भाषण की प्रतिक्रिया ही थी। वास्तव में आप जैसे अदूरदर्शी लोग ही हिन्दुओं का सर्वनाश कर रहे हैं।''

''परन्तु डॉक्टर साहब, मैं स्वेच्छा से कहने के लिए नहीं खड़ा हुआ था।''

मैं जानता हूँ कि आपको लाल मोहन ने बोलने के लिए आमंत्रित किया था। वह तो महा बदमाश है। वह हमारे दल के भीतर घुस तोड़–फोड़ करने के लिए यह सब–कुछ कर रहा है। वह यह सब कुछ कांग्रेस के संकेतों पर कर रहा है।''

''परन्तु वह कहता है कि वह सुदर्शनजी का वेतनधारी नौकर है।''

''यह एक पृथक् बात है। उसकी शरारतों को अपने अधीन रखने के लिए ही उसे नौकर रखा हुआ है।''

''तब तो सत्य ही मुझसे भूल हुई है। भविष्य में ऐसा नहीं करूँगा।''

''कैसे नहीं करेंगे?''

''यही कि नामाकूलों, मेरा अभिप्राय है अयोग्यों की मजलिस में बोलने का साहस नहों करूँगा।''

डॉक्टर हँस पडा। हँसते हुए कहने लगा, ''सब पागल दुनिया को ही पागल समझते हैं।''

इस पर तो शिवराम भी हँस पड़ा। वह इड्डा इत्यादि को ले सुदर्शनलाल की ओर चल पड़ा। डॉक्टर अभी भी हँसता हुआ शिवराम के साथ–साथ था। सुदर्शनलाल ने आगे बढ़ डॉक्टर बलवन्त से पूछ लिया, ''क्या शुभ समाचार है? जो इस प्रकार हँसी हो रही है।''

उत्तर शिवराम ने दिया, ''अनादिकाल से विवाद चला आ रहा है। महापुरुषों को दुनिया वाले पागल समझते हैं और महापुरुष सब को पागल समझा करते हैं। कौन ठीक है? यह सदा विवाद का विषय रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं निर्णय किये देता हूँ।" सुदर्शनलाल ने कह दिया, "दोनों ही पागल है। बहुत ही कम संख्या में लोग हैं जो यह तत्व की बात को समझ पाते हैं। वे संसार और महापुरुष दोनों को छोड़ अपने हित–साधन मे लग जाते हैं। उनके अतिरिक्त अन्य सब पागल तो होते ही हैं।"

सुदर्शनलाल ने सबको अपने घर चलने का आग्रह किया और लक्ष्मी के विषय में कुछ निर्णय करने के विचार से सब मान गये। शिवराम, लक्ष्मी और इड्डा देवी परेड ग्राउन्ड से अपनी मोटर में सुदर्शनलाल के मकान पर जा पहुँचे। सुदर्शनलाल ने उनको बैठक में बैठाया और लक्ष्मी से कहा, "लो, मैं तुम्हें अपने घर ले आया हूँ।"

"मैं समझती हूँ कि मैं स्वयं आई हूँ। अन्यथा मैं भी राधा चाची की भाँति निमन्त्रण अस्वीकार कर सकती थी।" लक्ष्मी का सतर्क उत्तर था।

"अर्थात् मुझे तुम्हारा धन्यवाद करना चाहिए। यही अभिप्राय है न तुम्हारा?"

"जी नहीं, मैं धन्यवाद लेने नहीं आई। उस दिन मैं घर पर नहीं थी और आप माँ के घर गये थे। आप मनमोहन को भली भाँति देख–पहचान आये हैं कि वह आपका लड़का ही है। यदि माँ का अनुमान यह सत्य है तो बताइये उसको कब यहाँ लाएँगे?"

"तुम कहो तो लाल मोहन को अभी भेजकर वहाँ से मँगवा लेता हूँ। तुम एक पत्र लिखकर भेजे दो। परन्तु एक बात यह है कि तुम्हारे बिना मैं उसको यहाँ रख नहीं सकूंगा।"

"क्यों?"

"इसलिए कि मैं उसकी माँ नहीं हूँ। नौ मास का बच्चा बिना माँ के कैसे रह सकेगा।"

"और किस आयु का बच्चा बिना माँ के रह सकता है?"

"कम–से–कम पाँच वर्ष का हो जाये तो।"

"तब ठीक है," लक्ष्मी यह कहते हुए उठ खड़ी हुई। उसने इड्डा की ओर देखकर कह दिया, "चलो इड्डा बहन! जब मनमोहन पाँच वर्ष का हो जायेगा तब हम फिर आयेंगे। तब मैं उसको लेकर यहाँ छोड़ने आऊंगी।"

"तो जा रही हो?"

"और क्या करूँगी? मैं यहाँ नहीं रहूँगी।"

"क्यों?"

"देखिये जी, पति–पत्नी का सम्बन्ध तो विश्वास पर टिका होता है, न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो पति पत्नी की चौबीसों घण्टे रखवाली कर सकता है और न ही पत्नी पति की। जब परस्पर विश्वास ही नहीं रहा तो पति पत्नी का सम्बन्ध–विच्छेद ही समझना चाहिए।''

''सन्देह से विश्वास और विश्वास से सन्देह तो मानव प्रकृति की एक कमी है। इसमें मैं दोषी कैसे हो गया?''

''परन्तु आप पर दोष किसने लगाया है। यह तो मेरे भग्य की विडम्बना मात्र ही थी। जो एकाएक आपके मन में मेरे प्रति सन्देह उत्पन्न हो गया था।

''देखिये जी, राधाचाची का विचार था कि मुझे यहाँ नहीं आना चाहिए। इस पर भी आई हूँ। प्रयोजन बता दिया है। मैं यहाँ रहने नहीं आई।''

''यह तो हम पुनः उस स्थान पर पहुँच गये हैं जिस पर मैंने कहा था कि मैं तुमको यहाँ ले आया हूँ। तुम आई थीं मनमोहन के विषय में निश्चय करने के लिए। मैंने समझा कि तुम्हें ही यहाँ रख लूँ। इस कारण मैं तुमको ले आया हूँ। तुम्हें सन्देह हो रहा है कि मै तुमको यहाँ रह जाने के लिए सत्य हृदय से नहीं कह रहा। इसका मैं प्रमाण देना चाहता हूँ।''

लक्ष्मी इसका उत्तर देना चाहती थी। वह अभी भी खड़ी थी और सुदर्शनलाल, शिवराम तथा इड्डा बैठे थे। एकाएक सुदर्शनलाल ने कहा, ''तो प्रमाण जानना चाहोगी?'' सुदर्शनलाल ने उठ कर कहा, ''इधर आओ, तुम प्रमाण देख मान जाओगी।''

लक्ष्मी समझ नहीं सकी कि अपने मन की सच्चाई का क्या प्रमाण देना चाहता है और वह अनिश्चित–मन खड़ी थी।

सुदर्शनलाल ने इड्डा की ओर देखकर कहा, ''क्षमा करें। आपको कुछ देर तो हो जाएगी, परन्तु मेरा काम बन जायेगा और मैं आपका जीवन–भर आभारी रहूँगा।''

इतना कह उसने लक्ष्मी को बाँह से पकड़ा और कहा, ''चलो दिखाऊँ।''

दोनों मकान के भीतर चले गये। इड्डा मुस्करा रही थी। उसने कहा, ''हमको चलना चाहिए।''

''और लक्ष्मी?'' शिवराम ने पूछा।

''वह अब नहीं जायेगी।''

''फिर भी उसको हम छोड़ नहीं सकते। देखें वह किस प्रकार उसको राजी करता है।''

''यह तो एक बहुत ही सुगम काम है।''

इस समय लाल मोहन परेड ग्राउंड से पैदल चलता हुआ आ पहुँचा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैठक–घर में शिवराम और इड्डा को बैठे देख पूछने लगा, "तो आप अभी तक यहाँ ही हैं। आपके लिए चाय मँगवाऊ?"

"नहीं।"

"लालाजी कहाँ हैं?"

"भीतर हैं।"

"वे बाहर आएँ तो उनसे कह दीजियेगा कि मैं अपने घर चला गया हूँ।"

शिवराम ने सिर हिला यह कहना स्वीकार किया तो वह बैठक से निकल गया। पाँच मिनट के बाद घर का नौकर आया और दोनों के सामने तिपाई रख उस पर दो गिलास शर्बत रख गया।

"यह हमें नहीं चाहिए।" शिवराम ने कहा।

"लालाजी ने कहा है कि कुछ देरी लग जायेगी। इस कारण आप यह लीजिये।" इतना कह वह चला गया।

वे अभी गिलास खाली नहीं कर पाये थे कि नौकर दो अमेरिकन मैगजीन लेकर चला आया और उनके सामने रख गया। वे उसमें तस्वीर देखने लगे। देखते–देखते एक घन्टा व्यतीत हो गया। इड्डा ने घड़ी में समय देखा और कह दिया, "बहुत देर हो गई है। इतनी देर में तो शैतान से भी सुलह हो सकती है।"

शिवराम हँस पड़ा। उसने कहा, "तो यह प्रतीत होता है कि इनमें शैतान कोई नहीं है।"

इस पर तो इड्डा भी हँसने लगी। शिवराम भी पुनः हँसने लगा। इड्डा ने कह दिया, "मेरा मतलब यह है कि दोनों शैतान हैं। इसी कारण देरी हो रही है।"

लगभग दस मिनट पश्चात् दोनों बाहर आ गये। सुदर्शनलाल बहुत प्रसन्न था। लक्ष्मी पीत मुख थी। सुदर्शन शिवराम के समीप बैठ गया। लक्ष्मी ने भर्राई हुई आवाज में इड्डा से कहा, "इड्डा बहन! तनिक इधर आओ।"

इड्डा मुस्कराती हुई शिवराम के मुख पर प्रश्न–भरी दृष्टि में देखने लगी। शिवराम ने कह दिया, "इड्डा! पहले ही बहुत देर हो गई है, जल्दी करना।"

अब लक्ष्मी इड्डा की बाँह पकड़कर उसको भीतर ले गई। बाहर सुदर्शन ने घन्टी बजाई। नौकर आया तो उसने कह दिया, "ठंडा पानी ले आओ।"

नौकर पुनः दो गिलास ओरेंज स्क्वैश ले आया। शिवराम ने कहा, "मैं अभी पी चुका हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पंडित जी! उसको एक घन्टा हो गया है। यह देखिये, इसमें एक दूसरा ही स्वाद है।"

दोनों पीने लगे। वास्तव में शिवराम इतनी देर तक वहाँ बैठने के लिए तैयार होकर नहीं आया था। इससे समय निकालने के लिए छोटी–छोटी सुरुकियाँ लगाकर पीने लगा।

शिवराम ने कहा, "इस ऋतु में यह ठंडा शर्बत पीते हुए सर्दी पकड़ लेने का डर नहीं है आपको?"

"यह शर्बत नहीं है।"

"तो क्या है?"

"इसमें थोड़ी 'एल' मिली रहती है। इससे ठंडा होने पर भी यह सर्दी–जुकाम नहीं करता।"

"तो आपने मुझे भी शराब पिला दी है?"

"यह कोई अण्डा–मुर्गी तो है नहीं, जो हत्या का पाप लग जायेगा।"

"पाप–पुण्य की बात नहीं कर रहा। मैं तो बुद्धि भ्रष्ट होने की बात कर रहा हूँ।"

सुदर्शनलाल ने एक सुरुकी लगाकर कहा, "इतने बड़े शरीर में इतने से क्या होगा? कुछ विशेष नहीं। ह्विस्की की एक–आध बोतल पियें तो कुछ बात भी हो। इतने से तो बुद्धि तीव्र ही होती है। अब देखिये, मैंने लक्ष्मी को राजी कर लिया है कि वह अब यहाँ से न जाये। यह निर्मल बुद्धि का काम है अथवा मलिन बुद्धि का।"

"यह तो भविष्य ही बतायेगा।"

दोनों ने शर्बत अभी समाप्त ही किया था कि इड्डा अकेली आई। उसने–हँसते हुए कहा, "चाचा जी! चलिये। लक्ष्मीजी नहीं जा रहीं।"

इस पर सुदर्शन और शिवराम हँसने लगे। शिवराम ने सुदर्शन से हाथ मिलाते हुए स्क्वैश के लिए धन्यवाद दिया तो सुदर्शनलाल ने कहा, "आज तो मैं आपका आभारी हूँ। अच्छा इड्डा देवी! कभी–कभी अपनी सहेली से मिलने आया करियेगा।"

इड्डा और शिवराम मोटर में सवार हो फिरोजपुर रोड पर जा पहुँचे।

: 4 :

मार्ग में शिवराम पूछने लगा, "हमें लक्ष्मी की मां को सूचना भेज देनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिए।''

''लक्ष्मी ने अपनी माँ को एक चिट्ठी लिखकर भेज दी है। जो चिट्ठी लेकर गया है, वह मनोहर को लेता आवेगा।''

''चलो, यह भी ठीक हुआ।''

परन्तु इड्डा ने कुछ उत्तर नहीं दिया। वे फिरोजपुर रोड पर पहुँचे तो राधा और जगन्नाथ इनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। इड्डा ने सूचना दे दी, ''लक्ष्मी की अपने पति से सुलह हो गई है और वह वहीं रह गई है।''

''तो इसी कारण इतनी देर लगी है।'' राधा ने पूछा?

''हाँ,'' शिवराम ने वह सब घटना जैसी घटी थी वर्णन कर दी।

''और इड्डा! लक्ष्मी ने क्या कहा है तुमको?''

''कुछ विशेष बात नहीं। यह शरीर के सम्मुख मन और आत्मा का पराभूत होना था। बुद्धि से तो वह समझ रही थी कि वह भूल कर रही है। परन्तु वह मान गई है कि वह विवश हो गई थी।''

जब शिवराम और राधा चले गए ने इड्डा ने बताया, ''आपका कथन सर्वया ठीक है कि इस संसार में प्रकृति के बन्धन बहुत प्रबल हैं।''

''लक्ष्मी बेचारी किसी प्रबल कारण से बहुत बुरी तरह बन्धन में फँसी है। इस एक पराजय का परिणाम न जाने कितने जन्म तक चलेगा।''

''तो क्या किया जाय?''

''इड्डा, तुम तो जानती हो कि वह मेरे आत्मा का अंश है। मेरा उद्धार भी तो तब तक नहीं हो सकता, जब तक उसका उद्धार नहीं होता। मैं चाहता था कि मेरा शरीर छूटने पर उसका भी शरीर छूट सकता तो हम पुनः एक हो सकते।''

''परन्तु आप कर भी क्या सकते हैं?''

''हाँ, इस संसार की गति निराली है और मनुष्य अपनी बुद्धि से विचार कर एक मार्ग का अवलम्बन करता है और अदृश्य कर्मफल मनुष्य को धकेलते हुए किसी दूसरे ही मार्ग पर ले चलते हैं।''

उक्त घटना के एक मास व्यतीत होने पर समाचार–पत्र में यह घोषणा हो गई कि सुदर्शनलाल सिकन्दर हयात के दल में चला गया है। जानकर क्षेत्र यह आशा कर रहे हैं कि वह मंत्रि–मण्डल में स्थान पा जायेगा।

दो–तीन दिन के उपरान्त यह सूचना प्रसारित हुई कि सुदर्शनलाल कृषि–मन्त्री नियुक्त हो गया है। इस समाचार से तो पूर्ण लाहौर को ही विस्मय हुआ। लाहौर में सब प्रश्न करते थे कि सुदर्शनलाल, शेयर मार्केट में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काम करने वाला व्यक्ति भला कृषि मन्त्रालय को कैसे चलायेगा। यदि किसी को विस्मय नहीं हुआ तो वह जगन्नाथ था।

इड़्डा ने कहा, ''आप एक पत्र सुदर्शनलाल को बधाई का भेज दीजिये।''

''हाँ, यदि किसी के ठगे जाने पर उसको बधाई दी जानी चाहिए तो दी जा सकती है।''

''परन्तु यह ठगा कैसे गया है।''

''यूनियन दल के किसी व्यक्ति ने सुदर्शन के एहसान से मुक्त होने के लिए उसको मूर्ख बनाया है।''

''यह संसार जैसा भी है, अति आकर्षक और लुभायमान है। इसमें रहने वाले उच्च्च स्थानों पर पहुँच कर अपने को गौरवान्वित अनुभव करते हैं। जब तक वे ऐसा अनुभव करते हैं वे बधाई के पात्र ही हैं।''

''मैं तो लक्ष्मी को बधाई देने का विचार कर रहा था। मैं समझता हूँ ज्यों–ज्यों सुदर्शन सांसारिक उन्नति में अग्रसर होता जायेगा, उसमें और लक्ष्मी में अन्तर बढ़ता जायेगा और एक दिन वह उससे मुक्ति पा जायेगी।''

''तो लक्ष्मी को ही लिखिये। उसके द्वारा ही सही, मिनिस्टर साहब को इस सफलता पर बधाई जानी चाहिए।''

जगन्नाथ ने लक्ष्मी को पत्र लिख दिया, ''लक्ष्मी बहिन! अब तुम पंजाब के एक मिनिस्टर की पत्नी हो गई हो। तुम्हरा पद भी ऊँचा हो गया है। इससे मुझे अति प्रसन्नता हुई है। अतः मेरी बधाई स्वीकार हो। जिसके कारण तुम्हें यह तरक्की हुई है, तुम्हें उसका कृतज्ञ रहना चाहिए। जगन्नाथ भाई की बधाई उसको भी मिलनी चाहिए।''

पत्र गया तो एक सुन्दर सुनहरी किनारे वाला कार्ड जगन्नाथ और इड़्डा के नाम आ गया। कार्ड पर हाथ से लिखा था।

''ऑनरेबल मिनिस्टर सुदर्शनलाल, मिनिस्टर ऑफ एग्रिकल्चर फॉर पंजाब तथा मिसेज सुदर्शनलाल, मिस्टर जगन्नाथ और मिसेज जगन्नाथ को 10 फरवरी 1927 को रात साढ़े–आठ बजे अपने साथ खाने पर आमन्त्रित करते हैं।''

कार्ड के नीचे सुदर्शन और लक्ष्मी के हस्ताक्षर थे और आर. एस. वी. पी. पर्सनल सेक्रेटरी टू दी ऑनरेबल मिनिस्टर लिखा था।

जगन्नाथ ने कार्ड इड़्डा को दिखाया तो उसने कहा, ''चलना चाहिए।''

''क्या होगा जाने से?''

''आप कहते हैं न लक्ष्मी और सुदर्शन में अन्तर बढ़ रहा है, तो आपके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाने से उसमें और आप में अन्तर कम होने लगेगा।''

''हो सकता है। इस पर भी कुछ कहा नहीं जा सकता।''

''परन्तु अवसर तो है। इससे लाभ उठाना चाहिए।''

''हाँ यत्न किया जा सकता है।''

निमन्त्रण स्वीकार करने की सूचना भेज दी गई और निश्चित दिन तथा समय पर दोनों मिनिस्टर साहब के बँगले पर जा पहुँचे। इनको भीतर पहुँचाया गया तो लक्ष्मी इनका स्वागत करने के लिए ड्राइंग–रूम में खड़ी थी। वह इड्डा से गले मिली और हाथ जोड़कर जगन्नाथ को नमस्कार कर बोली, ''आज मंत्रिमण्डल की अकस्मात् बैठक हो गई है। उनका फोन आया है कि मैं आपका स्वागत करूँ। वे नौ बजे तक पहुँच जाएँगे।

लक्ष्मी उनको भीतर के कमरे में ले गई और वहाँ बैठा बातें करने लगी। जगन्नाथ ने ही बात आरम्भ की, ''लक्ष्मी! प्रसन्न हो?''

''बहुत! मैं इड्डा बहिन का धन्यवाद करती हूँ। उसने ही मुझे यह सुझाव दिया था कि यदि मेरी जगमोहन के पिता से, सुलह हो जायेगी, तो ठीक नहीं क्या? इस सुझाव से ही मैं विचार करने लगी थी और फिर सुलह हो गई।''

''तो तुम समझती हो इससे तुमको लाभ पहुँच रहा है?''

''मैं समझती हूँ कि अब चित्त में शान्ति रहती है। माँ के घर रहते हुए कुछ अभाव–सा बना रहता था। उस अभाव से चित्त व्याकुल रहता था और मैं आपके बताये प्राणायाम से भी उचित लाभ नहीं उठा सकती थी।''

इड्डा ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, ''और अब लाभ उठा रही हो? भला क्या अन्तर पड़ गया है अब?''

''ठीक वर्णन तो नहीं कर सकती। यह कुछ इस प्रकार लग रहा है जैसे स्कूल के दिनों में गर्मी के मौसम में रात के समय गणित के प्रश्न करते समय मच्छर काटते थे तो प्रश्न करने से ध्यान उचट जाता था। वैसे ही माँ के घर में जब प्राणायाम करती थी तो ध्यान स्थिर नहीं हो सकता था।''

''तो मच्छर काटते थे वहाँ?'' जगन्नाथ ने मुस्कराते हुए पूछ लिया।

''जी,'' लक्ष्मी ने आँखें नीचे किए हुए कहा, ''अब कुछ ऐसा अनुभव होता है कि वासनाओं पर अति सुगन्धित 'द्रव' छिड़क दिया गया है, जिससे सब मच्छर अचेत हो सो गये हैं और मैं ध्यान–धारण और समाधि में लीन होने में सुविधा पाती हूँ।''

''जब तक उस द्रव्य का प्रभाव रहता है शान्त चित्त से बैठ, मैं अपने भविष्य और भूत का चिन्तन करती रहती हूँ और विचित्र प्रकार की स्मृतियाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथवा संस्कार साकार रूप धारण कर सामने नृत्य करते दिखाई देने लगते हैं। यह अति आन्दोत्पादक है।''

''और सुदर्शनजी से कैसे पट रही है?'' इड्डा ने पूछा।

''वही तो साधन बन रहे हैं इस शान्ति–चित्त की अवस्था में। मैं उनकी कृतज्ञ हूँ।''

''वे तुम्हारे ध्यान–समाधि पर नाराज नहीं होते?''

''नहीं इड्डा बहन! बहुत विचित्र है। वे भी कहते हैं कि मेरे यहाँ आने का कारण ही उनको इस प्रकार उन्नति का अवसर मिला है। इससे वे समझते हैं कि मैं अति शुभलक्षण हूँ।''

जगन्नाथ और इड्डा लक्ष्मी की बातें सुन हँस रहे थे। जब सुदर्शनलाल आया, उसने जगन्नाथ से हाथ मिलाकर कहा, ''जगन्नाथ जी, अति धन्यवाद है जो आप यहाँ आये हैं। मैं आपका बहुत ही कृतज्ञ हूँ। मुझे आधा घण्टा की देरी हो गई है, सो क्षमा चाहता हूँ। आइये.....''

सब उठ कर डाइनिंग रूम में चले गये। जगन्नाथ और इड्डा ने हाथ धोये तो सुदर्शनलाल और लक्ष्मी ने भी धोये।

जब बैरा भोजन परोसने लगा तो सुदर्शनलाल ने बताना आरम्भ कर दिया। उसने कहा, ''यह आप लोगों से पृथक् मिलने का प्रबन्ध तो लक्ष्मी के कहने पर ही किया है। जब से इस बार मेरे घर आई है यह तब से ही कह रही थी, परन्तु मैं संकोच अनुभव कर रहा था। निर्वाचनों में मेरे सफल होने पर आपने मेरा चाय का निमन्त्रण स्वीकार नहीं किया था। इड्डाजी भी तो लक्ष्मी को पार लँघाने ही आई थीं।

''परन्तु आपकी बधाई का पत्र आने पर संकोच मिट गया। मैंने निमन्त्रण भेज ही दिया। आपने स्वीकार किया, मुझे इससे भारी संतोष है।''

''एक बात बताऊँ,'' जगन्नाथ ने कहा, ''बधाई का पत्र भी इड्डा की प्रेरणा का ही फल था। मैं लक्ष्मी के सरल जीवन में किसी भी प्रकार की विषमता उत्पन्न करना नहीं चाहता था। इड्डा ने प्रेरणा दी और पत्र लिखा गया। परिणाम यह है कि मैं पंजाब के एक मंत्री महोदय के आलीशान बंगले में बैठा भोजन कर रहा हूँ।''

''मुझे डर था कि आप जैसा सन्देहात्मक प्रवृत्ति वाला व्यक्ति जो पत्नी को शृंगार करते देख उसकी निष्ठा पर सन्देह करने लगा था, मेरे उसको पत्र लिखने पर उसकी हत्या भी कर सकता है।''

सुदर्शन हँसने लगा। जगन्नाथ इस हँसी का अर्थ न समझ प्रश्नभरी दृष्टि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में उसके मुख पर देखने लगा तो सुदर्शनलाल ने कह दिया, ''जगन्नाथ भैया! यह केवल शृंगार ही नहीं था। इसमें कई अन्य कारण भी थे। आपकी निरन्तर प्रशंसा, आपका सुन्दर गठित ओजमय शरीर और फिर आपकी विद्या, ये सब बातें थीं जो मेरे मन मे डाह उत्पन्न करती थीं। मेरे डाह का रोष लक्ष्मी पर भी निकला।''

''जिस दिन मैंने इसको घर से निकाला था, उस दिन मैं शेयर मार्केट में दस हजार रुपया हार कर आया था। इसने मेरे मस्तिष्क को और भी गन्दा कर रखा था।

''मैं समझता था कि मैं इड्डा देवी से व्यापार–सम्बन्ध बनाकर इनको अपनी मिस्ट्रेस बनाने में सफल हो जाऊँगा। परन्तु व्यापार–सम्बन्ध तो बना नहीं और उस दिन के अनन्तर एक के उपरान्त दूसरी हानि होने लगी।

''इन सब बातों से चिढ़ा हुआ मैंने लक्ष्मी पर लांछन लगाया कि उसके पेट का बच्चा आपसे हैं। मेरे इस कार्य में मेरे बहुत से मित्र मुझे प्रोत्साहन देते थे। केवल एक आदमी था, जो मुझको अपने कार्य से मना करता रहता था। वह था लाल मोहन। वह कहता था कि लक्ष्मी निष्ठावान पत्नी है। उसका तिरस्कार मुझे पतन की ओर धकेल रहा है।

''लाल मोहन के बार–बार कहने पर मैं आपकी रात्रि की गोष्ठियों में जाने लगा। वहाँ आप सबके विचार और लोक–परलोक की बातें सुन मैं आप सब लोगों को पागल समझने लगा था।

''मैंने एक दिन लाल मोहन को आपकी गोष्ठी की बात हँसी–हँसी में बताई तो वह गम्भीर हो पूछने लगा, इसमें हँसी की क्या बात है?''

''मैंने कहा, हँसी नहीं तो और क्या है। मैं जगन्नाथ इत्यादि सबको नीम पागल समझता हूँ।''

''उसने एक बात पूछी, जब से लक्ष्मी गई है, मेरी कितनी हानि हुई है? मेरे पूछने पर उसने बताया, जो हिसाब उसके पास है, उसके अनुसार पाँच–छः लाख से कम नहीं और यदि इसी प्रकार चलता रहा तो आगामी निर्वाचनों तक मैं ऋण में दब जाऊँगा।''

''मैंने हँसकर पूछा, तो प्राणायाम मुझे इस सबसे बचा लेगा क्या? उनका कहना था, मेरे पास आपके भाग्य का रजिस्टर नहीं, परन्तु एक बात मैं जानता हूँ कि इससे आपकी बुद्धि स्थिर होगी और आप जिस भी काम में हाथ लगाएँगे, वह सिद्ध होगा।''

''भले ही वह चोरी और ठगी का काम हो? मैंने पूछा, वह मुस्कराते हुए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहने लगा, प्राणायाम तो मशीन में ग्रीज देने के समान है और बुद्धि मशीन है। जब मशीन तेल देने से चलने लगती है तो फिर आप इससे खद्दर और टाट बुनते हैं, अथवा मलमल और मखमल बुनते हैं, यह आपके विचार की बात है। मशीन तो काम बढ़िया करेगी। इसी प्रकार प्राणायाम से बुद्धि निर्मल होती है और वह सतर्कता तथा योग्यता से काम करने लगती है। यह सब आपका काम होगा कि उससे शेयर का काम करें, राजनीति की शतरंज खेलें अथवा कोई धर्म–कर्म करें। बुद्धि बेचारी तो आपके कहने पर काम करने लगेगी। निर्मल होगी तो योग्यता से काम करेगी फिर ऋद्धि–सिद्धि प्राप्त होगी और आपके घर लक्ष्मी का वास होगा।''

''इसमें लक्ष्मी कहाँ से आ गई?''

''आप उसके गुणों को समझ लेंगे। लाल मोहन का कहना था, यह समझना भी तो बुद्धि का काम है। समझकर आप उसको घर लाना चाहेंगे और फिर इसमें सफल हो सकेंगे।''

''उस समय लक्ष्मी का विचार तो मन में आया नहीं। परन्तु अपनी शेयर मार्केट में उल्टी चालों से बचने के लिए और राजनीति क्षेत्र में बढ़ रही बदनामी से बचने के लिए लाल मोहन की सम्मति पर मैं कार्य करने लगा।''

''यह अप्रैल मास की बात थी। जून में ही पासा पलटने लगा। मेरी नेशनलिस्ट दल में आवश्यकता अनुभव होने लगी। मैं उसका सदस्य हो गया। व्यापार में भी दिशा बदल गई। मैं शेयर बेचने–खरीदने का विचार छोड़ शेयरों में पूंजी लगाने की दिशा में काम करने लगा और एक निश्चित और अटूट आय की धारा बहने लगी। इससे चित्त स्थिर हुआ तो एक दिन विचार आया कि लक्ष्मी के बच्चे को तो देखूँ। मैं उसकी माँ के घर जा पहुँचा। लक्ष्मी वहाँ नहीं थी। बच्चा इसके भाई की पत्नी की देख–रेख में था। लक्ष्मी की माँ लड़का मेरी गोद में दे अपने कमरे में से एक दर्पण उठा लाई। कहने लगी, इसको देखो और अपने मुख को दर्पण में देखो। तनिक ध्यान से देखोगे तो जान जाओगे कि लक्ष्मी सती–साध्वी है।''

''मैंने देखा और सब–कुछ समझ अपने मन में अपने कथन पर पश्चात्ताप करने लगा, मैंने एक दिन लक्ष्मी को, इड्डा देवी के सामने ही कहा था कि मुझे विश्वास है, कि लक्ष्मी के पेट का बच्चा जगन्नाथ का है। इस पर भी मैंने अपनी भूल स्वीकार नहीं की। मैंने एक दूसरे ढंग से अपना विचार प्रकट कर दिया। मैंने माँ से पूछा, क्या लक्ष्मी मेरे घर आने के लिए उत्सुक है?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं कह नहीं सकती।" माँ ने बच्चे को मेरी गोद से लेकर अपनी पतोहू को देते हुए कहा, "कदाचित् वह अब शाही मुहल्ले में जाना पसन्द नहीं करेगी। परन्तु मैं निश्चय से कुछ नहीं कह सकती। अपने विषय में तो वह ही बता सकती है। हाँ, इस बच्चे को वह देना चाहेगी। वह कहती है, जिस घर की मिट्टी है, उसी को लगनी चाहिए।"

"मैं एक दिन लक्ष्मी से अनारकली बाजार में मिल गया। मैंने व्यंग्य के भाव में पूछा, "जगन्नाथ के पास से आ रही हो?"

"इसने मुस्कराते हुए कह दिया, जिस वस्तु से वास्ता नहीं उसके विषय में पूछने से लाभ होगा क्या?"

"और यदि वास्ता बनाने की इच्छा हो तो?"

"व्यर्थ है, कुछ लाभ नहीं होगा। मैं एक बात की इच्छुक हूँ। आप अपने बच्चे को ले जाइये। मैंने उसका नाम मनमोहन रख दिया है। आप जो मन में आये नाम रख लीजियेगा।"

"परन्तु उससे नफरत क्यों है। वह सुन्दर हृष्ट–पुष्ट और समझदार प्रतीत होता है।"

"जी, जैसे आप हैं। आपको विस्मरण करने के लिए उसको भी आपके पास भेज देना चाहती हूँ।"

"तब तो बात विचारणीय हो गई है। अच्छा, बताऊँगा। इस समय तो निर्वाचन सिर पर है और मेरे पास इस प्रकार की बातों पर विचार करने का समय नहीं है, इतना कह मैं चल पड़ा।

"राजनीति में भी मेरी बुद्धि कुशाग्र हो गई। मैंने टिकट तो लिया नेशनलिस्ट दल का और सांठ–गाँठ रखी काँग्रेस से। वास्तव में दोनों दल भ्रम में फँसे दिखाई दिये। दोनों देश का हित समझ नहीं सके। आधारभूत सिद्धान्त दोनों के एक थे। कुछ तो नेतागिरी का झगड़ा था और कुछ राष्ट्रीयता के अर्थों में मतभेद। हैं दोनों ही गलत।

"मैंने दोनों से लाभ उठाना चाहा और लाभ उठाकर मिनिस्टर बन गया। मेरे कहने पर ही लाल मोहन कांग्रेस की तरफ आ गया और अब वह भी अनुभव करने लगा है कि उसने ठीक ही किया है।"

"चाय–पार्टी का निमन्त्रण जाने लगा तो लाल मोहन कहने लगा कि आप सबको निमन्त्रण भेज दूँ। लक्ष्मी के लिए वह विशेष आग्रह करने लगा तो मैंने पूछा, लाल मोहन! तुम्हारी क्या रुचि है लक्ष्मी में।?"

"वह मेरी औखों में निर्भीकता से देख कहने लगा, 'कह दूँ तो नाराज हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाएंगे क्या?'

"मैंने कहा, 'अच्छा नहीं हूँगा। पर सत्य–सत्य बताना।"

"उसने कहा, 'मैं लक्ष्मी से प्रेम करता हूँ। मैंने उससे प्रेमप्रसाद पाने का यत्न भी किया है, परन्तु उसने एक दिन ऐसी डाँट बताई कि पुनः मुख से बात नहीं निकाल सका। मैं उसके सामने जाने में संकोच अनुभव करता हूँ।'

"उसको यहाँ लाकर उससे प्रेमप्रसाद पाने का यत्न करने में मेरी सहायता चाहते हो क्या?"

"अब विचार बदल गया है।" उसका कहना था, 'वह देवी है और देवी के चरणों में ही अपनी सेवा–भक्ति के पुष्प चढ़ा सकूँ तो सन्तुष्ट हो जाऊँगा।"

"मैंने निमन्त्रण भेजा। मेरा विचार था कि आप में से कोई नहीं आयेगा। परन्तु आई इड्डा देवी, शिवरामजी और लक्ष्मी। उस दिन लाल मोहन ने मुझको कहा था कि यदि मैं यत्न करूँगा तो लक्ष्मी जी यहाँ रह सकेगी और इससे मुझको लाभ होगा। अभी तक मुझे लाल मोहन की सम्मति से लाभ हुआ था, मैं मान गया। मैंने यत्न किया और सफल हो गया।

"इसके उपरान्त सिकन्दर हयात से मेरा परिचय हुआ और दल छोड़ने की बात होने लगी। मेरे मुख से निकल गया, 'मंत्रिमण्डल में लिया जाऊँ तो दल बदल सकता हूँ' और उन्होंने मुझे अपने दल में सम्मिलित होने का निमन्त्रण दे दिया।

"अब बताइये जगन्नाथजी, मैं तो लक्ष्मी का बेदाम का गुलाम हो गया हूँ।"

भोजन समाप्त हुए कितनी ही देर हो चुकी थी। इस पर भी सब बैठ सुदर्शनलाल की बात ध्यान से सुन रहे थे। बात समाप्त होने पर लक्ष्मी ने कह दिया, "इसमें कारण बुद्धि का निर्मल और स्थिर होना ही है।"

: 5 :

घर लौटते हुए इड्डा ने कहा, "मेरा अनुमान ठीक ही प्रतीत होता है कि लक्ष्मी और सुदर्शनलाल में अन्तर बढ़ रहा है।"

"हाँ," जगन्नाथ ने कह दिया, "और मुझको अब वह अपने अधिक समीप होती प्रतीत होती है। इस पर भी कह नहीं सकता कि यह अन्तर भी इस जन्म में पूरा हो सकेगा अथवा नहीं।"

"शरीर से हम दूर–दूर हैं। भावनाओं और अनुभवों में हम समीप–समीप

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिखाई देते हैं। देखने में अन्तर थोड़ा–सा ही दिखाई देता है। इस पर भी यह कब पूरा हो सकेगा कहना कठिन है।''

''इस सब घटना–चक्र में मैं तो अभी भी भटक रही प्रतीत होती हूँ। इस पर भी मैं आशा कर रही हूँ। जैसे कृष्ण ने गीता में कहा है, योगी पुरुष का कभी नाश नहीं होता। अर्थात् उसकी प्राप्ति की सिद्धि उसके साथ रहती है। लोक–कल्याण करने वाले की उल्टी गति नहीं होती।

''इस कारण मैं इस मार्ग पर चलती जा रही हूँ।''

इड्डा का जगन्नाथ से विवाह हुए तीन वर्ष हो चुके थे। प्रथम दिन से ही दोनों ने एक–दूसरे को देखा था और पसन्द किया था। आरम्भ में तो इड्डा ने इसको 'प्रथम दर्शन में प्रेम' (लव एट फर्स्ट साइट) का प्रमाण समझा था। परन्तु जगन्नाथ का विश्लेषण दूसरा था। यह विश्लेषण जगन्नाथ ने इड्डा को समझाया। उसने कहा, ''इड्डा! वास्तविकता यह है कि हम सब प्राणियों की आत्मा एक लम्बी यात्रा पर चल रही है। इस यात्रा का आरम्भ आत्मा के गुणों के कारण ही होता है। इच्छा आत्मा का एक गुण है और जब इसकी इच्छा एक विशेष प्रकार के सुख की प्राप्ति के लिए होने लगती है तो यह इस यात्रा पर चल पडता है। जहाँ तक मैं जान पाया हूँ, यह इच्छा है संगत की। संगत के लिए इसके अपने ही दो अंश पृथक्–पृथक् हो जाते हैं। एक अंश पुरुष के रूप में होता है और दूसरा अंश स्त्री के रूप में। ये संगत से सन्तुष्ट होते हैं परन्तु संगत चिरस्थायी नहीं रह सकती। एक अंश में और दूसरे अंश में गति–भेद होता है। दोनों अंश पृथक्–पृथक् हो जाते हैं। तब दोनों अंश भटकने लगते हैं। इस यात्रा में घटनावश अथवा अपने पहले के कर्मफल से हम इस पृथ्वी पर ऐसे आ पहुँचे हैं, जैसे यात्रा में रात ठहरने के लिए किसी सराय में पहुँच जाते हैं। इस सराय में रहते हुए मैं और तुम एक ही कमरे में ठहर गये हैं। हमने परस्पर बातचीत की है और ऐसा प्रतीत होता है कि हम एक ही पथ के राही हैं। यहाँ पहुँचने से पहले का और कदाचित् अगले दिन यात्रा पर चलने का हमारा पथ एक ही है। यही कारण है कि हमारा परस्पर सामीप्य है। दूसरों से जो इसी सराय में ठहरे हुए हैं, हमारा मार्ग–ऐक्य है नहीं। इसी सामीप्य को मानव–भाषा में प्रेम, स्नेह, वात्सल्यता इत्यादि नामों से स्मरण किया जाता है।''

इड्डा इस विश्लेषण को समझ गई थी और मार्ग एक होने से वह जगन्नाथ से इस यात्रा पर सहायता पाने की आशा कर रही थी। इन तीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्ष के इकट्ठे रहने से उनके घर एक लड़का हो गया था। इड्डा समझ रही थी कि एक बच्चा और होगा। यद्यपि अभी गर्भ के लक्षण प्रतीत नहीं हो रहे थे। परन्तु उसका मन कह रहा था कि अभी एक बच्चा और होगा। मन की इस अनुभूति का भी उसने जगन्नाथ से उल्लेख किया तो जगन्नाथ ने बताया कि यह भी किसी पूर्व जन्म के कर्म का परिणाम ही है।

इस प्रकार दोनों बुद्धिशील प्राणी अपना मार्ग टटोल–टटोल कर चल रहे थे। इड्डा अपने लन्दन के जीवन का विश्लेषण करती थी तो अनुभव करती थी कि वह जीव–विज्ञान (बॉयोलॉजी) के सिद्धान्त के अनुसार, जन्म, बालपन, कौमार्यावस्था, यौन–जीवन, वृद्धावस्था, तदनन्तर मरण का जीवन व्यतीत कर रही है। बाल्याकाल और कौमार्यावस्था व्यतीत कर यौन–जीवन में पदार्पण करने वाली थी कि उसको अपने जीवन पर कुछ शंका उत्पन्न हो गई। यह उसके पूर्वजन्म के संस्कारों का एक धीमा–सा झटका ही समझना चाहिए। वह जीवन की शेष अवस्थाओं में प्रवेश पाती–पाती रुक गई। इस समय उसकी माँ विश्व–भ्रमण के लिए चल पड़ी थी। वह साथ ही हिन्दुस्तान पहुँची तो उसको यह स्थान अधिक प्रिय और कुछ देखा–भाला लगा। उसने यहाँ ही रह जाने का विचार किया तो दो समस्याएँ उपस्थित हो गईं। जीवनयापन के साधन और किसी बड़े का संरक्षण। अदृश्यों की प्रेरणा से मिस्टर जोन की पत्नी सरस्वती से संपर्क हुआ और परिणाम में उसकी दोनों समस्याएँ हल हो गईं। विवाह हुआ तो इस नवीन परिस्थिति का ज्ञान हुआ। कुछ समय लगा इस बात को हृदयंगम करने के लिए। जगन्नाथ स्वयं भी तो अभी अपने पूर्ण जीवन को देख नहीं पा रहा था। शास्त्राध्ययन से वह इस विषय में अधिक ज्ञान प्राप्त करने के लिये मार्ग ढूँढ़ रहा था। मन को विकार–रहित करने पर अनेकानेक प्रकार के संस्कार उसमें प्रकट होने लगे थे और प्राणायाम तथा धारणा–ध्यान, समाधि से वह बुद्धि को निर्मल कर उन संस्कारों का अर्थ समझने लगा था। इस प्रकार इड्डा और जगन्नाथ में सामन्जस्य बना था और वह भी दिन–प्रतिदिन एक–दूसरे के परस्पर आश्रित होने से घनिष्टतर होता जा रहा था।

अब लक्ष्मी निःसंकोच भाव में इनसे मिलती थी और ये भी सुदर्शनलाल के घर जाते रहते थे।

एक समय आया जब सर सिकन्दर का देहान्त हो गया और दल का नेता खिजर हयात बन गया। सुदर्शन को मन्त्रिमण्डल में नहीं लिया गया। परन्तु इस बीच सुदर्शनलाल के सम्बन्ध सरकारी अधिकारियों से बहुत अच्छे हो गये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे और सुदर्शनलाल को हिन्दुस्तान की सरकार ने इंडिया हाउस लन्दन में चीफ सुपरवाइजर नियुक्त कर दिया।

परिणाम यह हुआ कि सुदर्शनलाल लंदन में जाकर रहने लगा। लक्ष्मी और उसके दोनों बच्चे भी वहाँ चले गये।

लक्ष्मी को लंदन गये कई वर्ष हो चुके थे। वहाँ से उसके पत्र इड्डा और जगन्नाथ को आते रहते थे। ये भी पत्रों का उत्तर देते रहते थे।

पाँच वर्ष के उपरान्त लक्ष्मी और सुदर्शनलाल हिन्दुस्तान लौटे, इस समय तक इड्डा के घर पर भी एक लड़की हो चुकी थी। उसका नाम प्रमिला रखा गया था।

इड्डा ने मंसूरी में एक मकान मोल ले लिया था और उस मकान में ग्रीष्म ऋतु में रहा करती थी। वर्ष के शेष समय में वह लाहौर, फिरोजपुर रोड वाली कोठी में आ जाया करती थी। यह कोठी भी मोल लेकर नई बनवा ली गई थी।

इस समय सुदर्शनलाल लाहौर आ पहुँचा। उसके पहुँचने का पता केवल जगन्नाथ को मिला तो उसने अपनी कोठी में ही उसके ठहरने का प्रबन्ध कर दिया। वह जानता था कि सुदर्शनलाल अपने भाइयों के पास नहीं रहेगा। उसके पिता का देहान्त हो चुका था और माँ अपने छोटे बेटे के पास रहती थी।

सुदर्शनलाल और लक्ष्मी समुद्री जहाज से बम्बई और वहाँ से पंजाब मेल से लाहौर पहुँच गये। सुदर्शनलाल के बच्चे वहीं इंग्लैंड में रह गये थे। उनको स्कूल में छुट्टियाँ नहीं थीं।

इड्डा और जगन्नाथ उनके स्वागत के लिए लाहौर स्टेशन पर गये। इड्डा गौरवर्णीय, नीली आँखें और भूरे बाल, काली साड़ी, ब्लाउज पहने थी। पैरों में चप्पल थी और लक्ष्मी उज्जवल गदमी रंग, काली बड़ी–बड़ी आँखें और कृष्ण केशों वाली, स्कर्ट और गौन पहने थी। स्कर्ट घुटनों से ऊपर तक था और घुटनों तक जुराबें थीं तथा ऊँची एड़ी के सेण्डल उसने पहने थे।

एक युरोपियन जाति की हिन्दुस्तानी पोशाक में और दूसरी स्पष्ट हिन्दुस्तानी रूप–रंग वाली यूरोपियन पहिरावे में दोनों परस्पर गले मिलीं। प्लेटफार्म पर खड़े लोग इस पूर्व–पश्चिम के संगम को देखने के लिए खड़े हो गये। दोनों अपने–अपने स्थान पर सौंदर्य का प्रतिनिधित्व करती थीं।

जगन्नाथ ने सुदर्शनलाल से हाथ मिलाया और पूछ लिया, "यात्रा कैसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही है।''

''बहुत मजे की। जाते समय तो लक्ष्मी को उल्टी हुई थी, परन्तु लौटते समय तो यह जहाज में कूदती–फाँदती आई है।''

''बच्चे नहीं आये?''

''उनको स्कूल से छुट्टी नहीं मिली।''

''कब तक रहने का विचार है।''

''अभी तो छः मास की छुट्टी लेकर आया हूँ। परन्तु सरकारी नौकरी से उचाट होकर लौटा हूँ। मैं समझता हूँ कि अब यहाँ से त्यागपत्र ही भेज सकूंगा।''

स्टेशन से निकलकर सब इड्डा की नई गाड़ी में सवार हो फिरोजपुर रोड वाली कोठी में जा पहुँचे। सुदर्शनलाल के भाई का उससे किसी प्रकार का सम्पर्क था नहीं, अतः वह स्टेशन पर आया भी नहीं था। जगन्नाथ यह जानता था और इस कारण वह उसको अपनी कोठी पर ले गया।

गाड़ी आठ बजे प्रातःकाल लाहौर पहुँची थी। कोठी में पहुँच स्नानादि से अवकाश पा और प्रातः का अल्पाहार ले लक्ष्मी ने अपनी सास और अपनी माँ से मिलने के लिए जाने की इच्छा प्रकट कर दी।

इड्डा ने गाड़ी दी तो सुदर्शन और लक्ष्मी हिन्दुस्तानी पहरावे में सम्बन्धियों से मिलने चल पड़े। यह स्पष्ट ही था कि उन्होंने अपने हिन्दुस्तान आने का समाचार अन्य किसी को नहीं भेजा था।

जगन्नाथ ने भोली को लक्ष्मी के आने की बात कही थी। परन्तु उसने कह दिया, ''जब पिछले पाँच वर्ष में उसने एक भी पत्र नहीं लिखा और यहाँ आने का समाचार तक नहीं भेजा तो मैं उसमें रुचि छोड़ बैठी हूँ।''

जगन्नाथ ने भोली के मनोभावों का उल्लेख लक्ष्मी से नहीं किया था। इस पर भी लक्ष्मी को अपनी माँ के घर से किसी के स्टेशन पर न आने पर विस्मय हुआ था और अल्पाहार लेते हुए उसने अपने माता–पिता के स्वास्थ्य के विषय में पूछ लिया। इड्डा ने बतायो, हमने तुम्हारे आने का समाचार उनको बता दिया था। लक्ष्मी ने कह दिया ''जगमोहन के पिता अपने माता–पिता को पत्र नहीं लिखते थे। इस कारण मैंने भी अपने माता–पिता को पत्र नहीं लिखा।

यही कारण था कि लक्ष्मी ने अपनी माँ से मिलने का प्रस्ताव रह कर दिया था।

जब वे गये तो जगन्नाथ ने पूछ लिया, ''इड्डा! कैसी लगती है लक्ष्मी?''

''देखने में तो कुछ जंची नहीं। मुझको हिन्दुस्तानी पहरावे में अधिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पसन्द आई है।''

''परन्तु कटे बालों से तो यह पहरावा कुछ फूहड़ दिखाई देने लगा है।''

''हाँ, कटे बाल तो नंगे सिर में ही ठीक प्रतीत होते हैं और साड़ी में सिर नंगा भला नही लगता।''

''यह भला और बुरा लगना तो अभ्यास की बात है। हाँ, यह कहा जा सकता है कि यदि नंगे सिर रहना है तो साड़ी के डिजाइन में भी कुछ परिवर्तन करना पड़ेगा। परन्तु मैं तो उसके कपड़ों और शरीर की बात नहीं कर रहा। मैं तो उसके आत्मा और मन की बात पूछ रहा हूँ।''

''मुझको उसके आत्मा के दर्शन नहीं हुए। कुछ ऐसा प्रतीत हो रहा था कि घने बादलों के पीछे कुछ छिपा हुआ है। अभी देखने का समय भी तो नहीं मिला।''

''मुझको कुछ गंदला–गंदला दिखाई दिया है। देखो इड्डा! मैं बहुत छोटा था। कदाचित् तीन वर्ष की आयु का रहा हूँगा। एक दिन भोली के घर पर चढ़ गया। भोली मुझसे स्नेह रखती थी और जब भी मैं वहाँ जाता था, मुझे आदर से बैठाती और कुछ–न–कुछ खिलाती थी।''

उस दिन मैं गया तो लक्ष्मी सीढ़ियों पर मिल गई। मुझे देख बोली, ''कहाँ जा रहे हो?''

''मैंने कहा, ऊपर।''

''वह मुझे पकड़ गले मिलने लगी। मुझे यह बुरा प्रतीत नहीं हुआ। वह मुझको छोड़ नीचे उतर गई और मैं ऊपर भोली के पास चला गया। उस दिन मुझे ज्ञान की प्रथम झलक का भास हुआ। मैं घर पर आकर लक्ष्मी के व्यवहार पर विचार करता रहा। मुहल्ले के लोग मुझे पागल जग्गू कहते थे और बच्चे भी इसी नाम से पुकारते थे। केवल भोली ही पागल तो कहती थी परन्तु प्यार भी करती थी। लक्ष्मी मुझ मैले–कुचैले से गले मिलने लगी थी। यह बहुत ही सुखद प्रतीत हुआ था।

''इस बात को समझने में दो वर्ष लगे। इस काल में चाचा शिवरामजी मुझे बातें करने में प्रोत्साहन देने लगे थे। इससे मुझमें अपने मन की बात समझने की सामर्थ्य मिलने लगी थी। एक दिन लक्ष्मी स्कूल से आई तो मुझे समझ आया कि वह और मैं तो एक दाने के दो पटल ही हैं। मैंने उसको कहा, तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा हूँ। उसने पूछा क्यों? तो मेरे मुख से निकल गया, तुमसे कुछ कहना है। उसने कहा, कहो। पर मैं कह नहीं सका। इससे मैंने, कह दिया, फिर कहूँगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह हँस पड़ी और मैं भी हँसा।"

"यह तो मुझे पीछे जब मैं सत्रह वर्ष का हो गया था, तब पता चला कि आत्मा के दो भाग हो जाते हैं और मेरे आत्मा का एक भाग लक्ष्मी है। मैंने यह बात चाचा जी को बताई थी, परन्तु लक्ष्मी को नहीं बताई। तब यह हमारी दुकान पर काम करने लगी थी।"

"बाल्यावस्था में और पीछे जब यह दुकान पर काम करती थी, इसकी आत्मा निर्मल, प्रत्यक्ष, विघ्न–बाधा रहित दिखाई देती थी।"

"एक समय आया जब वह गंदले जल की भाँति दिखाई देने लगी। मैं समझ नहीं सका कि यह क्या हो रहा है उसको! एकाएक उसने अपने और सुदर्शनलाल के विवाह से घोषणा कर दी।"

"जब यह पुनः सुदर्शनलालजी के घर जाकर रहने लगी थी, इसके आत्मा में निर्मलता प्रतीत होने लगी थी। विलायत जाने तक इसकी आत्मा एक पारदर्शक काँच की भाँति थी। मैं समझ रहा था कि अब समय की बात है जब हमारे शरीर छूटेंगे और हम पुनः एक हो सकेंगे।"

"परन्तु आज मेरी आशा पुनः विलीन हो रही लगती है। इसकी आत्मा पुनः वैसी ही गंदली हो रही है जैसे तब थी, जब इसने सुदर्शनलाल से विवाह करना था। इसका अर्थ यह है कि यह वासना–विभूत हो रही है।"

"हाँ, मुझको भी कुछ यही समझ आ रहा है।"

सुदर्शन और लक्ष्मी के आने की सूचना तो राधा और शिवराम को भी थी। परन्तु वे तो इनमें तब से रुचि छोड़ चुके थे जब उन्होंने सुदर्शनलाल को दल बदलते देखा था। जब सुदर्शनलाल नेशनलिस्ट दल को छोड़ सिकन्दर हयात के मंत्रिमण्डल में गया था, तब से शिवराम सुदर्शनलाल से मिला भी नहीं था। हाँ, लक्ष्मी के विषय में उसको और राधा को इतनी रुचि थी कि उसका सुख–समाचार सुन लेते थे और कभी एक–आधा व्यंग उस पर कस देते थे।

इस पर भी जगन्नाथ ने जब उनको इनके विलायत से लौटने की बात बताई, तो राधा ने पूछ लिया, "तो ये कहाँ ठहरेंगे?"

"उन्होंने लिखा तो नहीं। मैं उनके लिये अपनी कोठी में ही स्थान तैयार रखूँगा। आगे जैसी उनकी इच्छा।"

परन्तु जब वे आये तो उन्होंने बिना किसी हिचकिचाहट के जगन्नाथ के घर पर ठहरना स्वीकार कर लिया।

जब लक्ष्मी और सुदर्शन अपने सम्बन्धियों से मिलने चले गए तो राधा का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फोन आया। उसने पुछा, "लक्ष्मी आ गई है क्या?"

उत्तर इड्डा ने दिया, "पति–पत्नी दोनों आ गये हैं और दोनों अपनी माताओं तथा भाइयों से मिलने गये हुए हैं।"

"भोजन के लिए आयेंगे क्या?"

"मैंने पूछा था, परन्तु वे कह गये हैं कि निश्चय से वे नहीं कह सकते। यदि समय पर आ गये तो ले लेंगे अन्यथा उनकी प्रतीक्षा न की जाये।

"अच्छा इड्डा! जब वे आएँ तो लक्ष्मी को कहना कि मैं मिलने की इच्छा रखती हूँ। वह मुझे टेलिफोन करे, तो मिलने चली आऊँगी।"

जगन्नाथ दुकान पर चला गया था। जब लक्ष्मी अकेली मोटर में लौटी तो उसने बताया कि जगमोहन के पिता अपनी माता से मिलने के उपरान्त अपने मित्रों से मिलने चले गये हैं। उन्होंने टैक्सी कर ली है और मुझको अपने माता–पिता से मिलने के लिए भेज दिया था। वहीं से मिलकर यहाँ आ गई हूँ। भोजन माँ के घर ले आई हूँ।

"सुनाओ माँ से मिलकर प्रसन्न हो?"

"माँ ने अप्रसन्नता की बात तो नहीं की। इस पर भी वह कुछ रुष्ट प्रतीत होती थी।"

"तुम्हें उसको पत्र लिखना चाहिए था।"

"मैं अब समझती हूँ कि भूल हुई है। माँ ने इतना ही पूछा था, लक्ष्मी! तुमको पाँच वर्ष तक स्याही नहीं मिली न?"

"मैंने उत्तर नहीं दिया। इसका अर्थ वह यह समझी है कि जगमोहन के पिता ने मना किया होगा। इसी कारण उसने पूछ लिया, तो सुदर्शनलालजी के लिए यह गली भी भीड़ी हो गई है क्या? कहाँ छोड़ आई हो उनको?

"जब मैंने इसका उत्तर भी नहीं दिया तो माँ ने भोजन के लिए पूछ लिया। मैं कृपाराम के लड़के से बातें कर उसे अपना परिचय देती रही।"

"कितना बड़ा हो गया है?" इड्डा ने पूछा।

"वह अब तीन वर्ष का होगा। मेरे विलायत जाने के बाद हुआ था।"

"माँ ने भोजन कराया। इस समय पिता जी भी दुकान से आ गये। उन्होंने तो स्वास्थ्य समाचार भी नहीं पूछा। केवल इतना पूछा लक्ष्मी आ गई है?"

"अच्छा यह बताओ," इड्डा ने पूछा, "यह तुम पर इतनी मैल क्यों चिपट रही है?"

"कहाँ चिपट रही है। प्रातः तुम्हारे यहाँ पहुँच कर ही तो स्नान किया था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कुछ मालूम तो होती है। मिस्टर नाथ भी कह रहे थे। अच्छा अब तुम आराम करो। कई दिन की यात्रा की थकावट दूर होने में भी तो कई दिन लगेंगे।"

थकावट तो थी नहीं। हाँ, जगमोहन के पिता के मेली–जोली लाहौर में बहुत थे और मित्रों के घर दावतें और फिर मित्रों को होटल में दावतों का, कई दिन तक तांता लगा रहा। प्रायः प्रातः का अल्पाहार लेकर वे निकल जाते तो रात के खाने के उपरान्त और कभी तो बारह बजे के भी पीछे लौटते।

धीरे–धीरे जगन्नाथ भी इनसे तटस्थ हो रहा था। ये अभी जगन्नाथ की कोठी पर ही रहते थे। एक दिन प्रातःकाल सन्ध्या योग–ध्यान से अवकाश पा इड्डा जगन्नाथ के पास आकर बैठ गई। जगन्नाथ पहले ही अवकाश पा स्वाध्याय के लिए पुस्तकालय में आ चुका था। कुछ देर तक इड्डा बैठी रही। जगन्नाथ ने उसका गम्भीर मुख देखा तो पूछ लिया, "कुछ कहने आई हो इड्डा?"

"जी।"

"क्या?"

"सुदर्शनजी के साथ रहना कठिन हो रहा है।"

"क्या?"

"वह फिर मुझसे प्रेम प्रकट करने लगा है। कल मध्याह्न के समय तो वह सीमोल्लंघन करने लगा था। अकस्मात् विन्सैन्ट वहाँ आ गया और वह अपने कुकृत्य के लिए प्रयत्न नहीं कर सका।"

जगन्नाथ मुस्कराता हुआ इड्डा का मुख देखता रह गया। इस पर इड्डा ने कह दिया, "मेरा अनुमान है कि दोनों पर युरोप की फ्री–सोसायटी का प्रभाव हुआ है। लक्ष्मी भी वह नहीं रही, जो जाने से पूर्व थी।"

"तो मेरी इड्डा क्या चाहती है?"

"या तो इनको यहाँ से कहीं अन्यत्र मकान लेने के लिए कह दिया जाय अथवा हम कहीं अन्यत्र चल दें।"

"तो तुम यहाँ स्वयं को सुदर्शनलाल से सुरक्षित अनुभव नहीं करतीं?"

"मैं उसकी उपस्थिति में अपने आप से भी अरक्षित हो जाती हूँ। यह शरीर प्रबल हो जाता है। कुछ ऐसा अनुभव होने लगा है, जैसा विवाह से पूर्व लन्दन में 'डांस' करते हुए कभी–कभी विवशता अनुभव करती थी। मैं समझती हूँ कि ऐसी किसी भी परिस्थिति उत्पन्न होने का अवसर ही नहीं देना चाहिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जगन्नाथ समझ गया और कहने लगा, "यह तो बहुत कठिन स्थिति है। इन मेहमानों को स्पष्ट यहाँ से चले जाने के लिए कैसे कहूँ। हाँ, कुछ अपना ही कार्यक्रम बनाना पड़ेगा।"

"परन्तु मुझे तो आज मध्याह्न का समय भी भय–युक्त प्रतीत हो रहा है।"

"तो आज मध्याह्न का भोजन मैं घर पर लूँगा और फिर उसके उपरान्त दो घंटा विश्राम कर, तुम मेरे साथ ही दुकान पर चलोगी। शेष आज चाची से बात कर निश्चय करूँगा।"

प्रातः के अल्पाहार के समय जगन्नाथ सुदर्शनलाल की गतिविधियाँ देखता रहा। उसको इड्डा के अनुमान का समर्थन ही मिला। वह इड्डा को प्रसन्न करने के लिए विशेष प्रयत्न कर रहा था।

अल्पाहार के उपरान्त जगन्नाथ ने लक्ष्मी से पूछ लिया, "लक्ष्मी! आज किधर जाने का विचार है?"

"सन्तराम की बहू के साथ कुछ कपड़ा इत्यादि खरीदने के लिए जाना है। क्यों क्या बात है?"

"नहीं, ऐसे ही पूछ रहा हूँ।"

इस पर सुदर्शनलाल ने कह दिया, "मैं आज मध्याह्न का भोजन मिस्टर ब्राउन चीफ सेक्रेटरी टू दि पंजाब गवर्नमेंट के साथ लेने वाला था, परन्तु अभी–अभी उनका चपरासी पत्र देकर गया है कि वह आज लंच मेरे साथ नहीं ले सकेगा। उसने अब परसों का दिन निश्चय किया है।"

"परसो तो रविवार है।"

"कदाचित् इसी कारण परसों का दिन निश्चित किया है।"

"तो आज आप खाना घर पर लेंगे?"

"हाँ, यदि इड्डाजी आपत्ति नहीं करें?"

"क्यों इड्डा, तुमको आपत्ति है क्या?"

"मैं अभी तो अपनी एक सहेली से मिलने जा रही हूँ और लंच के समय लौट आऊँगी।"

"तब तो ठीक है।" सुदर्शनलाल ने कह दिया, "मैं भी इस समय मां से मिलने जा रहा हूँ। लंच तक लौट आऊँगा।"

जगन्नाथ ने अपना कार्यक्रम नहीं बताया। प्रायः जगन्नाथ का मध्याह्न का भोजन दुकान पर जाता था। जिस दिन घर से नहीं जाता था, वह वहीं किसी होटल में खा लिया करता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुकान अभी भी शिवराम और जगन्नाथ के साँझे में चलती थी। जगन्नाथ का दुकान के लाभ में चालीस प्रतिशत का भाग था। साठ प्रतिशत शिवराम का भाग था। पूर्ण पूँजी उसकी थी। इस पूंजी में समय–समय पर जगन्नाथ से उसे ऋण की आवश्यकता पड़ती रहती थी। उस समय ऋण का ब्याज दे दिया जाता था। लाभ का चालीस प्रतिशत तो जगन्नाथ के दुकान पर प्रबन्ध करने के कारण ही थी। उस दिन जगन्नाथ ने शिवराम से फोन पर बात कर दी। वह प्रायः छापा– खाना में काम करता था। जगन्नाथ ने कहा, "चाचाजी! मैं दो मास के लिए भ्रमण पर जाना चाहता हूँ।"

"परन्तु जगन्नाथ, दुकान के काम का यही तो काल है। जनवरी, फरवरी, मार्च और अप्रैल में ही तो दुकान की तीन–चौथाई बिक्री होती है।"

"चाचाजी! यह तो ठीक है। परन्तु मैं भ्रमण के लिए दक्षिण जाना चाहता हूँ और यही ऋतु है जिसमें वहाँ भ्रमण हो सकता है।"

"परन्तु यह क्या कि घर में मेहमान हैं और तुम भ्रमण के लिए जा रहे हो?"

"मेहमानों के लिए कोठी और भोजन–व्यवस्था का प्रबन्ध कर जाऊँगा।"

"और बच्चे?"

"वे चाचीजी के पास रखने का प्रबन्ध कर चुका हूँ। अभी–अभी उनको फोन किया था। उन्होंने बच्चों को रखना स्वीकार कर लिया है। वे तो कह रही थीं, कि वे मेरी छुट्टी के लिए आपसे सिफारिश कर देंगीं।"

"तब तो छुट्टी देनी ही पड़ेगी। तुम जानते हो कि राधा की सिफारिश व्यर्थ नहीं जा सकती। कब तक जाना चाहते हो?"

"शीघ्र–से–शीघ्र जब आप अनुमति देंगे।"

शिवराम हँस पड़ा। उसने कहा, "अच्छा, रात के समय तुम्हारे यहाँ भोजन करेंगे और तब तक कुछ–न–कुछ विचार कर लेंगे।"

उस दिन जब मध्याह्न के भोजन के समय जगन्नाथ कोठी पर पहुँचा तो सुदर्शन अपने कमरे में बैठा था। इड्डा घर पर नहीं थी। वह जगन्नाथ को आया देख विस्मय में मुख देखता रह गया। जगन्नाथ ने अपने आने की सफाई दे दी, "मुझे दुकान पर काम करते बारह वर्ष हो गये हैं। एकाएक आज विचार आया कि इस कोल्हू के बैल का–सा व्यवहार छोड़, घोड़े की भाँति सरपट दौड लगानी चाहिए।"

सुदर्शन समझा नहीं। इस कारण पूछने लगा, "कैसे दौड़ लगाएंगे?"

"दुकान से कुछ काल के लिए छुट्टी कर भ्रमण के लिए कहीं जाना

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहता हूँ।''

''ओह! कब और कहाँ?''

''यह आज रात खाने के समय चाचाजी से विचार करूँगा। उनको रात के भोजन पर निमन्त्रण दे दिया है। अभी तो इड्डा से राय करनी है।''

''औ़र इड्डाजी भी साथ जाएँगी?''

''यही विचार करने के लिए भोजन करने यहीं चला आया हूँ। रात से पहले इड्डा से बात कर लेना चाहता हूँ।''

''मेरा विचार है कि वह आजकल सरपट दौड़ लगाने के 'मूड' में नहीं हैं।''

''तो ठीक है। मैं अकेला ही जाऊँगा।''

सुदर्शनलाल चुप रहा। इड्डा आई तो जगन्नाथ को वहाँ पहले ही उपस्थित देख सन्तोष अनुभव करने लगी। उसने कहा, ''तो आप घर पर ही आ गये हैं?''

उत्तर सुदर्शनलाल ने दिया। उसने कहा, ''ये टाँगों में जंग लग रहा अनुभव कर रहे हैं और इस कारण घोड़े की भाँति दौड़ लगाने के लिए दुकान से चले आये हैं।''

''तो यहाँ 'रेस–कोर्स' है क्या?''

''इस पर तीनों हँसने लगे। जगन्नाथ देख रहा था कि सुदर्शन एक प्रकार की चंचलता अनुभव कर रहा था। इड्डा अति सन्तुष्ट प्रतीत हो रही थी और वह स्वयं दोनों के मनोभावों का अनुमान लगा मन–ही–मन आनन्द ले रहा था।''

भोजन हुआ और विश्राम करते समय जगन्नाथ ने इड्डा को शिवरामजी के रात भोजन पर आकर छुट्टी के विषय में बात करने का विचार बता दिया। राधा के विषय में भी बताया।

''इड्डा इस पर हँस पडी। जगन्नाथ ने इस हँसने का अर्थ जानने के लिए प्रश्न–भरी दृष्टि में उसके मुख पर देखा तो उसने कह दिया, जब आपका फोन आया था, मैं वहाँ ही बैठी थी। राधाजी को मैंने पहले ही सब बात बता रखी थी। इस पर भी उन्होंने आपको बताया नहीं और ऐसे बात की, मानो आपके कहने पर ही सिफारिश कर रही हों।''

''तो तुमने सुदर्शनलाल की सब बात बता दी।''

''जी! और उनका कहना है कि दोनों को धक्के दे–देकर कोठी से निकाल दो। परन्तु मैंने आपके मन की भावना बताई तो वे चुप कर गईं और फिर हमारी योजना में सहायक होने का वचन दे दिया।'' दो घण्टे विश्राम के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उपरान्त जगन्नाथ और इड्डा बाजार जाने के लिए तैयार हो गये। इस समय तक लक्ष्मी लौट आई थी।

जब इड्डा जाने के लिए तैयार हो अपने कमरे से निकली तो लक्ष्मी ने पूछ लिया, "किधर जा रही हो इड्डा बहन?"

"इनकी माता मिसेज जोन और जोन साहब से मिलने जा रही हूँ। हम शाम की चाय वहाँ ही लेंगे।"

"कुछ काम है वहाँ?"

"एक तो माताजी से मिले कई दिन हो गये हैं। दूसरे, ये हिन्दुस्तान की तीर्थ–यात्रा पर जाना चाहते हैं। जोन साहब से मिल कर रेल का टूरिस्ट टिकट बनवाना है। यूं तो वैसे भी बन सकता है, परन्तु उसमें महीना–भर लग जाना सहज है। जोन साहब चाहेंगे तो एक–दो दिन में बन सकता है।"

लक्ष्मी इस सूचना से मुख देखने लगी। कुछ विचार कर उसने पूछ लिया, "तो तुम भी जा रही हो क्या?"

"जाऊँगी नहीं तो क्या करूँगी?"

"तो हम?"

"यह कोठी आपके लिए रहेगी। रसोइया और बैरा यहीं रहेंगे और आपके भोजन का प्रबन्ध रहेगा।"

इस समय जगन्नाथ भी आ गया और वे मोटर निकलवा चले गये।

: 7 :

लक्ष्मी अपने कमरे में गई तो सुदर्शन अपने पलंग पर औंधे मुँह लेटा हुआ था। लक्ष्मी ने पूछ लिया, "क्या बात है, लेटे कैसे हैं?"

"आज फिर वह चकमा दे गई है। कल वह बिल्कुल तैयार थी कि उसका लड़का स्कूल से आ गया। मैं आज के लिए बहुत आशा लगाये हुए था। आज जगन्नाथ घर पर आ गया और अवसर ही नहीं मिला।"

"मैं समझती हूँ कि आप जो कुछ कर रहे हैं ठीक नहीं कर रहे। यह लन्दन नहीं है, इन भले लोगों के शान्त जीवन में व्यर्थ का वैमनस्य उत्पन्न कर रहे हैं।"

"तो तुम्हें मेरी सफलता देख ईर्ष्या होने लगी है?"

"वैसे तो मैंने आपके कामों में हस्तक्षेप करना छोड़ दिया है। परन्तु इतना तो कहने का अधिकार रखती हूँ कि जिस घर में इतना आदर और सत्कार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाया हो, उसमें इस प्रकार का यत्न ठीक नहीं।''

''एक बात तो निश्चय ही है कि इड्डा मन से आपसे सम्बन्ध बनाना नहीं चाहती, परन्तु प्रत्येक व्यक्ति में ऐसे अवसर आते हैं जब वह दुर्बलता अनुभव करता है। उस अवसर से लाभ उठा उसे पतित करना तो ठगी कही जाती है।''

''और तुम जो कुछ लन्दन में करती रही हो, वह ठगी नहीं क्या?''

''वहाँ मैं ठगी जाती रही हूँ। मुझे इसका अफसोस है। मैं समझती हूँ कि इड्डा ने अपने पति से आपकी करतूत की बात बता दी है और वह उसकी रक्षा के निमित्त ही उसको यहाँ से दूर ले जाने के लिए तैयार हो गया है। वह उसका पति होने के नाते उसकी रक्षा करना अपना कर्त्तव्य मानने लगा है।''

''तो क्या मैं दो महीने में मर जाने वाला हूँ। मैं यही लाहौर में रहने का विचार रखता हूँ।''

''तो रहिये परन्तु इस कोठी में तो रहना ठीक नहीं होगा।''

''तो इड्डा ने इस विषय में कुछ कहा है क्या?''

''उसने तो कहा है कि उनके जाने पर यह कोठी खुली रहेगी और हमारी भोजन–व्यवस्था यथावत् रहेगी। परन्तु मैं उनकी अनुपस्थिति में यहाँ रहना बिल्कुल ठीक नहीं समझती।''

''क्यों?''

''इसलिए कि यह कंगले का–सा व्यवहार हो जायेगा।''

''मैं इड्डा को इससे अधिक मूल्य का उपहार दे दूँगा।''

''उपहार से बदनामी मिटेगी नहीं।''

''तो तुम चली जाओ। मैं तो यहाँ ही रहूँगा।''

''अभी तो हम यहाँ ही रहेंगे। परन्तु उसके जाने के कुछ घण्टे पूर्व यहाँ से चल देना चाहिये।''

''तो कहाँ चलेंगे?''

''जहाँ आप ले चलेंगे?''

''देखो लक्ष्मी, हम तब तक के लिए किसी होटल में जा रहेंगे, जब तक वे लाहौर से बाहर रहेंगे। यहाँ हम अपना कुछ सामान रहने देंगे। जब वे आयेंगे तो पुनः यहाँ आ रहेंगे।''

''जी नहीं, हमारा सामान तो उनके जाने से एक दिन पूर्व ही चला जायेगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं समझता हूँ कि तुमको यहाँ फ्रैड्रिक जैसा कोई नहीं मिल रहा, इससे तुम इतनी संवेदनात्मक हो रही हो।"

"तो आज फिर झगड़ा करना चाहते हैं?"

"कुछ ऐसा ही लग रहा है। तुम उस दिन का पीटा जाना भूल गई हो।"

"देखिये, वह इंगलैंड था। वहाँ मैं असहाय थी। यहाँ मेरे माता-पिता, भाई-बन्धु सब हैं। यदि यहाँ आपने कुछ भी उच्छृंखलता की तो मैं सबक सामने आपके यहाँ रहने में कारण की घोषणा कर दूँगी।"

"तो यह भी स्मरण रखो कि तुम जीवित नहीं रह सकतीं।"

लक्ष्मी अनिश्चित मन बैठी रह गई।

जगन्नाथ और इड्डा सायं आठ बजे आये। भोजन का समय साढे-आठ बजे था। लक्ष्मी वहाँ थी, परन्तु सुदर्शनलाल नहीं था। इड्डा ने लक्ष्मी को बताया, "हमने अमरनाथ, बद्रीनारायण से लेकर रामेश्वरम और कन्याकुमारी तक तथा कराची द्वारिका से लेकर कामाख्या तक के भ्रमण का कार्यक्रम बना लिया है। जोन साहब का कहना है कि कल सायं चार बजे हम अपना टिकट उनके कार्यालय से प्राप्त कर लें। इसके पश्चत् जब हम चाहें जा सकेंगे।"

"तो तुम एक-दो दिन में ही जा रही हो?" लक्ष्मी ने पूछा।

"हाँ, अब यहाँ रहने से चित्त उचाट हो गया है। कल टिकट मिल जायेगा और यदि सीट बुक हो गई तो परसों कराची मेल से ही चल देंगे।"

"हम कल यहाँ से चले जाएंगे।"

"इसकी आवश्यकता नहीं। मैं और मिस्टर नाथ बहुत प्रसन्न होंगे। यदि आप इस कोठी में ही, जब तक लाहौर में रहना हो, रहेंगे।"

"हम आपके इस प्रस्ताव के लिए अत्यन्त आभारी हैं, परन्तु वर्तमान परिस्थिति में हम जाएंगे ही।"

"तो तुम चाहती हो कि हम न जाएँ?"

"नहीं, यह बात नहीं इड्डा बहन! मैं यह समझी हूँ कि आप हमारे कारण से ही जा रहे हैं। इसलिए यदि हम चले जाएंगे तो आप व्यर्थ में कई हजार रुपये के खर्च से बच जाएँगे। इसके अतिरिक्त जगन्नाथजी, चाचा शिवरामजी तथा चाची को, व्यर्थ में होने वाले कष्ट से बचाया जा सकता है।"

"यह तुम्हारा ख्याल है लक्ष्मी।"

"नहीं इड्डा बहन! मैं सब जानती हूँ कि तुम लोग क्यों जा रहे हो। मुझे परसों की घटना का पता है और यदि तुम मुझको पहले बता देतीं कि तुम यह पसन्द नहीं करतीं तो बिना इस कार्यक्रम के भी हम यहाँ से चले जाते।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो तुम समझ रही थीं कि वह मैं पसन्द करती थी?"

"किसी के मन की बात कौन बता सकता है।"

"यदि तुम इतना कुछ जानती हो और समझती हो तो अच्छा यही है कि तुमको इस कोठी में नही रहना चाहिए परन्तु हम अपने जाने का इतना हल्ला करने पर तो जाएँगे ही। वह अब रुक नहीं सकता।"

लक्ष्मी चुप रही। रात के भोजन के समय लक्ष्मी खाने के कमरे में नहीं आई। सुदर्शनलाल घूमकर आ गया था। वह लक्ष्मी का संदेश ले, कि उसको भूख नहीं, खाने के लिए आ गया था।

शिवराम और राधा भी खाने पर आये हुए थे। जगन्नाथ ने अपने घूमने का कार्यक्रम बताया और साथ ही जोन साहब की सहायता से अगले दिन टिकट मिलने की बात भी बता दी।

शिवराम ने कहा, "मैंने अपने एकाउण्टेण्ट रुलियाराम को आपके स्थान पर काम करने के लिए कह दिया है। वह कल से ही दुकान पर पहुँच जायेगा। उसका वेतन तुम्हें लाभ के भाग में से देना पड़ेगा।"

बात इतनी सुगमता से निश्चय होती देख सुदर्शनलाल ने अपने विषय में बात कह दी। उसने कहा, "मैं अभी यह निश्चय नहीं कर सका कि मुझे लन्दन वापस नौकरी पर जाना है अथवा नहीं। इस कारण मैं तो अभी कोठी छोड़ नहीं सकता। बताइये जगन्नाथजी क्या भाड़ा लेंगे कोठी का?"

"यह कोठी इड्डा ने अपने रुपये में से बनवाई है। इस पर भी मैं समझता हूँ कि वह इसको भाड़े पर देना पसन्द नहीं करेगी।"

"मैं इसका भाड़ा नहीं लूँगी। लक्ष्मी बहन जब तक चाहे यहाँ रह सकती है और जब तक आप रहेंगे आपके लिए भोजन तथा अन्य सुविधाएँ उपलब्ध रहेंगी।"

"और यदि लक्ष्मी बहन न रहना चाहे तो?"

"तो वह क्या आपसे पृथक् रहेगी?"

"हाँ, एक बार पहले भी तो रूठ गई थी और माँ के घर चली गई थी।"

इस पर शिवराम ने वार्तालाप में हस्तक्षेप करते हुए कहा, "हमने तो कुछ भिन्न बात सुनी थी। हमने सुना था कि आपने उसको पीट कर घर से बाहर निकाल दिया था और आपने माना था कि आपने भूल की थी।"

"देखिये पण्डितजी!" सुदर्शनलाल ने कह दिया, "मेरा लक्ष्मी से व्यवहार हमारे अपने बीच की बात है और अब भी यदि हम पृथक्-पृथक् हुए तो अपने बीच की बात होगी। हाँ, मैं यह कह रहा हूँ कि मैं अकेला भी इस कोठी में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रह सकता हूँ। अब बताइये, क्या भाड़ा लेंगे?''

''कुछ नहीं लूँगी?'' इड्डा ने कह दिया।

''किसलिए?''

''इसलिए कि आप लक्ष्मी बहन के पति हैं। भला जीजा से भाड़ा कैसे ले सकती हूँ।''

''तो ठीक है। इस नाते मुझे भी यहाँ रहने में संकोच नहीं हो सकता।''

इसके उपरान्त शिवराम ने पुनः बात तीर्थ–यात्रा की करनी आरम्भ कर दी।

शिवराम और राधा अपने घर लौट गये। जाने से पूर्व उन्होंने इड्डा के दोनों बच्चों को अगले दिन स्कूल से सीधा उनके घर आ जाने के लिए कह दिया। साथ ही अगले दिन रात को इड्डा और जगन्नाथ को खाना उधर ही लेने का निमन्त्रण दे दिया।

अगले दिन इड्डा ने राधा की कोठी में जाने का विचार बनाया हुआ था क्योंकि जगन्नाथ का विचार था कि दुकान का चार्ज रुलियाराम को देने में उसे घर आने का अवकाश नहीं मिलेगा। चार बजे वह जोन साहब के कार्यालय में जाकर टिकट ले आयेगा।

इस प्रकार निर्णय कर वे सो गये। प्रातःकाल उठ कर वे पूजा–पाठ में लग गये। अल्पाहार के समय लक्ष्मी आई। उसके माथे पर पट्टी बंधी थी। सुदर्शनलाल उसके पीछे–पीछे था। इड्डा ने विस्मय में पूछ लिया, ''यह क्या हुआ है लक्ष्मी बहन?''

''रात एक बैल ने सींग मारा है।''

''रात के समय!'' इड्डा ने मुस्कराते हुए पूछ लिया।

''हाँ! और बिस्तर में लेटे–लेटे।''

इस सूचना से तो जगन्नाथ और इड्डा गम्भीर हो गये। वे अल्पाहार लेते रहे। लक्ष्मी ने कुछ थोड़ा–सा खाया और शेष छोड़ दिया। सुदर्शनलाल ने पेट भर कर खाया। खाने के उपरान्त जगन्नाथ ने सुदर्शन को एक ओर ले जाकर पूछा, ''सुदर्शनजी! यह क्या कर दिया है?''

''वह मेरी हत्या करने वाली थी।''

''कैसे?''

''यह बताने की बात नहीं।''

''इस अवस्था में तो यहाँ कोठी में आपका भी रहन–सहन कठिन हो जायेगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कोठी तो आपकी नहीं है। जो इसका मालिक है उसने स्वीकृति दे रखी है।"

"देख लो, वह भी तो इस नई परिस्थिति में स्वीकृति वापस ले सकती है।"

"नहीं लेगी।"

"जगन्नाथ ने सोचा कि इस विषय पर वे सायंकाल बात करेंगे। इड्डा ने लक्ष्मी से कहा, "इस प्रकार तुम इसके पास नहीं रह सकोगी।"

"मैं जानती हूँ।"

"तो फिर?"

"मैं इसके साथ नहीं रहूँगी।"

"तब ठीक है।"

इड्डा और जगन्नाथ दोनों इकट्ठे ही गये। इड्डा राधा के पास और जगन्नाथ दुकान पर। जगन्नाथ ने दुकान का चार्ज रुलियाराम को दे दिया। दुकान से साढ़े–तीन बजे वह रेलवे दफ्तर में चला गया। वहाँ जोन को मिला और टिकट ले दुकान पर आया। सबकुछ यथावत् चलता देख वह शिवरामजी की कोठी पर जा पहुँचा। इस समय पाँच बज चुके थे। राधा और शिवराम घर पर नहीं थे। विष्णु ने बताया कि आधा घण्टा हुआ है आपकी कोठी से रसोइये ने फोन किया था कि कोठी पर पुलिस आई है। इसलिए दोनों वहाँ गये हैं। जगन्नाथ और इड्डा भी अपनी कोठी को चल दिय।

वहाँ जाकर पता चला कि लक्ष्मी चुबुर्जी थाने पर रिपोर्ट लिखाने गई थी और उसकी रिपोर्ट पर ही पुलिस कोठी में आई और उसने सुदर्शनलाल को पलंग पर मरा पाया है।

लक्ष्मी ने बयान दिये थे, मेरा पति सुदर्शनलाल कोठी की मालकिन इड्डा देवी से प्रेम करने लगा था। वह उसको पतित करने का यत्न करता रहता था। मैं उसको मना करती थी। इड्डा देवी मेरी मित्र है और हम उसकी कोठी पर मेहमान के रूप में ठहरे हुए हैं। रात जब मैं अपने पति को मना कर रही थी तो उन्होंने मेरी हत्या करने का यत्न किया था मैंने उनकी बात में दखल न देने का वचन दिया तो उन्होंने मेरा गला छोड़ा। उससे पहले उन्होंने मेरे सिर पर फूलदान दे मारा था। मैं कमरे से भागने लगी तो उन्होंने मुझे बिस्तर पर लिटाकर मेरा गला घोंटना चाहा। मैं वचन देकर ही बच सकी थी।

"मैंने उस समय ही निश्चय कर लिया था कि मैं इनकी हत्या करूँगी और जो भी दंड मुझे मिलेगा उसका भोग करूँगी। इस कारण आज दिन के समय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मैं बाजार गई। पोटेशियम सायनाईड एक फोटोग्राफर की दुकान से ले आई। वह मैंने उनको दोपहर के खाने के पश्चात् कॉफी में मिलाकर दे दिया। वे लेटे और समाप्त हो गये। इसके उपरान्त मैं चित्त को स्थिर कर थाने में रिपोर्ट लिखाने चल पड़ी।''

पुलिस ने लक्ष्मी को बन्दी बना लिया। सुदर्शनलाल का शव परीक्षा के लिए अस्पताल भेज दिया गया। इस घटना से जगन्नाथ की तीर्थ–यात्रा रुक गई।

लक्ष्मी पर मुकद्दमा चला। लक्ष्मी के व्यवहार में यह दोष पाया गया कि जब वह विष लेने बाजार गई थी, उस समय भी वह थाने में रिपोर्ट लिखा देती तो उसकी रक्षा की जा सकती थी। इसका यह अभिप्राय लिखा गया कि उसने विचार कर, अपने हाथ में कानून लिया है और पति की हत्या की है।

लक्ष्मी के बयानों का समर्थन इड्डा और जगन्नाथ ने भी किया। एक योग्य वकील ने यह सिद्ध करने का यत्न किया कि हत्या विशेष परिस्थिति में घबराहट के कारण हुई है, परन्तु सरकारी वकील ने लक्ष्मी के चरित्र पर लांछन लगा, उसकी कहानी मिथ्या बताई। सरकारी वकील का कहना था कि लक्ष्मी दुकान पर जगन्नाथ के साथ काम करती थी और अधिक सम्भव यह है कि दोनों का अनियमित सम्बन्ध रहा हो। अब विलायत से लौटने के उपरांत वह सम्बन्ध फिर बना हो और सुदर्शनलाल उसमें बाधक हो। यह भी एक कारण हो सकता है कि लक्ष्मी ने सोच–विचार कर अपने पति की हत्या की हो। पीछे सामान्य हत्यारों की भाँति भयभीत वह थाने में रिपोर्ट लिखाने चल पड़ी।

सेशन कोर्ट ने तो फाँसी का दंड दे दिया, परन्तु हाईकोर्ट में अपील कर आजीवन कैद का दण्ड रह गया।

दण्ड के पश्चात् जगन्नाथ ने पूछा, ''लक्ष्मी! कहो तो प्रिविकौंसिल में अपील का प्रबन्ध किया जाय?''

''नहीं, इसकी आवश्यकता नहीं। वास्तव में सेशन कोर्ट का यह कहना है कि मैंने होश–हवास में, इसके परिणामों को समझते हुए एक विचारपूर्ण कार्य किया है और उसका पूर्ण दण्ड मुझे मिलना चाहिए। मैं थाने में जा सकती थी, परन्तु मुझको भय था कि वह सिफारिश से छूट जायगा और मेरी हत्या कर देगा। तब वह मेरे किसी भी आश्वासन पर विश्वास नहीं करेगा। मैं समझती हूँ कि मुझे जेल में जीवन व्यतीत करना होगा। यह मेरे कल्याण में ही होगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त की ऐतिहासिक रचनाएं

परित्राणाय साधूनाम — महाभारत पर आधारित सम्पूर्ण उपन्यास
वैशाली विलय — वहती रेता
अस्ताचल की ओर — 3 भाग
खण्डहर बोल रहे हैं — 3 भाग
अमृत मन्थन — राम कथा-1
परम्परा — राम कथा-2
अग्नि परीक्षा — राम कथा-3
जमाना बदल गया — 4 भाग
दो लहरों की टक्कर — 2 भाग
विक्रमादित्य साहसांक
युद्ध और शान्ति
कुमकुम
पत्रलता
दिग्विजय
वाम मार्ग
लुढ़कते पत्थर
गंगा की धारा
सागर तरंग
मेघवाहन
भैरवी चक्र
महाकाल
अवतरण

Central Library
167975
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

श्री गुरुदत्त की राजनीतिक रचनाएं

वर्तमान दुर्व्यवस्था का समाधान ..... हिन्दू राष्ट्र
राष्ट्र राज्य और संविधान
हिन्दुत्व की यात्रा
धर्म संस्कृति और राज्य
मनुष्य और समाज
भारत में राष्ट्र
भगनाश
प्रजातंत्र अथवा वर्णाश्रम व्यवस्था
भारत गांधी नेहरु की छाया में
धर्म तथा समाजवाद
वुद्धि वनाम वहुमत
स्व अस्तित्व की रक्षा — 2 भाग
मैं हिन्दू हूँ — राजनैतिक संस्मरण
भाव और भावना — संस्मरण
भाग्यचक्र — संस्मरण

081
167975

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKUL KANGRI LIBRARY

	Signature	Date
Access No.		
Class No.		
Cat No.		
Tag etc.		
E.A.R.		
Recomm. by.		
Data Ent. by		
Checked		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या R 089.9143 GUR-L   आगत संख्या 167975

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30 वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब दण्ड लगेगा।

भाग्यचक्र   संस्मरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKUL KANGRI LIBRARY

	Signature	Date
Access No.		
Class No.		
Cat No.		
Tag etc.		
E.A.R.		
Recomm. by.		
Data Ent. by		
Checked		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुदत्त

शिक्षा: एम. एस. सी.

8-12-1894 से 8-4-1989

लेखक की कुछ अन्य रचनाएं

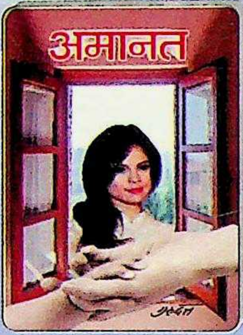

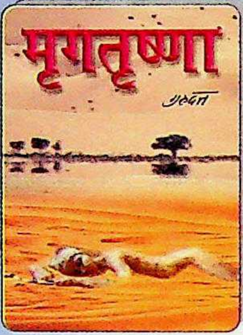

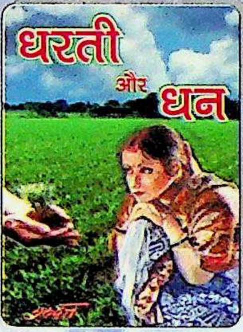

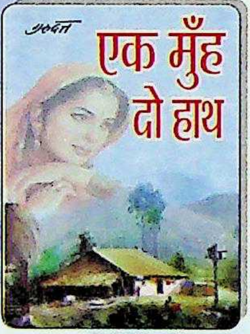

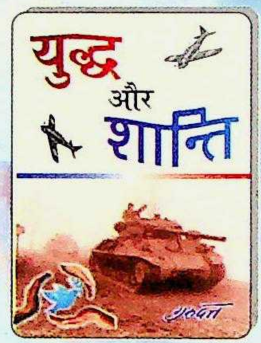

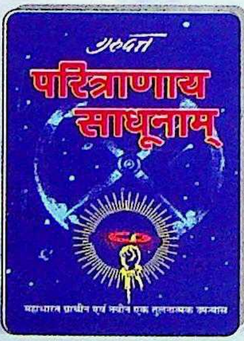

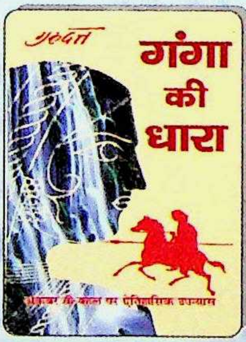

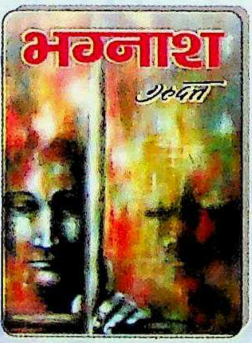

हिन्दी साहित्य सदन

2 बी.डी. चैम्बर्स, 10/54 देश बंधु गुप्ता रोड,
करोल बाग, नई दिल्ली-110 005. फोन : 23553624, 23551344

www.hindisahityasadan.com ई-मेल : indiabooks@rediffmail.com, hindisahityasadan@gmail.com

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar